## पुस्तक प्राप्तिस्थान

१ भी विषय मेमि-विज्ञान-कल्रुस्तरि शानमदिर क्षेत्रण-सरक

२ भी जैन मकाचन मंदिर ) पीर वोद्योगामी श्रम्म नवीमी कर्णा-शहसदाबाद-१

१ सरम्बती पुस्तक मेहार गण्योक क्रांच्याच्या सहस्रप्रावाद-१

४ भी मयरान केन पुस्तक मंद्रार के जेमेनीची बाल केन सके बीक्स्ट्रोट,--श्रंबई-र

५ की सोमचंद्र की. याह के बीदन निवास नावे पाक्षीताच्या (सीवफ्र)

# भी माचार्ये विनयषण ज्ञान मण्डारः वदपुर

## सुत्रीय आयुषि अंगे मकाप्रकीय चौईक

का अग्रस्य विद्वाल प्रध्यप्तकारी कीशी कार्याल अपने करणान्त्र सान क्षमाने सकती है है कार्या एक सन्धानक है. का और माध्यानायाला सन्धानी मार्थ एक आर्थियार के से का प्रसादन कम्माकेकार कीर्य पर

विक्रमणी कारान्युं स्वर्धी, ध्राहरुवायंत्रामा करमाना स्वर्धे दोवी एव क्लैक युरिक्समध्ये प्रसिद्ध वर्ष के पत्त वे वर्ड़ामां मा व्यवस्थित है. या वार्डियान के ठेलां विशिष्टराक्षमां मीचे प्रदाय के एक दो कार्या ने विविद्धेश्वरण्डं प्रभारत्युक्तमान कार्याव्याच्या प्राह्मात विश्वरणायी कार्याय वर्ड विविद्य युर्धि कीमों के बीड़ एक क्ली एक कार्याव्या प्रश्नी के के-किसी विक्रमा अभ्याद कर्यायोग माहिक की, बीड़ वाहको व्यवस्था देखाला मिकक प्रमाणका क्लानके प्रसाणि माहिक्समंत्री व्यवस्थी भोजना के बाहब्योद्यां एक बीटमानां टिक्सिक वेष क्ली व्यवस्थीय पुरस्ती बाह पर सार्वे बहुत

हारा पीराज्य कंतर विवासी रहा करें छ के बार जब इस्क्रेसिक स्त्री रहें बार्मा कराइमाँ आपने नहीं वोड़े पाएक एक्स्प्रेसिक स्त्री प्राप्त एक्स्प्रेस बार कराइमार्ग वाला छे के बुल्तित सार्ट वाम वारक्या छ. प्रिस्ट्र पारमाझ्या करें। स्वन्नती केरकाल हिन्दी एक विवासीमां हाल पहारिक्स माने क्षेत्र कराइमारी केरकाल हिन्दी एक परिविद्य सुक्रमाने मान्युं छे के पाराचा कराये साथ सामित्रीक सार्व होन है

सर्व राज्यामां कान्तुं है. केटबाक केवाची बागा पाउप-प्रशासीनां बावको

ना इराजने जनम भी सम्बंधर बाहेने शतकतु हो, पीर्क नका भी दिराजाल र कायबीका बाहेने की ये साम्राज्य म गांधीय सम्बर्ध है से की को केमा साम्राध क्षेत्रे,

क्षेत्रकं पूज्य भावाय श्रीविजयकस्तुरस्रिशी महाराजनी रपकर से कारों गानशे जोईए ते करते सर्व कोई के मा पुतास्त्री बाब के तरन निकंप सामकायं के. प्रेनचार विद्वान-प्रचीत सबे किया-स्पान क्यार्न क ए जाना परिचकार अक्टूब सह कोने विचित्र क क्षेत्र रेक्स अंक्स्त्रों क्रक्सि के स्थीत

मा प्रेमना प्रचानकार्ग करायी काविक सुरक्षकी प्रेम्पासकी

बंद्रोत्यविश्रपत्री यक्षिय वपरंच सापी करेक मानिकान साम नगानी अपने मा म आहे असे मतल जब पतनी और

पु भुनिसदारात्र भीत्रवर्षेत्रवित्रवत्री स. त्या पु मुनि सदाराज की प्रवासकेहिकायजी सहाराजे क्वतंत्रोतका ठाएँ स्थान नार्य के स सार जाने समये जानार सालीए क्षेप केवड जाने बान ब्यानर मानीक्षे का पुसानमां सम्बाध करनाराक्षेत्रों के बैगना उपयोग बार भाषा तुपर पुरुषकोगा एन मचार रोफर्ज बाल, क्रेस तको निवेत बच्चेंग करे देन अमृत्ये बस्तक का कार्य हो. एवके विद्वालको गा क्रामने कारणारे प्रदर्श काया नाचे निराशिक की से केस.

## समर्पणम्

मा प्राप्त विश्वास प्रद्रगास्त्र परमपुत्र नमक्त्र वास्त्रच्यातिष मानावेदेव भीतद् निजन विकासभूरीध्यरकी स्थाराज मादेव तथा सम्प्रान मिद्राल्प्रदोदनि प्राप्तन विशासर स्वचार्नरेर धीसद निजय कस्तुरस्रीआकी स्थानक रावेचनी प्रमानक सिंध मांत्रको पूरक्तीया गणवारीया आराजक वात-पुरान दक्ष विद्यांत्रसंत्री पुत्रव पंत्रकालभी कंद्रोक्यभिजयजी गरि ए सुनिभी रिक्कि चंत्रविजयभी न पू. मुनिशी सहीक्तर्यद्वसिजयशी म. पू. तुनिभी अञ्जयस्ति विकासती न. ६ मृनिभी समयसङ्ग विजयकी स. पू. सुनिनी प्रवोद्ययं प्रविजयकी स. पू. सुनिनी स्रजितक्रितिक्यकी म. पू. मुलिबी देवकंप्रविजयकी म. पू. मुनिश्री नपर्वाद्रविजयत्ती म. न्योद्यमिए क्रोह वरतीतम केवी अहलमध्यर्थाची निर्मित नाराबनाची पूर्वि निमित्ते रामक्रमी सामक प्रामृतारिमंग्मरकीय पूज्य ध्याप-ध्याजी समर्थ

राने तका प्राहरभाषामा अभ्वातीयांने सादर सर्वत ।

লী০ মহামত

## पूर्व प्रकाशित वे मुख्य प्रन्थ

#### १ समियान विस्तामणि शास्त्रीप

#### क्षेत्रक द्वार दीका कुळ

या बायमा प्रया पाप पूर्व क्यापणे करते करते करते गाँउने मानिका बीट्य, कर विश्वोच-नंबक्त्यीव्य कर्मामानी देखा विदा स्मान्याच्यां सिविय नाम्योपुष्य कर्मा प्रयास क्रांस्माणियो व्याप्त विद्वार प्राप्त कर्माण्यां कर्माण्यां कर्माण्यां कर्माण्यां कर्माण्यां कर्माण्यां कर्माण्यां कर्माण्यां कर्माण्यां

## ६ पारम विमादक्रा

मा क्या-नंदांत प्राप्तण प्रार्थण क्षान्तांत्रते प्रकार संस्था मार्ग काम माज्यसम्बद्धी जाता दोकार क्षेत्रीय क्षेत्र कारा मार्ग देखें देखेरी विकास कारा प्रकार मार्ग प्रकार मार्ग दक्षणिकार्य स्था भारता दिला को तथा मार्ग

#### रे असर करिये

में बर्ग सरेण एक अनुष्ण इसी विद्याली दाँची और वी में अभीन रिण्यु अन्यस्त करने अनेती छाती स्वारत कर वीली नोपन मी बाद मनवरी प्रतीया करने मेरी ए जेरी [कि.स. <sup>9</sup>] रुवामा सामे

पारोप्य बरेना श्योक्त व वृ कलाईरव वीदश्यकालपूर्णकर्ते यः सनीप क्र

## श्री विविध पूजासमह

भाग रेथी रे॰

वं भी बीरविजवर्जी भी बंबपाळती कविश्ती वैनक्टांडी व न्पविज्ञन्त्री तथा भी क्यानामजीकत स्नानपुणाओ क्रानमिमनस्ट्रिक कता. पंडित की बीर्राविशयती कृत पंत्रक्रमालको पूरा का प्रकारी क्यानुंद्रकारी वाग्यकरी पीलामीस बाद्यार्थ पांद्रश्यारी पुत्रा, पंजित कपविजयजी कृत पंजास्थानको पूता पंजाप्रस्था र्वकर्ताल कार्य वीरवाधीत भागानी भी देववित्रवाधी क्रम नक्षमध्ये पूरा भी विजयसदमीसूची सत बंधरवनको पूर्ध बी सक्कांबर्जी उपाप्पाय कत १६वीवप्रशं पुत्रा कारमेरी पूरा जी देवराजपुनिकृत सन्तरवेदी पूरा व क्षी यद्योविजयत्री इस नवर पूरा ये भी पद्मविजयत्री इस नवर पूरा को मालं अभियेकमी पृशा भीकाँकार्या इन नंदीशरहीरायी पृशा भी रीयनिजयजी इस भद्रापरजीकी पूजा भी वालाएमाजी इस क्ष्मामेरी पूत्रा भी बुद्धिसामसूरि इस शास्त्रकपुता राला साहेबनी पूजा भी मानेकसिंहसूधै क्षत राह्मवीर पंत्रभनात्रक वृक्ष की बारतुक तृज्ञा दवा भी क्लामसरिती क्ल बारिज बंबदीर्थ परमेत्रि बामाओ महित संबर भागवारी केरेन माने की स एक्क

> कलो।−वैन मकाशम महिर । ९/४ रोपीमामनो रोक समस्तासर

जनार्ध जुत्र प्रकासनी ५ विदिच प्रशासदा वर्ग ५ औं ६ अन्यः प्राथीन प्राथी विरक्षित प्रश्लोनी नाम प विक्रिय पृश्च शतक्ष मा ९ की ३ विकिय पूक्त मन्द्र भा १ की ११ fine servere ertielle mit IN WINDWINE (WINE) ६ वेदमप्रमात्सा (क्यामा गरित) designate lafe alen بالإسو à software fein wien विकारकंत बीचीर' (दिकारक) वदस्याच (सन्दित्र) क्रमाय (पोषड) · PRESENT -2 (बिन्दी भाषामा) सामाजिक सूत्र ६ स्टारानिक सम (श्रीनक) a inflore R Rittere fefe nite - पत्र प्रतिकारण विकि स्थित र निविच पुत्रा केला ना. १ की विदिव पूछ सम्बद्ध का १ की ९ de abhana na हे सिवाय बैनधर्मना समाम प्रकारना पुरतको, प्रती खगर महल वश् माहे समिपन मेगालो मद्भविमाम गिर्मरहाक शह केन प्रकारण संविद, ३ ६/४ शोबीसायां क, बामबाबाद-१

## FOREWORD

It is a matter of great pleasure to me to write a foreword to this book of Vigaya Kastura Sunji highly extremed for his crudition and annity character. This is the Second edition, and as such it is a great improvement on the First, regarding both the Gujarati language and matter.

This book mainly deals with Marahatthi (varinta) and notes some of the Addhamagahi (varinta). Peculiantics, which a student is ordinarily expected to know The learned introduction of Pt L B Gandhi who has rightly emphasized the necessity of studying Prakrit and shown the great importance of its study enhances the value of this book. The two glossaries along with aphorisms from Siddha Homachandra (Vill) and their explanation make this book north recommending to High School students.

I congratulate the learned author for the splendid service he has done and request hum to prepar. a similar book for the study of "Apabhrams a" (strain) of which the Gujarati language is one of the well-known daughters

M T B College Surat.

1st. September 1948

Hiralal R. Kapadia
M. A
Professor of Ardha
macadhi

#### Foreword

(First Edition)

It gives me much pleasure to recommend this handy volume of Prakrita Vimanapathamala, so ably prepared by Acharya Shri Kasturvijayaji. It is a matter highly creditable to the Acharys Shri to have known the needs and tastes of the present-day students of Ardhamagadhi, a udying in secondary schoolsas well as in Arts Colleges. Acharya Shri (Kasturvijayaji, is a learned saint, enjoying the privlege of being the pupil of Acharya Vijaya Vimansum one of the chief disciples of the weliknown great Jam Acharya Vijaya Nemisuriswarji and his deep knowledge and scholarship of the Agams and Prakrit Literature are well reflected in the present book.

The study of the present volume is expected to give a double advantage. Not only it introduces the student to the field of Ardha-magadhi Literature, but it makes him also familiar with the beautiful passages of the Agama Literature. I have even about a dozen elementary books of this type, but I am grad to note that the present book sur

passes all these books in as much as it presents techniques of grammar in a very lucid

and clear manner. The passages at the end styled Pasagajapajamala are choice passages arranged in the order of chronology and they are mended to create a genuine taste for Prakrut, nother minds of the students.

The undersigned desires that the student world would take with pleasure to the study of the present volume and give encouragement to the author in making further attem-

pts in this direction for the advancement of Ardha-magadhi study

K. V Abhyankar

Gujarat College
March, 1943

K. V Abhyankar
Professor of Sanskrit
and Ardha-magadhi.

#### पस्तावना

प्रस्तुत आज्ञत निश्चान-पारमाचानी प्रकाकित वर्षी का नीनी **भारतित्य प्रदेश गारे क्या स्टब्स्-के है**रवादी अर्थि केंद्रे कवरा अपूर नदो 🖠

अस्टरमारम् विश्वान कापकारी का पादमाजानी रचना केन समाज्यां प्रशमित भाषांत्रं श्रीविकयमेमिस्रीअस्त्रीत प्र<del>तिका स्थाने स्नीविक्यविकासभूरिक्री</del>य **स्रवि**म्मस्य र्थ-श्रीकासूरविजयओं वनीये सं १९९५ मां करी इसे आ प्रस् क्लानी बहेगी मार्चतः सं १९९६ माँ वैमित्रिश्चान-क्रबसानाग प्रकारक ठरीके अच्छ क्या पत्नी क्लॉसलपार्व्यसम्बद्धानम् भारामसोहाकहा धवनासकहा कदमरसक्तरंत की दीवाँ रलेमें ब्रशासमं मुख्या पत्ने ग्रासीचे देसके बारकत बोह निमारी देशनी जुर पश्चिमी प्रशान कर देशन कामार्थ परमोगी विद्यार कर्म हे केवी हमें देशों प्रीविकायकारसारश्चरित्ती जंगा नामवी प्रकारण क्या है, के बार्नीये पश्चा अभोद पासके, का रश्चा बामर्ग धन्द-न्हेमची बोटेने विकासपत से संबन्धरे करेले प्रस्मीतं किएल्मार को छात्री इताराज्य बोतन निव के से बुदिशानी शानकी व्यान समजी सके दश था.

व्य पारच पुरितका संस्था केटराड सामग्री प्रधानन-अधारन वर्ष रही हुनी अने त जाने पारणो तरपनी जातानी बाह्य हुनी केनी हरूमां

वैद्रापिक वार्यकृतका करण राजी जा गीती अस्तुरित जोगा सुवारा-नागरा राजे प्रजापना व्यक्त के राज्य वर्षना संबर्ध जानी रखे जानी पुत्रराष्ट्रित मधी-में का पारम प्रत्यक्षमी विकास प्रवासित परे हा.

पुर्मध्य आचाय श्रीहेमचीह सिराहेमचीह धम्मलुसासमा बारमा अभावमाँ वैकारमाया शास माहत व्याकतन् से विकास नाम् के तथा मुक्त आयारे, जायुनिक वैक्षीवी जानी संकरण करवामी बारी है. रोस्कृत माश्चमाँ पुंकिन, ब्रीकिंव वर्षुसर्वितमाँ वस्तरहा स्सर्ग परकरात्त सर्वयम-सन क्षत्रे संख्याताची शब्दो-सामोर्ना स्पी स्मे मानकोर्ना वर्तमान अन अने अविश्वयक्तां वयो ज्ञाननगरप्रामां केवा केरफारी साचे बरायब के है देशों संबि समास ब्याएड क्रास्टर, स्ट्रील प्रास्त्रका सम्बद्धा नगरेनी स्वतंत्र्या केश प्रकारणी होय हे हैं के समजावना सामी विवेदपूर्व १५ पाटोबी बहुँचयो दम्बार्मा आसी हो. प्राह्म-ब्यूमिन-नियमो सामै प्राप्तन-गुजराती का गुजराती-प्राप्त सन्दर्शनेस दवा बातनो प्राचीन-क्षत्रीको अञ्चल साहित्यका पाटप यस-परवा बांबक रसिङ बङ्गामा एव जामी कारात्मी कारण छ साची मानुसारा-मूज्याची हारा आहुत जातानुं विदान नेठाता इच्छा भन्नानी विधार्थी -विक्रार्विनीओने साथ-साध्येत्राने का करूप राज्योने IIII मा शहनाचा मर्त्तर्राधिक दिना मार्केपच्छाका अनी जपनेती यह इती भने नहें देसक प्राप्त सारिकार्य प्रतिकास स्थातिका विशेषका वसे एम पार से

प्राष्ट्रसमाया अ को व्याप्यी कात्र स्थानविक मात्रा कारणी प्रकृतमा आरची लेकाना आरची देवाना किया आरची प्रदूषणा कर्मा क्षाप्यी कारणी प्रदूषणा कर्मा क्षाप्यी क्षाप्यो क्षाप्यो क्षाप्यो क्षाप्य क्षाप्यो क्षाप्य क्षाप्य

वनिकासी वर्तिकासी तथा परिवाहिकासी-वैटी-दानीओ वर्षेरे के मापने मोनदी-समनदे हरी बाल-यागलको ने नागा नागीदी हरी अधानस्था विश्वेत प्रश्नास निमा स्वयुवारी में जाया साएच्ये सहमार्थ समझती स्वे बोच्डा बालकी इती-से कारनी प्राचीन प्रावृतसंस्य रहस्तुवरी उच्चारानी पात्रकाली क्योग वायो कर्याचीन वाहामी बारायमे बाहाची वैद्ये कार के नेदी से माध्य कामधा गाउ मारण प्रध्य करते बोक्ने-राष्ट्री बाहरू-गृहराणी दियाँ मारवाणी मेवाणी साक्ष्मी सराही संयाणी बपेरे निर्मित्र वेची व्यायकोची तक्षणकाक पर्वापेने राजनावी कानान करते होत से शहरमानको सम्बात करायसक ह शबीन संस्था बारकोमां अने जन्मकादि शक्तीमां वेरणमेशी विद्वन्त्रोती इत्तरसम्ब वियोदनएं जाहरान्यस्य असे हरणस्थानिकः, तसी संबीको चेटीको सनिकासी को बीजो बेळारेच पान्नोगी बनगरेको इंस्तुन स्थितकरी बीजो आइटानावामा क्यार्च उच्चार को काक्यारे समजवा जारे देशन प्राचीन बंद्यार व्यवस्था -बाबोर्ज उराहरू राहेंके कार्यांचा प्राचीन प्रा<del>व</del>ण करोगों को बीजों कानीके राजनिकार कारण आरे एन अस्तानाको क्षम बसरी है.

स्तरपी मंद्री हुए। वृष्टी पूर वृद्ध प्रकेश, उत्पन्न स्वयन्त्र इत्पन्न निम्मं क्षेत्र हित्ती को बांधिन दिस्तरायण करणा निम्मं क्ष्मक मान-जो क्ष्मार्थ वर्षाण्या राज्युल्य प्रदेश मानाम् स्वाप्टी, अने क्षेत्रपे वृद्धेने वृद्धेना वीमा प्रतिकृति एव क्ष्मद्वत्र हुँगी कर्षे स्वाप्टीर्म वृद्धिको क्षेत्र वृद्धे के क्ष्मन्यवृद्धा स्वाप्ट्ये दिक्का क्षित्रक वृद्धीन विचारित कर्षाण्या करणाव्या वृद्धा क्ष्म्य वृद्धा क्ष्म्य । वृद्धिक व्याप्टित स्वाप्ट्या स्वाप्ट्या व्याप्ट्या स्वाप्ट्य एतः वर्षे देशाव वर्ष पर्वत्र कर्षाण्या कर्मा क्ष्मा स्वाप्ट्या स्वाप्ट्य एतः वर्षे देशाव वर्ष पर्वत्र वर्षे क्ष्में क्ष्मा व्याप्ट्या कर्मा प्राप्ता स्वाप्ट्या एतः वर्ष्य प्रद्या वर्गभेदेश बठी देशों केवा परिपूर्व वाली महानुदर्गाएं वर्ग-देशनमां धारण वरीके पर्तत् करेकी-बारोकी ए माना हुए एम बने रंड वाली को महानी वर्ष कोडो पर महान करकरा ए माना हुए। इसों हुने देशमा कार्तिकालाली हुन वर्गपरीए-पहर्गरेए पन देशना मर्म-माने बांकी हुने, देशभी नार्वेची विचारी केव्योन वाली दावराज्यमा कर्मानामार चुन्यनेक्षमा बाजाराव्य के सुद्द-विद्योगची-मालावाली हुन्तर रच्च करी दे एक ते व सारा हुए। कोडो के बने केमला बनुन्तराज्यों के तिराम्बद्धनी हुनोया कर्माणा हुए कोडो के बने केमला बनुन्तराज्यों के त्याच्याचा एक के बन्ता हुए। रचना मां मानाची महारा बने उपयोगित्रा कारान्य कमारा है वर्ष मानान्यों में मानाची महारा बने उपयोगित्रा कारान्य कमारा है वर्ष मानान्यों में मानाची महारा बने उपयोगित्रा कारान्य कमारा है वर्ष मानान्यों में मानाची महारा बने उपयोगित्रा कारान्य कमारा है वर्ष मानान्यों में मानाची

असर-विक्रल-पारणावली पहेची आहरियां आहेरियां प्रषट को बनेल होनावी कहि पुल्कवियों करेतुन होती वर्षी

बार्थ केंद्रव-अग्रसस्य क्यूदिशारी विश्वतायेथे, किलाई परीरकार कामार संनोत्र कारण सीना सथा साहै पोरान्य अपून्य समय न्ये शरिको बहुनक्षेत्र करी विविध प्रकारती स्वान से मानाओं करी 🕏 रासानी जान केती के क्यून्टरकोडी वालीतं. विरास हातवी मरेन्स क्यूच्य क्रानास्थ से कामाने एत्य जीवना-मान्ये प्रश्त करते नोतर, क्रेस बाब अध्ये केस बोहर करे बीवामोने धारण जोहर. ए करारे गरी शके हैं से आहे के म्हाशाय विकासी हरात सारत्यका के के आधानों रचायेण यह अने यह प्रसिद्ध कने अप्रतिमा विभाग बाविताने परम-पारम तथा प्रवासन-प्रथाति काँका से पक्षी करी शक्ती. धीय म्हना-बाल बावाची आवेला विकेल लुकर कहा आवर्षीयो प्रकार शरकारी प्रकारों, कार-केन नर्स उक्तकालों कुकारण क्ये और अंतीर क्ष्म पूरा क्षेत्र क्रमें श्रांत क्रमेर संस्थेत्व क्षत्रा विकार प्रमानामा स्थापक होने अधिक संबंध को लोक वर्तने अपने स्थाप सकते. द्वेर शुपुर को शुपाले रूका समाने, समाप्रकी साथ को पारित्रका ओक्स गार्केन बात देवती दावादे, पर उन्नाम विभीन सने काकी महिला ब्रांस इटलाने समाध करी धावाय, शाल धी व, गर माध्य क्रम पर्वति तक्ष्मता कर्षे प्रशास, सन्न ऋत्यो-श्राप्तवको स्तरं तक्सविकामोधी नीति-रीति, शुरुपुत्री करे प्रशासीमधी बदासरम्ब रहेची भागी गेती र्फी रे मन होती जीवप रे मिध्यतम् बडी सम्बद्धन हो ॥ र बाहरत्ते असे मामने देश प्रकार्य होत के हैं से कोरे ब्राह्मशार्थ अनुकृष्ण की. रा-इसने अंबर्ध का क विवय कराने करते विवय संविधान चित्त-दमर ब्यादि अनेद प्रकारम्य जाण्यातिगढ वार्मिड शब्दोयो मूक्रमाद्यमा— ग्रम्बारा रहत समग्री शक्तको.

से साथे दिनिय इचितारी सुन आसामधी स्रोपनोक करणायामने इप्लालक पद्दिनी करनात करणायामेने मा माहल साहिरकांची विधिय अस्पतुं ज्यावानुं सीवया-सम्मात्तुं माहरे एके छेन छे माहलेगायामन वर्षपंत्राची सने सायोग क्या-पद्दिकांची पत्र वर्षु शिक्ष्य मेळबे सम्मात कर क्या क्या पहिला क्या क्या माहले माहले मेळबे सम्मात स्वाचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा स्वाचा साम्या-विवास स्वाचा सामान्य मीली सामगीली व्यवस्था-देशमो आर्था मोहलेश स्वाचा सामान्य मीली सामगीली व्यवस्था-देशमो आर्था

 केरा प्रकारना होण के हैं के क्षेत्र स्वत्यस्त्वणी एमयी याजन, बोकन साहित्य बोच-गुणोग बोच-मार्थ बोच-निहारि, बोच-महेत्राचे स्वत्यपित सुन्नाचित्रों स्वतंत्रते क्षेत्रों स्वतंत्रण बदरा माहे बाहरा साहित्य से सुन्तित्त्रण केत्र के

र्वेस्ट्रन साहित्यमं उपनां बचना बेनी साम्ब्र तुष्टा प्रवाद एती बाहर साहित्या कामलं, सरस सैंसीनी प्रनिवासन करेगी अमेक देखील एका कार-कारीजीजो वर्षको गावक-वार्षिकार्य राज्य-व्याराजानां को राजी-महाराजीकानो वर्तनो छात्य पहेरवेचो अर्थनार-माभूतमो भाषा तेकार स्वकृतिक विकास स्वतित कवि-तम्ब सेन्स-निवादोन्यं, निवित्र ऋतुवोनां शक्तांनां सहस्रायपेनां सरिताजो नपेपि पुरवस्त्री-वामहीको वयर अकाककोशं कर-कोश-वय-विद्वारोगं वर्तनी, बरबर रवरबर, केशर आदिशो, श्वचतकर शिलार्ग बर्जियो बर्जियो रेनामं रक्तो सम्बद्धानमं अत्र आकार-आका वर्षनो देशासामा रामसमानीमां बर्कनो जारफ-देखकोमां बर्कनो पर्वतो करवीमो कारियां वर्करी व्यापना विराशं आपर्यान कर शेर्य रसिफ क्रमे विकास क्षम नामे देशों के एंजीवाया कुलावा सटपावा विश्वपाद किया क्या साजवास बालबास सामित विभिन्नाम कालीया ज्योतिक क्षेत्रक मनरे विकास प्राथमिक जानगा बोस्य दरकेको एन सन्वेत्रक करमारी कार्यांची गढी वाचे हेम छ अलों धार्य सम्पर्धेना चणको बावे हुनेतोग किया वाचे इस्तोग विदय स्वयाको अने स्टबर्नन्यो बावे हुन्दोनां वर्जन्योजो परिचन एक ए सारितका परिचीतनकी बान हे भिषेत्रभी राज्या संस्कृते त्यान करता आहे. बालवा सौरको बालवा मार्ड म्बर्ग फरदा कीम्बी महत्त करना शारे त्राकृत सत्त्रामन से तादितन-क्षेत्र क्षेत्र कारका कर्ष वोद्य

प् सराप्रणी प्रथम प्रवेष करना करणावीयाँनै प्रश्वन-विद्वास रामाद्रारी का पुरित्यक अनेक प्रवर्षी र वार्षा वंत्रम को काता के के प्रया-चरत्यका का वर्षामा बुग्रमी प्रधानी का प्रयोक सराया च्या-परत्यक्षी माटे वर्षात्र हुनीम्य प्रथंच वह प्राह्मत वार्षिका क्ष्युक्तम रंगाला क्ष्युम्बना चरकनी साम्बन्धान्त्री वाच एवी हानेच्या साथै रितं कं

वकोद्य इ.४ अस्त्रकी पृत्रिमा य खाळचीट्र सगवान गांधी [बनोपरा प्रकारिकामित्रता कैनपेटित शुंबह बुनिपरिंदीना कर्षमाम्बीन्य पोस्टमेन्युनेट क्ष्मापक]



### । ॐ व्यं काः ॥ मार्सगिक

बरा प्राप्तन निराभ राष्ट्रप्रवा " हरावन वर्ष प्रतिवाम प्राप्तकेय सम्बा लामधिक एवं निशास जब्दाने के प्राप्तन एटके हुं है जो कांद्रियन केंद्रपत्ते केटको दिन्दी है इत्तरपत्ता जाने केंद्री कर्षक ( कर्ने तन्ती नेटको निर्देश एटक हरवादि का कालको विकेदन क्षेत्र प्रत्येवन्तिक वे तोच कांद्रीने हा है.

लाने व हेनायं.

माहत यस्त्रे ही प्रानिदेश के को बहु तेण हे हुए आहत बहेदार व माहत प्रमान करते तिहुत वहां हुए। कहा, बहुं आहातक को की महत्त्व एके इस्त नामक माहत कहा कहा के का है आहे ही निर्दार कोच्या रहेक्स हुन्या राग्ने, कार्यन महिन्दिय की सारा है माहत्व स्टोबार हुन्या राग्ने, कार्यन महिन्दिय की हुन्य हुन्

स्वयुवानेने न्याया वर्ष गोंचे आपने था.

हुनेक्या आरोजावां व्यावनात्री वर्णकर वर्ष पानेले व्याव के व्यावकात्री व्यावकात्री पानेले व्यावकात्री के व्यावकात्री के उन्होंना के वर्षानं न्यावकात्रीय के व्यावकात्री के व्यावकात्रीय का व्

मा अस्तराधे करातियों. स्लेक रहे निवासे करे क्या है. स्टार्ट

वर्ष्युंच करिते हेग्रों सहस्य रहे छ. क्यांनि कोह कोह एवळ अझ्रेरियोः को बेह्यार कोल छ क्यां एव अर्जुंच्य करिते ह स्वयंक नहीं कारतक है हा स्थ्यान्त संस्कृत परची अक्ष्य विभाववानु होनावी होने कई केनाने छ सर्वान-दोनहान्त्री अनुक कारूक प्रकारों केरकार कारायों अहे के परकर केंग्री केनावी आहुन अक्ष्या कोई क्यांत्र

माहरतनी स्युरपश्चिमो—चर्षि सद्धार (वर्ष) बस्यान कर वर्ष भीतमिताबुरिएवर दियम (इरा-११२) मां प्राहरती वे प्रशरे सुरपिठ वर्षेत्र हे श्वभ्य स्था ता त बचनो—

'संकारमान्त्रत्यूमां व्याक्षरणाविभित्रसाह (हि)ल संकारम सहस्रेय संकारणायार महिता तक सब सेव वा माहरत्य्। कारम कोशी संस्थान नहि गरेसे बत्तक्ष्म सक्त ब्रन्तमा के स्मातिक बरुक्तमार त प्राधि गहेमाव स्व क्या बरार्स प्राधित प्रिटिस देव त प्राप्त गहेशम सवस तो त तो व प्राप्त गहराय स्व प्राप्तमी के प्रभावी व्यापित वर सीर्य स्व प्रमाय स्वाप्तस्य प्रमा सिद्ध देवार्य सद्धामायाह साधी-स्थादिक्षमाहा प्रमु-पृष् कृत प्राप्तत्वम् स्वप्त स्व स्व स्व कृत प्राप्तत्वम् स्वप्त स्व स्वयं स्थाप स्वयं स्व कृत प्राप्तत्वम्य स्वप्त स्वयं स्थाप स्थाप स्वयं स्व कृत प्राप्त स्वयं स्वयं प्राप्त स्वयं स्थाप स्वयं हान त प्राप्तन स्वेषा कृत्य स्वयं प्राप्त स्वयं स्वयं स्वयं हान त प्राप्तन स्वेष्ठ स्वयं त प्राप्तन

प्राष्ट्रपती सन्य अधी पन प्यपतिभागके हे ६—

'महत्या स्वमावेन सिद्धं माहत्तम् वयथा महतीनां सापात्पत्रतानामितं माहतम्' वथ-स्प्रीती समास्ती दिद्धं स्रोत ॥ मान पहेंदाय ॥ व्यवसाम्प्रीति सेन्ते सापात्म जन-संस्ती वे सा (सप्त) आहत प्रश्ले ॥

प्राकृत साहित्यकी बहुछता

माप्रसर्मा तिभागम-वैद्येनां पत्मत्वित्र आप्मोनां (केतं के

-राधापकारी काक्षित्रभुत व्हावशानिक प्रभुत्त वरामनिकार को सावारीय कार्य समार संग) एकामी का माहानायको प्रदासी करामा कार्यी के सा परंपाय का विकेष मानामी परिणे को सामनी है हुआ भावमी क

मुच्च विद्विवारं कास्तिय-उक्कास्तियंगमिञ्चेत । बी-वास्त्रवायकारं, पाइयमुद्यं जिषकार्येत् ३१८ ।

सारानं —कोशांवि अस शुरुकारत, शहेरार्याची राज्यको सात मेकवी एके सेवा हेर्द्राची शरितास्त्र विशासना-वार्याक उपकारक साव-स्था विद्रार्टने विमेक्शेप, प्राव्याना कहेता हे वहाँपे —

सदमागद्दार मासाय मार्चात मरिद्वा " [मीयपतिकस्त्र-५६७३] सत्य मासद बरिद्दा सुसं धर्यति गणद्दरा निवय" [मादस्यकस्त्र ए ६८]

पोराजमस्याया न्यासानिषयं इत्यह शुद्धं " सस्यवि कामनल्यों होनती जिल्लाको अपनाना जानमान नहें के कर्म करता ठेर्ना पुत्रे के क्ष्मी वस ठाई प्रकृति अपना कर्मात्र जा दो के स्वता कर्मात्र के क्षात्र के स्वता प्रकृति स्वता कर्मात्र कर्मात्र क्षेत्रस्मात्री होनेकारि स्वाहान्त वस्त्रों — क्षात्रस्मात्र वी हेन्नेकारि स्वाहान्त्र वस्त्रों —

मत यत सी पुसि मागव्याम् (८.४ २८४).

यद्वि योशामण्ड मामह-आसा-विवये हवा सर्वे इत्यादिवार्यस्य सर्वमाग्यमायाविषयस्यमानावि वृत्रेण्यद्वि भाषोऽस्येव विभावस्य वहसमायक्षम्यस्य ॥

कर्मुक वक्तोची एक बाव के के-जनसम्बर्धी ए कर्मक्रक के-क्या देशके क्यीजामिक्सार्पम् एवके के-क्याक बंधी-जनवर क्येरे म्हणुक्तो एकंग्री के व्या (बक्तो) है कर्म क्यान के

प्राकृतमां विवेशक साहित्य ग्रं**यो—क्रिय**म उत्तरी

िर्मुष्टि सास्त्र क्रमें सूर्वि समेरे विशेषकरा प्रेमी पण प्रमूहामाणामी रणावसा के केंद्र किंगामाना विश्वकरण प्रत्योगी स्थामलाल के केंद्रभू ज कर्षि विश्व स्थामले केंद्रभू भारत्य होने स्थामल कें प्राह्मतामी विश्विष्य कींत्र सुष्टी—बीच विश्वेष प्रत्योग प्राह्म-

प्राहतमां विशिष्य जैन बयो- बांच विविध स्वोमे प्राहर-संप्रदं स्वीचे त्वान स्टब्सुं इ. जेस ब-सङ्ख्या दुरस्य क्यानम् वाचरिप्रस्तो सर्वोक्षेत्र-तुरस तुस विवक्ता संस्कृत सेवा बयह क्यानिर्मित्त चारित वार्ट.

अन वर्गानती पुरुष्मंतवसभी द्वारखाना वीजक्य प्रज्ञान कर्मा पीर्मोक्षरदात्रि करिष्यता वर्ग्य सक्तराजे सम्बद्ध हती अने वेजावी द्वन्त ध्वचपत्रे द्वारप्राणीती रचना कर्मी हतो अने से क्रियहीं नामत्री जनस्य अक्रेश्वल छ उन्हों सहा एव ग्राहन ज एतंट क्रवाम

লাবী ভ চুলা না থানি বিপত বাংলারীর যা বিশানত্ব বাং টুবীর বাং? বাংয়ে অধ্যাধ, আনুত নায়েনো থকা এই বঙ্কার কানো বাং নির্বাভ প'—কমী ন্তিব লাবে। কাম তা নেই ছিল নাইন বিন্দুৰ দুবার কমী আন করে কান আন্তর্ভা কৰাত কাই ও পারত পইবাঁত নামী আন্তর্ভানি করি কান কল

क्वी जान कक्षं एक छना आको क्वाड कावे छ कावड करेडांड त्यारे स्थानमा कारे हे जवां कः— स्थानित्यारित्यारित्य पथ संकामान-१२ ) प्रदावरित्यारित्य , , , ) सम्प्रदेशकार्या (बा इरिनास्युरिता पव ,, )

प्रसुद्धरीकरिष ( श्री क्रेयससाङ्ग्रस्य प्रम ) प्रयाननाञ्चरीत (क्रम्यकरीक्ट्रम " ' ' ) अमारापाञ्चरीति ( श्री श्रीम्यभावनित क्ट्रमतः ( ) भा जनते श्री श्री श्रीम्यभावनित क्ट्रमतः ( )

कुमारपारकरित विरिविधिकालका इत्यादि उपस्था सनेक केन प्राप्तन सेनो प्राप्तनमाराजी व्यक्ता व्यक्तित करी साम हे.

हैनेतर काव्यश्रयोगं माहतुं स्थान-विश्तास्थ

हर्श्व-कारास्त्रकारी प्रश्तीनारा-तेतुर्वत (एनकार्य) वाकारीराज्यक-वाकारी क्या स्वास्त्रका एक्सेकाराय-व्यापित्रकारक क्रमेरवर्वकार -विस्तानकार्या, स्वयवस्तुत्रवारा क्रीकारीत्वका कोरे केरार विज्ञानेत्र कर्मक क्षाणी सहस्या सहस्य कार्य क्र

माहतमापामा व्याक्तक वंबी-

र्थ रहार्थ-स्टब्स् एक क्रम पाणिनिका-कार कारण वरकविकास आई-१५-प्रकास विविध्य-संस्था-ध्यक्तनुपानम् हरीने ब्रहन-य हरा बान्सन भौद्रेतकाम् विद्यान्त्राष्ट्रकाम् गावदेकान-शहतमधील मा स्थाप्टल गुर्वरेका निर्दे era amiferati ficultult कार्यभक्त-कविकार **अ**र्ग-कविकासकात वीतंत्रकातारी क्षास्य **स्थापतं स्थेश निका**तः ध्यस्यै वरकृत-गामरशासन्त्रस क्रम्बह्यसम्बद्ध समाध्य स्थाप-रक्य बाइमा धानाव तरोक पार्थम के जन्म प्रारंग मा श स अपना दिला करना के

बगरे मधेक देन दमन भ्रतीत न्याकान ग्रेमा घाटदमाराह्यं विद्याग वेकारमा साथे शास्त्र है

प्राप्त काको — यत महान क्यां क्यान्स्त्री व तैवारी, स्वीकारण राजर्ड क्यानी क्यान्स्त्रीत पांत्र स्वाप्त की मासाह्या को नीनामा । क्षीता, होक्यावर्णनेत्र व वेशी मासाह्या को मारतारोंनो पुरुपेन व्यापा को मात्रकारों पर महिला काने के

पनिनिष्ठ 'आराकक्ष' वह सुधी आपको राज्यक्ष क्युं नहीं कर्य पन भी सन्धारित सहाराज वीदिवेजसूरि स्वाराज क्यां केदानाह वर्णमा उन्हेंस्सो हारा, केर्य एक समान्त्रे सहित्यन असन से. प्राष्ट्रतार्थरोना प्रेयो—स्वस्थन वेशियावय वर्गपृष्ट्य प्राप्तमान्त्र शिराम्बर्णक्र-(याद्या) ग्रीमिक्ट-(अ वर्गम्द्र मित्त नारमुक्टव एम नाम्यो बर्गेक्याव छ त्या भी हेमचन्यार्थार्थर प्रेरीह्यास्थन नशेरे

बरर क्यरेश दिगर्शन उपरवी समग्र शक्ते के शहर-साहित्वर्गी केटपे सप्तात से

भाइतमोषी अन्यमापात्रीना जन्म या इत्तरभाषाक्षये बाहुतर्जु परिवमन

वेम एक बचारत वड स्थानमेश्यी निवित्तमेगानुं स्ते व्र तेम एक प्रकृतमारा स्वानमेगा काव संस्त्र वादि निवेच मारामंग्र पाने इ. सुव्यं की ब्रोमा सूर्व बच्चा-

सेवनिर्मुक्तक्रिमवेशस्यक्षयं सहेव य देवविद्योगत् संस्कारकरणा ब्यस्सममादिनविद्येशस्य सम्बन्धायुक्तविस्ताः सन्तिति । अतः यद्य द्यास्त्रद्राता माहनामाद्ये निर्द्यतः तद्ये संस्कारम्बद्धति । वाचित्र्यादिस्याकरक्षादिनव्यक्त्यत्वन संस्वरत् भात् संस्कृतसुक्यतं । तथा माहनवायेष किञ्चिद्विद्येशस्य पान्यागिका मन्यते । तथा माहनवाये किञ्चिद्विद्येशस्य पैराधिकम् । प्रिणीभन्तेन्यवि माहचसायपं । तथा स्वान्नमेवायभेद्या ॥"

(क्षि रातका कारणाक्ष्म पर समित्रापुरत नियान हु १९१) मार्गान- एक रारणाजा नर्पातपुरत स्थानी देश से एक अस हत

सायत- हर नर तहा समानुष्य कक्ष्मी केस ते एक जब हत एक दिन नि के समझ हिमानी विकेष नक्ष्मी सहा अर्थ कर्य मेरोने यो च वर्षीय हेनु ते व महि साइन हरून हरूने यह के है अरूप ज वननी एने के महिन ए एउ जुब हम्मी सरका हर्य करनानी तर्यक्र क्ष्मी मानुक व वन्नीत च वानित हैन व्यक्तमान तर्यक्ष के त्या हैना केसार समान्यों के महानुक हा करी बीरहेनी को महारोग वाच है. सर स्टब्स्ट स्टिशन स्टब्स्टिस्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट स्टब्स्ट

का बादमारे, परिगत याकारियतः चत्रवाहोजनस्य प्राह्मकाणार्मः सन्दर्भकातः च

"सपद्धामो इस वाया बिसंति पत्तो य सैति वासामो । कति समो दिय कति सायराधा विवय बसा ॥"

स्वार्थ — बच्चां राणी इंग्र चहुत्रारं थे छ का चहुत्रारंथी शैनके छै देश बड़की दानी (चनन भाषाव्य) प्राष्ट्रणाई ऐसे छे को प्राप्ता-संभी शोकके छे

"यद् बोनिः फिड संस्कृतस्य " य वच्ये तस्वये करे राज्येक् सर कार्ये के के-डुं कारोग्रॉड वर्डु हुं वे प्रकृत ए कंत्रनतु उत्तरि साम क्र

कक्षिण-कर्मक भीनत् हेमकरान्ति महत्त्वव वेशा एव स्तोधक कमरामुद्राक्ष्मम् वेशे शासीनी स्तति कर्मा नमावे हे है---

ं सर्वभाषापरियातां हैसी बाबसुपासमहे <sup>त</sup> एउडे क-सण्ड-भाराकोतां परिवास सम्पर्धते स्त्री कार्य (के व वर्षेत्राच्या) होता है समें कोर्य साम्य क्षेत्रका की रे स्त्री क्षार्थ साम्य स्त्रीय स्त्रीय

मर्ज ब्राइन कोशम है,) हमी ब्या शानक वर्धण होए. उपर्युष माधानी विद्य शान ह के-शहर वेस्टर सिदेर व्यापनी

बैंग्डन वसेरे मन्य माताओं क्ये परिवसे हे

माइतनिधानमां रहेकां अपूर्व श्वदेरातो अप्रीयसम्बद्धाः स्थापनासम्बद्धाः स्थापना बद्ध प्रदेशतीनो क्यांनो कोई पत्र होत्र हो शहर मात्रा के कहिसिमहा-व्यावका वर्गरा वेदकारी निरोक्त सम्मानस्याध-स्वातुत्ता सोनुवर्गना कर्वनुकामा महरातीतात्रका. कहिसिमस्यातुत्रा-व्यातीनिक्य स्वरात वा कैसीनंक सञ्जातन

काहिकासस्यातुना=प्रकारिक्षिक समुरात वा किटर्निक समुरात-भोरकतः जा निपको प्रतार करणे आसहमापिनी---

जा विरक्ष प्रवार करण जातप्रमापना— "अक्टियस्वावुपर्वं, प्रसायांग्रियापिनीम् । सर्वमापापरिकतां वैसी वाकसुपास्मदे ॥१॥

स्वभागायायाच्या चार्या चाराच्यात्राच्या वर्णाः भागम् — इम्बेचम्ब एवव व्यक्तित्राम्पृरि महाराज स्विम् इम्प्यु शास्त्राच्यां भी मित्रशायीची स्वृति करातं बोक्या के के स्वकृतिमञ्जूत्रीमस्वतं बन्ने समेत्राच्याचीक वर्षे वर्षे मञ्जूष्यके बारण करवारी तस्त्र करवार

प्रवेशस्य कर्यां क्ये एक गायनामां शरिमाम प्राप्तेती केरी बैधी मानीयी क्ये क्याप्तम करीने क्येके इत्यापित क्ये राज्येका व्याप्तमानकार्य प्रकृतने प्रकृतिमहुर स्टीके क्ये के—गिरा काव्या दिम्पाः प्रकृतिसपुराः प्राप्तासुराः राज्येका साथक दिक्य क्ये प्रकृतिसपुराः क्येती प्रकृत क्योरे दानि देशी

सहाराज्य कविकादम हात शाहराज्यमध्या आवुर्व साटे पोदाबी काराज्यकरीमां समावे के के---

बारतबर्देको ज्याने के के---"समर्थ पाइयकार्थ पढितं सोठ च के ल जाजनित ! कामस्य याचर्याच कुर्यात ते कह न कार्यति ॥"

कामस्स्य वचवान्त कुमात् व कह् न सहसात हा" (व्यन सहस्रके. सन्।) सन्दर्भ-केली सम्म वेशा सम्म साम्य क्रमा

समार्थ—हेनो अपन चेता सहर प्राह्म कानाने मनता का सांसरण त्यों को कामतासमी मितवा कर्य करे हे होनी कामाने केस पारता सभी है सरस्वता-आहम्मां योक शुनेकरा-श्वयाहाम-कमानियेक्कारिता वा हुक्ता कक सामकी नार्यक्ष वर्ग ! प्रावतनी सामानिवेक्कारिता मार्ने सुन्ये विद्यर्थ गिर्द्शियकियाँ सामानिये—

वास्त्रवासियं सत्वोध-कारियी कर्वेपेशसा । तथापि साकृता मापा व तथासिय सासते ॥

( दरमितिवरायं वरणा पीर<del>वंच-धा</del>क ५१ ). भारार्थ —बाह्यांदोने क्य हुंदर सद्दोख करमकारी **क्ये क्यके** 

स्ये देशी प्राकृत साथा 🕏 स्थां एवं धूर्विन्त्योत्रै दे स्थार्थ स्वी-इने माहक्यो धूरोक्या आटे सीमाहैस्टल्टि स्वाराज्यां वयाची नार्देए—

हर महत्त्वा हुवक्या माट मामह्यस्त्र स्तुत्वका वयम कः।।-"सङ्गपद्रस्यस्त्वं केण म याणेति मंत्रुविया ।

सम्बाद वि सुद्दनोडं रोजेमं पाइयं रहय ॥ " ( वर्षा स्ट्रस्त्रा)

सामार्च :— मो मारेबाएरि सहाराम रंक्यो माहारान्तरी वधमें सारकार एकामो हुएँ मामाका नहें के व—मंदपूरिकाम राष्ट्रकी इंतरा राज्या करें। मारी राष्ट्रकी मार्च स्ट्रीम करें। मार्च में एंडराज राज्या करें। मार्च राष्ट्रकी मार्च दिया रहे के मोर्च स्वाप्त क्या करी रहे के मार्च सम्मान है के मार्च स्वाप्त सम्मान है के मार्च स्वाप्त स्वाप्त

- कोमकारा पाइएकमका। धोकी प्रकीमका-पद्धाः कमकरस्य मन पुण्डे हेती, कृ पृथ्याचीय की सक्तेयर वर्षसमेगी सरका। मुख्याजार्था, ध्राचीनकामु स्वृत्यां क्यांचे के कि

ि "पर्यसो श्रावंभावेषो "पात्रस्वयो वि होत सुरमारो ।" पुरिसार्ग सहितानं केलिकसिक्तरं तेलिकसिमार्थ ॥ भाराच-संग्रुटन रचना ज्यारै कटोर होत्र हो स्वारे प्रतृत्त रचन प्रभार वन्नै चोमछ होत्र हे क्योरात कन गुरुमाराजमाँ केरते क्रमार पुत्र कने श्री दर्बतु छ स्टब्रु व क्षमार का वे भारामा गामन्यार्थ च समझ्

दरमान्त्रय नामना शहर श्रुमानित संभ्याते एक करि हो स्वी

क्ष्मी प्रयो ए हे— "वादयकरनुम्बावे पश्चिषयमं सक्क्ष्यण्य क्षेत्रे हैं । सा कुस्तमनत्वरं प्रस्तुरेण अपुद्वी विजासेद ॥१॥

माराज — शाहरकारका कराव प्रवृत्ते वे की ह संस्थानी प्रापुत्तर कारे के सूर्य शरीवर बुलुसरी क्षेत्रक दावाने दरश्यी पूर्व सावका

केंद्र इस करे छ समितवा रूपणां खेर राशिव-कीम्प्य क्या मान्स्त्रे रक्षित

वर्षे कतु. ! 'समिन महरकारण जवहयणवस्त्रहं सर्मिगारे !

'समिर सहरकारण जुवह्यणयश्च्ह समितारे ! सन्ते पार्यकावे का सम्बद्ध सम्बद्ध पवित्र ! ॥ (१०वश्य कारा प्रहुत बदस्य)

माना-मिन्न, सर्गात साचार्य पुरिन्दने दरस् रेस्स संस्थान इर्डायन को सानुर स्थान लाइन स्थान के इया दरे । सहिसामनायसस्थान शहार्या केहरनो स्थापन रहेगी से के सन कीकोण 'मुक्तियायसस्दत' विशव वारी एप्ट कीन

है दे-तारः शहनकाम कीर्यंत यु तिर श्राव छ वर्षः ग्रह्मोगर रन बनावे छ दे--पद्धानि किस्म संस्कृतसम्बद्धारको सिद्धानु पन्नोत्तृतेण

परके प्राप्तः ए कंग्रन्तां वर्गानाता । अने श्रीमार्थ रिद्या

समानने गामे हे तथा जिसीयां हु माहार्त्य मासार्थ ए वयत नय महिन्मानोत्रस्थात प्रातित करे छे. प्रातिमारता व्याप्त विचारभविष्यस्य प्रतानोची वय प्रात्ता तरस्य मासार्थ होत होते प्रवासीय-धार्यक्षण व्याप्तामात्रम्य

शास्त्र राजनी कुमानकाले गीवे प्रमान प्रतक्षित करे हैं "सम्बद्धे कू स्वरस्थेनेषु कुविन्यों नाम राजा। तेम प्रवप

संयोगासरक्षत्रमन्तःपुर पत्रेति समान पूर्वेश । (श्रव्यागिता १ ५ )

भूयते च इन्तरेषु सातवाहनी नाम राजा। तेन माक्ष्यमापात्मकमन्त्रपुर पवैति समान पूर्वेण। (कान्सीमांता ह ५)

स्पर्ध-संस्कृत है ने-स्पेत्रेस्त्रां इति वास्तो एउ होते. वेने पराहरों को श्रृंचाको विभावता सहरों हात ऐत्यय अन्देवरसं नामनिका प्रदर्भनो हतो.

नद्री संस्थान के के-इलाहेसमां शासकार नामने राजा वची इसी, स्ने पोसाना कन्द्रजानी बाहरानासामक सिवम सन्सम्बर्ध हसी

दिसम् प्रहाराष्ट्रय वार्षमाम प्रचारी कविनताम हाळ प्रहाराजार, हार तथा वेपीराम वार्थमा वार्षमान्ती यहा कवाणांनी यहा प्रहेणी को काम नाम समातानी नाम मोतानी, प्रमाणावाधीना केपील कर्म हरी.

क्षेत्रसम्ब श्रम्भी बहुमानी वामेशा श्री वार्तिश्चर स्थारावे एतिक स्पेत्र देशक विकारमाधी 'तरहाब्दती' बावती वे क्या एवं इत्ये ते क्या ते व राज्याना राज्यास्थारी विद्वारीमी देशनी करूब (रोप्ते) संक्रारी हुन्नै, क्षेत्रे वेशी क्षेत्र साम्ब्रियोष शुक्तप्री प्रश्नेत्र स्थारा एक इसी हुन्नी, प्रतर्थेव निमित्ते राजा विकासी आदावी 'रीतुष्यव' वास्तुं प्रतरूठ महाकरूप वर्षित व्यक्तिराते एवतु हर्तुं. राजा महेंदराकारिया राज्युव वर्षि राज्युवेवरे 'प्रावस्थाव'

राज्ञा अर्थेत्रपकारिया राजपुर कवि राज्योकरे 'प्राप्तस्थाप' स्परिती रकता करी हती असे राज्ञा छएछवी छारा छम्मानने पान्या हता

स्प्रायः भावदेश्या स्टास्तर्जेश्च्यास्यां एषु स्वत्र के है-कि.प्रमुख्यं माहचराज्ञस्य राज्ये प्राकृतसायिका' एत्वे बावस् एतमा राज्यां क्षय क्षत्र बोक्सरं न हर्तुं है न्यान् क्या एत्रसां सहस्प्रात्मा देकता वर्षे हरस

स्तारामा बहारामां पाले इस्तिय बच्चणितात बासना सामन्त होने वे बचैराजनी स्वानि पाल्को हुनो के पोल्ला न्यार्चणी बौर्तिस्य प्रिमेनों समन्त प्राप्ति हम्बन्ध स्वतं हुनै

प्रपर्दुक्त प्रमानो उत्तरको एएक एमधी श्राप्तक देम छे हैं— प्राप्तक भव्यता श्राप्त सहस्रामध्येनै प्रसूच भावा करफ बेची

हेम हते. स्ट्रिक सागरता प्रकासका व स्टिनमेनो कर्णात सुमानिनोतो स्ट्रायस्थ्य है का संस्कृत सामान्य क्षियसेय प्रकट ऐंद उरणान स्ट्रीक

"महाराष्ट्राध्ययां मार्या धङ्खः प्राह्नते वितुः । सागरः स्कि-रानानां सेतुक्थ्यादि यध्ययम् ॥

(कविदेवीहर कम्बार्क) मानार्च नाहाराच्या कावल्ले पामेकी मानार्व विहासी प्रदास प्राप्त को के के विवासम्म सुगावियोचम स्थापने साम क्राप्त के के

मान्यमासामी हेनुसम्भ सोरी साम्बो स्थार्थ हे सारुप्रियता=नाव्येक्षण बोकोगी शाकुतगढा उत्तर सर्वा हेम इच्छे भूजो सा निवदी प्रणिताहत करनी बाचारहीय करि शबसैकार्या कारामानाम क्षेत्रो---"यह योकि क्रिन्न संस्कृतस्य सुदर्शा क्रिक्षासु यन्मोदते । यत्र श्राप्रपथावतारिणि कट्ट-गोपासराणो रसः ॥ गय वृष्पर्व पर्व रविपत्ते-स्तत्-प्राहृते यद्रय-

स्ताताटात्रस्रितादि ! यस्य प्रश्ती सप्रेतिमेपवतम् ॥" [कर्ष सञ्चोधना बन्धासकार्य (१ ११ ४ ४९)]

बागर्ब-- वे (बारू) वेद्यान्त्र उत्तरितम है वे द्वारर मकाराजी मुल्दरीकानी जिल्लामा वर्ष पामे के जे जामनीचर वर्ण क्रम्य माचाना अलागेनो एक पर्यारद आगे हे छन्द्र पण जने क्लंजरमर से प्रणान रनिवर्तकु रकत छ तरा प्राष्ट्रतने घेसमार सारदेशनाची लोजाने हे सालत संबोनाकी सुन्त्री है है हहा व्यक्तिय बाब्र निकार.

भा यात्राची पुना श्रम बाबाशीय वर्षि धारहेच्य, सम्बदर्शनी

mark fink.... <sup>म्</sup>पडन्ति बरुय बाटाः। मा**हर्त संस्ट्रतद्वि**षा !

विश्वपा अभितोस्साय-सम्बद्धान्द्रथमुद्रथा ह" व्यवर्थ-अस्तानेती बार्यवस्था बोक्स वर्षेत्रस्थान करनाये

बीन्पर्व निकास गामेन्य श्रीवर्गत शहर शहर वाहे है.

मा करानी !! बिद्ध बाब के ब्रे एक छम्पे स्टरेशामी विकिन्द भाषा माहत क इली.

सनोहरता-गहतकान्त्री स्केश्सा कर्ने हुन्स्सने अंगे क्रांक्षिण अञ्चलामा पर पराकृति राज्यार विक्रम् अनावे के कि---

भहो तत् माहतं हारि, विवासकोन्युसुरद्रम् । त्र सम्बद्धी यत्र शात्रानी समाजित्रम्य विकेशा ।। भरावें — बड़ी ! डिसाना शुक्तक बहुत केनु शुरूर से प्राइय समोद्द के केरसे क मध्य किंनु समा क्ष्यता केरी रसमरपूर स्वितमी सोगी रहे के.

रिराक्षणस्थे यपर वस्तिका स्रवेगतो उपायी सपय समजान हे के माइत से सर्ग रिका क्षरेशतीमी अलोबी चाल हे

#### माइदनी महत्त्वानो जयसदार

उरपुंक प्रमाना उरस्वी सुद्र वाचक सहास्त्रव समझी सक्का होते के-सक्कारताम आहमिया प्रहमीतानक स्वादु समझ करताक्योपका विशेषकारियों माना कोई एवं होता तो प्रकारताला स्राप्ते

बारि कराय परमाधित कार्यात्रीती प्राथीचार्व प्राथीच वे मापाको है एक माह्य क्षेत्र मीडी शरहत. आ ये स्वासी मारतपाद निर्मेश सम्बुदार है, स्पेकी शाहित्यक्षेत्रमा बांग्रेस प्रक्रत के कर्त एक माचीन क्षार्यपुरत्वति समया माडे केटमी वास्तियात शह्यत्वती के श्रेत्रसीय कर्के वैसी मिटीक साम्युक्तमा प्रकृतती क

मळक होन के नाकिक होन शी होन के पुत्रप होन राजा होन के रंक होन मूर्ज होन के पंत्रिप होन श्रमान स्थानमें मानौधी विकासकम श्रमान विशास श्रमुहान क्यार कपसर करवशी सापा कोई

पन होन ता त आहममाध्य क प्रमुख (म वा)नी निविज्ञताना तथा वस्त्रीनिपन्न दिरार्धन करी सम्बद्ध (म वा)नी निविज्ञताना पाठनामां भी अवहरक्या वा वस्त्रीतिम को निवासीक्षे-

## भरतत प्रयती आवश्यकता

क्षमच पर्त्वरोत्तवीत होताची वचका व्यक्ष गाळाली, प्राप्तटेमरकार्ग सामग्रीली क्रियानिन्य चक्षमे भेगे अर्थात् स्था प्रकारणी साचन-बामग्रीला समान्त्रे स्पेति प्राह्मत् (माना)नुं च्यत्र पाटम श्रृष्ट सम्प्रे पर्यु हर्युः स्पेत्रे संस्कृतः (सारा) मार्थेनी तात्रन व्यक्षमीयोजाय सन्दूर्माचे त्यस्त्रत्वा प्रवन्तार्येने विभागः तार्वे बाह्यस्य व्यक्ति

परंतु राज्ये कारण कारणु यहुँपरंतु राज्ये हान्ये कार्युर्धमां तो क्षे विद्यु इतिह्म्मोमां को क्षेत्रेमोमां देशे में मेंग्रेश (वीमो माण) तरीष्ठे ध्वरणु राज्यायम् वारा मान्यमा पाळ पर्तु के कोर्ये श्वरणार्थमां प्रमाणार्थे वारण्या करिया करिया को के ए पर्दा कोला कार्यमां नात नाती हुँ वा मान्यमे वाध्यित्रीय मान्यमार्थी प्रमाण, तेमा त्रीमार्थिको काळात्री तेण पर्दे को तेमा सामार्थी प्रमाण क्षित्रक कार्युट्य एकार पुन्तन्त्री वास्त्रक्षणार्थे हरी है, तेमा सामार्थ्य पुरस्तान कारोप्तर्थ वस्त्रक्षणार्थे कार्युट्य पुरस्ता (विजया

स्वकरणिकाशय वास्त्रक वहित्या एक पुरास वास्त्रकार यह व के में स्थापन प्रशास (विजय में में स्थापन प्रशास (विजय में में स्थापन प्रशास (विजय में में स्थापन प्रशास (विजय मही स्थापन कार्यों में दे रे क्षेत्र हम मही स्थापन कार्यों में स्यापन कार्यों में स्थापन कार्य

।। प्रापे अवतः ।

प्रचेतर

## 'विषय स्फोट'

- स्थ पारस्मक्रमी कन्दर माहुल-चाहुओ प्राक्ष्य स्थ्यो प्रन्त्यो स्थ् ठेनो निस्तृत स्थो छंपन बाहुसा स्त्री स्थ्योती साथे संख्याप्रयोगो प्रय साथेता हे
- मार्च-अनुरुको एल काल्यस बाँ एके देने साटे प्रवंगे अन्त्री मस्पानो अने क्यो एल मुख्या छे.
- रे परहरूमा कम्यारीमोने चेरशकारा प्राकृतन्तु हान वह एके देखाः मादे वर्षे विकारम हाक्ष नियमो दिव्यवमां कांग्रेस छे देसद केनदे समित्र कार्यना अम्यार्थक सर्वितकारो व्यापसार्थ स्पर्देश है
- ४ इंदरनोलो शुद्ध अलग करनामां आच्चो के बढ़ी तमा व्यर्शकरण्यो पण साथे शुच्चीको के.
- प्रश्निकां क्यो विस्तारण देखाक्यामां व्यव्या है.
- चमाल सर्वजाम तथा बंदरावाचात्र सम्बद्धीया श्रवण संख्य पाठी प्रदानमा आवेका क्रे
- परकार्या आवेका है " माहरमावदो एव नियानींओगी अनुब्रह्मा व्यक्तां राषी क्यांदरां
- स्पष्टर बाहित्सांची व बीनेकां छे

  4 नाटक शब्दकीय अस्मानकीय कार्य मानुकीय एक शार्य व्यवसारां वारोको के
- माहत प्रदायकाममा सूत्रों को प्रयास्त्रपत्रियांची तरम प्रदाय करि हुकामां आवैक के तथा विदेश सम्पोधी सन्द तंत्रद्व वर्षकः वर्षत प्रकारणं आवेकों के

## अनुक्रमधिका विचय

भनुकमिका							
विचय		पूप					
र्शकः -		1					
र्श्तेशम		•					
पा <b>ट १ वर्तमानकात अका</b> पुरस्ता प्राचयो -		٩					
र वीध		18					
ूर्व प्रीमाः		9.5					
<ul> <li>४ उपकोगी शृहकाल करे संस्थानाथकार्य क्यो.</li> </ul>	-	15					
५ सर्रात चलुकानां स्मो  —  -		31					
६ मा-आरचे क्यान्कचे एका वपस्य	•	7.5					
" » सम्मरान्य पुणिल तथा वपुरावस्थिय वामी							
पद्मा कीया निमक		. 1					
ू तहमा <del>-व</del> रस्थी ,		, 44					
. ९ पचनी-कड़ी	**	41					
ू १ सचमी को संबोद्दल केंग्र एंपूर्न स्पी	**	•					
्र ११ इंशरीत को उत्सरांत पुत्रिय क्या ग्युंग							
यमो पहमा-वीषा वर्ग तहमा विकी		, ,; ◀					
. 11 चडरपी पंचमी को छही निवर्णि		**					
, १३ सत्तमी भने संबाहण		6%					
<b>क्र १४ म्हाबा</b> ड		49					
µ १५ महार्थिको संस्के	**	55					
्र १६ माध्यक्ष भने दूल तथा वर्ष <sub>व</sub> ्यक्ति	h						
क्षेत्रे च-द्वाप्तरांत कोतिन वासी		1 4					
्र । निरम्बरस्य		., 17					
ू १ ्र अने विश्वविद्यवर्ष हैमा साथ	nda .	-					
पुष्टिक राजा श्रीतिय साम्रो		પ					
्र १९ कर्म्। जिल्ला अस्त्रे आवेषण		444					

११ भौभारत गाम बाने ताहित प्रत्यनी तथा चण्यो

॥ १ 🚜 -बातुबोर्गा निविष्ट स्पोर्त

. t #ta

. २१ प्रेरक्रॉन

	11	<b>€</b> मास्य	**		**	***
,	44	वर्षेयमा स्पो	**			312
	35	इंस्पानक चन्त्रो			**	338
		पारमहरकोसी				368
		धुमराखे माइत शब्दकोव		**		111
		with marine				3100

153

100

114

### सिरिपाइमयस्मपन्त्रानी अनुकामणिका

	विषय		8.0
١	वनम्द्रशासकोतो-वस्ति संगर्कः		faa
	वतारि बोठुत्तमः वतारि तर्व		19
•	वीनदर <b>्</b> ष्णव	807	144
į	<b>∮विषवि</b> त्रसम्बद्धाः	••	\$44
Ÿ	<b>बिगाये जिल्ल् वरे</b>		1
٩	STERNITURE		
ţ	<b>बंगिरम्भाजवा</b>		349
	196		245
	रास्करः रच्छानागे		3.5
•	<b>रणाचीरमेक्टनरिंदो</b>		366
	महेक्दरत्त्वदा		35
٩	वामेक्केल्ड्राज		111
٦	विद्वरांक्स्या		\$44
Ą	श्रमकायेच	5 e	155
¥	हुई । उस्याय शंकियो		35
١	मित्रमे तमानुष्यमं भूवं		355
ţ	श्रमारपाचनुराक्षकः श्रीपद्वित्रात्थान्ते		٧
١	प्रमृष्ट्रभाष्ट्रिण-पृष्टाणि		¥ 1
	शक्तकालामं भावेता वरित प्रकोश अर्थ		¥33

श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला

वर्रिकन

हरा-मार्थे स्थं भर्द्रे प्रक्रमार सराम

1788

सर्वक समय स्थाप स्थाप

क्षातक क्ष्म ता शिक्ष क्ष्म कर कर को लगे
 भू-पु का कि कर कर के शब वर्ष (पुन्द) असी
 (एक्स) क्षिया (क्षा), युद्धी (सूद्ध) किसी (चर्चर)

भूत हा । रिवण विति बाव तः विक्रियम (वर्णन्द्र) वितिक (वरण्यः)

। 'च को की अ दिन कनक 'चं को 'की वाद है. त्वाद को लागे का को 'का पन पन है से की न्यात की केना ने त्यात है विशेष्ण वाती है पड़े हैं (रोती-नी), केरले-ने बोल्स (वेश कर कर का

¥ रिलार्टन अध्येश व<sup>ा</sup> वयी वरू 'छ। ती वदी कियाँ हुन्द सी इस वरित रिकारिट 'का चाप है.

मानाको (गर्ना) बुरको (मान) कामे (गन्)

+ o M-st at g square shows mixed sector with the

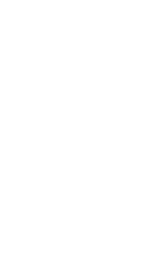
		•		
श्वा धर्ग स्ट <sub>ा</sub> स <sub>्ट</sub> प्र <sub>ध</sub>	<b>च स</b> स स स स स स स प ए स	<b>र</b> भ	तासम्ब मूर्वस्थ वंत्यः सांस्ट्य	
क्र्यन्तर	}	<b>ए</b> स स	तामन्द्रः मूर्चम्ब इस्टेन्ड्य	
	स् _ <b>इ</b>		श्रास्त्र कंत्रुम	
सकांग्री	हाये मंबुष्य आवे	क सङ्खो	(श <del>णव</del> ः)	सम्हर्ण

(कारकस्यू). २ चिंगं को चे जो साबाब क. विखेसी (विकेप) सदी (क्या). 2 सरावित केसा लोकसी तवाय वती नवी. राष्ट्र (राज्यू)

स्तरिया (वरिंग) तामो (गम्ग्).

प्रमारतमं विमर्गाव चंत्रुश व्यंत्रतो आरम्म वर्षा. त्य विमम् तुप्तर केमची एक्नो छोर वह स्वमारीव चंत्रुश व्यंत्रन वाद घ. पक्क (गर). अध्याण (वर्षेण) हृह (वर) अच्याम (वर्षेन)

पक्ष (तर) मध्यम (त्रवन) हुट् (तर) वयस (त्रवन) सुत्त (त्रव-इप्प) स्त्य (व्यो) कस्त्र (क्यम) वयरे. भावत-प्रह-व्य-स्ट्र-स्ट्र-स्ट्र मा वंतुरु प्यंक्रमो अपेन अस्ट्राची वेगाव है, शिवडी (वीच) प्रवही (सम्र), पस्हामो (मुक्तर) शुक्सा (गुम) वंतु वंतु (क्यम) वगरे.



# अई

 क नमः क्रीसिद्धकाय ॥
 परमगुर-भाषायं-महाराज-बीमद् विजयनेमिस्रिभर-मण्यद्भ्यो नमा ॥

परिपम्रपन्न वर्षि - मगन् पुर-- शासनसमाद्- महारका वर्षे भीरिमयने निम्रासियपहारकुरात्-परमपूर्य - परमो पकारि--प्रथपाद-- मावार्षपहारामभीपित्रय विकानमृतीसर-पहचराषार्वभीवित्रयकस्तर

<sub>धर-गर्णता</sub> ॥ श्री प्राक्टत विज्ञान पाठमाला ।

िम्बरहानो सीसर् कसियाने बस्स असियप्रराणानी।

मचक्रणंत्रिकसंसाः, स वयः " सरीसदासिको ?' ॥१॥ पयदिवसमचमार्वं अविकन्तर्गप्रवाश्यवर्दः । सुरक्ष वरम नार्गः, स पट्ट् वीदां दुगः वरं ॥२॥

मुरम् करम नाणे, स पट्ट कारी कुणड मरे ॥२॥ एकारस राजकणो, शोयमपपुरा कमन्ति मुबनिदिणो । स वि इसस्यस्मरी कानो किंग्बानसम्बण्य ॥३॥

मिनिक्वमेनिएरी, जुग्यहारी मन वर्गणात्रा। सरम सुरादिहीण अमात्रकार्याय निकारित ॥१॥

विस्तालम्हि सगुर्के व नश्याः मुझे व सम्बर्गारतीलयस् । वाह्नविश्वासमुरुवनानं स्वयि हे सीमामुहेनस्ट्रास्त्रास् षयेविद्धान \*स्वरः

इस-का इ.च. शैर्य-बा, है के ए, मां स्मनुष्याः

-धर्मभूतः

कार्यकृष्य गृथुक् वेदन ८ १ प्रकारता के लगा निकार का बाब देवन को स्पन्

लाम

'रू-व' ओ 'रि' जा काम क बाग वर्ष (इन्स्) समी (सम) किया (कण), पुद्रो (खप्य) रिजी (करिः)-

'ल्ट्' सरपे निगर 'मुक्कि वाव क्र. फिलिस्म (बन्यम्प्) फिलिस (क्सफ्स).

प्रा करणपुर करणामा प्रभाव वा प्रयास एवं क्यून है. इ रिकर्टनी सकीय क्यी वर्ण कि सी क्यून हो के का लिए निमानिय किंगे क्यून क्यून

भ गाहा गामा वा वार छ. सरदामी (गीरा) पुरक्षी (पुरा), सभी (क्या), + १ क्ट-वा को जेनमा स्वत्नम् जाहरूमा स्वतंत्रम् सर्गा स्व

भ प्रात्तमा त्रमाशान श्रेष्ठण क्रांका करूप वर्गी एव तिका-द्वारा केर्राती इचना श्रेष्ठ कर क्रांतातीच श्रेष्ठण क्ष्रका वाच है. पक्क (१४) अपन्यान (१४०४) इङ्ग (१४०४) व्यावसार (१४०४) सुन्त (१४४-इर्ग) साम्य (१४०) क्रांक्स (१४०४) वर्गोः १९९९(४-इङ्ग्-१४-व्य-प्रा-म्य क्ष्रांत्रका चंक्रको प्रवेश श्राहणा देशान है. निरुद्धी (भेष्या) पण्ड्री (१४४) परस्तामी (गुरुवस) शुरुद्धा (१९९१) चेन्नी चोन्नी (१४२६) वर्गेरे

	( ad.)	4					
4	स्वर्धहरू	Spec of	रमनग	प्रचाय	बदी नर्व	ो. <i>गा</i> य	(राजन
	सरिया	(धरित्)	तमो	( क्मस्	).		
·	unred	Gravelar	character	and the same	-	mark .	or Orac

	स्वकाना (साम्बन्ध		93.0	जाब ।	•	सक्षा	(404)	the state of	ग
•	'হ্য' ধন	44	नो स	माथ	w,	विसेसो	(मिसैप	) en	ń

	-10	साथे संबद्ध		freeze á	(mover)	NEW ORK
			×		कंड्य,	
			स्		प्रत्य	
		,		થ	दर्योच्यूव	
		- 1		₹	र्वस्थ	
	र्धनगर	}-		Ψ.	शूर्वन्य	
				eg.	CHAPTE.	
q	1 51	प् फ	- 4	श् म्	লাত্ৰ	
- 8	r ,,	न् प	4	म् म्	र्गरम	
₹		द इ	₹	₹ ₹	मूर्थस्य,	
	वस	च च	व्	इस्	Clinical"	

#### माइतमा संयुक्त व्यक्तनना फरफार मीचे प्रमाणे वाग छे

和-第一报图=报图 **のちには一川中山が 東本語・可能が死** साध-मिद्रप निदर Removate and the (Re E - 강독·강 + 라다 के इन्लाई भर्ने स्व चन-स्वक्ता अस्त PURCHE IN THE व क्य-बहान-सम्बद्धन एक्स - म्याकाल-सर्वाल स्वभार-महर्य-सम्ब स्व=नव-उरिह्य**ा=अनियत्त** रप=वर-वरसाठ उदसान **ग्य**न्त्य-निपद्मान निषयमन <del>१६ अस्य सम्बद्धाः स्टब्स् म्</del>रत=नक्ष्यंत्व स्पन्ना-मस्त्रक्षित पादक्षिक संबंध-स्थान मका दुस सुख रव-क-**न**देख=जोस्य प्रमा क्षया⊐रुग प्रश±य-कड्न ग्रम

र्म=म (हिन्सुन)

RAIN OF LESS

(मा: मन-कार्ता अकार) व्यक्तम-विद्वापनीय क्षत्रक काग्राज्याच क्ष्मान-प्रमुपाटिठ-उरवादि*स* र्वजन-सर्व नमाप इक-एक-शक्युक-**लव्हे**य (य=वय-सस्य स्वय (मण्डम-हार्या =सर्वा ध्य<del>ान्ययः तथ्य । तस्य</del> र्व-क्ष-कर्मना-कर्मनाः THE REAL PROPERTY. सम<del>ान का</del>सी-कासी करपान्यस् निया स ध-सस-ध्य त्रकेष प्रस्कानक क्ष्मक विष्या*नी*का साध्या किच्या विश्वा र्श्वन्य मुख्यं-मुख्य NAME OF TAXABLE PARTY. राञ्च निस्तीर्थ=निकिन्त क्ष प्रम-सारय अग्रह इक्पान्डरमा # 18-45 **-477** 

**第47年-日かりかりまりまする** 

**इ≈ात-नर्धइ**=सम्बद्धा श्य=**म्-ए:श्या=िम्** सम्बा-धक्त=पन् **रा×७३-सरा**=भगा व्या गह-उप्प=इगह Mars Arm Hill स<del>्याप-एना</del> ते**-५**स प्र=ात्र-स्थ्या=हेत्रवा र्षभाग भागी भागा हण≈म्-पूर्वाङ्क=पुष्पञ् र्बे = इत्र-वर्जन = वर्जन **इ=व्यू**–सम्बद्ध**ः** मञ्जान् र्ज्यच्या नर्ज्या नर्गा **च=च-मुक्त -मृ**च ल≥त्त-यस्त वन भारत-सम्बद्धाः स्म⊐न-श्रहस्या=मत्ता प=ऋ-**दुर्**ष्ण दुन्ध मञ<del>्च-गाम् ∘गत</del> सभाव ग्रह्म अञ्च स्वत-**ास्** न्यत त्त=ह-यत्त्तन=पष्टम र्स =१-न्यम् =गर्भ फ=त-श्रफ्त=पन र्व<del>=त-वाद्यां अ</del>ना ए हु-स्ट्रान्ड <del>प्रमूच-निप्दु</del>र=निद्दुर क्वच्य-निक्**य**-नित्व र्वक्टू-मधैनमङ् 田田(日-可賀と田(名 क्षा <del>प्रकारती न्य</del>ब्द् र्थ=स्प-१ क्षे =स्टब **र≈र्व-विद्य**शक्तिक्टर्व राजन-दस्त-दस्त इच≈इंड-महुद महुद स्य=स्य-प्रस्या=सस् द=द४-चर्चि रिवृत रव्य-रह्म=स र्ष≈वृद्ध वर्धानान=ववृद्यसम इब्द् प्रद्वेपनप्रदेश Resident and व्य**्या**न् स्टान् **स्म**् रप्य-सर्वजनसम् <del>व्यक्त -पुच्य -पुच्य</del> व्य≖द्-युक्स=पृद् व्यक्ता-प्रश्निका <del>व्यक्ता-स्टब्स्</del> = सम्ब ष=इ-म्राह्मन्=मह स्य<u>क्ष्मा-काल्य</u> र्यक्रमान्त्रस ष्प•ञ्-अस्मि•अद् र्थ=६ वर्धमान=बद्दमान स्थ•ल-प्रयुक्तकात्रहरू कृम=प-दक्तिगरी≥दःध्या र्व=म-नय-अप्न

#### माहरामां संयुक्त व्यंत्रमना फरफार नीचे प्रमाणे वाग छे

कान्य-शुक्रान्त्रः कान्य-शुक्रान्तः कन्य-नाद्रान्त्रः कान्य-रिद्वारः निवतः कान्य-रिद्वारः

मार±्र-प्रकार=स्य स्व-द्व-रस्ताच्य उत्तर स्र द-सद्य सर्व

स्त्र-व-दश्का>त्रः। इ.व-मद-इस्त इस्क

वे मक्ष-सङ्ग्रहणात्रण १६७२व-व्यवस्थार-शत्र्यात् राज्यक-व्यवस्थान

स्वत्रस्य वर्षय-काव स्वत्रस्य वरिद्युण=वनिकत स्वत्रसय-वरस्यात्रः वस्त्रसान

राज्यक स्टब्स्स्य विश्वसम् राज्यक स्टब्स्स्य विश्वसम् राज्यक स्टब्स्स्य विश्वसम् राज्यक स्टब्स्स्य विश्वसम्

क्षण्यम् व्यवस्थाः व्यवस्य वृद्धप्रश्चाः व्यवस्य वृद्धप्रश्चाः प्रकारमञ्जूषाः

प्रत्यक्त श्राप्तकार भूगान्यक्तम् सूर्यः स्थ्यः भूगान्यक्तम् सूर्यः स्थ्यः स्थापनार्थे स्थापः मान्य स्वाधान्त्रात सम्बद्ध-शिक्षां न्यस स्वान्य-शिक्षां न्यस

क्षात्रक स्वाह्यात्रक वृक्षत्रक-स्वव्यादित-देशाविक वृक्षत्रक-स्वव्याद्वात्रक्षत्रक्ष वृक्षत्रक-स्वव्याद्वात्रक्षत्रक्ष व्यव्याक्षत्रक्षत्रक्षत्र

त्व-भा-कृत्वा-करणः व्य-भा-कृत्वा-करणः व्य-भा-कृत्या-करणः व्य-भा-कृत्या-करणः व्य-भा-कृत्या-करणः व्य-भा-कृत्या-करणः व्य-भा-कृत्या-करणः व्य-भा-कृत्या-करणः

सान्या-प्रस्य-प्रस्य स्वत्याः स्वर्थान्याः श्वत्याः विषया विषयाः प्यत्याः विषयाः विषयाः प्यत्याः सृद्यो व्यापाः स्वत्याः सृद्यो विषयाः सान्याः सिद्योगित्यमिकारः

हेडसी:व्यान उक्तान-साम्य स्टब्स साम्बर-सर्वतासम्बर्धाः

अंकाम-समित्रश्राच्या श्राचाम-समित्रश्राच भन्दनी अदर स्वरनी प्रणी असंयुक्त ब्यंत्रनोना सामान्य फेरफारी जागः नीचे नमाणे याय छे

के स

<del>य</del>ः । सुन्नोद्यः नोम

दःम-लोक्-डोव पे<sub>ल</sub>न -पत्रक :-पत्रन

マーダー 日本 二月 म=पुक्-नोत्रः जोज मध्य-स्टार-स्टा

Mary Course

क्ष्माद् स्वीन्ध् च च-रकार भवन

कन्छन् एकीन एवंन

स द—रज्ञर+श्रव

2×2-12-43 S16 - FX 175

Ent algibustag कम्बद्ध-पति : पर्

द=च-पल पार बन्ध्-बद्यान्त्रश

**४=१९६-विदेश-**विद्या

र=प-बद्दान्यमा थ इ∸समु*न*सदु

भे प्रा

श<del>च्च-</del>स्त्र पन

श्वविमां स मो व्य विकरे बाव शर=वर रे

प<del>=हक्</del>नियु**चरित्र** 

यच्य-पाय नाव प्र=यं-शपा**ल**भगस

THE THE SALE व द--राज्यानामस

मञ्चर-सद्भार अस्त व मुद्ध-रियोग विभाग व्यविमां य वो 🕱 पान.

कात-धराम्बर वारिक्या

कोइ हैकान के भी छ बाद.

र छ-दरिश्न प्रतिष व=प्रकृ=वशिव्यद

ग=म-सामाधा सामाधा

व १ स−दोप∞धन व } द्वावद=स्र

रिक्ष**-स्ट्रपंड** अप्रयुक्त <del>राज्य पर्मार्ग्य</del> **टा =य-धरश**्=**अ**य वाभक्ष-मीच्या रिमा प्रकाप-शरका **०**एश सम्बद्ध-विस्मय-विस् अ∗प-वस=कार संबद्ध-नद्भान-अध्य प्राच्या विष्युत्तवनिष्यत क य<del>ू-१का</del>-१य <del>भिया वर्षेत्र अस्यव</del> र्व<del>ाक-</del>पर्यास । **श्रीकाय-स्त्रीय अस**या केंग विक्रेश निकास लान्य-१तुस्य उत्पन्न त्मक्त्य-पर्याप=कक्षाम स्टेब <del>प्रमा</del>त्या स्ट्राच्य · 中国中华 **東京の大学の大学を表現の事業** Caria sinitialis-raine हा<del>ळाडू-प्रस्पान्य-प्रम</del>ान्य इञ्च-उद्दर्शनक्ष्मक स्कार<del>ण प्रस्</del>यतेचे कामको क्रिस र्व<del>-व</del>-रुवीं=उन्ही ्र<del>ाच्य</del>-उत्पद्द-उत्पद fem Pas Pers COMPANY NO. र्म्बर मनुब मञ्ज-समुख्यान्यस्था र्व श्य-ईपी=स्म्बा Peter salar salar श<del>=ग</del>्रा-पश्चिम=एसिए रम<del>े व्या</del>सम्बद्धाः र्<sup>तका ख्</sup>मार=जनाव <del>लभाग पहचा</del>री पस्ट स्वच्या-जस्मा<u>रा-स्वस्</u>व 東本田一年 東 と神田 ल=एस विश्वाम=विश्वास र्भव्या गर्भव्य व मान्यस्य (ज्ञार सम्बद्ध Remain Libert Liberta भागस प्रधातिन्यस्य नाकत-करात्-करा जन्म-इच्चाच-इसाव क्षणाव-नाम्याच्याम र्<del>यक्ता का</del>्रिक्टम क्रम्स-क्र्यूप≖कास का व<u>म्मा-पुक्स अनुम्</u>य CHANGE OF STREET **र्जन्म-का** क्रोज्ल स्य=स्य-देनस्थित्=देनस्थ

रे सद्ग्रव-संकुत उपत्वी शहत निकानुसारे सिद् पतन

१ तरसम-कंदान स्मानत होत त. वेस्यभातु-सुमार्श्वकं स्वयास-मेरकुं, व्यक्तिम करतु पुरसुक्त-व्यक्ति पिप्पड-कम्बुं स्वर्त्युं सर्वते पातुकी

देश्यद्वान्त्र्=झस्यान्ध्वःश्रन्थसर्थः खपक्षःच्याः वारवः. वस्याः देशः खपक्षःच्याः वारवः.

शह≖साधव त्याल साहित्यानावर्तः, स्तरक्रात्मावंकरः, विक्रिप्-बाह्मसः, वोरे धम्या सद्भवधानु-काह्म (क्या) यह् (पर्) सम् (क्रम्) बाह्न (

राद्भवधानुन्द्र (क्य) पद् (एर्) सम् (कर्) वाह् (वर्) इण् (हर्) अप्यु (क्र्र) अरुष् (क्य) गारे. राद्भवधानुन्ययण (मरन) ओलड (भीरन) मस्य (क्य) विष्ट्र

तव्भवशस्यम्भयम (मर्ग) जोसह (भीरम) मत्त (मतः) विष् (मिन्त) एड्र (म्म) गरेट. तत्सममात्-मण्-चल् वैद्-वस्-दस् क्रम्य-दम् स्वारिः

वत्सममातु-मण्-चत् वद्-वस्-दस् क्रम्य-रम् श्र्वारे वत्समग्रादः-सिक्-कमळ-वृत्ति-माक्षा-विमक्क-वीर कारे

- १ वर प्राष्ट्रत विश्वान पाठमास्त्रा मी आपेच पानुत्रीनो एवा दान्तीर्ग क्याक्यानी एवा तथा निवानी वक्षिणक धर्वक अल्लाह सोद्रेसचन्द्राचार्थे निर्वित प्रश्नत (निर्देश व्यवस्त्रना अपन मध्यप्रथा) माण्यमय ब्लुवारे राज्यां-
- २ संस्थानको क्रिय **१४** वर्गों क्यों देखों प्रस्तीयरी—अरामानेक्**री** अभी बमक्तचै चेतुको तथा ठेवा छत्त स्तर प्रत्यको आहे हे छैन
  - जनसम्बद्धाः सन्दर्भ ३ काठमा १ वर्तमानकाछ २ मृतकाङ (क्लाक-सो<del>श का</del>टण मूना लाने) हे आहार्य-विषये की ४ महिन्यकाल (भरत मनिस का समान्य धविकाय स्थाने) तेमक
  - भ माहरामं दिशयको शरके बहुक्यम श्राराम के जनारे छन्छे असीन कारामा जाने के त्यारे हिता जार्च जनत्यराने सारे बहुस्करी न्यानी साथे विश्वसरंग्य-क्षि सकतो प्रयोग बाय हे केन दोणिय पुरिसा बच्छितिको प्रको तक है.

५ कियाति<del>पस्पर्य</del> श्रम्म कतो नगान के

मानार्थ देश कन्दर्भ देखा क्रोड़ी हे.

- ५ माइटान कर्तुनी निमक्तिया स्वाने करी निमक्ति वपराय 😻 🖼 कर्म ( हेने कारे ) हो संस्कृतनी बेहर नहर्मीने एक्टबन ४५एव के केन-काहाराय जयर सदस् (सहस्य करमारी)
  - ६ मास्य भाषामा पानुको अने शक्तो जब नियामार्थ वर्डेबारेटा है.

रे भीक्य-व्यासम्-विवर्ग-स्थल सावि वेशामां वरस्ता वाला

क्किना क्षेत्र अकान, भी हैअवन्यसरिजीय देवीनाम-

**		
<ul> <li>मंत्रतस्य पानुभागे पुरस्कोपक अपान्यामा भावे हो. शोरस्कृत्वा</li> </ul>		ध्य प्रतस्य
<ul> <li>पहेल पुश्चम सि अस्पननी पूर्व चौरखासि, चौरखसि</li> </ul>		
र मी भुम, मझनोगी पूर्वे भाष ह		ता "ह्" निकल्पे
योच्छामो बोस्टि	क्यो चोस्क्रमो	
<ul> <li>प्रत्यान प्रधाना स्थापक कोए</li> </ul>		
स्रे <b>-द</b> प्रत्वत्र शिवाद ग	र्वे पुरुष कोपकाः	<del>লে</del> বী জ্বাহা
पूनना बाना प्र' थान हे.		
बोस्केमि बोस्केमो		बोम्केम
भवा बोस्कामि	बोम्डामु	क् <del>रवा</del> दि
पहेंछा पुरुष	नमं इत्यो	
यक्ष	1	all.
मजामि	मिषमो म	जिमु, मचिम
भवमि,	मपामो म	पा <u>म</u> ु मजाम
मणेमि	मजमो भ	षमु भवम
		म्येमु मजेम-
মান্তর		
कदामि जाणमो	मुचेमु	बोस्छेमि
इसाम् जेमामि	<b>भुजामो</b>	र्षाहेमि
गण्डेसि वेक्समी	<b>मबा</b> मु	पुष्छामि
बतामी भवमु	पडेमो	पीडेमु
चडेम नमामि	शोबेश	बोस्सिम्
पेपामि मणामि	बोद्दामि	पिचामो
पीकेमि वसेम	नमैमि	विमो

पाठ १ छो पर्तमान कास पहेंचा पुरुषमा एकतकन यने बहुबक्तना प्रत्यपी... <sup>१</sup>शूपचन मि सु, म, (मस् महे) मि (मि)<sup>9</sup> चलुमो पीड १ (गैर) पैम्ड इ<sup>ल</sup> पीछ १ देख कान्यु बहु (स्व) परि शक्क (क्ष्-एक्) थ्याव पुष्पष्ट (स्कू-स्कू) एटेड 4명 백 क्रीड (थी तीचु सब पासपु बस् (वर्) वाक् बोस्स् (प्रथ) वामनु सुन । (र्थंड) सन्त बोह्र (गोप्) क्षेत्र वर्गा नाम्य सर्वे 🦠 मण् (मन्) भन्द मध् (भग्) ममद् देवस्य (स्पः) देवत् अनु शर्म है (सम्) सम्बु कान्यर रवा रे (स्त्र) रोष्ट्र सम 44 5 येव १ पद (लर्) पञ्च वकीत बब् बस् (वस्) वस्तु विष् १ (य-मिष) गीप प्रसः (११) एस पित्रक्ष 5 प्राप्तका विकास कीता वार्थी. देने स्थाने अपूर्णका वकास के म्प प्रतीय करती क्यते हु (हिंद् ) सम्बद्धे प्रभोय नान 🕏 केम मान्हे वारिया क्रोक्सिमी एक्स्प्रकार्ग हिन्दू करे क्षूत्रणकार्ग हन्द्र प्रवाद कोईकार्न माइच बाहित्समं मन्त्रवंश हेचान से. केन-मगवद ! महापसाओ, ता वहि यण्डस्ट (क्षमध्यसम् ८-मी मन) <sup>3</sup>षुष्म् (दुम्-दुष्म) बीध वनो प्राम सेटसन् जारानुं, धराजनु मुरुष् (पुर्-सुप) सुमानु मोह पामको चना वर्ग

रक्त् (रह) रक्त करब्

रम् (स्। यन् स्त्रज्ञ (मन्द्र) सन्त्रा वामवी रूसम् । <sup>Y</sup>बह् (वरब्) बंदन वरब्' नम्सुं

<sup>भु</sup>द्धस्य (दव) रोप करवा त्स् (तुप) तुर्धा वर्षुः र्सताय पानवा सूख् (इव) वाभित करबुं धूस्त (पुन्) पायन वस्तु सीस् (धिष) मेर पाना सीम् (क्य) क्रेप स्स (प्रव) तुब्द नतुं तुब्नु

इष् (१२) (वनु मरन्

१ करना अन्दर स्वर्ता पर्छ। क्याँ सने ह्याँ होच हो उन्हाँ पाण 🗑 बने प्रारंतमा क्षत्र नो "हर्द्र पान 🕏.

पुन्हार (बुन्हरू) सम्झासरी (स्वाप्याय) सुन्हार (सुन्हरू) सिन्छर (सिन्धनि) सेछा (कन्मा) नन्छर (नप्रति) तुन्छर (दुन्मत) झाणे (चन्मा) गुन्छ (ग्रम्स) विज्ञाह (विश्वति) सायह (भागि) सत्रह (साय)

विकेप-झानो 'बहु' एव विकारे बाच के गुन्दं (गुद्धम् ) सम्दं (सहाम्)

कापंत्रभूतमां बन्द् वातुनुं य दुः एक्यकमां वेदे एवं क्य सम्बन्त पेठे सिक्क बाब 🖦 र्वम-रासमाजिके 🔏 वंदे-सारवदेन वन श्रीमालाको 🕻 वंदन कई छू असीह वेदे सिरियक्रमाध्य---भी वर्षमान स्यामिने भ<del>व्यावडे वोद् ब</del>ू

रुपू बगरे यानुस्रोता स्वर प्राकृतमां शीर्व बाव सं क्षेत्रज्ञ **रूप्य-सुध्य कारि संस्था अंका प्राहरानिकालुसार 'य' हो** वाप बनावी **बस्स-तुस्स-तुस्स पुरुत-सिस्स्-सुरस्** मानि बलुओ एक छिद्ध बाय छ जैस-बहसाह सुरसाह वरेटे-

गहराती वाक्यो B EU (E) (समे) समीप छीप (इ) पीइ प्र (क्र) जार्थ के (ममे) यद पामीप स्रीप (ममे) बन्न करीए छीए. (ई) पीख क्र (k) ₹± fz (ममे) बासीय सीव (ममे) बोध पायीय छीप (समे) बहुए छीए. (इं) पढ़े ग्रं (10) वस्ते प्रे (E) মলুর**ট** (समे) कडीय छीय. (ममे) नमीप छीप (ई) ममु छू (ममे) वोसीप हीप (इ) देखें ही (धरे) रहीए हीए. पाठ २ जो बीजा पुरुषना प्रकासन अनं बहुबसनमा अल्पसी-पचन । बहुद्य विसे (वे वि) इस्या (यसूय) पातुमो रम्भ (स्प्) (स्तु शिक्ष (निश्यः ) जिला कामी, हारा हाथ (प्रार्) भन्न प्राप्त **41** (1) 4/4 पास (स्पू ) देवनुं कोई बार (वर) वाबु, बाव्यु मप् ] (भू-नम्) होतुं, वर्तु बित् (बिन्त्) बित्सन काथ निवार करतो,

	_ ``
-	FOT
	,

(वमे) पीडो छो

(त) बीचे हैं

क्रीहरथा

करेखि चित्रसे पासेस्त्या	धरे कसे इसे	ि ध	बससे जेमेह नमह		बोस्कइ अजेइ धोयसे
सुन्धह गच्छेस्ति सुचह	इसे	सेन्या स्रि दन्या	पिम्ब्रहि पासद करिन्य		इसिग्या मणित्या सुरक्षेद्व
देक्केश्स्या पडेड् सीचसे		हे स्या इसे	पासित्य शमेश्रहण वंद्रह		करसे देफ्लह दुक्तिया
(त) की है (त) करे है (त) बात है		(तुं) पूर् (तुं) को (तुं) वा	हे हैं दि हे	(T)	मो) सप्पोधी इसे डे
(तमे) चाडो (तमे) विशे । (तो) तमे छे (तो) तमन करे (तो) पुद्याप ह	हो डि	(রমা) (নু) নি	काय करो ह रहन करो ह हर है	में (त्र) में (त्रं	रे) रही ही. १ इच्छे हैं में) कियो हो में) बोमो हो
O Said F	9-	(₹) ₹	er az	1,2	) पीडे के

इच्छित्वा । स्टीह

(तमे) पीमो धो

(त) शमे है

(तमे) इसा धे

(न) पडे के

पुच्छेत्रस्या

म्बर पर छत्तं पूर्वेच स्वरका प्राच-क्रोर वाग छ मण+मभरचा=मणिग्या जिया और जियियो

बीका पुरुषना क्यो प्रकल मजिम समसे मजद मजित्या

**घंग्रे**सि अलंड अमेररया भयस्या अवेत्या एकत परमां ने स्वरो नामें काने तो संनि वनी नती.

केम इसार इसारचा देशामी का नियम कार देशाये सागु पत्रची नवी अन्तर्गत् हुड परामं पत्र कंपि काच हे क्न-दोहिर-दोडी चित्रमी-बीमो प्राष्ट्रपाद उन्हों नेनि बाप क तर्न संस्क्रामां नियम प्रमान स्वी

क्रबी. बटके राजातीय न्यार शाचे आये दो की सारी सारी का रीवें लग गांव छ. कम---ध के बा पड़ी थ-मानमा इ व ई प्रतेष्ट कें य क

को ४-जन्द्र, विसम+माधवी=विसमायवी, (जनमञ्

मिक्-इंसरी-मणीसरी (मुख्य-), सात्र+उमय-साजमय, (साइरक्यू )-केन्त्र भाके का पत्री इन्य के दीव इसके सा अपने सी में स्तरीमें करने पर्वांना एकरवा शुरू अनुकार छ। या के आपार्टी इ⊸ईं⇒र्स, ध के मा पर्व क-कान्त्रों वसंबद्धरवान्वछेत्या, वित्वश्रीसरी

-तित्येश्वरो (धर्मेक्ष) सृष्टश्डवर-गृष्टोडार (गृशोरध्य )

बाक्यो

इच्छित्या **र्का**हित्या रमेड करेसि विदरपा बससे चित्रसे इसेसि क्षेमेड पासेहत्या बसेह संग्रह पिस्त्रसि भुरसङ सीसित्या पासह

गण्डेसि **बसेचि** दसेशस्या वंदसे

मुमद देनबेहत्था पडेड

रमित्या सीसमे मन्बसे

(त) क्षेप के

(स) बहे के (त) चारे है

(तमे) चाको को (तमें) मिशे खे (त) बने के

(त) नमन कर के (तं) मुद्राय छे

(तमे) वीमो को (त) रमे 🕏

(त) वोडे डि (त) वदि छे

(त) मजे के

(है) बीवे है

र्ख केष्र (है)

(तमो) क्षेप करो हो (शमी) बदन करो छो (त) निवे के

(त) इसे के (तमे) पीडो को

करित्या

पासिस्पा

नमेश्स्या

**it** 

(तमे) इसो धो (त) पड़े के

(तमें) कपो को (शमे) बोस्रो को (a) पीके के

(तमें) यहां 📸 (तं) इच्छे के

(वमो) मधोझे (ह) देवें के (त) ममें 🖢

<u> इसित्या</u>

**पुष्के**रत्था

बोस्ध**र** मजेह

धेवसे

इसित्या

भित्या

मुन्हें ह

करमे

देशसह

#### बीबा पुरुषना प्रत्ययो

चतुमो

**जारद (**जानद) श्रादर करती. किय (की) वरीश्व-सरम् (सर ) उत्तरम को बुद् (४) इमस्यं कार्य निस्टाइ (वि) कर पास्त्रं फास ी (सङ्ग्यर्थ) सर्व फरिस् । करो सम्बं ९ वर्ष 🚶 (म) कोळमु र्ष (६) कर कार्य क्यान करते वद्द (इन्-वर्ष) वक्त

सुमा १ (स्प-म्म) समा स्ता भग्नु, क्षेत्रामन् हक्क (बि+रिव् ) निरेव कारा १ विकास (वि) एवर्ड करते त्रिष् (वि) जिल् बुख (ख्रु) स्तृति काकी पुष् (प्) प्रयस्त्रे-पुष्प (ए) वनित्र परमु-खुष् (ब) करम् सुण (श्र) दोमञ्बं हुव्य (ह) होन क्लो

मा प्रकार प्रयोग प्राचीन कवाओं सने चर्ची मारियां पर्य स्वके क्याचेका के पर्वो अंतर श्रोका क्-क्-क्-क्-क् को सू वां विकासे क्रिय कार उत्तर अनुस्तार स्वत्व के क्यूनवार व वाक त्यारे, पर्वाच क्यंक्या वर्तनो क्यूनारिक वाच के केन्से-क्यूनीटी -इसस्ति (हतस्ति) पद्मी-पद्मी-(पर्कः) संझा-सम्मा (धन्म) सहो-सन्दो (स्न ) वहो-बन्दो (पन्दः) चीपश-चाम्यदः (पम्पते).

मार्थमां बुक्ता बेमि, बेह, बिक्ति बुस वर्गेरे स्यो नाव छ. विश्व नगरे चाहुनाने शाहुनाने पुरुष चानक प्रत्यनेती पूर्वे 'ब्रू उमेरान के केम विकास (किरोति) चीत् केमान वा 'ब्रू रिकार को के केम कबह जिलाह (कारी)

ए प्रस्पन के पातुने केटे वा होन तेनेत्र क्षमावनामां वादे के

वेन-स<del>ञ् । अन्ययः।</del>य=सवयः सवरः सवेर

#### बीका पुक्तनों करो

बहुब व

सवित शयने प्रविदे यचर. सचेत्र. मजेन्ति मजेन्ते मजेवरे ११ प्रक्रिकि अधिनो अधारे. मजय संबुक्त व्यंक्तकी पूर्वे धैक्तर होन को प्रयोग्यद्वकार प्रायः इस्र बाव इं- बेश-अक्षुश्यन्ययोशनित समितित ए

प्रमाने स्रविक्ते पत बार्चः

ग्रम्पनी बंदर पन संबुधन व्यंक्तनी पूरती एवर इस्त याद गे का-

कर्ष (भारत्य) धुर्णियो (पुरोत्रा) निसुप्पस (शैको-सन्दर्भ (बाल्यत) वर्षियो (वर्षेत्र) राज्य्य) तिराय (धर्म्य) युग्यो (व्युः) युग्रे (एरम्स्)

**एक्व** 

#### पाइत जानवी

बार्देर	पुजे(	देशकेश्टे	वारमध्ये
बम्मवि	द्रिधिसरे	पीडेर	इनए
निज्ञारप	रवेड	बीहर	त्सेर
विरे	सुमरेण्ठि	मजप	इसके
वडिवरे	विवय	वसमो	पुषर
इकले	<b>प्रका</b> रे	र्क्षनित	रोबिमी
जिमेह	पुनेष	करिरे	बिजसे
भ्रूषण्डे	सर्वति	बिता	पुक्तिस्था
सरित्या	पुरेश	दवर	वतिम
कृषिरे	कहेरिक	<b>त्रम्</b> धप	খুজনি
इंबन्दि	सामन्ते	रक्केरिव	बिवेगि

#### शुक्रराती काषयो

(ते.मरीरे के	(तेमो)सय पाये छै-	(दे) नमें के
(तेंमी) इडावे 🕏	(त) बोके के	(तेमो) पृष्ठे 🖳
(ते) बहरे हैं-	(के) वर्ष के	(तिमो) समे 🕏
(तेमी) शम्ब करे 🕏	(ते) निषेध करे छ	(तेमा) वर्षि 🖻
(ते) स्मरण करे के	(तेथा) जिले के	(ते) रुवे 🕷
(तेमी) रक्ष करे के	(ते) इसावे के	(तैयो) इसे 🕏
(ते) स्नुति करे 🐌	(B) #4 (B)	(तेमो) क्षेप 👺
(तिमी) पवित्र करे छे	(ते) एमे के	(ते) चरे 🕷
(ते) सामक्रे 🖢	(ते) शाम करे के	(A) THE B.
(तेशी)मादर करे क्रे-	(ते) वाय क्र	(तेमी) मुंहाप 🖣
(ते) बहुपन्न चाय क्र	ो (ते) चाय 🕸	(है) पोपस करे।

#### गठ ४ मो ऋर्बनाम

दरबोगी युप्तरादि सर्वनाममां तैयार क्षरी

पद्धवसन बदुधवन

प पु•-इं सह (बह्म्) हुं | सन्द सन्हें सन्हों (रबस्) सने बील्यु-नुत्र तुस (रबस्) हुं | तुस्से तुस्हे तुस्हे (बूक्स्) सने

के (ते। वेशो

त्री पण-स सो (स) वे

ब्रि संवपानाचक शम्बनां उपयोगी तयार करो

प्रः प्रिः विमः । दुवे नोष्य पुष्यि । बार्यः । विक्य विष्या ना वे-ने (हि-ही) वे

ज्ञान धानुनां सपूर्ध क्यो

यद्रयसम बद्दयम

**हा**र्जिम कालमी ज्ञाजम র অেম

Qe go

मानिम

बाजिन

वानेसि

मण्ड

सापा

सामेह

TIME.

की पुर

જી દુ

**T**ransa बाजामी बाजाम बाजाम

वाचेनी

काण£

भाजेड

बाचिन्त

जावियो नाविम काजिम

जाचमु वापेस

.बाजित्या

**क्षाजेल्या** 

जापारचा बाजेररया.

बामेरित बाचेरत जाबेरे

हाविश्वि, बाजिन्त आवारे

जाणमे हाणिट

पातुमो मस् (वग्) होतुं, न्तुः रव्य (रण्य) (यहां भप्प (वर्ष) अपन कर्त् मंड कर्ण र्वेच् (पम) अर्जुडेल हे सरङ् (धार) वेस्त् वर्ण्य (रह) 🔫 च उद्द (उपन्) स्वाव करवी, बदद (शर-को) वर्ष्य होई-सोवले वक्त (रान्त्र) श्वक्तु गोडा करबी. डिप्पू (इन्ड) बोख, ओब करही. बोस्टिर् (व्युत्तृत्र) साप इस्तो चप् (त्वम) रकाम करनी शतनुं } (ल्वा–किन्द्) क्रमा रहेके सद्याम् (वान्तः) शाहर करनी-बोप्पड् (धड) क्षेप्रकृ ससर्-सिकार् (श्वार्) स्वय रिनम्य कर्त्र करते प्रश्नेता करवी-बैंस् (रम्प) बंदन करतुं शांक्तुं सर् (वह) बहुन करतु बाह् (बाब) ग्रीक्ष्रं कारते साद (बन्) बदेवुं सुष्ट् } (भ्रम) सत्र वर्ष् चुनम् | मृत्यारती मृत्यु करत् साइ (वान्) शान्तुं सिम्ब् (सिम्ब्) सीवनुं क्टमान बाह्ममा अस् बाहुनुं कम सबर्गकन अने सर्ग पुरदोसी रकृष" एई कात के विवेद-शिक्ष अस्तवनी साथै कि एई कर विद्या बात के एक मि मो स जन्दोनी चार्च किंद्र उद्दो, उद्दा, दशे बाव के

#### ११मस् चातुनां क्रपो

बरिय

प्रवद्यन वदुवसम प० पुत्र मिद्र सरिय उद्दो स्ट भरिय-की वर वी धारिश

जी० पुरु बरिच भापमाक्रतमा सम् धातुना क्यो

पक्रवसम यदुव**य**न ओ पञ्चु॰ मि शैसि बी॰ प० सि ĸ भीव पुण सरिय संदि

#### माहत बाक्यो

महंबन्देनि । ने निविदे। धम्हे बच्छामी । मुम्हे दोक्यि बरहे वन्दिमी। तुःदेषु स्वेदः पहित्या। तुन्हे बन्देशता। धन्द्रो फामामो । ते क्रप्येन्ति। त वछसे। तुत्रक्षे चुक्देशसा। भो पहर । सो १५७१। वे को पासेहरे। से पिविटे! भग्दे भीदेम् । 🕏 चिद्रहैमि। में प्रदेशित । सम्द्रे इवे चयामी। त्तरहे कटेशया।

१२ करन बार्ट्या सरहात स्थार स्थाने प्राप्त विवसानुसार फिल्बर करी रूपी बाव छे बेनके-

भंग पार भाग प्राप शरिम-शरिष वस्ति—धरिष मसि—मसि

सन्ति-सति स्यादि हमे श्व छ

\*\* ते ब्संवि । तं बग्रस्ते । हुच्मे बीहैड । शमह विदरेगु । ते को किलेश्ररे। त प्रजेमि । इट सिंह । म मध्ये । तुरहे बंबेद । हे ज़रिय एवर्कवि। ११ भगेरी सरिए ! पुरदे में मस्यि। तुम्हे पूसेद्र । वम्हे पश्चिम्। त समद्रेशि। संबद्धा हे साहित्ति ! इंबासिसमि। ग्रहराती बाक्यो

तमे महको छैं

तेजी रोच करें 🦫

तेनो विषे हैं-

तमी बोध प्रमोधी

तमें के कनड़ी फ्री

div.

बसे इसीय श्रीप श्री बंबा बरो को क्यों होश्य शीव तेलो कोपडें हैं हं वर्ष प्रस ते सदन करे 🦻 तमें साधी जो तमे के पीको छो क्षत्रे से स्थाप-तमे तमस्टार-

तसंबे के करीय कीय बरो खे ते बोवडे 🖹 तमे भागो छो ने सीचे के असे मोजन करीप क्षमे त्याच ऋरीय कीय कारे के बीप द्यों वे विश्वार∼ ह्रो रयाय कर्ष स्रो क्ये ध्ये 8 8 th 6 ni 🕏

तमे बांधी को तं इत्य पाम 🕏 रिधी के बारे के तेओं के की के तमें केली को नं पीडे 🕏 तेची बचावे के समें बनारकों को १३ प बने को कहाँनेहरूच त्वर लावे से संवि नहीं

नवी आसंविकसी वर्षिष्ट (आवश्यास द्वानीस्) तह स्मिट्ये भावेंचेतीद ( नकोक्षेपने शावकारणः )

## पाँउ ५ मी

### धानुमो-

वां । (बाद) वार्तुः सर्वः	१ म्यूर (श) शान भागई वेर्ड
सार् ( ) गानु गा ( ) गानु गिक्का (क्षे) रणानि पान्तुं, विक्त गर्नुं रुद्यानुं का ( या) कर्नुं स्थान कर्नुं का ( या) क्ष्रं स्थान कर्नुं का ( या) व्याप्त स्थानं का ( या) व्याप्त स्थानं ग्रह्म ( या) रुप्या कर्नुं मानु	चा (च) धार्म कर्यु- या (ग) गीनु प्रमाण्य या (ग) गीनु पान केर्यु- सिका (क्वे) स्वारि पान्यु- स्वार्म कर्यु-स्वार्यु- स्वार्म (म्) सेन्द्र-बन पान कें (क्वे) वस्तु-बन पान कें (क्वे) कर्यु-बन पार्यु- कें (क्वे) कर्यु-बन्धु-
	प्राचन क्याच्यां समय सा में। के

देश दैनित दिति देखि देशि देशु श्वादि क्यो पर पान हे

९५ ऐस्क्रवर्ग के गलुजीने अल्लाह क के इस स्वर होन दी ŀτ

ये पातुना व सक् वर्ष व			भय् छ्या इ	à
इसे य.	क मेा	अप्	आर्था बर्	

श्रुमायः		अप्त नाबर्
Pr (=0)	ञ्चल् (दु)	<b>कर् (⊮</b> )
#r (4f) #r ∫ (Bir)		च (व)

| रष् (च) सर् (गृ) चष् (खु। कर्त्तु, पश्च कहत् (ह) तेतान्त्र, सम् (४) बन्ध बाएवी.

चय (इ) होय करही. सर (प) बीच थव चरण को.

सर् (व) वत्त्र वर्ण कि सर (s) शत कार्य कर-

बर् (४-वृ) वर्ष्ट, वर्षर बर्ख

तर्(त) वर्ष

चर (४) चाव करो

१ स्वरान्त वा<u>त्रभोने प्रस्तानेक अन्त्रतो कथावर्</u>ण जस्त्रीली **पूर्व** स प्रमुख विकारे सुक्तामां भावे हे-

क्षे चातुनां क्यो पंकरवंत्रम श्रीमो होस होम

होमि पञ 🚁 बीश्युश होसि चीए पुरु श्लोह

होड होइस्या-धक्रोलित होन्ते होर्ड 'श' अलाद समाहपानी "ड्रोडा" अंक्य क्टा स्ती-

बहुब्बन प्रवस्त

प्रण्युः द्वीयमि होमामि

होलमा होमम होकम होणामी दोजानु होजान होपिय बोहमी बोहम, बोहम

होपमी होपम होपम १६ निक्स १९मा अमाचे लेवुक म्यंजननी दुरहो स्वर इस्त वाच

स्पारे हो । नित्र व्हुनित आ । नित्र व्यक्ति

49	
होसह होएरवा होपह होपरवा होपएर होपएर होपित होपरहे होपित होपरहे बोएरित होपरहे प्राप्ति होएरी	वार म होरहरे होयहरे
पुण्डे पुण्य बायहरया ! ते बातरे ! ते पानित ! ते छाति ! तुम्बे डायहरया ! तुम्बे डायहरया ! तुम्बे बिण्या वे पामसे ! ते चकेहरे !	इ करेकि। श्रद्ध गामि। शर्दे वे श्रद्धामा सो श्रद्धेदाः। सार इवेमी। तुरुद्धे इरेड्डा सामि। सार्द्धे बरामी। सार्द्धे वे सामि। सार्द्धे वे सामि।
गुत्रपती बान्धाः	
ते जाय है ते गाय है इंकरमाई हैं ते बह जाय है. तेमो ये जाय है	सारे के पीप छीज तेसा से हरे छैं तुंस्तान करें छैं तुंस्तान करें छैं तुंसे से पीचों छो
	हो मह हो दरमा हो पह हो पर हो है है पर हो पर हो पर हो पर हो है है पर हो पर हो है है पर हो है है पर हो पर हो है है पर हो पर है है पर है है पर हो पर है है पर है है पर हो पर है है पर है है पर है है पर हो पर है है

मधो प्रधानि∽

पानीय खीपः

तेला स्थानमध्ये

र्श काय छे-

तेमो जापे के

समे वे धारव

बरीय धीमे

वसे चंवाको धो

बर्वे तरीप छीप

तमो कोप करो छी

ते प्रकार है

तमें वे आपो को असे वदीय द्यीय. तमें वे सम्क्रेड क्रो है चांप है	समे वं प्रकाशीय वीष वीषे यासी सी वासे वे कालि- पासा सी	तमे उत्पन्न याम को इंडरपच यार्ट में
	पाठ ६ द्वी	
ो : वटमान कासः व सर्व दुस्य योगक सुद्धाय क्षे रे. कक्ष स्थाना स्था	ण्या वां यापायपारं विष्णयात्रं अने निष्णय अपयोगे स्थाने स्था ए प्रस्करीनी पूर्वे का	-आक्षार्वेगां गाड्रभोगां भवता क्या विकरो
कारण इस्तिहा । १ वर्णमायकार, व मद्याभीने प्रका	े पुरम्भानकाण्यक्षे प्रान्तकारकोका हो इस्टेंग्सि एमापि होद पिष्मकाकः निगर्ने सं भोषक काम्सी संस्तास्त तो के कहा होन्द्रक	श्रोतिक श्रमावि वे बाझार्यमा स्वयमा र पदेमा एक सम्बन्ध

पूर्विक विका 15 अमाने छात कार कार कार रहते श्राप्त

हुउड़ा इसिन्ध इसिन्धा पम वय है

होत्र-होमा	संगर्गो	ঘন্ত	इपी
PERO	***	73	

पञ्चुषं हो असमि होजनो हाजमु होजन द्दोरहमि. होस्कामो होस्रामु हास्राम होत्रिक्रमी हात्रिक्रम् हात्रिक्रम होग्बेमि हारकैयो होरजेस हारजेम

द्योगत

होरहा

बी॰ पु॰ द्वाउद्यक्ति होत्र हासि

> दाउनेसि शोज्यसे

द्ये गत

दोगमा बी० पु० दाउबर

दोत्रसाद tinkt. द्योगमध

E173 द्वारमा

रवरान्त्रचनुभागे भावे त्यारे वर्गकारे

द्योग्ड-शास्त्रा

EIFEE

होरबाद दारहेत्या

हाजिजनित हाजिबन्त हाजिबरे RITH द्रोग्डा

शोध+उत्रन्शायरत शाम+उत्रान्शायरता

द्यारिकर पा.

द्दारज्ञे इत्या

CITE,

द्वास्त्रमः

पुरत रेक प्रत्यश्री पूरे 'क्ष' प्रत्य

हार्ग्डेन्ति, दार्ग्डेन्त, दार्ग्डेदरे

श्रीवतनित शोवतन्त शावत्रहरे, बारमान्ति बारमान्ते बारमार्दे,

दाउत्राहरया

होउदेह दारमश्रधा

•	<b>€</b> 40	<b>सद्भ</b> क
य० पु० होप	रहमि	होपउन्नमा होपउन्नमु होपउन्नम 🗝
होच	रत्रामि	होपळामो होपउहामु होपउन्नाम
होप	रहे य	हापत्रिक्रमो, होपत्रिक्रमु होपत्रिक्रम
		होपन्त्रेमी होपन्त्रेमु होपन्त्रेम
	रब	द्योपग्रह
होप	रिजा	होपण्या
बी० पुरु हो	परवसि	होपञ्चह होपत्रिज्ञत्या
Eli	रस्त्रासि	द्वोपण्डाह होयग्बेत्था
क्रोप	राहेसि	होपान्द्रेष्ट होपरजहरूया
g)r	रम्बस	होपज्जेहरपा
		हांपरताहत्याँ
क्रो	पञ्च	होपरम
E)	पण्डा	दापञ्चा
Ale de f	परवह	होपाजनित होपाजने होपाजरे
	नामार	होपत्रज्ञान्ति हायत्रज्ञान्ते होपत्रज्ञाहरी
	पक्रीहर,	होएउप्रेमित हाएउप्रेन्ते हारउपेहरे
	विश्वित्.	क्षांपरिक्रस्थि होपरिक्रस्त होपरिक्रदे,
ŧ	ो <b>य रा</b> श्व	द्वीपक्त
	विकास	होएमा

सीक् धातुनां करो

प्तिकत सर्वे । धर्मपुरुम्मी । स्रीवेडस सीवेडसा

गरिष्ट (पष्ट) निवर्ष

त विवदेशता।

ं पञ्च-क्ता न को लारे होति हो जीन हो जानि हो प्रसि देनव झी होने हो जानि हस्तारे पूर्वण पाण्ड स्पे नाम के पासुको सच्च (कई) पूर्वा | नेस्क् |

(राष्ट्र) क्राम्स् चैर्स् शहस्त् } (वस्-महत्र्) गास--लक्ष (चर-चरव<sup>86</sup>) गास्त्री बीच् (शीव्) नीवश् सिंख (सिन्तु) छोरशे दिन्त्रो शुक्ता (पुत् बुष्प) कन्तु सोस्ट् । (रेन) राम्स बह (रह) ध्यतुं वाळ्युं वाल्युं पय चित्रम् (तिव्-तिव्य) विम् वर्ष त्रव्यः ( (६२) प्रनातुं 375 विस्तार करणी सह (घर) यस नगर, धरने, प्राष्ट्रत शक्यो सो मच्हेज्या । इ निवापज्जानि । अन्दे श्रीवेज्य । तुरहे दो मिकारत- शु जापरवसे । शः पिवेशकः। इत्था। द्वान्ते वे मिस्राय-स चप्रकेशा।

३८. इन्हर्मी कारिय़ां स्य में खंबने चंदर द्वीर दो ह्या बात के दन चेहरा शन्यतां स्य में चल्ल करो नगी जनवाद (इन्दर्स) वास्त्रों (त्वारा) सुरुर्ध्व (स्प्रस्) ब्यादा (स्वरति) एककाशों (क्याया) बादुर्ध (स्प्रस्)

तं गरिद्वेसि । क्वाहस्था।

लमी क्रारत ।

काओर के जिल्हा

चम्हे हो होज्ञामी

श्रमे दुवित साप

विश्वमो ।

स तुरक्षेरता ।

तुं गाउनेसि ।

तस्त्रे सम्बेरमा ।

वर्ष छन्द्रेपता।

ते तस्सेरमः।

तुरक्षे पापत्रसाह । ते पूर्व वैयासहरे। धरहे सहेरता। जुरहे पेपन्जाह । हान्हें जुने बहेद ! बाहे सोस्डेग्या। सो पारताइ। श्रामराती वाच्यो. तमें प्रकाणों छी-ते वे सिव याय है तमें में युद्ध करी छी तेमो सह बार्वे छै-स बिन्दार करे हैं- हु बाव गामे छै समे प्रशाक्तीय तंबमो एडे के तमे इस को सीप बचे पीय बीप तमे स्वान धरो को त्तमै ने छांटा छो तेओ गाप 🦫 हे बरपच पार्क हैं-रुप्ते इत्यन्त यामी ते भारम करे 🕏 ते अरापे 🛎 तमे विचार करो है k wet is तेमो आराप छे जारे से स्कानि तं धाद पाने छ ते व्यानि पासे छै त भीने छे तमो समा खो 🕏 पामीय सीयः धामो प्राप्तना रशरी अने कांत्रनो केरमा वदराव छे है इस. १६ के करी का उल्लीवन जिल्हानो केवा कात के हैं प्राप्तानी विस्तान से बाव 🛊 🛭 'स' अपने 'सा नि। प्रयोग क्यांबार के **।** 'सि'वने 'सो' अपनयी पुतना

≁का बाहनो एउ। के उक्का न्य अनील पूरक ≰रवा

- म्हे सूने 'प' त्यावन क्रिये न साथे तेवा क्रियमक नाइकोर्न स्पी साथो.
- 🖴 व्यवसान्त अने स्वरान्त बाह्यभीनां क्योबी विशेष्टम बदाबी
- पूजना श्वरणी क्रोप क्यारे जाय वे दशस्त खिद्दा म्लाबो
- 🦭 'क्क लमें 'क्क्क्स' नी ध्यन्य का है है बाव है
- ३६ स्थान्त कवे अंक्रमान्त वायुक्तीमां 'क्रक्र' अमै 'क्रक्रा' मो उपनीय केवो शीते कात्र के से स्थान्त कवित कवानी.
- **१६ 'ने अने पुथ्छ बाउ**ना संपूर्व का क्याची

#### उपसर्गी

(१) घरवर्णी वाहुमोनी पूर्व हुक्कालां आमें के जाने देखी चाहुमोता सूछ अभीता केरकार वरी केाइ ठकाचे विकेच वर्ष तथा कोइ ठेकाचे विश्वति वर्ष असे कोइ केकाचे हुने आर्थ बतावे के

माह } (अधि) इद नहार अधिभन श्रद∤क्षाम्≔नदक्षामह भारत } ये दर प्रहार श्रन के ते उत्कामन करे छ

सदि । (अपि) उपर, जवि मेठवर्तुः स्रिति । सदि-विद्युक्-अदिविद्युत् से उपर निर्वे के सदिमस्युक्-अदियसम्बद्धत् से नेसर्वे के

मणु (शर्) नाप्रक नारक शरक शरीय। अणु+यवस्क-अनुगबन्धर्-चे पारक बाग के अणु+कर्-अणुक्तरर्-के -अळकरव नरे के (अमि) सम्मुख पासे अभिनश्यक्ष्यानिगक्कर-रे राज्य वान के ते गासे वान क

(अप) गीने किएसाट वाव +ध्यू=व्यवयरर } ते गीने भी+ध्यू=चोयरर } तती है-वय-मयु=अवगमेत् र शिल्मा ut it. क्या (भा) एक्ट विवर्णन कराँचा वा÷राष्ट्र=सागच्छेर् दे भारे के } ते गर्को करे के (क्य) विपरीय पत्तु, स्ववश्वसम्=स्वासम् कर्मः वीश्वसम्=सोकसम् ्र चे पाकी भूप छर्=मणसरह भो+सर्≪मोसरह <sup>१६</sup>ड (२६) वर्षे, क्रम<sub>ो</sub> क्ष÷प्रकक्क=क्षरम्**कक्कर्**न्ध कर व्य⊀ के ब+डा≔बहुार्-दे वर्वे के. १९ व (अनव व्यवस्त्री कोए वर्षक होनारी) क्षत्रपनी स्त्री में मंत्रन जाने ते हाता देवतान के से भांकर देतरान के देम्पंत्रम को वक्तो दीयों के बोबों अबार होन हो (डिल्पा) मध्य बाहरतो से वर्तनी (बीधानो ) पहेको सबै (फोबानो ) त्रीनी अनुक्रमे सुनान हे. (अका नी कृषा प्रश्न नी त्रा प्रदेश में प्रकृ

> वन्त्रार-वहार-वहारः निन्द्वदेश-निर्द्वदेश-विश्वदेशं वन्त्राराज्यकारेर-कवारेर

इस नो जह पूर्वो पुरु नो बुद्ध थल मो ल्या प्यामी दर्

फफ नौ फफ अम नो क्या बान के बना

श्राच   (उप) पासे मो   स	स्थानक्ष्यान्यस्थाः । वे पाप्ते स्थानक्ष्यान्यस्थाः । वे पाप्ते स्थानक्ष्यान्यस्थाः । व्यव स	
वि (मि) बेश्यः ज्ञ मिने	निश्मजन्निमस्तर ) ते हुवे छ भुश्मजन्तुमस्तर }	

नि।वह=निवहर । ते गामे वह हे

पत्ता+स्वय=पराष्ट्रयह−त हारै हे परा+सम्-परामबर्-ते प्राप्त प्राप्त क एका+सम्-परामश्-ते मागी बाद हे

परि (वरि) विश्लेश, परि तृष्यू-पितृसङ्ग् न्ह विश्लप् सूनी बात क्र पेटि केरगर क्यों परि-क्ष्यू-परिवाहर-सं गरिवान करे अ भारे वाल। परि-क्षाङ्क-परिवाहर-सं गरे वाल सटके क्षे पदि-पति । (अपे) शह, पढि+मास्-पदिमासर-च शर्मु गैके छ. परि-पर । अन्द्र धर्+लास्-पर्लाखर-च मटिमा करे छे

च (प्र) आरक्ष, प्रथम प+पा=पपाइ-स आरक्ष का हे

पश्चासञ्चयासेश-स विधव प्रधारे के. वि (वि) विशेष, विवेष, वि+धाया-विधायिष्ठ-ते विशेष वार्थ के

विरोक्तर्य विश्यार्=विस्तरह ते मूके हे वीसरह

वि+सिक्षिस विसिक्षिस् -ते जिनोन पासे ध

कें (तम्) कार्य रीते की/मक्त्यू-संगव्यक्त-ते बारी पैदे शके के.

विद्+सहीन एसही बीचही क्याही-निर्**। वेदाना ने नीत्** विर + मेल्स्-विशंतरं. रा द्वर्र+क्वोन्हरक्वी पुत्रको, प्रवहो, हुर्शक्त ⊏हरत्तर्द इर्शक्रकोन्द्रिष्यको प्रशिक्षो (प्रशिक्त) वि २ प्रामी (

मेरवाम के क्यार---

काना करनी इच्छा बरबी ९ निर्–हर्मा वचर्णमा रेचनो निकाने स्पेत बारं <sup>हे</sup> पत्र रेपनी पत्नों स्वर आने हो तीप बान नहिः धवारे रेपनी कोर पान महिलारे प्रतीमा अंक्शमां रेफ प्रती व्या है स्मेवन

क्रवसर्व सहित क्रवोगी बाद्य बबुभसर् (बर्-स) बर्फ्स-स्रद्रभाष् ( अदिभार् ) गीन

क्यांच्यो व्यक्तियाः क्यांग्यो

<del>बाबुशका</del>प्य (बा<del>द्धशका)</del> असका

हुर्+श्रादार=दुरावार-हृध्य काचरव पुरश्वाकोगव्युराष्ट्रीय हु वे वेचार.

राप्ता ) पुरान्धंय-पुरस्केत्र न इच्च करी वालेने हे चु } इक्या तुर्रनका-पुरस्केत्र } ने इच्च करव करे हे

धाहि+क्ह (धावि-र) नन्द

व्यक्तिकास (अभि-वर् ) अभि-

ितिर) निवन निर्मुनक्षिण-निर्मिणोइ-से निवन निर्मेष्ठे ति भाष्मिक विर्मुखेननिवलेद्द-से निवन करें थे नी निर्मेश निरम्बुक्य-निर्मिणोइ से छापा नरे थे. ते निरीक्षण करें हे

बाहर (था-इ) बाहार कर्या व+हे (इप्-दी) उग्हें विभग्दद (शि-क्षु) संसादी प+माद्=याद(श-माप्) पत्रहे प+विस् (श-विष्ठ) प्रतेष करणे

मा+गच्छ(बा-गन्-शच्छ) भावनु

प+बर् (त्र-ह) प्रवार करने शार्ष परा+बर्ड (परा-क्र्र) फैरवार वशे सावधि करने. परि+हर (पर-ह) खाग करने.

चाहर् (वि—श्रा−इ) वील्यु वोलावर्ड

ते वो बाहरेका । वं पविसेका । अस्ट्रे परावद्भियो । तुम्ह्रे वेक्ति अर्थवरेह्र । स अञ्चलित विशव्य (विन्वप्) विकार वरवी

्प्य विश•कम् (विसन्) विकस

बि+उडव् (दि-इ) वनास्य

विश्वस् विन्हम्) विश्वस गाम्तुः

aufi.

धेत

करको मीम करकी-

विश्वहर् (वि इ) निहार धरवी आवेद धरवी.

क्षेश्तकक्ष् (सं-यम्-यक्ष्) घटकुं. श्रुश्चर (सं-इ) चंद्वार करती -

तुम्हे दुष्णि विगयकेहत्वा तुष्मे दोष्यि विससेह। ते परावहिरे ।

तु परावहिरे । तु विदयोग्ति । र्व परिक्र । तु विदयोग्ति ।

### गुजराती वास्मा सम्भानर करीए कोए । सेवो वे

कार कार कार कार इंग्लंड के ने बीकानों की इस में के बीकानों की इस मन्त्राध करें के कमें बनावीए बीए दें बाइनित करें के इसी बनावा करें के इसी बनावा करें के तेनों वे व्यक्तिकार करावे के..

को व्यक्तिकार करा केंग्र.

केंनों बादे कें
श्री विकास केंग्र.

वे व्यक्ति कें
वार्य वे व्यक्ति करिए क्षीए...
ह्यं ब्युवारे कें
वार्य बाद्यार विकास करीए क्षीए...
क्षा ब्यक्तिए क्षीए...
क्षा व्यक्ति क्षीए...



# पाउ ७ मी

#### सहारास्त्र साम

<sup>२२</sup>पडमा सने बीबा विमस्डि अध्यक

पक्षकार बहुदबन करातन } य^-को[प]<sup>13</sup> सा प्रीम- } थी-स् बाय क्षातन } पञ्जी-स् हर्देणिः[स]

१ जन्मण्य पुलिस्मा पन्नी विमन्ति विद्यालना स्वरादि प्रत्यको स्थानको पूरनो श्वर कोपाल क सेमके—क्रिया+को क्रियो १ पदान्तको प्रश्नोत को तर्व केम्क्री पूर्वना सवर पदर

प्रशासन के त्रिम के उप क्या क्या क्या क्या क्या कर कर नत्सार त्या के त्रिम के प्रभी की स्वर कारे हो इसा बढ़ा कर क्या क्या कि क्या के क्यारे बहुसार न बाद स्वारे सूर्या क्योंने स्वर को बाव के केन्स्र क्रियम्-क्रियां क्रियम्-अधिय-क्रियं शक्तियं कस्य क्रियमक्यियं क्या मित्रय

च वेदै बनना उसममितिये क वेदै १ नपुंचक किंग्नो हूं हैं जि असनो क्यान्यां पूर्वनी स्वर

चैत्र बाव के वदा फळ+ई-प्यूडाई, फडाई फडायि २२ प्रकृत मात्राम्यं शात विश्वविक्रो माढे प्रमा (प्रव्या) चैना (विद्येग), सद्दा (स्टेंश) चलचे (च्यूडी पंच्या (प्रव्या) स्त्र

(হিটোৰা), বহুৰা (বৃত্তীৰা) কচকা (বহুৰী) বৃত্তমা (বুচকাৰী) তথ্য (বহুটা), চন্তমা (চন্ডমাটা) কা ককা ককাৰ জ

२३ व्या ए प्रत्यन तेमन वीच पत्र जाना घोडेस्तां जापेका अन्तरो जाममांत्र वरस्य के वदा समन्त्रे सहावीरे यु इती. एठ विधो विधे विधा पठ विधे विधा विधा पठ विषयं नाणह नाचार्थि एठ । वार्ण नाणह नाचार्थि

कार्य शाणाह शाचाई शायाचि सम्ब (प्रक्रिय)

ब्राहरिय } (आपार्वे) कापार्वे क्रिक (क्रिन) यव्येसाहित क्रिक सम्बद्धिः क्राह्मिक स्वाप्तिः क्राह्मिक स्वाप्तिः क्राह्मिक स्वप्तिः क्राह्मिक स्वप्तिः (छन्) स्व

सास (अप) थोगे.
इस्तरमाय
करमाय
करमाय
क्षेत्रमाय
क्षेत्र

२४ हावारी अवर स्तरां को कांतुष्य " व.-त.-व.-त.-व.-त.- व स्वाचीने आहंदगों और स्वयं के तम स्वयं की न भाते थे। व नाए के देगम स्वरंपनी को स्वयं होन थे स तो प्राप्त व स्वयं के दीर देशों के दोने व तम स्वयं के दशा-

स्वत क उद्या ---क-सोनी (क्षंत्रक) | क-श्च-रक्षं (रक्ष्यप् ) | प-रिक (रिप्रा) स-सने (क्ष्मा) | ए-व्यं (वर्तेक) | स-स-विज्ञोसी (रिप्रा)

य-सर् (स्थी) व-भग (स्था) व स्थानने (श्रवणम् प मो ब-गमा (परः)। व धो य-सावशे (बाइक)। स्रोधी (सीकः) प्ररिस (३०४) प्रश मोर (मपूर) मोर रक्ष (स्व) रव बास (बाम) ग्रहाह छोड्ड-धास (राम) विशेष नाम न्नद्ध (तुष) पंक्तिः श्रयज (मरत) बासदेव श्चरह (बस्त) बाहरको मार्टक. क्षय (स्त्र) अधिमान सर बाच्छ (इत्र) शाह. सम्बंदिय (प्राप्तम) माझस विकास १५ (विक्रोम) विकास सम्राण (धमक) साबु, धमक, सुक्ता (सूत) मून अहावी. श्रीस (किय) प्रिथ ( श्युंसधींत्य ) मधर (गचर) मनत सम्म (अम्) येथ नारश्च धमध (दाम) दमस माख (बान) सान. कतिथा (क्रम्यान) क्रमान **धर (ए४)** वर बाज<sup>२६</sup> (शम) शम शंस (क्य) व्यः वर्णीः कच्चा (बारम) गरम जिजबिंब (जिनविज्य) जिनेपरवी SE PRET बह (शरव) माच १५ अंबल सहित स्वरमोबी अन्नवनी धीप पदादी शर स्वरमी पूर्वना स्वर साथै संवि वर्डी वर्ड केमके-विशावधी (निदाबर) रवनिवरी (रवनिचर) प्यावई (प्रवासीत )

कानार-भेर ठेवाचे रिकारी शीव वाद के कुंपनारी कुंमारी (कम्मकट) वर्मीवंगी-कानेको (कर्मापट), ध्रतिधी-वर्गपती (द्वपुष्ट), कोंद्रसारी बीमारी (कींद्रसार). २६ घमना नेपर अर्तपुष्ट केंगों केंग्रस के तैमज नारिमां केंग्री नेपर केंग्रस केंग्रस केंग्रस

२६ घनरा जन्म अधिकुक भीतो चित्रम के स्थ कादिमा भा होन्सा विकारी चित्रम के स्वास्त्र पूर्ण (जनम् ) वार्ज (जनम् ) तरो } (बार क्ल (कम्मू ) पाली (जनम् ) वरो } मेस्र १७ (नेत्र) कांक नेत्र पुष्प (१४) पंद्रा प्रस्थाय (प्रशास्त्र) भाषम स्त्र न्यास्य } (त्रान्तः) ब्रान्तः व्यास्य

करुक (सम ) उपक.

सर्ट (ब्द) के

श्रुसाम (शूलन) बार्गपन वरेन्द्र पाचाम

met (ex.) a. क्ष (विश्व ) कान्य दम−पत (रुक्त) भा

स्तो अने एस एमी का यन क क्ष्मक नर्पश्रमेश्चे प्रकाशने बहुषणन यः प्रत्यस्य क्याउवाची कार

ष्ठ क्षेत्र सर्देश के यए, प्रशानि

२ ०. येश धाम समें रोना वर्णशब्द बण्यो पुर्तिनयार्थ का विकर्त कारण हे. व न्वीता-वेलाई वरणा-अववाई ३४ प्राक्षमध्ये काम्य व्यवकानी केत्र वात के वदार---

ताब (ग्रावन् जाव (बाजन्) तथ | (बवन्) बाम (नामान् बन्दी (बदन्) ताले (तालन्) तथ | (बवन्) ब्रम्स बर्मेब् २५. प्रवरणी भारियों पर होन ती अर नाम 🗷 तना अन्तर्यक्र पती वा माने हो बीए डेकाने का नाम है

क्ली वक्षण) वसी (वस-), जाइ (वारि), संबमी-संबोधी (संबम

रक्य (रबत) क्री चर्ची. ब्रास्थ (नम्) कर्योः सिखं (विश) करनाय, बंबड, मोबं-सुच (दन दन पानः सुद् (त्रवः प्रव

सुब (सम) वेर्षः

इस (१६म् ) चा

सरब (६४) तर ग्य

बाह्य (बान) चीर्छ-'श को 'पाम' है डिकिस्स प्रकार्त एक्पचन्तुं बहुको स

संबोच ), अववती (अववयः).

क्षंपम्तुन्दिक्षणाप्र**ाप्य को द्विष्य का कि** एवं स्व बाद ध वाधीश कर्रे अध्यक्षक सर्वेशमसं पुष्टिक अने बर्धकार्यक्रमधे 'क्ये **धा**रतास्त पुर्वित्वय अने नपुंतद्ववित्व जैवांव बाब हं केळकोड स्रोधं विधेक्ता क रा आध्य बहेवामाँ आवधे

सहयय

सक्क (अप) हात्र. वि पि (बरि) पत 🔻 १ य थ (च) बने क्ष (व) वर्षी. अम्बर-सब लिंग सर्व अपन करे तह विश्वविद्धां सहात रहे हे

घानमो वरिस् (इन्) ३१ वरसञ्

बच दिस (उप+दिश) उपदेश करिस (इप) नेडचु सम्बु काकशय करह

वरिस (इम) देखवं चरिम् (१५) समा न्युं

मरिस् (इम) विवास मरिम् (पूर्) सहन कन् इरिम (इपू) इप वयो

शिवह (मह) महत्त करहे. **बच्चर (नगस्य) बमल्यर करनो** 

मासी

थ सङ्ख्र (प्र-प्रव) सेमासना करवी बाद करहे. य-वास (शस्त्रम्) प्रस्तरम्

१ के सम्ब सुदा गारवाला देश्य ते दरेड सन्दर्भ अते सबसा गर्व शक्तोने अञ्चे जा जन्मननी क्वोंन नाम के दश----पर्क म पुत्रं प्रशास म निगर जनगा वर्ग पुत्रं सूनं प निगर ( अनुस्तारती पड़ी 'च जो अबे स्त्रती नहीं 'व-अ'नो हतीग हाय: नार छ )

१९ इक्षदि वाध्यमीना ऋगे अरि वाय के वरिका (बचति )

### माइत बाक्यो

पुचा क्रुझाचि विषेति । ਇਆ ਇਸ ਸੰਕੜੀ ਹੈ ਜਿਹ भूतका धरधार्च क**म्प्रे**र । मुरुषको बुद्ध निवद । पण्याह वहेररे । वेका तिरुपयरे काथितित । यसा सर्वः यमञ्जेरः । समये नपरं विश्वेत । पयासेर<sup>88</sup> आहरियो । सामरिको <sup>३२</sup> सीक्षे उपविश्वतः <sup>३</sup> थर्ण कोरेर कारा । सो वं परिमेत्र । बायको अने पीत्रैह । थम्म वरिलेश । वेवा मध्ये विश्वविषये वर्त मोद्यं नद्र क्रवेद । च सिचेतिः पुरिधा जिले वंदेहरे। रामो पच्चार उद्देश। कान तवो स मृत्तमे । स पोरचय विण्डेर अहे व हुम्बे प्रवचन कि जानेत है शृक्षणं गिर्ग्हेमि । घरं घणं रक्का । बर्द पाच निरेमि । तका अपनेता। सम्बो जनो क्षाजिमका। अन्द्रे नार्थ इच्छामी । रामो सिषं सहैर । लमहे वल्याचि पमन्त्रीमी पाना सहं न पानेन्ति। जाह जिल्लाहें तार मयेषो वर्ण बाह्य । सरवाः वंदामि । १९- 'म वर्षेत्री पूर्वे अनुसा पक्षी 'अर के क्यां क्षित्राक्ती कीर

१९. 'या वर्षमी पूर्वे अवका पक्षी 'वा के बा' विवासनी पेरें प्र पर बाम्मा दोन की 'या' वर्षमा प्रमामा प्रापः 'वा' यान के कैनके-(बामा) बावरिश-को-कावारिको (सप्) मच-सन्नो (ननक) क्या-क्यानो (मार्या) कारीबा-वारीका

क्यार्थ — (काण्यात) आर्थिश-श्री=श्रामाण्यात्रिश्ची (स्था) सम्-स्था (स्थाप्यः) क्यान-मध्यमी (भाषा) आर्थिश-स्थारिशा ११ द शर्मि इत्यापेषक क्षत्रम पक्षो स्थर खावे हो सीव सार्व-मद्रि सोड सह (सम्बद्धि इतः).

### गुजरादी धास्यो

मुम्मेनो मृशाब छ इस्त प्रमादे हो इस्त प्रमादे होता छ वै मंत्रा हुए छ विभो हाम ४५। हो वै हाह रहे छ पोशाबो कब चीद छ देनो डी-कारोमें बड़े छ राम दुस्पारे बड़े छ व नकारो मेला हा बाव छ बगायान हामन। हम्मेख वरे छे छा बत है विनेटी दुस्कारोन बाहे छे बाने मुख्यीं स्मादे हम्झे खने त शिद्ध यात्र छे परिश योक्षण मध्यदे छ मूर्यों के तरका पामका नयी.
पियान सामकीते हुरून दे छ खाड़ े तर दरे छ सहक पक्षण के छ छ स्त्र कर एक स्त्र छ छान्न कियान स्त्रीए छीए.
पुत्र जिस्ते कारकार करे छेपानी सामक के
सहक पानी पीए छे
राज पानी मारे के
पंडियो एउन कर छ
सहक पान सामे क



## पाठ ८ मो

धारासामा वाम.

सहवा समे चत्रस्यी--विसक्तिः

प्रदेश कर बदाया विकास

पक्रवजन बहुवजन प्रक्रिक शास्त्र विकि

े नायोची बैसी व बान के १ दर्वीनामा १९४वल नमें बहुत्त्वनमा तथा करायों निर्माणमा

प्रकारण प्रकार तम बहुरवन्त्र तथ वर्णन तथ प्रकारण प्रकार कार्य पूर्वन का क्षेत्र प्रकार के क्रियाचानिक्रिया क्रियेर्यः

जिम्मोहि जिमेहि जिमेहि जिमेहि निमेहिं १ महस्ति प्राप्त क्यान्त शूरीन स दौषे यात क

-क्रिक्+य>क्रिकाच

क्रिज (जिन) त॰ विजेज जिलेल जिलेहि तिलेहि विलेहिं च॰ विजाज (जिलायः)

१४ व प्रथम च्युकी एक्टप्यम्सा क्षारूप्यं (ते मारे, वार्णे -ताव) तेवा वर्णमा क्षित्रये सुवान के ते तियान एक्टप्यम्समा व्यव पहुरणमा वहाँ निर्माणा ज्यानो सुवान के (अक्षरणा च्युकी

बहुरक्कमां बहुँ निर्माणना जनको सुकान के (आस्त्रां क्यूप्ते निर्माणने स्थाने कहूँ निर्माण सुकान के । यह (वर) बच्चने स्थानित एकस्त्राता काह भाए अवव निर्माण करें के बार----व्याप्त स्थाप स्थान

```
नाण (द्यान)
```

तः नाचेर्णनाचेत्र **४०** नाणाय, [ नाणाय ]

माणेडि नाणेडि नाणेडि

शक्ती (प्रविध)

मबसाय (बकान) बरवान तिरस्यार

मस्रोग (समेप) समोद-भाषार (आबार) बाबार-

इक्सम (अचन) उदार महेनत. उषयस (उपरेष) उपरेश इद्वार (इग्रर) इहारी. कोड<sup>३५</sup> (कोब) सोब ग्रस्तो

१५. ग्रन्तमी अवर स्वरंभी प्रती वर्शयुच्य स प-प-थ भगम नो इत्रावक शमब ट नो व ठ वो व व नो व प नो <sup>य</sup> द नो भ 8बाइ अमेद नो द नाव बाद **छ अ**ने रा−व की र का के

च-सं(सुकर्) ब-मेडी (मक)

**पं-नाहो** (बाबः) "म"-साह ( साह ) म-सदा (सम्ब)

'द' वडी (वट)

'द्र'-सती (यदः ) 'ड -गस्को (यहडः) "प"-वन्या (चपना) 'इ'-सम्वी-सहये (सहये )

'ध'-सदको (ध्रवकः)

'खं} हैचो (शेक) 'वं} किलेखं (विशेव)

बहुमां-क्यू (क्यू) वोड् (वोष्) धोड् (क्रोम्) पील (बीव्) जब् (अर्), अब् (अप्) विवृ (विवृ),

```
बहिर (विर) वहेरी-
चंद् (चन्द्र) चन्त
                            वैश्वक (जाग्रन) जाग्रन
क्रियेसर } (विवेधर) विनेधर
                            बाध (शल) अल-
सस्म ३६ ( कन्बर्) चन्म
                            अजीरह (भगेरच ) मगैरब
बेड है र. (तम ) वरीय
                            सक्तिकास (महिएक) एक
भारम (वर्ग) कर करत.
                            मिम
सन्न (एव) इरम
आच (स्वार) म्बार थेडि-
```

un.

मरिंद्<sup>हेउ</sup> | (मरेमा) शबा निरम (नरक) नास्त्रे नरक.

विक्रमें बाब क

३६ कश्रमी क्षेत्र तम होत शो त्या ताम क्ष्मी त्या मो स्म

सुक्ता | (क्षेत्र ) मोड-सोक्रम |

बावो (कमार) | बुवर्व | (बुवर्व) (दिवर्ष | (क्रिक्स) बावो (बमार) | बुवर्व | (बुवर्व) | दिवर्ष |

३० धम्पनी नेपर रहेव अनुसार क्या वर्षीय ब्लंब्स आवे ही

मुद्धर (धुखर) शाचानः

करलारमी है गर्गमी जमगाविक विकार बाब है. 'क् भेगरी-वहारी (बहार') 'न'-रही-रण्डो (दन्दः ) 'क्'-तंदी-बक्टी ( सक्टः ) 'र - परो चारो (चार)

च् -नेडी-नच्नी (बब्दा) 'ब'-देनशो-दाल्यो-(दावरः) 'म् -बेस्र-सम्बर् (कारते) 'न् -र्वश्रयी-परमधे ( माज्या ) योग (गेर) बोद, साग (बोड) श्रीड. बह (वर) वद. निस्मद्द (सन्मन) कामरेक बाह (काब) हिपारी, पिषय (वितव वितव विवेध.

मेड (मेप) बाद्

बीयराग (बीटराव) राग रहित. चीर (सम्) भीर, पराक्रमी. सीध (रमून सन समुदान धमक्ति क्षुविध संध.

मयुसद्धिम भोसड (औपन) औषप, रहा करत (शव) दाम दाव-कड बाह्र सरकड

गयस (तन्त्र) बाह्यस सेस (दल) त्वस्य परमापै रामाय (हडाव) ठळाव जनावन तित्य } (तैर्दे.) तीन पनित्र स्वान

योच (स्तीत्र) स्तोत द्रोव हो 'द्र' बाव छ

देव्ह्रय (पष्ट्रम) क्रमण धास (शार) पार-पुरुष (१६४) १९४२ वर्ग परित्र वर्ष्य हर्द (त्रम) श्रम. यक्ष (बावन) शत्तन धून्यंशी संबर इस अमे व्यानो 'प्य' बान के अने आविमां

म-नुने (पुन्पम्) चन-नित्नावी (विन्नाप) 'रा-च्या (शर्वा) 'स्र'-विद्वास्त्र (गृहस्त्रीत)

'स'-धतो (सर्व) 'स्र' पेडचे (शास्त्रमध्)

सदश्चल (सज्जन) सारी भागत-

सयायार (एशचार) उत्तम-बाबार दवित्र माचाम

सङ्ख्य-(समाव) स्वमाव अक्रिक

सद (शह) सुरचे।

सर (घर) वाब

साथ (स्वर्ग), देस्तीय-

साधग (धारद) धारद.

क्षिक पुरुष हरुख (इस्त) हाप

24m (Em) £4

दुरिय (द्वरित) वर

सिद्ध (धम) विद्य मन्त्रात



88

विषा<sup>४१</sup> (किना) तिकाय रहित. सम्प्रत्य<sup>४१</sup> सन्बद्धि (सक्त्र)वश्रदेशांक्षे सामद्

सद्ध (धम) साथ सर्विद्ध (भार्वेम्) साथै

### चानुभो

सह } (सट्ट) बाज वार्तुं सह मार्थ (सर्व) दिस्त बार्यों सार्थ (सर्व) दिस्त बार्यों सार्थ (सर्व) देश्युं स्व (सट्ट) तार वार्यों किंदु (स्वन्द) प्रस्तुं दिस्त (स्वा) ग्रेक्स्युं सह (स्वा) ग्रेकस्युं स्तोइ (स्वा) ग्रेकस्युं स्तोइ (स्वा) ग्रेकस्युं

४९ विचा अध्यानमा तीवमां तीवमें क्षांने पंचमी विमाण्डि स्थान के तमन वह अन्यन अपने से वर्णनामा तीवा अध्याने से गमनी साथे कोडाय के स जाम जीमो निजित्ता सुमान के

अस्में विशा छई व बहैज्य. वालेव शह क्षमधा शोईते.
 ४२. वे अध्यवने वस्ते 'त होन तेने वहते 'हि-ह-न्य, बावे के

चीह, वह बाव (नग) | वहिं बह तत्व (हुज) चीह तह हाथ (त्रा) अमाहि बम्बह असम्ब (सम्बन्ध

¥

### भाइत बाक्को

को पर्गकानेत्र सो सल्ब कायह । बो सन्ध बावप सो धर्य

बावेश । बुदा बुद्दे पिक्वानित कि सरक्या ।

जारं करेमि रोसं। यमं वानेन सहस्र होता समजा मोक्पाय सपन्ते। बहिरो किमवि व सुकेश।

समजा नाचेच तबेज सीखेज य ध्याने । सावमा सक्य पद्मपर्क्ति जिले मक्तेसः ।

मणो पुरारेज बहारे किंगर। पाची बहाइ अर्थ धावह। नापरिका सांसेकि सार विक्रदेहरे ।

बळमेथ सिजाति ककाबि **≋ मध्यारद्वति ।** 

रोया बोस्डिप नस्पंडे । सीसा बाहरिय विवयन

व्यक्तिरे। श्रक्षणा कपाइ सम्पर्करं

सदाव व कड़िरे। बाह्रो मिणे खोर्डि पहरेर। शीकेज सोहप देही, व वि

मसमिदि । ध्येष रहियो तथा सम्बद्ध

सदमार्च पावेखा। बुद्दो फबसेदि बहादि केपि ल पीकेंद्र ।

सावेज सच्चे सिवे निममो। बीयरामा वाजेच क्रोगमधोरी व मुचेररे ।

संघो तित्वं महर । जाशारो परभो धरमो

थानाचा परमारे सभा । भाषारो परमं नार्च मायारेण न बाद कि ! म

## गुजरावी वाक्यो

चावडे जायाच होने हे कमारहे आहम बतो नवी एव बाबार वडे बाव है कीम मानदने पीडे हे रायामी त्याद वहे शहर करे छे पासके मनुष्य तरकमां काव के भने धनंबढे स्वयमां आव छे मीर पाछल वडे कुछ वाव हे न्दमे वे बारवनी सावे गावन करों को (वे) शामनके समे पुग्नो अक्रम करो केत <sup>म्</sup>राष्ट्र कामकिना सन्त ने≇प्रता सची अमे स्वोत्रो वह जिनेपरनी स्तुति करीय श्रीप

स्माम मानवने हुन्त आपे हे

सभी शरकारेने विदे हैं

अन बीवा वह बड़ी बाड़े है अपने प्रकों वहें विज्ञतिकारी पूचा करीए और. ग्रामध वर्षवढे सब देशमें सम्ब ਬਾਸੇ 🖮

उपाच्याव सुत्रीको उपवेश करे छे.

पैक्टिय क्य मूर्जाभीने द्वारा करी सक्य नवी बाबचे काप आरोप नवे नोसने भीतं क

और सकते के के ले अभे के संबगी साचे तीर्व तरफ

च्चर क्रोप बाक्षक मानव क्रोरत करी

स्रको नदी

सरब कान से से पंदित के

### पाउ ९ मी

### श्रद्धारास्य नाम

### पंचारी सने छन्नी विमक्ति

#### SHIPE

एक बचान शहरकार स्रकारतः । ए० को सो द +(को-सू) को, सौ द (को-कू) दुर्जिय विक्षिते प्रमुक्ते कि विक्ष्यो सुरुदीर पदि विक्ष्यो प्रमुक्ते

क स्स

ਕ. ਆਈ

### बाकाराज्य वर्षेक्ड-हर्किय प्रमाणे

- को को युवारि प्रकार विना पंचार विश्व वर्ने प्रत्ये क्लाब्द पूर्वमा का नी का नाम के जैसके ने**य**÷मी≃ देवाची देवर्राहरूरी-देवाहरूरी देवरची-देवची-
- यदारादि प्रावशेशी पूर्वे का भी क्षोप बाव का क्षेत्रके देखान परि-देशि
- पत्री विश्वविका बहुक्काला अस्त्रो क्यावर्धा पूर्वा व्य हु-
- य पीप वाम के मैनके-देव+जैन्देवार्थ

 हो-पु का अध्यवस्था पंचनीयां करो बच्चदैवदिकित साहिः अक्टकरानीयां रोजन रामीनी पूर्विजारिकां बहुव व्यरानेकां हे

विष (तिन) 🕏 त्रियचो त्रियामो त्रिणाड विषयो त्रियामो त्रिजादि तिजादिन्तो त्रिजा तिजात तिजादि

क तिवस्य नाज (काम)

वागाहि जागाहिन्तो नागा

😘 नाबस्स धन्त्रो (पुस्सिग) संत्रीय (नवीय) संत्रीय जड

भट्ट अरथ े (अवे) वन नस्तु

মাৰে পাৰ কৰ. ४३ संबद्ध ब्येजनको प्रथम अवहर को कृप्ट-कृत् ६--पू-व्-शु-प्-मृत्रवे पद-xप होन हो जोत काव अ कोप क्या पत्नी

भेर संक्रम क्षेत्रक संबुक्त ब्लंबरने स्थान क्लेको कारेसमूत म्पेडन को धामनी आदिमांन होन ही दिल या है । दिला

मो इसो.)

क्रिवाहिन्हो किपासन्तो, जिमेडि जिलेडिस्तो त्रिधेसन्हो

जिलाया जिलाको नागची नागामी नाणाड नाणची नानामी नाणाड नाजाडि नाणाडिस्टो नावासुन्तो नावेडि

नाणेडिन्ता नाजेसन्तो नापाप नामाणं आर्जंड (अलन्द) विशेष नाम

खापक<sup>४३</sup> (क्रुफ्त) समधे जीव (बीव) धीन बच्य (दर्प) अभिमान-

बरेड अप वर्णीय बीजों के चीचो अधर दीय हो दिखान प्रदेश स्रोक्ती स्वापे बनुप्रमें वर्गना पहेला ने त्रीका मुलाव छ (ति १९ अपराय-वीर्यस्पर तथा अतुस्पार पती ग्रेथम्बंजन तथा सलेश- 48

मेड (स्पेष्ट) स्पेत प्रेम प्रीति. मध्यम (प्रवृत्त्व) मानसः मुखित् (सुरोम्) धाषाव पण्डय (प्रवत) प्रतेत. पष्कायाब (पश्चाताः) अतुताः खरद्ध (स्थाप्र) पाप बारत ४४ (वर्ष) समूद्र, वर्ष-भारत (भार) रक्ती वागी

महास्त्रका हिलावाद गाँह वैसव र इ.को.६ वन काले हिला भगत गरी. सदा ०---

चिमित्र (वर्षिक) क्यों क्य.

¥ निव सेकर्ग) पु-इब (इस्स )

'इ'-बपमी (म्हण्या) च-काथे (सह) दं बच्छ (शरमप् )

प् इसे (इक्)

घ'-निश्वरी (निवक्तः)

'ब्' मोल्बरो (हब्*गर*)

मारेप्रपूर भावन-इ वो सा क्षम्बो (वड) सावो (धर्म)-स्तारी (कार ) ४४ समुख श्लेशनी वर्षे स्-व्यन्तन्त्र-वृन्युन् होव छवा

व निहहरी (निम्हरा) स -पेशे (स्पेष्ट) भ्य-इक्ते (इ.सन्.) 'प्रप'-कन्तुलाओ (शन्त पाठ-) शंबस्वर-क्रको रुखं') बनुस्वार्-चेटा (सम्बा)

'र-वाहबेरे (प्रशस्त्रम् )-'ह-विद्या (विश्वतः)

मैपूर (मन्दर) मेर स्वेज

समिवर

रंतुष्य स्वस्तातो शहेली स्थान स<u>न्त्र</u>-सृत्यु होत्र ते। बोन वार हे (बर्म क्षेत्रे व्यक्तीमो लीव क्यो होच त्वां प्रमीयवे बचुसारे वैगावि क्यमे बीर करते.) जैनके-बार्ग (काराम्) वर्ष (प्रवार) कर्म-तम् ( अन्तम् ) शर्र-शर ( हार्य ).

બુધ

सप्प (सर्व) साथ

संद्योग (धंदीय) संद्येत

'र्व - परम्मा (वर्षमा)

'स्व'-सरमे द्वारवय् )

'न'-निस्पित्तो (विभिन्दः)

'स्व'-विक्सारी (विकस्तर)

'स्य निस्त्रहो (निस्त्रह्म')

विजास (विश्वाच) नास

सकास १९ (सहस्र) एक्स

" -नरमद् (मस्विते) 'ध'-िरम मी (निभाष)

,, -विस्सस्य (विद्यविति)

'ब्रुप्र' मनरिसका (मनदिक्ता)

'च'-बस्तो (अधा)

सर (क्य) सम्ब सिंघ-सीह (विह विह 'म् -सरी (स्मरः) 'ध'-पन्न (पन्तम् ) व्-कामने (बार) च -बरो (धन्रः) 'व'-वाही (स्वाचः) प्-च्छ (धक्य ) म'-सग्रं (अन्तम्) र मद्यो (वर्फ) 'ल्'-वस्तं (सरसम्बर्<sub>)</sub>) "र्-क्स्मो (बदः) ४% 'ब्-र्-ब्-य्-य्-य्-प् ए व्यक्ते 'ख-य-छ शी साथे पूर्वे के पत्री कोशकेसा होत्र दो स व्यक्तनी पूर्वोच्च वि ४१-४४ निवसासुनार कोप वसे कर्र पूर्वती हस्तरतर दीन वान के छदा 🕶 'स्व' बादासर्व (बाद्यसम्बद्धम्) च्यं-सीसो (शिष्पः) » नायश (नामति) 'वं-कासनो (कर्पकः) 'ब'-ग्रेक्टमो (विकास) 'भ'-बोचु (विषक्) 'ब'-नीसिसी निष्यक') र्शे-समस्रो (संस्क्षां) 'स्व'-शार्थ (श्रारमम्) 'थ'–वालो (अन्य) 'क'-बीसमी (बिक्रम) n वीसदर (विद्यसिति) 'क्ब'-'देकांश्चे (विकास्त्रर') भूष <del>नावाधिका (सनदिसा</del>ग) 'स्र'-पीसड़ी (विस्सड्') अपवाद---पोद डेकाने का नियम कानतो नवी त्यारै पूर्वीच (४३ ४४) निक्नानुसारे सेथ रहेल श-य-स प्रदोवने अनुसारे हिएक बाद के स्य - वश्स्य (भागवस्त्रम्) **ध्य -शिल्मे (क्रिप्न)** 

#### नपुंसक्सिंग

मासामय (सामका) स्वयंत्र सारास्त्र (सामका) सारास्त्र (सामका) साराः स्टानो सिकार्थ साराः स्टानो साराः स्टान्स (त्राक्ष) काळ साराः (त्राक्ष) काळ संस्ताः (त्राक्ष) काळ साराः (त्राक्ष) काळ साराः (त्राक्ष) काळ

हुद्ध (दुर्ग) इ.च. विशे अज्ञाबाह (समाधान)देश रहित. सुबस शुक्क है (एक्ड) बीद्ध क्लुं.

अरि द्वीप (र्गम) वरीव सर्गा (स्था तम वक्ष रहित. विद्यक्ष (भिषक)रितर, सद्ध, रहे. निद्युर (निद्धा) वास्त्री विर्देश, पक्ष (क्या) राहेक्षे. भाग (गाम), समाव फस (गाम) प्रत

सूस (सम) मूठदारम भारि काल मून-स्वया (क्या) क्या

वया (क्य) वस्त सृत्त (एत) वेत सम्मन्त (सम्बन्ध) स्वत्राव क्यर अग्रा स्वरीः सम्बन्धः

स्तोकक (वीरत) तक. दिस्स (६९२) इस्त सर. दिस्स ) १६९२) इस्त सर.

इरज (धम) इरव करतुं व्य व्यां

विद्यापन

पयासमा (प्रस्तवक) क्रमाण समार प्रसादक संहुर (बदुर केन्द्र दुंबर सह (क्य) मीर गर्नेड दुंबर सह (क्य) मीर गर्नेड दुंबर सहामें: सराम (बराम) नरीम संस्त विविह्न (विवेश) स्वेष प्रसार कृतिक सुरो हरी वार्ट्स

गुरुषः स्तरं द्वरं बाट्य विरुद्ध (ध्यः) वितरित प्रतिहरू

सुच (श्वष) श्वेस

विसी (विक्षिक् ) विक् विक् पर्वेच (भरीय) चर्च, वक्षो, वदिशय ४७ मुझी (वससं ) नेपस्बार अमार पुष्प पुष्पा ( (प्रनर्) पस्ते र (३) विस्पय जिंका तिरस्कार. करी और कामह दस्यविद्य ) क्रीइक्ट्री पुषार विद्रमं (एव) ल्ह्यां निश्चवार्वे मिच्छा (निच्चा) प्रोक्ट, असर्व. स-बा(ग) सा अवना के <sup>४६</sup>श्रद्ध (क्या) के मनके संपद् (सम्प्रति) इमना हाक अवद्रा थिस थेनी रीत सम्बद्धाः (सर्वेशः इंग्ला सरा-रोह् । (ठमा) दे प्रमायं सम सह-सया (बक्त) छवा हैनेक्ट्री-सुद्दु (शुन्दू) साथ पेटे. सन् मिथी विक) निष्,विकारतचन <u>चातु</u> वक्काण् व्यास्थानम्) व्यास्थान **महद्यम् (अ**निश्लाम् उत्तेवन कर्लु श्रम्भ समज्ञानह र-भेत्र इत हार पर्य भवेषस् । (अपेष् ) अपेशा थीमस् ( (विश्वम्) िश्वय स्विक्त्युं किरवी वरत शतकी विश्सास् कावो मरेली करती-🕶 म् (धम्) श्रमा करवी शाकी विक्रिप् 📒 (विनमी) वेच्छ मायकी सहन करण बर् (मन् ) इस्त पान्त्रं वर्धाः निस्सर् } विदर् । (सन् यस्तु वसम् (मिस्सर् ) गीकल्यु कारत काल, पेरा काल मीहर े पुरिक्रम् । (क्टीस) प्रीमा कावी सन्दर्भ (अब्+वा) प्रका करवी परिच्छे । क्यम करमी सम्बद्धाः (तमान्त्) राजु नाव <sup>पुट</sup>कक्रो (दक) शश्रम प्रतार थवा वहनमे ६ सम्बद्धानी जा जीव्य विकासे वाज छ थ∽मा(धा) **महर्ग-शह**रा (श्रमा ) बाबा (बया) द्ध−दा(दा) राष-स्था (तवा) जां। अध्यक्ता बोनमां छद्वी विमन्ति मुकान थे क्षरा ---अमे जिलार्थ यसी विजेम्बर ). मा भागुना मोधमां क्ये वर्षण् पश्तुं होत स सन्त्यी सदी तवा -- वाधाय प्रश्न देवचा विश्वविद्य आहे के

449

प्राप्त वाश्यो

ब्रह स्टाब्स क्रायाण स्थ विधिर न इ.च. न पासैनि नडममना मनि। हा क्या मा धमा स्टब् माराहर । बदा वरिवरम संतासाय STREET PUR ! महंब नेही दुरस्य भूसमन्त्रिः। धानस्य प्रकृतिक्षांत धान अच्छात मधूमा । समबा सावगान विमेशराचे बारत वक्तामे।। बाळा सध्यस्य देशकेण हरह किंपुच सफासेखी। मुर्जिया सीसार्थ सत्ताजयह अरविश्वह ।

माच नत्ताल पद्मानग्रे क्षात्र ।

बम्बा कल्ला न शेवह है।

विश्वतुरा पावेदियो ध्रम्म बस्रहा

असो सिव च

शमा इक्सावार्ण

समभा तरका विकास आया

लचे इ.स्रे समाचानि

था श नावनी ईसवची अक्षा **वसर** । पुरुष्यार्थ अवसे जिल्लाको व्यक्ति । मा प्रमाना सुक्त पुर्त पहरेर ! सहाय यामामा गाममहेति क्रमचा । तरप इंडडरम प्रहार

फमाचि वर्षं व सद्दावि नि । घटिन मो लह रीवार्य प्रचार्ग पद्मातः दश जरून धानो व सही अनेच तं तर मध्ये प्रविक्तिरे। सा बरगो समइ जनेडियो वि ल कलप्। धामो सुदाचे सूम दर्गो शुक्षे विकासस्य

चित्री मृदा बीवा रूपनि गुरूप मधीन्द्रे विविद्रे। न अ प्राचीनि चराया सायह पृत्वं किमनि मन्ते ॥१व विक्या जार्जन जाया वैसक

दसवादि बरने व। चरणार्दिती सुरुवी शीसके

सोक्स अवस्थाई 😘

### गतराची बापयो

सन्त्रम पुरस्ते पाणीकोको विद्यास राज्या नदी विद्यास स्टब्स बढे सञ्ज्ञानो इस्य द्वी हे. विद्यामीनो समुदान क्रिनेस्टामी

धाने मोबाधं मान के मूर्वोंनो चारित्रनी श्रद्धा राज्या नवी चीनो कने सम्प्रेतीये प्रकाछ

करनाद हा के हैं में मारिजनी जम्हा करें के दे मानको जानक के

मावनी जातन है. वे नेरमें जीवके के बाव खाउ

्यात्र हे. पंचाचापनी पापी शासामानं हे

भ्याचाम्बा पार्च हारापान क विभागे बनामात्रमी पार्च कानान सर्व के

बै स्वातमार्गम् अवेश्व करे हे

ते कुळ पाने कं रामा भावती वडे पॅटियोनी परीक्षा करे के

परीक्षा करें कें बायबी धालस अब पाने कें संब कर्मनी विकट सहब करा

एंच कर्मनी विकाद राह्न करती-वर्षी कर पाणेची करे छे पोछा कर हरतां है पाए छे क्रांती क्रिमेदार्श्च वक्का क्रांत्रक करे छे दोनो गुळ पानशा भवी श्री विकास हो भी के से क्यांत्रे होने क्यांत्र होंगों के से बचाने सिंक के

निक्ष्ये तै वास्त्र विषये के असी पर्यु सम्बद्धारण के

तुं रोने चोगढ निष्ठ छे विक्रो इंग्रेज स्त्रोमा अध्यक्तीकी भारति वरे छ

भागूरि कर छ बाक्रकी दूब वर्तक वृक्षे छे पाठ १० मी

सकाराण्य वाम सत्तरी दिसक्ति तथा संदोदन

प्र'क्य

पद्यवन बहुवनन जनगतः सः यः स्मि (सि ) सः सं प्रक्रिं संसो सा ०[व] सा

झ्या र स्यास्था २,४) वर्ष अवाधना ब्युल्ड-युक्तिय प्रमापे \_\_\_\_

सि प्रका कपारते पूर्वा सक्तर शवर बनुस्तार सुद्धाव है. केलके-स्वातंत्रित (कालके) करसि (प्रहे)

केनके-समयोखि (कामये) करित (एके) । नदुस्करियमा संबोधनमा एक्यपबर्या मूक्यम व बाव के देनव

लपुरस्तिका संयोगनमा एकाचवर्षा मूक्का व काव के ऐस बहुदका रून प्रकारत से से कि व काव के जिला (जिला)

स० जिमे जिमिन जिमेरी स हे जिम जिमे जिमा जिमे जिमा-

बाज (बान) स॰ बाजे बाजरिस बाजरिस वाजरिस गाजिस् नाजिस् सं॰ दे बाज नाजार्स नाजािज

र वर्षमामध्ये कर्ग हिल्लाएको ब्लाइक वरेशमाँ बापने पृथ के करोतां विकल फैरलार तथी है करो क्ले धारमामा बादे के धरेगाने सन्दोन करो क्ले कराने बादाराना हास्त्रित करे उत्तेवस्थित केली के एक स्थाना बहुवनकार्य प्राप्तक क्ले करानीना एकर कराने

स्स्ति किम रेख हि सरवते बचानाव के तथा बढ़ीना बहुवन्त्रकर्ता यांति प्रमन विवशने कमाराव के भारतात-इस (इवस्म) ने एक यताव) सर्वेनापने सरायीन एकस्पना-हि प्रमण बास्ती न्यों कहा — प व ॰ माने छ । व०-सानेसिं, सावाण सावाणे... स प सम्बक्ति, सावीमा सावाय सावाहि सम्बक्ति वादारात पुष्टिंग देव " शानुनां कपो पह्यक वृत्तवे ए केले के

प देवो देवे वेचा की देवे देवे केचा

तः देवेण एकेचे देवेति देवेहि देवेहि

पा देवस्य देवाय देवाय देवाय देवाय पे देवस्य देवाय देवाय देवाय देवाय

देवलो देवामो देवाड देवलो देवामो देवाड-देवादि देवादिण्डो देवादि देवादिण्डो देवा देवा सुन्तो देवदि: देवेदिण्डो

विश्वपुरती ४० देवरस वैद्याल देवाल

सा देवे देवरिस देवसि वेवसु देवस संदेव देवो देवा देवे देवा

मकाराग्य पुरिका सम्म "शम्यनां सरो प्राप्त सम्ब

पं सहवी सहवे सहवे पीठ सहवे सहवे सहवा

तः सर्वेश सर्वेश सम्बद्धिः सर्वेहिः सर्वेहिः चः सर्वेश्वः सर्वाय सर्वेहिः सर्वेहिः सर्वेहिः

रंण सम्बन्धी सम्बन्धी सम्बन्धाः स्टब्स्डाः सम्बन्धः, सम्बन्धः सम्बन्धः सम्बन्धः, सम्बन्धिः सम्बन्धः सम्बन्दः सम्बन्धः सम्बन्धः सम्बन्धः सम्बन्धः सम्बन्धः सम्बन्धः सम्बन्यः सम्बन्धः सम्बन्धः

सम्बाहिण्यो सम्बा सम्बाहिण्यो सम्बाहिण सम्बाहिण्या सम्बाहिण सम्वाहिण सम्बाहिण सम्वाहिण सम्बाहिण साहिण साहिण सम्बाहिण सम्बाहिण सम्बाहिण सम्बाहिण स्

समास्य सम्मान सम्बद्धः सम्माद्धः

God(d)

⊶to देसमासली समा सम्बे -बर्पुसरुक्तिय वच (वन) बनार बनार बनायि प्रे **वर्ग** कांठ धार क्यार बजार्रे बजायि पाचीचा प्रतिप समाचे प्रः । सन्द (सर्वे ) बीठ । सन्दर्भ सन्दर्भ सन्दर्भ सन्दर्भ सन्दर्भ तृतीवाची दुस्किय प्रधाने

पुर्विधन त (तक्) ग्रम्बर्ग द्वेपो प ससो से है

दी≎ त के बा ਰਾ ਰੇਜ਼ ਰੇਜ਼ੀ ਰਵਿੰਗਵਿੰਗਵਿੰ च । तस्म ताथ तेसि ताच तार्थ पं० वक्ती ठामी ठाउ वची वामी वाड वाडि ताहि वाहिन्तो ता ताहिन्ना तालुम्नी वेहि

नेविस्तो तेसस्ता तेसि ताथ ताथी छ० हम्स स० 4तम्स निम तत्थ, हेस तेसं शक्रि शिक्ष

नपु सक्रकिंग क वीच के

्र वार्षतार्थताण्या विश्वतिक्षयः प्रमानेः नंद (तद्) वरोरे सहवायीचं धंशीवनां वयी वस नवील --- पण्यम पर्नापसे

```
कां उपर्ध
                                 वय प्रभा
                                 यर्पाद-डि -डि
    त एएक एएको
    स प्रवस्थि प्रवस्थि
                                 वपस वपसं
        *परच वमसि
              होप ल शब्द प्रमाने
                      मर्च क्या किंग.
                            पबाइ पबाई प्रभावि
पञ्ची अस्ति सर्व
                 बाबीमां प्रसिन्ध प्रमाने
                                   मर्सक्तिम
                                  स (पत्र)
                    स्रा
                              wito (
                                शाकीयां प्रस्थिय प्रमाणे
भाषीयां 'त चण्य प्रमाणे
                                    क (किम्)
      ६ किम्)
                              erro (
                                 वाकीर्थ प्रशिक्त प्रमाणे.
 থাইলো ল' সাজী
                                      इम (इदम्)
        इम (इदम् ।
च० इसो इसे इसे
 की इम
              इसे इसा
                                   १ १म
                                           इमादे हमाई,
 स० इमहिन
      रमिम
                रमेस
      इमाध इमसि इमेस
 कारी में ल' शब्द अवाचे
                                वाधीयं प्रस्थितः ब्रमात्रे (
 are अन्यक्ती।पूर्वे एक वा ले वी कीर्प वाल के एल-स्वच्याना
```

### शान-( एव्डिप )

भ्राप्तरहाः (अभर्ये सुप्रधान धाराच (भाष्टिय) सर्थ **- विध्वोर** (इन्त्रियचौर) इन्त्रिय करी भीर श्राच्याह (अस्ताह परताह वानेप

कारकसम्य (धानेम्हर्स) कामाना STEEL. <sup>पर्य</sup>पीच स्थल्य) क्यो

<sup>च</sup> **क्रमा**मसभ्य (क्रमानसम्बर्ग सात्रः कमाज्यान अपि. <u>রুম্ম (রণ) রখ বংরুম.</u> संपन्त (ग्रंथ ग्रंथ

पश्चिम गॅबिट) गेरिटा-र पंत्रामाणक सम्पर्ध पर कह अने एवं नो स्वाधान

व्यने आदिमां होंव हो। क्षांबाव के , Are Drug)

पर नाम के लगे शारियां होंग यो 'श्र-कन्या' शाम के बन्दे (दरः) (प्रकार् (प्रका ett) (mor)

धरोबधार (परोक्ता) क्रोपगट प्रकारित । (प्रजूप) प्राप्त कार्यः शक्का जनारको पहीर

प्रमाण (पर्याप) पर्याप रूपण्यः 田田 神子 पाचार्वाय (प्रवातिका)कीर्यहरू-पाउस (शहर ) स्वीद्य, कोमाने

मध (बम) भव डेबार क्रार (क्रम) शर, वासी शका सकते भन्द प्रकार दल्ला हमी हेर

'क -पीक्ष' (१७८६) 'एक'-नावचंदी (वपस्क्रमा) ्र संभा (स्थला) भ वन्यारी बोर्सर 'खें जो 'शिव' जने बीह देखांचे 'च्छ-नदा'

बियार (मेचार) विचाद (ऋष) रीष रिवस ( परकेला (वेस) वेद विसय (निक्त) श्रीजनीया सूर (धर) घर पराभगी षण्यादि विद्वी

क्रम्र--( नपुंसक्तिंग ) ৰংভাল (দৰেন্দ) দাচ্যিকট

अच्छेर (आवर्ष) विस्पव

REPORT.

बर (धड) बर **पुरुत्त । (बे**रन) जिल्लांबिर,

देखाप (हथान) वर्तांची ज्वान

अध्यक्ष (अर्थन) पूजा पूज्युं,

लिन मृति.

केरम (

 चैत्रम आदिमां केनल 'मा होत तो रि व्यय क्रवादि तण्यमां "व" मी "इ" अपने काल कार्याद सम्बोधां "क" मी "इ" मान के द्या रेंब का 'र' को 'रि' काव करने काल-काल आवात काछ-काले का सब्दीपाँ

\$ 800 m वर्ष (क्ट्रप्रू) दिवर्ग (श्रवमध् )

क्ष्रं (क्षल्य् ) रिको (मझ) ftel (melle)

क्क (क्या) अही (सहर ) तरियो (बरमा)

Part (ert) रिमं-अने (क्रम् ) ५२. ब्राम्बरी कामर था प्यार्थ होन ही पत्र पान क्षेत्रे कावियां द्रोग तो 'क' काय के

'ब'-धर्म (मदम्) | 'ध्व -सेरमा (सप्पा) ... Bratt (GE)

झाळ (थान) मान नक्ष्मच (नक्षत्र) वस्त्र. मेस } (श्रीय) मास. मास

म#ा (मण) मध दारु मंदिरा⊾ ५९ सम्दर्भी आपियाँ (स्वेतन पत्नी) क दोन दी व पाप

विं भो कि विकास बाव अपने स्वयंता के थी के विकास साम रिष्-अपन् (सन्) रिवडी धराडी (क्याना)

रिक-दळ (क्रांता) रिना-प्रमी (कारि-) कतरी-क्यही (इनक)

'च'-बाबए (चीठते) वि-बना (शावी) 'र्ब -पण्यामो (पर्माता) <sup>भा</sup>षच्युद्ध (शासन) स्तेहः के शासका

स्थ पाछन्याः वक्षाचाः (म्यावनान) पवाणं बुक्कितः (इद्धान) इद्धानुं, पानम

स्टब्स् (सम्प) शाप्ते, वयाक्यपर, रि

सदिव (अभिक) को अवस्य बक्कय (उक्त) एसर

कीक कीक शीक शीक

बारिस(नाम)मेर् वेश महास् शारिस(शाम)स्य तेष प्रमास् चिम (स्वर) संक्षेत्र क्यांत्र विमारक (स्वर) संक्षेत्र

यहतः विस्मक्रयर (निमकत्) वरिश्वन

निमतः निकत्र (निम्न) ननिमत्रः, बायत प्रवास वर (अध्यक्षः) अक्षय

27

साहका । (साहामा) मरत साहका । तहाबयः । सामाहक (सामानिक)नामानिक

(पान्द्री श्वापा स्थाप की वे वर्ष समझ्या रहेते )

स्वच्या (प्रार्थ) सेन्द्रः सिहर (क्षिक्र) क्रिकर

र. । स्थाइर विकोधक

पच्छ (स्थ) दिसंबरी नस्तुः पसंस (प्रसंक) प्रश्च जानव भद्रराधकरमञ्ज्ञ(प्रदिरामरोज्यर

सरितमा सर्वी बस्मणः हैं बच्छक (क्यक राज्यमी सेर्ड पंत्रीक्षमध्य (विद्युव) विदेश विद्युक स्थानिक सुद्धिक (क्षण्डित) बीनवी क्षण्डि

व्यक्तिक } (बार्ड) बर्ल-सरिक्य } (बार्ड) बर्ल-

क्ष (स्था) राजी. इरश (वीक्श) द्वरर साहस्थित (वार्वीक) वसन

भी क्षण प्राणी पात्री हा सा श्रान्थ का है ही म्लेस विद्या (अस्प) व्याप (ज्यार) (क्षण्य) (क्षण्य) क्रिया (क्षिण) व्याप्यो (श्राप्य) क्रिया (क्षण्य) क्रिया (क्षण्य) व्याप्यो (श्राप्य) क्रिया (क्षण्य) क्षण्य) (क्षण्य) विश्वयो क्षण्य।

भवस्सं (बदर्व) बक्द, नवी-

षरप }

मिन पित्र थिया (१(६०) कम -सम स विध इस विके माने

पार बीध विशा । (एव) मधी च्चेम एव

💶 (छम) बाईना

जनवास् (बरान्य) अनव वर्ष माने (भा+ती) श्रद् अनु कार्यु इन्स (क्यू क्रम्ब) क्रोच क्रवेट.

नाम (स्वता) राष्ट्रं बरकावर्तः पर्धस् (प्रश्चेत ऋता करवी श्रेर (उप्त) कतं

माइत बाक्यो है बमासमय! ई अत्थपम

चैत्राधिः । सरवैर्ध धरमेस बस्य पाषाह बामो व विश्वा को

धामी सोहणा होई । बनबो लगवाणे साहर्फ कुलेह अधिको वि मुद्रार्ण नरार्थ

इम चिति इद (इति) ना प्रमाचे एम अभी (बत) ए द्वारमणी एवी शोध शहि बह (मद) जा

T. T

लाभा तकि तक (का) स्रोत काश कडि कड (इम) वर्ष पुरुष्ठा (क्यान्) पश्ची विका } (दिवा) दिवन

चातुमो

अवर्धक (८३५सम्) भोगम्ब (साथ) मद करना बिज्ञा (विश्व) होत, क्ल इंबसम् (इपाचम् ) चीव 🖷 परिचय (परिलय) वरिष्णय ।

विमया न उपसमन्ते । वध्यमें भा उज्रापं हार

श्रम विमार गुन्धार जिमि-बाजमध्याय घरं भाषेत्। समना बेइएस निवर्ष विनये, देवे च धंडींन । देवा विने नगरीत प्रमा धम्मे समा भयो । मिण्डा स पुतार्थ <sup>५७</sup>कुकासि को सक्तम्स मर्थ्य मक्कर सी भवसद्वर ।

'पावार्थ कम्मार्थ कपार हामि कारस्यम्य ।

शक्तिम संस्थित च पसला मणुसा तिरदं वञ्चलित । सन्वयाचे मिलेको बोला। परोवपारो पुल्लाम पानाय सन्वस्त पीकर्ण इस नाम्बं शक्त हर हिय सो बन्मिको परित

शहो है तत्ती करच वच्छामि

कर्दि चिट्ठामि कस्स

कदेशि करस कसेनि बीना पावेदि कम्बेदि नि संसि बनवरितरे। बेरेसु<sup>प</sup>ितमकपराबार

वेदेसु<sup>२७</sup>विमाक्रयसमार अ विश्व प्रवासयस वि यस इति ।

क्यासम्बासम्बागाना तर्वसिद्धाने य उक्समा से बारिसी क्रजो हो दर्व मिनो वि तारियो विका

को पश्चेत मुक्त पर्व विज्यो कि कुवारी। <sup>पर</sup>कालोका पुरुषार्थ पादा कम्माव केसे उपसुक्तिमें

५५. बेबोनी वार कोच-डीड शयादि कररामां बावे हैं क्रम्बे विश्वीक तुकान के

भर दासमधी बाहियां "दिए "में बर्फ "द्रमा हुकान के हैं इस गाने बरू दिवर कीर कैमाने दर दस बारे हैं परा-दारों नकी एमें वे बरके शि हुस्सम के का प्राप्ते हरर हैल हो हि हम्बन के बहा —

বছবি (ধৰ্মী) বিভাগৈ (চিৰ চবি) सुर्वति (मुनविमिति) स्थिति (विमिति)

५ पंचारी विश्वक्रिये एक्को कोड् देखान शरभी विश्व एक बावे के क्या —कीतेवर एसिर्व आल्को एउटा (अन्त्रसुर रमनाऽऽन्तर राजा)

भ शर्मभाग के कथ्यमधी वड़ी शर्मनाथ के जव्यम कार्य महीना उत्पास के अव्यक्तमा आदि उत्पादी क्रवा क्रेप वाल के कार्य-स्थाप-व्यव्देश (स्वाप्त) व्यवस्थाप-क्रव्यव्यव्य (स्वाप्त) बबर गावर परसर वनमह परिवयद्व बल्धे थि। प्रम इसर निकारनं पि महरामहरमची हर्।

जनोमां हैय धनपेने जाते वान हे

। स विषयसरी सी वेष पंत्रिमी तं पर्वसिमो विषये। हेबियकारेडि सवा व मंदिन many mercuric all

की पम्पनुं सेवन करें के दे मारी

ध्यक्तों सीर्वकरता क्यान हे

क्को क्वी

#### ग्रजराती चापयो

छन्नि पर्यंत सामुक्त के र्वेदिरना क्रिक्टर कपट होट भाने हे नानेरपारक सम्बद्धानमा FINE SI भावत प्रसंख्या क्षर के हो **म** क्ये क्ये बक्तो नवी

र्यो शेष्ट छ आसम विकास अमारामी जिलामी नमें के क्ये को केरलं जनक निक्रम मामस्ये कार्यमा सामाव

शोदी नदी. क्य कावमां काको छन्। ईन्स 42) à.

"Servenced until mild mile the

वार्थींग्रेशें शरहस्य आयोक्यां क्या वर्ष क्या परकोब्दमां प्रोक्स --नेव वर्षेत सपर वरसे छ कार पराचनायातं विमेणारेणां

नरित्र करे हे है मर्रोगां रीक भीते हु-है भवें ! तं वरी दोने या माने

40 40 है क्रकेंगेयां क्षानी उपर विश्वास

राखे छ एवी इत्य सबे हे

### ्षाउः ११ मी =ा

इकारान्त समे वकारान्त पुलिस तथा नर्पसर्वाद्वन नामो-पदमा बीधा समे तह्या विश्वकि-

्रभूतव पद्भववन बहुस्थन (वाप्तथ-) प्र0--० क्षेत्र असी यो हैं । भी०---म् यो हैं | त०---मा दि हिंदि

च वक्षांच्य मामीया श्वाचे १ १व प्रशासम् वसीमा केता व के १व प्रथमा मान विश्वेषाच्या महुक्चमार्ग हुँ अववने वस्त्रे क अवव गारे के श्वाच अवसम् महुक्चमार्ग क्षाचे अवह युव कम्मानाव केता

र प्रश्नास् एकत्वन गृहीतालुं बहुवकर स्थाः पंचारिता को स्थे पितार एकत्वन स्त्रै बहुवक्ता अन्त्री हेतर. नहीं अने क्यारीण वहुवक्ता अन्त्रीता हुवेता हु क (ई क) के भाव कं-चार यह मुझी हुकः 2

र प्रकार-दिलेश करे से किया शहरकारों को विशास्त्र समिते क्याना पूर्वते शहर कीतृत्व के त्रशुरू

प० व०-गिरिश्व श्रीनिरस्य आशुश्या नायमी प० व०-गिरिश्य श्रीनिरस्यो ग व>-गिरिश्व श्रीनिरस्य वीऽ व०-गिरिश्व-गिरी आशुश्या माम्

पर पर्याप्त वर्ष कवायन वर्षुन्वकिन्य प्रका मने हिरोबाय प्रकार वर्ष कवायन वर्षुन्वकिन्य प्रका मने हिरोबाय प्रका वर्षायन वर्षुन्वकिन-वेशा के को पूरीय निवर्णनी

इपायन्त की उपायन्त पुलि वेश है

#### मुणि (स्रकि) प्रवचन प० मुर्जा मुंबड मुखनो मुक्ति मुक्ती बी॰ मुख मणियो मणी त्र मुख्या मणीहि सुणीहि सुणीहि साद्र (साम्र) पः साह

रहिपा

महामा

100

430...)

वहि-नपुनिकेटिंग (विधि)

वेष साहुणा

री साहुं

मद्र-नपुसन्दक्षिय (मञ्जू)- मार्च्याष्ट्रमा प्र अन् द्वि बहुन्थनमा वर्षे प्रस्थमी प्रदेशः पन देगाव छे जैस ग्रहश्चवेत्नारचे शेसत्र वहने-साहचे बगेरे पदा -ताव व व्यक्तावनै किसी बुट्टून बाहवे सहुता व होते वह मचरिए (वेंडम्पर्वा के जंबनावं विषय पर्धीय कांपुत्रीय कीहरे

म्लंस्ट्रांनी सिद्ध प्रयोग क्षत्राची वर्षि-सङ्क (वर्षि-सञ्ज) कोरे पन बाद हैं कीए देखने हाँहे, नहुँ हत्वादि प्रदेश वस बादे हे

υĺ

नसाहबो साहउ साहभी साहबोत्साह सार्षा साह

बहीर बहीर बहीण

बद्दीहि बद्दीहिं बद्दीहि महर मही महीज महति महदि महदि

साइडि साइडि साइडि

## -पाठ ११ मो −ा -

इकारान्य सने बकारान्य पुष्टिम सच्चा सर्पुसकस्थित नामी-पहारा, बोमा मने तहना विमितिः--

बहुवसम. पश्चवन शर बनी जो है को है सि सि सि

 उक्तरास्त गामीमा स्थापित एव हुव्यस्थय न्यमीगा क्षेत्र व क्षे प्य प्रकार कर दिल्लेकाम क्षुक्कार्य 🛊 प्रयस्त्रे वर्ले 🕮 🕬 रागे क तथा प्रधानना बहुरचयमां अन्तो अस्य यम अस्यतान केन

२ प्रस्तानु एकायन तृत्रीयाङ्गे बहुबक्त क्ष्मे पंचादिन स्त्री की रिशा एकपण करे बहुत्थाता अवशे देतत. गी अने मारामील अनुसम्बन्ध अन्यदेशी पूरेंगा इ-ड (हें क) केंग्रे

सार क.~पा पत्र मुखी. शहर

रे प्रकार-क्षिणेया कर परोपस्य गुरुपस्त्यं की विशास्त्र प्रकार ब्याम्स पूर्वते स्वर् शेलाव कं विशा ----प० व०-चिरिश्मत्र-निरद माणुश्चवा-माणवी प० व-निरि+मधी=पिरश्री आणुरंश्वर-पापर प= व>-गिरि+ई=गिरी माणु+% माणु

बी३ वठ-विविश्व-निरा साणुश्य-साण् ४ इवारान्त को उदारान्त जीनवर्तिका प्रवर्ग का दियेगा श<sup>्र</sup>ेर अधारान्य बर्नुनवर्तिय-सेश के अने तृद्रीय रिसीयनी

इंग्राप्टल करे इच्छाएम पुर्वित वेशा ह

ωž शुर्वि (शुनि) प्रवयन यद्वययम प० मुची मुजा मुजाने भुजियो मुजी, : नी मृजि मणियो मधी র০ সুবিখ্য मणीहि मुणीहि मुणीहि बाद्व (शापु) पे साह श्सादयो साहर साहमी शाह्योत्साह ये साट्ट साहणा नाह वेण साहुजा साहिंद साहिंद साहिंद वृद्धि-त्रपुर्मिषक्षिण (वृद्धि) REFE वद्दीरे बदीहँ वद्दीणि की । तिष रहिया वहीदि वहीदि वहीदि 70 . महर्ष महर्दे सहिष मह CFF मद्दि सङ्ग्रहें सङ्ग्रहे महला मद्ग-वपुनवाक्षिय (मपु)-भाषपादाच्यां ह अने दि बहुदश्यमां अने प्रश्वनी प्रदेश रप देपात है। केम गुहरअने जाने तेमन बहुने-नाहते बगेरे बरा नाव व रावारको विक्षी बुगूर गाउँ ग्रहना व द्वी पत मर्थाए (देशमार्थ में कंपामां सिन बडीए वाचुभीने बोहने बन्दर ) म्पोरक्रमधी निम्न प्रधीन वयरची वर्षट्-बद्ध (याँच-बपु) बगरि

पम बाव के बीद देवारे हाँह बहुँ राजाहि समेल वह सारे के

श्च (स्थ) चन कर्म } (दरि) करि

शुक्ष (सम्) ग्रस्, वर्गान्य. माई (निति) बरि, साथ.

शिवि (केन्द्र) केनी विका (कारी) राज-बंबु (कन्नु) बंबु, शिन पाणि (अभिन्) प्राणी थीय

सद्ध (स्तु) तव

बारि (धन) 🖦

सिक्स (मिश्र) गाउ-मंति (बीभर वेगी

संचि (स्रीन) स्रीव वाहि (ब्यावि) देव वीवा-

रिक्ति (बावि) बावे-सरि (शरिव ) बागर्न

साह (सह) सह शेक्ना वपुसक्रिय

> र्थासु (शकु) व्यक्त बहि (वर्षि) वही-

विद्यापन

सम्बन्धु (दर्वकृ) धर्व बान्नाध

म्ह्रमण्यु (इतह) उत्तर्भ व्यक्तार

महिन्द्र (सन्ति) हमा

ों 'हेंचू अन्त शामगाला बान्दीया केरच व्यंत्रन' व वो कोर बनायों केर्य करे इच्छान्त वामनो बावब नाम है.

क्रम्मी संपूर्ण को भी भी भी भी के मार्थ कर है

करी साहित्यं 'श' के 'श' तथा है।

चरहण्यो (प्रपुषः) | विज्ञानं | विज्ञानं | पार्ण | (शायर् ) चरहण्यो | विज्ञानं | न्तरार−क (कू) हा 'व' नो विकरों और पर पान के

भग्गा | (माझ) ँ भग्मा

मज्ञां न (गम्न) भचार्यः शम्तरे, सदरः धमान छ (शमार) अमारः

पहाचग वि (तमावक) प्रमाचना करवार कम्मति करवार

भूकी वर्षे-

(भइत्) पूज्य

<sup>1</sup> बद्दारिस वि (अस्मारध)

वस्ता केता विकिय दि (करीकी) सुनीर्च

भारत | भरितंत | भरतंत |

क्षिम है न कहा) कहा। भारत 5 (कारे) हुका माड देशर 5 (कारे) देश क्या है कि (श्रे) क्षेत्र क्या है कि (श्रे) क्षेत्र क्या है कि (श्रे) क्षेत्र भारत में (क्षा) क्षा विद्यार 5/केबीसा) क्षेत्रों देश कि (श्रू) आती.	पाख्य वि (शक्क) शक्क करनार परिक्रमण न. (मंदिक्स्प)ः शावशब्द इत्य क्रिमाविके- बारकोर बारकोर बारकोर बारकोर बारकोर भागेर भागेर मोदफा न. (भागेन) मोकन मार इ व (बारा) मंत्र विवाद प्रायः शावश
मञ्जनि (मन्त्र) चन्त्र, प्रश्नेतः मरमा कारणः	भणोज्ञ } रि. (मनोड़) छर्ट
पासिक कार्य राज्योग्यां का तो त्या चान के त्यारे करना का सी कं पास के तारीत्यु (त्योक्ष) सरायु (त्याव) उतारे त्या का साव पारें करा क्योल किया समाधे तुंच को बीर वह कारितर (त्याविक) सम्बन्ध (वर्षक) ह्यादि चात के त्यांत्र कार्य राज्य होतारों उत्य निर्मेष्ट पान्योग कामक को तो व चान नहीं करा नन्त्यों पार्थ के रोज्य पान्य राज्यात्र कार्य कर की की में क्या का के रोज्य पित्र पार्था के स्वर त्या का स्वर की ने प्रक्रिक का स्वर् के रोज्य पित्र पार्था के स्वर्ण त्या का साव की होता की स्वर का स्वर्ण की स्वर्ण का स्वर्ण की स्वर्ण का स्वर्ण की स्वर्ण का स्वर्ण की स्वर्ण का स्व	

शिवस (निक्र) घाउ-

बंद्ध (बच्च) अंड

इंद्र (स्त्रु) चनाः

सद्ध (मञ्ज) नग

मंति (पीत्रक् करी सबिव (स्वर्वि) प्राप्ति ह्मब (क्न) हुद्ध वर्धक. बाहि (श्वाधि) रेक, शैक साह (शरी) वरी, वास-रिसि (बारे) अमे क्रिक्ट ) केवी. स्रदि (स्रीर् ) बादने निवद (इच्छे) राज खाद (शर्ड) शर्ड, मोक्नार्न बंबु (क्यू) बंब्र, निव ঘাৰি (সৰিহ) স্বৰ্ণা আহি अंपुसक्किंग

क्षक्रि (शांध) पशी बारि (क्रा) 🖦 विद्यापक. खबर्यु (वर्षेष्) धर्व बास्तार <sup>पृत्</sup>वाहिष्यु (सनिव) इसव

ष्क्रमण्डा (प्रवह) कालार क्लनार ी 'हिंद सन्द पामपाळा बळ्योचा बीह्य जीवन हो जी क्षेत्र क्यांची

५ बच्चरी नेपर 'श्रां करें 'श्रां को 'स्वां के 'स्वा पान हैं समें मारिय के के के बाब के भग्रहणी (अपुत्रः) | विल्यानं ) (विश्वास्यः) | पानं ) (बायस्.) पुत्रहणी ( विश्वासं )

केंच्रे एके इच्छाला गामनी साध्य बास के.

मन्तर-४ (पू.) या भू भी निकार बोन रन बात है-

भेज्या } (लाक्स) "

!=:महत्व पापयो भरिष्ट्रता सम्बन्जनो मर्वति दुक्केस साहेरतं के अर्जात ध्यरणुषा सह संसम्मो सह ते वधमो सरिय कायच्यो । तु भेस्पी कि मुक्ति !। छत्यसम्बद्धाः वक्केसा। शजिण्णे बोसदं वार्रिः प्रमो बिजिरस्य सासगस्स मोपणस्स मञ्ज्ञीम पार्टि पदायया संति। समय । पुरुषो सीसाय पुरायमहुनु प्रचस्त मारोप परेक यहिसंति । मिक्स् । महिन्त् सरधाणमध्येषु न परतुष्यो जमे दहर । मुख्यक्ति । निवर्ड मंत्रीडि सर्वि रसस्य वृह्णा मधोउजेस बळाणेस र्मत संतेष्ठ : सार्वं समायर्गितः। नियरको मनोक्वहि हस्सहि वसर्वि ।

खाइको नचेह्र विस्कृष न पावेहरे । ख्पे साइहि सद मामासवारं न कामाई कुणह ।

सार्थी पमामा संशामि पीसरेक । श्वेषो धम्बद्दस तताई सुर्दि ग पुरुषेति । ,

धम्मी व परमी गुरू। नराज पासर्वे घटमी धटमो रपण पाणिको ॥१॥ क्षणण किया न साह न द्वेति साइदि पिरद्विम जिल्हा।

भवार्ग चैव गुरुयो भारसं

बन्मो वंपू श मिचा स

- दिवि ।

दार्ण दिलेण सभी तित्वकारी

साह गुरुद्दि सद आमाभो गाम बिहरेते । करको नरिदस्स गुजे बच्छे। रे कमा शह तरेव परतुक्ता ५. (अपूरन) कामीव

क्ष प्रमाग्र (प्रजीवा) 'क्ष' विन्ही (प्रयः)

'स्व' विस्तृतो (विस्तृतः)

**"**ष्ट्" प्रमा (माग्र)

कृष्यको पुत्र-

न. (मित्र) सका-

विशंहम प्र (विशाय) केविके

विरक्षित के (विर्वहर्त) रहिए

शून विस्तृपन्त

श, प्रतिकृति (अप्रवर्त )

बीप देनाचे मह बच्चे नवी-

रसी (रहिना) --- बरी (स्नद्र)

एम पन्द (नर)

संसम्ब है (समर्थ) हेन संन-विद्य पोस्त सासचानः । छाड्न) बायन य. (बरम्ब) अंग्व, काम दिका, मात्रा दात्ती-बहराय तमो 'ला) स्वार च्चौ ते सहस्र (बक्त) इत्यां हेल कर्षे (शक्तर) मेम नेगी रीते पात्रको अस् (गर्म) विचा करते 🚉 **अब-धब् (**अव+गः) जवधनम् करका, अस्त्राम अरब् वि-यंस् (मिश्मम्) विसम्पन बाबार्स (बारानी)न्द्र करत् क्रवेदन् चह् (जाश्रोह) त्यार्ड-ब्या-रोह्} नारोहन वर्खा<sub>रा</sub> बीमर् विश्वर (वि स्ट) मूचे च्यं सा-दह श्वक्रपु (उद्भक्ष्) उक्षार वर्गीः बरम् (४५) रचान्त्रं वाक्त (मा-साद) स्वारं देवी. पान (दन) प्रकर वर्ग फार्ट् } (कार्य् ) कार्यु चीर्त्य क्षेत्र (तकः) वैद्य बरसे

मुजि (मुनि)

पा मुजिबो मुचिहन मुजील मुजीलं

पा मुजिबो मुजिहने मुजीले मुजीलं

पा मुजीत मुजीहरनो मुजीहरना मुजीलं

पा मुजीत मुजीहरनो मुजीहरना मुजीलं

पा मुजीत मुजिहरना मुजीलं

पा मुजीलं मुजिहरना मुजीलं

पा मुजीलं मुजिहरना मुजीलं

पा मुजीलं माहुना साहुना साहुना साहुना साहुन-

पर नाहुंची नाहुंची नाहुंची नाहुंची नाहुंचा नाहुंचा नाहुंच नाहुंचित्रों नाहुंद्वरतो नाहुंगुरतो ए॰ नाहुंचा, नाहुंच्य नाहुंची बृह्वि (बृद्धि)

च रहियो इहिन्स वहीय इहीय पर रहियो इहिन्स इहीयाँ दहीयाँ दहीयाँ पर रहियो इहिन्स इहीहिन्स इहीहिन्स सर्वे क्षित्रे वहीया इहीय इहीयाँ सर्वे क्षित्रे वहीया

छ० देशिको वृद्धिमा वृद्धिमा वृद्धीमा वृद्धीमा सह अद्वाको स्रद्धमा स्रद्धमा

(mut) has micht (affeit), nicht (mut) verfe

गुजराती वाक्यो

भने साम्बनेसं यदन करे ह -सुनिको परक्रमा वेकित होन के तमे कालकोनी साथै हीनेकां प्रतिकाम करो हो. 🖠 पक्ती त्याच कर 🐞

नोचीको एकत् छ। छ सपे कर्मा क्षेत्र के ग्रमिको क्लान्य अध्यक्ष पाने हे

पॅरिटो ध्वाविची संभागा नधी वेश व्यापिशोंने या परे के हे स्त्रीमोनके सर्वेश करनामणी

स्तरि दर अ -- प्राच्छेनी सन्तरम् कम बोसे के रानाची क्षण्यानीने वंग करे के यव अवदानोंने यमें हे

वे हीका प्रमाने क्यानमां व्यव के अने आचारी तथा शास-**कोचे बंदम करे है** धातुओ बोह रक्षत पर पाममे जावि परव नहीं-अपि सम्बद्धि आदासमां वहें है.

नेव प्रणी करि के. विवये जन्म क्रीमदी पर्या-राज्य पर्ध क्या है शह अमारा सरका गामीकीनी क्य बदार करें है

पाउ १२ मो

(बासु) इदारान्त बकारान्त पुर्द्विग तथा नपुंसक्रकिंग बामी वक्ती पंचरी की भरी विश्वकि

प्रशंबय

दक्षच्या.

चाण्डी एक

र्च भी सो यो व दिली सो जो व दिल्लो सुन्ती

缺

निर्मेस प्र. (निर्मेश) पत्रकारी पर्वि (स्प) मन्ध्र क्षेत्र गौत्रो परामच ५ (६म) परामक पयास स. (प्रचाक) प्रकास पसाथ प्र (प्रगाद) महर्वानी

क्रमा दबा पहुर्भ (अक्ट) प्रमु, इकामी पुष्पण्ड प्र (पूर्शहचः निवसनो वहेंकी माम-पण्डा ३. (बस) क्रस संशक

पुरुष वि (पुरुष) प्रवाद बीम्ब दि (बहु) यहं, बबारे. मार्थत | ब्रि (मलव) विश्व

संपर्वत वेशास सम्वान संद (मर) ए बहरीओ मन्य दि (सन्त) सन्त कीव बीस्त महर. माना प्र (बाब) सर्व

मण्यु स्- (मूच) मान होत. मग्रहण्ड ४ (सप्दार) दिवसनी संबंध नेता.

६१ प्रामाणी मेहर कि होनको पन बाय के बने महियाँ स्ते होत हो च थान है

मंद् दि (क्षम ) घौत्रों, माजन्

सङ्गद् वि (सङ्गर) मीप्र, दाई. मन्त्र प्रभुश भेष मोहसम हि (उप) मोहतपार्व

मक्तन 'सरस्

करण करार

रच कि (त्य) लिंक छतं. रिकास (रिस) वन **छ⊈्। दि (वद) ट्रम्ब** भाई,

वर्षिक पु. (बड्डि) व्यक्ति विवद्व ५ (विन्द्र) वास्त्रितर्द्ध नीमें शंति इ (धन्ति) बीइमा चीक समीब रि (हबीए) कहे नबीफ

समु १ (धर्) स्त्र सित प्र (बिप्र) शास WEIT ! S (GEH) SEPL संभार ि मार्थ केरची <sup>52</sup>द्वरिच ३ (इस्टिन्) ४१औ.

वारी (शीत्रम्) " सर्वे (स्तरिक)

इभी (इस) बरिय (बारित)

साराप-पासरे करें स्टब्स कावा पुरा को पूर्व है 'क' स्त्रों सबी, कार्यों (पासर) हरने (कावन)

गणि इ.-(बंदिन्) स्वयेट, वर्षे धोबम ५ (कैटम) नो महानीर (अप्रार) नेपारी/-क्षानीमा प्रकार स्वापः **ITTER** बोह्य व (क्ष्म्य) बीत. " बारवाचि वि (बारायिक)महास्ट सर्वादिय मि (व्यप्तिव)वर वी शहण करानेल, , महरें। बीत उ. (बन्द्र) जानी क्षेत्र शीवात त व (बोबात) व्यवन सबराह ५ (सवराव) गुनी वॉक्-शक्तिप्र ४ थ (अफ्रि) ज्यंथ हास व (बर्स) हरू ब्रास्ट रू. (सम्) उत्ता वनार्थे शक्ति ५ (भनि) राग् g, प्राप्त) वार्डोप-सब प्र (का.) साह ,

कवि ह (१व) शंदरी-कामसम वि (तम )कानकवानः कोबसम वि (बोक्नम) बोवनी केलकि ए (देशका)केम्बदानी ६९ में सम्होतां 'स्<del>य-म्य-स्थ-३'-इम-इम</del> प्रोप को देगी, म्ब

नसोब्बार ] ३ (श्रमस्त्रीर)

केसि इ (क्यं) नावीतमा निर्मे

'ब'-गार (मापि) 4 -AT (MEG:)

बाद छ तमत्र शहम शहमा दन है। एक गृह बान के कर हैं के इं-प्पूरे (ग्राप्त)

मध-प्रवास (स्रोहक) 'स्व'-पर्य (कारत्र)' M-Art (34144)

'क्व -धर्च (सम्बद्ध ) भाग्यामा (जादारा)

भू व<sup>े</sup>-वाष्ट्राओं (प्रकार) ।

<sup>&#</sup>x27;ল'-নিয় (নিখ)

र्मेंच वि (तम ) चीर्स, अस्करा,

शहर वि (मनुर) मीय, सार्थ.

सम्बु पु (मम्बु) भीव.

3t (13fb) भाषार-गमरन अमे स्तरन शब्दमां प्रत को प्रव' है पर

चोड.

विग्रेस ए. (विगेष) पळकारी

परामब पु (सम्) पारमध प्यास इ. (प्रदाय) प्रकथा.

परिष (सम ) अन्य केन्द्र गीतो

· Ca (arffa)

क्तो नदी ननती (चन्दा') सन्ध (इन्छा:),

पशाय पु (प्रनार) महत्यानी माहसम वि (सम्) नोहमर्थाने ट्या वका ब्रह्मन शरहर पद् ५ (अम्) प्रमु स्थायी रचिति (एक) शिक्ष छर्छ. अविष्ट । (पूर्वहृष: विवसनी बहुणे मन रिकड़ (रिज) सम पंचर पु. (प्राप्त) प्रश्न संशास. सद्धः । नि (सप्त) तत्त्व्यः नार्तः, पुत्र वि (पूर्ण) बूजवा बीस्व सर्देश । 45 বৰিত ও (বঙি) লাফি वि (बहु) वहं बवारे विष्यः ५ (विष्यः) शामदेशने नार्ने भगवंत र वि (मयध्य) क्षेत्र खंबि ५ (शन्ति) शीस्त्रा धीन सप्तत वैश्व भववान कर्छ वाम मह (मर) पु सम्बोधी. राजीय रि (नमीर) परेर नजीय. मन्द्र वि (मन्द्र) सन्त्र और सक्त ५ (वर्) धर् शीमा नगर. सिहर प्र (विद्य) शलक भागु ५ (मान्) दव सम्बंह हैं। (स्था) श्राम श्रीत HERC I B (MIR) HERL नंबार नास सरका. मग्रहण्ड (मप्याव) रिवन्ती <sup>६१</sup>द्वरिया १ (६रिटर्) दार्गाः HOE MIN. ६९ शाम्त्रणी अंदर पंत हीय ही देश वास हो अपे आहियां स्त्रे होत हा थ यात है इप्ती (हार) भागें (श्लोत्रम ) ी

(अञ्चय) विपरीयः, किंतु (फिन्ह) पनः (धनाक्) सन्द, बोई-मल्य (गरित) क्यी चारको बाब-सम्प् (बश्-सम्ब) वचान बार्च, तिस्तार करही-गच् (वर्) कर्चुः बिए (बर) केले शास्त्र बाक्यो-सम्बन्ध्यं वरिश्वतार्थं अग मद्वार न करेड ! बतानं इस्ते वि नमोकाधे क्षाच भीवार्ड वारिमत्ति । १वदे सिंदाणं<sup>13</sup> इत्यीणं व सब किरेट । तुर्व दोर । सरागद्विमा बंतुमो ठं गरिय. केवसी सङ्घरेज स्थितना पाणीर्फ क्षे प्रशासकं व पावित । धम्ममुबपसर्। कापंत्री संविद्ध नेत्र नवने बरेज्या । सरिको सवराहेच साहर्य पच्चूसे माजुनी पवासी रची क्रमंति । RALL I वक्षाविको क्षेत्रक्रियो वयर्थ अवसम्बंधि 🗠 बारी पुळाल केवळीचे शुक्रमं क। -पेडिमा मच्चुणी बेब बीहेति । निवर्तकिंग्हो कवसी बहु धर्प ताहे गढ़नो विचा सचन्त सहेररे । ६३ अनुस्तरणी पत्नी 'ह' बाबे ही 'ह' वो 'ब' विकार बाब के सियो-सीही (जिंदा) चंचारी-बेहारी (बंहारा) कीह देखने अहत्तार म दोन ही पन 'ह मी 'म बाव के शाबी (eng)

€4

८१ | पुष्पण्डे अवरण्डे य मंदी दोर । | नोयमाची गविष्णो पण्डाण

मम्हे पहुजो पक्षायक बीवासो । महत्तो संजर्ष पि कासंह अर्स्तु अ कृष्यिकता । मेंगारामें काजीम् वैव्यक्त

तर्वको बहेर । मच्चुस्मसी पतामी वैजीवी जियह विमेशीप।

जियह विश्वासीय । मिमहस्य सम्ब्रान्डे सानुस्य ठावो बाह्य तिक्यो होह गुज्राय

शुक्रपाती वाक्यों विका पुत्ने प्रशा पुत्र क क्षेत्र वर्षक प्रशाब पारावी वर्षे स्राप्तिय क्षेत्र

स्थानीजोबी विक्रो सब वागे छे हैं हरेको पुणोशी शामिन (जिल) वे पूछ ही ते दौरण बालावे राष्ट्रमें बने छ-बारित (जिलेवर) ना जानांची कल्यांच वाल छ

कम्माथ नाम क मनाद प्रामीजामा परम हाम के पंग वीर पुरुषो होने औरा छ पंगामीना बचको अन्त्यका होता सर्वाः क्याः क्याः

सन्बन्त वाने हैं. सम्बन्ध सके सारे मेंने क गुबस्स बियपण गुठकको नि पडिमो होर ! निय कामसमो नाही मन्दिर मोहसमो रि निय कोबसमो सम्ही नन्दिर

नाच्या परं सुद्ध ॥१॥ तन्त्र्यो जन्नेच्य राजनी वास्त्र प्रकारी व्यक्ता एके क्र विकास कमानी हम्बोद्ध क्षरम

मुक्तरं श्रांषिमो ।

विक्रमा स्रम्पती हरकोड्ड हर्रेस केरे है. बन्दानो प्रकास विक्रमें कार्कर उपचार्थ ह-बोर्स्सको खाल्मा सम्बं च्या स्रम्स ह-अमे पुरु नारी च्या स्रोत्यांटीर और पुरु नारी च्या स्रोत्यांटीर

असे पुर गार्थ वस वांकडीए श्रीए शाक्तां स्विविधांची कु व श्रीमा के क्षांचिक्षांची कु व श्रीमा के क्षांचिक्षांची कु के स्विहे हात्वीचानि पूर्वे छे राज्य साम्बर्ध अनवान् करण वर्षाः हात्वीमोची स्विहे करण नदी (बासु) रकारास्त उकारास्त पुर्दिसग तथा नपुंसकरिंग नामो सत्तरी विगत्ती तथा संबोहण.

प्रत्यय

प्याच सञ्-स्मि, सि

संयोजना एकाचनमा अन्य त्यर दिकारे दीर्व बाद छ-

मुजि (मुनि) स॰ मुजिमिम, मुजिसि मुजीस, मुजीस स॰ हे मुजी मुजि मुजद मुजेसो मुजिजो मुजी

साइ (माप्र)

स॰ माडुमिन साडुमि साइम् साइम्डं सं॰ दे साइ साडु शाहवी लाहर साहमी

पाइयो साइ स्पुतकविक्य संबा<del>धन</del>्य प्र<del>कार</del>नासं मूख व्या जारहे हो. ठम ज कटायन प्रकाशना है है वप वैदां न छ,

वडि (बिध)-स रहिम्म रहिस १ रहीस रहीसु-

लं हे बहि वहीर, वहीर बहोचि शबु (शबु).

स मद्रम्मि, मद्रसिः गास महसे संक्षेत्रह महरे, महर्रे महिन.

मद्रम् धन्त्ये प्राप्तभा 'अम्' व्यदेश शास हे, क्ले तर्न ज्ञा प्रकारण गामी के बाद के

प धम् मनको समद धनमी समुद्रो सम् वी मर्गु समुची सम् **राष्ट्री**नो क्या <sup>'</sup>साहु' प्रमार्थ नपुंखक्रस्मिग बगुई बगुई बगुजि प्रविद्या क्षेत्र ज्यो दुर्किन नवां नान सं सपूर्व क्यो मेनि (पृथ्यिंग) प नेसी क्रमक क्रममा क्रियो श्रमी की नेति ने मिक्ते ने मी व॰ नेसिका मेमीड नेमीड नेमीड च० नैमियो नैमिस्स केमीय केमीय पं नेमिजी नेमिसी नेमीबा मैमिची नेमीमो बेमीड नेमी नेमीड नेमीडिन्तो हिन्तोः नैमीसन्तो **ए० वै**सिको वैसिस्स नेपीक नेपीक स॰ विमिन्नि विमिन्नि नेमीस नेमीसं स॰ हे नेमी मेमि नेमड नेमसी सेविको मेवी गुद्द. ष गुरू गुरको गुरक गुरको गुरुको FIR.

गुरुषो शह.

गुर्वाद गुरुद्धि गुरुद्धि

बी॰ गुरू

त्र गुरुमा

ग्रदम ग्रदर्ग च+ शुद्रणां गुदस्सः प॰ गुरको, गुरको, गुरुको, गुरको गुरुको गुरुक गुरुक्षिन्तो गुरुसुन्ती गुरूब गुरूहिन्तरे क गुबमो गुबस्स गुरूष गुरूर्थ स गुबस्मि, गुबंसि ग्रद्धा ग्रद्ध गुरको गुरु गुरको, गुरुणो सं॰ गुरू शुरू गुक. बारि (वर्षुसर्द्धम ) बारीई बारीई बारीनि प॰ शौ॰ कार्रि बारीयों स्व विस्ति स्वार्थ. हे वारी बारी बारीक मं॰ हे वारि थस् (बसु)-प } सैछ संस्कृ संस्कृ संस्कि गन्भिनांत्य ब्रुक्ट प्रमाने

मं असु वस्तर वंसर्हें मंस्रवि चन्दो

बदसय ३ (२०७४) अविकास मिग ५ (बड़ि) करि कसार दि (मा ना दिवालं

भारत द (माग) अनुहर राजन असरिंच प. (जगुरेन्द्र) शक्तांशे धारकेत नि (सन्दरन) दवारे

दि (नम) समीय

याचनं नजीन इबाह्य (स्ना) सम

बत्तम } वि (उत्तम) बन्द बत्तिम } संगर बहुदु न. (श्रम)अन्तरीतम् ध्रममेः केट प्र (कप्र) शहर प्रमु किया नि (१२४) पर्य पंता

**C**4 गह्म्स पु. (परंत्र) पक्षिरात्र. महाधीर प (सम) वाबीनमा गुणि वि (गुणिन्) गुलवासा चौयक्तम नाम चुक्तु प्र (बहुः) संख् नेत्र विष्योग-गुर्विश्वीवशेष) मेक प (ग्रम) मेक प्रका. रक्ताणाम (रहन) तस्त्र. राह्रस्स वि (धरूव) पुष्त पुष्ट. जीवतर. एकान्त. वका देश रु. (वज्र) वज्र ्रीरी स्मृत् एव बहर ि वरजपाणी ५, प्रज्ञाति) स्त्र huffe

चर वि (पर्स) अच्छ उत्तम ब्याक प्र (बाब) प्रवत विक्रमतियपु (विदार्मिन्) विदा-लो अर्थी विद्वार्थी

विद्या ५ (विल्प) विल्याचन पक्त. बिन्साय व (विज्ञान) सद्योध शका शल

बेरमान (देशमा) वैधयः विस्तविद्यापुन (विकासिय) विपन क्यी हेस सक् ९ (धक) इन्ड सक्य ग (स्वस्य) सब्ध

सक्तक्रम १८ (क्रकंडच) स्टिटाचन

सिवागिरि ५. (च्य) विदायन gift. Rutfüfe इ.रि.पु (सम्) इन्त्र निष्कु

वीविज्ञ व (बीवित) बीवन

बीविषतः ३ (बोलकन्त) शास्त्रको चला बोद्द प्र (भाष) क्षत्रीयो योजी वृद्धा र. (इस्म) पन इस्म

दिन्छ } बीड } नि (दीर्घ) दीर्घ सञ्च

दिवस 🕽 🖫 (निवस) विवस दिषद्र∫

नायस्य वि. (इतिका)शक्ता वारत्.

वोस पु (शप) बुर्गुम बाप

पिक्क इ. (पिक्क् ) पत्नी.

पमाच रेडुन (प्रमात) परोक

पदाप ( यतः सन परमप्रयं व (क्लबर) अन्तर म्बास मान्य. पासु पु. (पल) पक्षु पलन् पाचित्र (हम) हुन्न प्रका है कि. (की) पहेंसे. प्रेरिम 🕽 मकार्थ. मक्छ ५ (मन्द्र) मलन्द्र

मत्यम पुत्र (मराष) मार्च महस्सव " प्र- (भवोरनव)मारो महस्रव महोसब महोच्छव

च॰ गुरुषो शुरुस सुरुष सुरुषे प॰ गुरुषे, गुरुषो गुरुसो गुक्तो शुक्रमो गुक्र-गुकर गुक्किको गुक्कियो गुक्समा ड॰ गुडचो, गुडस्स-गुक्तम गुक्तम स गुर्काम गुर्देश गुरुस, गुरुखे गुरवो गुरव शुरबो, गुरुबो, सं॰ ग्रह, ग्रह गुरू बारि (नर्युसकर्डिंग) प की वार्टि वारीहं बारीहें बारीणि वानीन्यं का शिक्षि समार्थः हे बारीरं कारीरें बारीकि स॰ दे दारि थंस (बस्) य हे जेस बेस्टर, बेस्टर अंस्कि **बन्धि**नो तम हा**क** प्रस्ताचेन बस्इ अस्ड अस्बि सं अस হান্দর্যা बाइसय इ (२०७४) बदिहरू. पासेनुं गर्जन स्रातिग पु. (असि) अक्री इंद ३ (इन्द्र) एउ कसार दि. (यम) त्यर निवानं बस्म हे वि (बत्म) अस्त्र वित्तम ∫ कहु न (कार)आरधेकाव धर्मके. शसूर दु (६म) अपूर् राज्या केंद्र हैं (कार) ग्रहम ग्रह भारतीं है (अनुरेष) राक्योंनी कियम नि (इस्त) कर्व नेहा रताबी ह्योभी. सक्षेत्र मि (जरून) वचारे, क्षाच पु (क्षण) क्षाप्त काळ-**कासम्म वि (**क्य) वर्गीय

सम्बेसु

स्स संसारस्स सक्र्यं न वाजिश्व । शंकरके कायण्यं सं करत चित्रज्ञ कायण्डे ।

म्दा पाणिको समस्य बसार '

मम्सुं तदसु कयी बसति । दे सिम तं दक्षित वदं भामता वि । साहवो परोबबाराय मयराओ नपरीम विद्वरेहरे।

वसहो वसहं पासेह विकास वा बचेसु साह उत्तमा वरिष । इतियाची चिछिनिम बर्माति । हे सिस् ! तं सम्मं बम्हवर्ण

न महिज्ञीस । <del>बन्</del>साजीमु सुचार्गरहरूम न विकास निम्हं दिग्बा दिवसा इतिरे। सिस् । तं ज्ञाजय वष्टको सि ।

को दोसे थयद ना सम्बन्ध

**स्त्र रहोने ए वक्तना अविधनो** 

(बोयर् निवेति ).

ब्बडो बंटाई हरी बाज करे हे.

गजराती बाच्यो

ते मचर्मा वची आसक्त हे मार्था कानवीमा छट्टी के शासमी मिनक्ति मुकान छ. × पंचमीन रवाने तृतीया विमक्ति पण वाच छ. खोरेण बीहर

घरनाण विसो चस्तो सङ्ख दिमय यसद को उ ॥॥।

यम्मी सी जिस्होप, गुरधी निवसंति बच्छ डिवयंति।

किया परस्पर्यं ॥२॥

बद बद दोसी विरसद बद बद विसपिंद्र द्वार पेरमा । तह तह विजायम्यं भासमे

तरा ।

नागुणीस् ।

पाणीमुं तित्थयरा

विकासित ।

सेवमा निकर्म ।

तह तथं पि बेरमां।

संज कई जे जि ॥१॥

गुणीसुं चेम गुजियो रज्जंति

में पहले रायद संबेध क्रवंति

सच्चं सर्भ पि सीसं, विकार्ण

पण्याः राजेण सध्य विसयवि

```
। वर्णिह वसाडे }
इसाजि (जि) } (इरचीए)
                               पाणि पाणि हिंग सन्दर
पक्रसि पद्धसिन ) (एक्त)
                                सम्म (सम्बन्) गारी रीप
मद्दरमा प्राया
                                मडण जंडणाइ ? (स.५२०)
मडणा ∫ पर्रची सर्थ
                          षानुषो
                                परिन्दा } (परिनदा) वाग्य-
परिन्दा } व्यां परिन्द
                                 पूर्व (यून) प्रमा कर्षे
                                हुक्क् (वर्त) कांच करी
जन्म १
            (बाय्) जाणहं
 मागर 🕽
 बाप (गव) शब्द
                                 सर (क) मध्त
 डिक्स (धर्म) करते ग्राम्य
                                 बियप् (विशय) पाम्बं
                        भाइत बाक्यो
 बाद्या सत्तरस सत्त्वाणि
                                 सिक्रितिरिया समे व अर्ग
          मेतिन्ति।
 विकारिययो पमाप पुर्व विश
                                                    तिस्य ।
                                 मेर्डीम बसुरा ब<u>स</u>्टरिंदा रेवा
                                 देखिंदा व पहुची महाबीरस्य
 सीसा ग्रद्धमि वयस्त्रा प्रवेति ।
 पविचनो तक्ष्मं वर्सति ।
                                 बागस्स सहोसद कुनस्ति।
  मुजिसि परमं नाजगरिय।
                                 पक्कीस के बक्तमा संति।
  समो इस पाविस्ति पात्री
                                 व्यक्तियां यो संदेश मध्य
   भरेत तमी कोमा तंत्रकः-
                                 सीकेच विर्यहेवार्च शीविष्टं।
       पाकि सि वर्धति ।
                                 सर्वाचं सच्चं सीर्श्वं तमे व
  शक्तरणुवा विकिवेज समो
                                                 धृत्तपमत्पि ।
```

# पाठ १४ मो <sub>सतकाळ</sub>

१ व्यंत्रपन्य पातुक्रीय सर्व बचन कर्न सर्व पुरुषमं द्विक्ष क्ष्मच क्रमो हे क्रमे सरक्ष्य बागुओने 'स्त्री 'द्वी 'द्वीका' प्रवयां कर्मे इ.

तर्व क्षम } — ईषा सर्व पुरुष } — ईषा उद्या⊶-बुद्धा-ईशा-बहारीशा

कर्करीय पह-पडीम संदर्भरीय बोह-बोडीम

र्वतस्था } - सी ही हीम

होन्सी-होसी नेन्सी-नेसी होन्सी होसी नेन्सी-नेसी

होन्ही होती नेन्द्रीच्येही होन्द्रीमन्द्रोहील नेन्द्रीय-नेद्रीय न्यान्य प्रत्यक्षेत्र शक्योगी वर्षे क्षेत्र स्थाप्ट

नेमश्री मेमसी

नेम∺दी=नेमद्दो नेम+दीय=नेमदीश

संक्रप्रस्य बहुआने 'द्र' प्रस्य कवारीने 'द्री ही' वारेश प्रयोग प्राहुत वार्द्धियां देशाय के अप-सुद्रश्यकी-सुक्ती कि वेपनि रोग्ने अप क्या न सुकेदी (बहुके हु १९-११).

्रमहरामां पहुर नामुने स्वाने पहार की छः

+ का अल्बबाना स्वर स्त्रके हुस्त पण बान क

u

प प्रात्ते-

पुर-बोहित्या बॉहिस हो-दोरणा होंस हव-दोरणा होंस हव-दोरणा हमिस हव-दोरणा हमिस मिसा-ध-प्रिकारणा मिसाहस्, वमेस-

वस+म-(उप+स) उधिस्था वर्षद्रस्था थपहुरू, वनसङ्घ-स्म-स्थायिष्टे सध्यरेस्सिकसे सात्र राज्या होस्या (८ र ) सम्बद्धस्य सरावानी प्रहाबीरण्ड वनाट्य नवहर होस्या ४ 'ह्यु प्रत्यव सत्यान्या बातुनी गहेर्ड स स्वत्य वर्ष स्रोटे

वेक्न मुख्य छ.

कह-सु वकहिसु सव+सु-कामविसु
कर-सु-व्यक्तिरसु अव सु अवहेसु
केम-सक्विसु द्विको जुर्वतीय (एका )

अग--अक्रीइस् जिनो जुर्वतीय (एक्ट ) कि अरिक्रंता मशहरवेता वा शक्कपसिद्धतकरण पिक्रमा सर्वारिक ।

मसम्बा समर्थितः । पाइनमाधाप सिज्ञते सकरितः (खून ) (सम्बन्धस्यस्वतिकाद्वर्णी)

शास्त्र १ (स्तर्क्स) ।लाग श्रस्त्र १ (स्तर्क्स) ।लाग

असपकुसार ७ (का) श्रीकः । अवस्थारस ३ (जैनक्स) विके असर १ (का) असर १६ इराह १ ५ (करान-पूर्ण) उसार असर विकेच्छा भाग थे. करुणाहुस वि (करावुर) इराह ४ (का) श्रीक विकेच्छा । ते. विकेच्छा । कि विकेच्छा १ (का) श्रीक विकेच्छा । कि विकेच्छा । ते. विकेच्छा । कि विकेच्छा । ते. विकेच्छा । कि

दु (अपन्नी) अवर्म

<del>dead?</del> or / deader \ Get

र्क्सपर । कासी काही काहीश भसु भातुनां क्यो र्कानका है जासि अद्वेसि नर्गपुरका विकास संस्कृत सिख प्रयोग उपरथी यता आर्थ क्यो **इ.— अध्यवी (बाग्रवील्)** जी **य**० इ'— अकासी ∤ (मकार्यीत्) तम-- अयोच (सरोचतः) म्- यम् (इ) ( थम्त्) जस- वासी (बासीत) -ब्रासिमां } (बाका) **दश्—मदक्तु (अञ्चा**तः ) मान प्राप्ताना नर्रवाचन सने वर्षपुरसम्बं पातुना संपर्के प्रचारते न्युपारे तथा-तथ को सूर्व प्रथम वाने के बा अस्पर क्रमाता पर्ने अस्ती संबाद क सु जल्ल सम्बद्ध पूर्वता अक्ष्य वता अनुसार मुच्या है बहात्या-बहित्या बहात् बहिनु मेशमा मेरवा. नै।मु नेंमु Ruteul Arent Butte brit. इस त्या-इसित्या इस+मू इतिसु क्रिजन्त्या जिलित्या जिल्लाना जिलित

विजनस्या जिलिस्या जिलास्य विशिष्ट्य स्यु प्रत्य काग्रामं पूर्णा का में यू पत्र कोई स्थाने बात के बन्धित (एट था १४), यहीरित्र निकरित्र (क्या एउ १ बोरोने इ सूत्र १)

चीयास ५ (संतराउ) संकट

संक्रम ५ (संद्र्या) लक्ष्म चारित्र

धामस्य अधामस्य च पार्यः

पुष्प्रीध ।

র্ঘন সূত্র, पापनी विश्वि सुद्धि में (पुरित्र) हुनी. महिमारि (ग्रहित) सम्बं सेविज्ञ ५. (भविष) सम्ब व्यवा समारवाहः त (श्रेपारवाह) श्रहानु सम र्मनारम्पी वर्ड मोत्तन (धात्र) इत्र इ.स सक् इ (भार) भावक भरान्ड इस्टिम पु (गर्मक) शहर. साउँ वि (मार्थ) सपुर स्वत होह । की मा (अपना ) गाँचे विद्वा बार्च. धम्यय मर्जतसुची (अन्त्याग् ) जह (महि) सा. युग्ग (पुग्नु ) पक्षेत्रां. महत्तः } भद्रमः } (भद्रवा) वा अववा नः सहसा (सा) १५४म-धानुमा वसमें (भारतक) प्रयत्न कारो इप (१) स्था पद (पर) क्लां व्यक्ताम ग्रन्थे, रम् (ग्यः) स्वतं ब्राटसङ् **ब्रा-नम् ) (निश्म्य ) निभा**ति विस्सम् 🕽 या-गर् (म्स+१) स्ट्रेनुं बोनयुं, सह (गड़) शामन प्रणियासम्बद्धाः प्रमर्थ प्राप्टत बारबो गायमा गजहरा पर्दु सहस्थार्र वैद्व नमावरीभ पष्ठा व

भरवाणि पदीच ।

रायगिद्धे नवरे सेनिया नाम

नरवाँ दोग्या तम पुत्ताः

र्या विका<sup>े</sup> दि. (दश) कापेतः

नुक्तिका भगराय के

दाहिष्टिम १ मि (पान्तिगरम)

परकाम १९म (सम्बर्ग) प्रनिद

पराक्रम र सम्बर्ध छ। परिष्य ३ (पविष) सुराष्ट्र

पारेक्स रे ५ (पारक्त-पारको वृष्टिनिविद्य 🕽 विस्त विश्वास पाराष्ट्रभ 🕽 च उद्याप प. (धूबेन) हुवेन कुण. पामासु 🕻 🖟 (त्रराज्ञिन्) सूमान्य हुद्धिम १ वि (दु-विका) पवास दुनियाम } पीडिय, दुःक्टिः पदासि । देशबंदम न (स्वरंदन) गान रायगिद्द न (एम्प्रद) एउन्हर रण क्रिकेशक गामकीश राज्यम् ५. (सम्) विदेशसम् विस्मानं वि (विदम)स्थल्प, राग्य देस ५ (देस) ग्रम } ५ (ध्वत्र) भात्र शताः प्रकार बीसाम रेड (विश्राम)निश्रा<sup>हेल</sup>, धारिमक्र वि (वर्गिष्ठ) वर्गव बिस्माम 🕽 रूचन नग्ननाको बेबायक्त (नः(ननाइनः) मेरा नरबाद् पु. (नरपति) राज्ञ वेबावदिय 🕽 हरूग भाष पु. (क्रम) नव गोति. बरिस्त हे इ.स. <u>(स्त्)</u> क्रा **माम** (मामन् ) नाम चैका-क्षा मान पडम वि (अथम) प्रयम अपन वसह ५ (इपन) क्ल सरस ५ (घरड्) घरत्रा पडमान (५३०) जनश् ससंब ३ (स्तरह) बन्ह पक्क पु. (पत्रन) एका वासु ६४ प्रकारी केरर 'पट' तो हु" बाव के सने स्वस्ति हुट वें भग बाव के. व्यक्ति (सम्बद्धः) क्ये (खब्द) 🙀 (अच्छर) वयू-एटा-संदर का सन्तम है नो है को की. करा —क्के (क्क्) सम (स्वर) क्वर्या (क्रस् ६५, करक (करब्), पात्रक (बाउड्) तरिन (नाम) ए करन

## गुत्रराती वापयो

म्म्यापीयं एवं स्थान व यना **९एममर्थः सञ्ज्ञाने जीत्या** सम्बद्धांग बाह बीचे विश्वास्ति सीवी राम गुरुष कारेको अनुपर्धा ठंबी प्रसी बची छे क्तान्त्ररे जेड्न्फ्री रक्तो प्रज्ञा दक्षिण निम्नानी एकन कानाए सन्दा वंजन बुजननी जल्ला पहची. पेने प्राक्रमा नाही यम अयुननुं महत्र कर्नु गरिः बन पत्रमा जेले शरकाने हान मोर्च तेच बीमामा न बोर्च पुष में दुग्न जा संवारणकर्मा कर्नलार बीवे नायमा 🖩 देना माचर्न हो ह ते पारमांची बनान्यो तची तारा बैदो बीजो जनम बाच होय.

रास्थ मीतिल जोच्या वर्जे देशी

पिको ससुषी मन पानना मीह विकास पुर पानेना ज्ञान स्वन करें क्या करा मीदाए तीनकरनी पूजा वह जिल्ह सुष्ट मेन्स्र्यु क्या ने प्रमानमा नेता रागा है अने प्रमु सहाकेरानी रागा भी पानना महिला या ठा र न न अने पुरुष्ट करता प्र स्वामा स्वामा हुन करा उनाने पूजा

शाधिकार वयो

बद नार्ब

अंगा

🛮 तगर बहार शना न रीक्षेत्र

सन्दिशी अजा उस में मोर

ह सुम्ब पाम्बा

ममप्रमारो नाम भारि। मो य विम्लाणे क्यांच पंदिया श्रपीम । विन्द्रे काल विसमेण वायवेण द्रानिमा तुषियमो दौसी । क्षात्र एक कुमारो वह घटे

कामी । सरप सलको जनमा दिप भाजेतं भाषीम । मीयार प्रयहस्य प्रयासी सीपसे बहेसि ।

बामो बगयस्य विभोपव दुद्धियां समू । मेडेज सो अध्यंत अपन पार्वाक ।

क्तित्यपराज उसको पहलो होत्या । नापैज इसपेच सब्रमेण रुवेण य साहबो सोहिस । ते जिणिहं सदक्त इंसण-मैत्रेज प्रसम्मर्त श्ररित श सदीय ।

मो बारिश वयसेम्ब पर्वा रि सो ठारिस सहस्ता। सोर्च सुपन बढि कुण्डक्केज, हानेज पानी व व श्रसकेत ।

मदेर देही करणाहुमाने, यरोनधारेच न केहतेस ह

विद्दुरी बच्ची सुत्त वि अपै न्यानीय प्रदर्शम । धम्मो धम्मिइ पुरिमं सर्ग

मेकी । नरिंदो देसस्य शएव हसीय। यक्ती उरशाये तक्तं महर्र सर्रं कुषीय।

स मबाब है मध्यमं हाडी तंत्र वृद्धं सहीम । पुरा सब्दे हुने नंपुरो मा कियो ।

अमरो माने साऊचि पत्नारं जेपीय । सः वयहणयः मुक्तो होत्या । स तद नरिते संवित्या बदा बहु बर्ण्य तस्त होडी।

पारेकको स्टब्लिक प्रत्मे क्या किल सायका I केलरी धाउन प्रकाणे वसीय रम सो भवती। वयदरा सुचावि संसु ।

जिबीसरो बह बागरित्या । वेशवेरेक वसना हाईस ।

विधान विभाग ची॰ पु॰ केमड, केपड निराम - प्राप ferrae mes ebn an ant des bei

HAR-STAL NO. -

वित्रप्रसा वित्रप्रसा पण्यु नैप्रश्न नेप्रशास affreit fraute विशिष्टमा, वेरश्रमा kon kon kee keer STREE STREET di go briefe brinfe Brain. Arrive. fired Biery

Triend. विशिव्यक्तम् विश्ववासम् kfrevele krierefe kfraye hybric Ren bereit DAMERICA DISTRIBLE

TTTO.

kfommelle bommelt Plunged Bineely brufe 1

414 & BALL BALL BIRT RING 2.5

how hom

President Steam

46A.

Mann Safere

her here

ksy krat

שיצותווול

S.ALECK

```
के (बी)
                                         किसी
पुरु पू वेह्न
                                          Ìι
बी॰ ए॰ मेडि मैस
        क्रिक्रमि वेदग्यासि
                                          विज्ञाह
        Brank!
                                         नेम्तु निम्तु
त्रीव पुरु सेव
                           दा-दे
                                         देगो
to do gift
वी प्र वेडि वेस
विरम्बन्सि वेडम्बासि
                                          ٩x
                                          विकाह
        हेर्ज्याहि ]
                                          वेन्द्र विन्द्र
 बी॰ पु॰ हेड
      म प्रयम कामे त्यारे में+क-मैच्य अंदर्श स्पो
 प॰ पु॰ वेजनु, नेमानु
वेष्टु वेषनु
                                         नेवासी नेवासी,
                                         नेइमो नेपमी
 बी॰ पु॰ बेमबि नेपवि
बेमस्, नेपस्,
                                         केलक नेपड
           Bucht Bucht
            क्रिकारि नेपन्तरि
            क्षेत्रके क्षेत्रके
            hu hu.
           विश्वासि नेपामसि
                                       नेप्रकाद, नेपरवाद
             क्रिकारि, क्रेपमासि
              Arraile Accessite.
              Emile ]
```

Einzeln Gieragn हीशकार Eithington Establish Link REPARTS ENTERING filled } र्था पु इसर इसर EAS EAS

e er 1 Egyst Ertite.

tund total द्वाराज्य द्वाराज्य द्यागांद क्यागिर्वाद इत्याके रावकी £44 235

रामिय हमय इनिया इनयो की पुर इसदि हमदि ETTE Eise

CT! पद् **बर्**च० and bettel bettel हरीया हरराया

स्राप्तम् ब्राम्प्राप्ते कर विवासे क्षाः प्राप्तव सामार्थे तका क्या बर्गाम अन्त्रेश प्रक्षः प्रभूता जिल्लो ध्यानारं रूपने शित्रव-PERC PL BIS

# पाठ १५ मो

भाक्रार्थ भने विश्यर्थ स्थान तम विश्वर्धन एक व प्रत्यन छ-

पत्रवजन नहुवजन प पु सु जो नी॰ पु॰ दि, सु इज्जस ध

इक्सिड इक्से (श्लुइ) भीग्यु के (हु), [य]

९ व्या प्रत्येश सर्वाच्या पहेलां 'क्षा' होना को आ' में प्रि विकार काम का जायू-का मुख्याचित्र-काणस्

भ्रत्यसम् रुजाहि रुखां (अनुरू) वा सम्बद्धे संस्थान्त जनस्य राज्यसम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः

गाव्छिन्नाहि गाव्छिन्ते गव्छ-। कर्म महत्त्व्यं ही पुण्यक्ता इन्हासि इन्ह्रासि इन्ह्रासि इन्ह्रमा एव क्यानामां गाहि छ. बेसके राष्ट्रम् + अभारमिय-गाव्छिन्नासि, गाव्छिन्नासि १ क्याने गाव्छिन्नासि

गायकश्वासः गण्कश्वासः र न्यान गायकश्वासः गण्डेश्वासि गण्डिशव्यस्ति गण्डेशवासि स्वर्णे स्वर्णे सन्दर्भ ४ क्विं स्वरूप सम्बन्धः पूर्वतो स्वर्णे प्रथः यस छ-

केन्द्रे-गण्डानीह-गण्डाहि, यहनेहिन्यहाहि पू प्रथम लाग्न जहां काम्य श्रीकरो स्थान क

बरा राष्ट्रीरबाह क्या ग्रहीह

might "tweet, base on sing or otherwise



**म** (ची) प॰ पुषेषु

34

था-दे

नेमो

नेव

देगो

۹ĸ.

विरमाद

रेना दिना

केवची वेजामी.

विज्ञाह

नेमा निग्त

बी॰ ए॰ मेडि मेस निरुश्रसि गेरुवासि

नेरज्जाहि भीक पुरु नैव

प० प० देख

बी॰ प देखि देख

ची॰ पु॰ चेठ

प॰ पु॰ नैससु नेनासु वैद्यु नेपसु

ची पु॰ मैसडि, नेपडि

मेच मेप.

विश्वज्ञसि वेपकासि वैभाक्ति ]

नैप्रजासि, नेपन्जासि,

नेशम् नेपस नेश्वत्रस्य, मेपल्यस्य नेपज्यकि, मेपजाबि मैद्दरके मैप्तको

दिश्वासि वेश्वासि

देशकाति ।

मेश्रमाहि नेपामाहि,

या जन्म अपने त्यारे में । सन्तीका मंत्रतां वरो

नैप्रशास, नैपरबाद

नेसक नेपड

वेडमी नेपमी



U E C o

प० पु॰ नेपास्यु नेपास्यु

सरान्त वशुन त्रज्ञ-प्रज्ञा की पहेलां "स" वार व्यर्थ छ त्यारे नेपान्त-नेपान्ता वंपनी स्थो.

> बहुब नेप्रकारो, वेप्रकारो

Andread America

	नेपात्र, नेपात्रा,		नेपन्त, वेपज्ञा				
से प्रमान गीवा मन जीवा पुरस्ता रूपो करी की.							
					सर्वतका	अमे	र्ल
			लमाञ्च । उद्यद			प्रकार	
वर्षपु	े हो	मा+इ ब रिज+इ र	रिश्मार इसेन्द्रह	शोपः इसेर	न्त्र+६ हो त्राध=हो का+६ हर	प्रजा रेज्जार	
	নক্ত্ৰক)	हेवर व	प्रार्व की	मिण्य <del>ी</del>	र्वक्त क	परबी	লাক

निकासुमार करकार वर्ड क्यों एक क्कान क. आहे---

(८ शरिष्ट् (अर्थ्) कावन मनु पूजा करवी जोउन जन रम्बम् (उद्+कम्) उद्यम करवी प्रयाग करवी. **बप्पारक (**उन्+मध) उत्पन्न बहुं **भावतिस् (मा**+रिस) मावेश करवा फरमाक्क

मिनका (मिर्-कृष्मर्) श्रेष करको कर्मनो सभ्य करमी माच फरक

मास्त्रत । पुग्दे पर्श्य किन्द्रेश बीर्र विज मस्ते सक्तेयो । संबंध पोक्रिका ।

धमा समावरे । क्रक्रमेच विजा अधे श बहेम् । सुत्तस्य असीव धरेका

मिषण । बो गुरकुसे निचर्च बसेउन सा सिकवर्ष वरिष्ठेप ।

६८ पायकी अन्यर हैं' संस्थात स्पेत्रम होय सो धारण 'ह' औ पूर्व ६ मुख्यम् छे- वया-भागिको (स्थाप्) गरिहा (तहा). 

अपवाद-पूर्व आदि बण्योगां 'र्स वो ह' बक्षो वर्बी ब्राफी (पर्यः) क्रिसी (क्रीसि)

६९ पषडद् , (श्लूबर्-वर्षु ) पषट्य े अर्थन, माति पमञ्जा (प्रश्नाह् ) मनाच करवी

सप्रम् (भन्ध्) श्रेनम्, गरम् सद् (य) मर्ख

वि-स्म (विभय) विराख्रं,

सिक्क (शिव्र) शौक्तुं, मन्तुं

मुसाबाय न वयज्ज्ञसि । तीनर्भ भ व्यक्तिओं। बह तुम्हे विज्ञतियाणा शरिष तथा सर्व वपद च्छाचे य बरजसद्र ।

मई प्रजे पासी ग्रम्हे वि पिचेड । हुम्म साहर्ज समीचे दिवाह वयनारं सुविकाह भईपि सुगस्य ।

पायश्च हे पु. (शब्द) शब्द प्यक्ष र परक्रोपद्विध नि (गरक्षेपक्षित)

प्रक्रोक्ट क्षित करणाई. विष नि (प्रिन) क्षेत्र नातनं

पु परिद्र चणी स्वामी. मुसाबाय । ५ (एतमार) व-सें<del>चादाद } देश भावन क्ष</del>ा भोसाद्य

भप्प रेपु. ए. (अस्तव ) राज मस्त 🕽 संब 5. (मर) समाद बाबार ८ (न्यूपन) न्यूपन,

बागरण , न. (क्टकन) न्नास्टन बायरण हे बाल उत्तरेत मिल्ल

मध्यप चिंदर (क्स ) राजिएक शकी.

भाग (छनः) वाचनानंत्राद, पाव पूर्वि संगामकाच्या अक्षेत्राकाचे

मकरि लवर्र

सेवा (रेक्न) हेम्ब (देग्यम् )

सम्बोद्ध है' मो 'मह' बाव के.

विद्या पु. (मिमा) एम्प्रे भे

विश्वति वि (विमयिन्) सम्बद्धिः विसाय का वित्र) निवा हैन्द्र विक्रमाहर ५ (विचान) निवा-

विमाय ५ थ. (दिमान) विमान

विद्योद प्र (विद्येष) विदर्श

विद्यापर कर्न देशते नदाय-

बच्चों.

क्ट. विकास <sup>10</sup>केसकक रे. (केसन) वैसम्ब समाधरक द (स्थानक) व्यव-

सिक्षोपञ्ज दुन्द (श्रोक्सर्व) न्हो-क्यो सर्थे सन क्रियमि (क्षेत्र) क्षेत्रण्यः

माइ मा (गा) विवेदार्थमा वकार-भुद्धा (पुषा) फोक्ट

रित्रिकाट हे ह (विकिद्ध है) क्रमानं.

कमनी अंदर हे' तो 'ह' वाल के देशन देखानि परावर्ष (ऐरावनः) ! वहएली (वैदेखाः) व्यरं (सेप्प ) करनो (देल.) bek (त्रेबोनकाः) । अवस्थि (ऐवर्नेय ) नवर्ध (बेरक्प )

# गुजधारी बाक्बो-

प्रमाण्यां स्प्रोको वर्षः प्रमुखीः स्तुति न्यपुर्मोए विवस्त्रेत्र विद्वार करको परची कोएए को पड़ी अध्ययन

मयबु बोइए

व्यापारकी केम मान्यस इमार्था समागी पन उद्धम करनी स्रोहए, रियाक्ते निमानो बढे गळन कर्र

म्भ इकेन हुका कर्ने (के) क्षण उनने के कुम्मनी कुटिंग करो

को को का भीतो अने गरका तथी पाओ इस्त बार्च उद्यक्त न करही

जलप. **दे** परक तुं प्रायट राज्यतं वी न सामग्री.

<sup>रु</sup>मार दशाच्यावमी शास स्वाचनन सीयम् आण्युः

चनतीमां पर्ने करता जोदर

करना सम्बद्ध काममाँ प्रमाण स करती आहए.

विकार करे. सोमने सम्मोप वह होड. सर्वनीयांमां चत्रुंभव दीव उत्तम छ

तुं मियवा कोएने व कर दिनमें सांगळ.

तमे पेकिन दा माट उत्सेमी

जोडए.

गाउँ न्यां है जा कन्द्रान कर **बन** पत्पोनो सप कर. शन्तापमा अबु भूता हे त्युं सुन्त बीजार्मा नवी राट सम्बद्ध बारण कारा बाहर.

जल महरकता पर्य फरवाने समक होता नवी नाई पाछनु समाज लाह जोइए दरराज किन्द्राचे दर्शन सन गुरुनी

उपराद राज्यक्रमी औरए व रेनारमधा गरना छ व चित्रमी लिम्दा व कर,

108 भवामा विरक्षाय पूरिमार्थ | खब्ब पितं व परीक्षोपीहर्य गिर्दे वामा कि शयाव ? व बयावा नगर । ब्रह्मे सामग्र किरं ब्रह्ण । वर व दुपतर शापरिया, को बाररिया होई कार्त विधित्र। तया जायिश्च शस्पसा नापपुत्रा निग्धे पपद्वत । सर्वः 1 र्तुं नकार्त्रम कुषेत्रसम् सच्छ बाउबा जले वि जलपी, बोडा और वि यादिसामामी। च पराप्तरि । गुरुपं विषयम वेपायदिण्य समयस्या वि विद्यामा वय य नाथै पर । पानिका इयह घम्मा हर्व सन्या क्षित्र परिवर्देश क्षेत्र वर्गितन् यन्य मा बा, मंख शुष्पा पायका हुनि । रिक्या शर्द निवा हास्या । कर सिर्व रच्छा र तथा कारी सा बियड परो माजा वर्ष दिन्दा विरमश्य । किरुक्तकाराज्य हुन सरक्षय तुम्ह मा तिल्ह्हा शुचिवा शुकेहि विद्येति वि पार्थीकं मान्तेरं नावे इस्ते इविया होन गम्बिमा नाम। वरित्र व भन्ति न असे वासेहि वहरि गमा सदाय कियि तमातई विय मन्या क्लिक बडका दश्र मंसारा पारं क्लोह । मध्यि विश्वसेष पद मध्य स्रोतु मार् बांग्रसम्बर्ध । परकाय वा सिसोगर्स । सम्बजेहि सबि विशह बधा काशार्थभा मु**चद वर ६५०६** विन क्राजा। निक्तिरत वार्च प्रश्ना हें स्वर<sup>ा</sup> धम्हारिस पाने इपड तब पासड सबसे मण रक्ष्य रक्षेति । पंडड संवधसन्याई । पाणिवद्दो धामाय भ निवा। सव न धादर जीचो ताकत कासर न बीससे। सक्ता क्रियो मधर प्रश

### ₹+0

प्रचेत्र वैकरामतः श्रीकिंग बागोयां प्रथमा निश्वकिता एकप्यक्ताताः स्वया अने हिरीकाना कृष्टकस्थां दशः प्रश्वेष एक स्थाप्तामां साते ॥ वैसके----

प॰ प० नई नईआ प॰ प० नईओ नईउ नई नईआ पी प॰ ऽ

५ वे सामा मृहणी आपरामत हे तमा तंत्रीक एकावकार्या अस्य आ' वा 'ए' विकाय वाल हे केरके हिमाद्धी है माद्धा रागम इस इस्प्रमूप कमें वालातम्ब नामाना तंत्रीवनना एव वरूमा विकाय स्था पर्य वाल हे. क्षेम हो महि हो है पितृ पेत्रु कमें हैस्प्रमूप-क्षम्यान्य मानोजा तंत्रीयन एकावकार्या अस्य 'है-द्वा' इस वाल का केर-हे सह हो यह

ध्या (ध्या)

## पद्भवन

पे॰ स्मा पी. रहें पे॰ स्माम स्माद स्माध पे॰धे॰ स्माम स्माद समा

ष•छ• रमाम रमाद रमाय पं रमाम रमाद रमाय रमचा रमाम रमाद

स॰ रमाध रमाद, रमाप संदेशी रमा

प्राक्तिको

रमाण रमाण रमचो रमामो रमा४ रमाद्दिग्तो रमासुन्तो

बहुर्वचन

रमाहि स्माहि स्माहि

रमामी रमाद रमा

दमाओं दमार रमा

प्राप्तु, प्राप्तुः-प्रामी पाठ १६ मी

शाकारात्ता, हुम्ब तथा दीर्घ इ-ईकारान्त अभे उ-क्रकारान्त सीक्षिण नामो

	प्रयास्य
प्रवासन	वहुबखन
<b>qe e</b>	उँमो ∾

बी॰ म् ड को ॰-त॰ व का इ. ए. हि.हिंदि ब॰ छ॰ ब बाइ. प गर्ज प॰) मृत्र बाइ. प ेचो बो ड हिन्सा चो को ड हिन्सो सुस्ती

सक्त का है, ये सुद्धां संक क स सो क ६ सुन्दे को सल्कार पहुल वीकीयर होत से दुल वाल

हे नेतले-भारकाश्म् मार्क न्हेंश्च महे बहुश्मध्याहें र एटेंगा श्कारी राम्मी क्यी को तथ्यी विश्वनियों ने साँ अपन के ते आक्रमण श्रीकीय कार्य कार्य को केले-

सांबाध साखाइ, सांबाद म्माबाध साखाइ, सांबाद म्माबाध साखाइ, सांबाद म्माबाध साखाइ, सांबाद स्तादोग तो र्श्याच्या का अस्तोत्र— पण वण महस्त्रोत्याची साँच साँ

प॰ व॰ महस्बो अर्जुबो सर्वेड सर्वे पै॰ प मौज सोंजा सौर सौप सहत्तो सोंबो स्तोड संक्रिको भैर्म हैक्सल्ल क्रीकिय स्थापेमां प्रथम निमित्तिता एक्सक्सलां तथा
 प्रथम कर्न वितीक्त्य बहुत्त्वसमां क्या प्रश्यम पण लगाव्यामां स्थि क्र. क्रेस्ट्री----

प॰ प॰ नई नईसा. प॰ प रे नईसो, नईड नई नईसा पी॰ प॰ रे

ं वे बामी सुरुषी आकारास्त्र के तथा लंबाध्य एकावस्त्रां अवन का ना प्र' विकास बात क असरे—हं मार्क है मारका रोगत हन इस्पारन को बच्चास्त्र नामांना लंबीकाना एक बरमां निकन्ते पर पर्य बात के केम—हं माई। सा हे पेस्तु सेस्तु हमारान्द-सारान्त नामांना नंबीका एकावस्त्रमां कान्य कृं-क्र' हस बात के केम—हे सह है सुद्ध

च्या (च्या)

## प्रकासका

पे पा वी रमं पे प्रांत, रमाइ रमाय विश्व रमाव रमाइ रमाय पे रमाम रमाइ एमाय. रमची रमामी रमाइ

स॰ रमाम, रमाद, रमाय. सं हे रमे रमाः

रमाहिन्हो

बहुष्यम रमाओ प्रशंड रमा रमाओ रमाङ रमा प्रमाह रमाई रमाई रमाई रमाई रमाओ रमाङ प्रमाहिको रमाहाको

रमासू, रमासू रमामा रमात्र रमा

१०८ चुवि (चुवि) बुद्धीयो, बुद्धीय बुद्धी, प• दुनी बुद्धीमो बुद्धीर पुर्वी थी पुर्वि वृत्तीवि द्वतीवि दुवीदि त॰ दुवीम दुवीमा

पुनीर नुवीप. चन्छ दुवीम बुबीका बुद्धीच, बुद्धीर्थ चुबीय, चुबीय.

पं प्रयोग प्रयोग। प्रयोग प्रविक्तो प्रयोगः, पृतीन पुरीप, दुविको दुवीया, दुवीदिन्तो पुर्वीसन्तो-दुवीर दुवीदिन्ती

**ए० दुवीम पुरीमा** बुबीस बुबीमुं

प्रवीद चुन्दीप मं देवकि बडी बुद्धीयो दुद्धीर दुद्धी-

वेषु (बेच) प्रकारक बहुदबन

प देव वेश्वी, वेस्र वेस् थी मेन् वेशुओ वेशुड वेश् तः पेजूम चेजूमा, वेच्दि वेच्दि वेच्दि षेगूर चेणूव

चण्ड॰ पेगुस येगुसा धेक्ष, धेश्वं **थेन्द्र येश्**य पं॰ धेनूम पेनूमा थेन्ह बेणुसो, बेथुमी बेष्ड

मेकूप. घेचुकी वेजूओ वैकृदिन्तो वैकृतुन्तो बैक्ड चेतृहिल्लो वेषस. वेष्णं

बेबूको, बेबूड धेबू

स॰ पैक्स येव्जा येव्ह बेपूप

संदे, पेवृथेकु

	एक्चसम	शहुमचन
•	रणी श्रचीभा	इत्यीमो इत्यीव इत्यी
		<b>र</b> त्यीभा

बीक इरिंश न प्रत्यीच प्रत्यीका

T

इरपीइ इरपीप

रायीत, रायीय,

च॰उ रत्यीम दरयीमा दत्यीण दत्यीप पै॰ रापीम रापीमा रापीर प्रतिसत्ती रापीमी रापीन

रुपीय इरियचा श्रमीओ रुपीटिन्ती श्रमीसमा रायीक रायाहिकारे

मा प्रमील प्रशीका रर्गाइ इत्याप-

न रहिन

माम (श्वय)

पद्मययम

Jells oh

यी मानं तक सागृध मागृधा

बराग्ट्र बराग्य

गरुए० सामूध नासूचा साग्द्र सामुप

पै॰ सामूच सामुका सामूध सामुका सामूचा सामूद्र

भागप गामच

्रश्यीतु श्र्यीम्

इस्थीमो इस्थीड इस्थी इरचीया-

इत्वीहि, इत्वीदि इत्वीहि

शर्याचा रायीउ शर्या रर्गाम

सामदि सामदि मामदि

सारमा साराउ गाम

माम्ब्रे मास्य मास्

वरुषयम

सास्य सामुची सास्त्रो सास्त्रा<sup>स्त्रो</sup> सासर सासहिको सास्म, सास्स -स॰ सास्य सासमा सास्य, सास्य सासूमी सासूर हात् सं• हे सास

## सर्वनामना सीव्यंग राम्बोः

समा (श्ल्य) सम्बा (र्ज्य) ता(जः) वा(चःः) का(विस्) धन्ता(क्या) पमा-पता (श्वद्

भ्य मनेवानमां जीनिय स्पो <u>क्षा</u>करात्ता क्षीक्रिंग न्यस्य केरी बाव के.

भिन्नेच — ताक्ष्मे यताह प्रकृष स्प क्ष्मणी साक्ष्मे वर्शी नाम के. उसन तानों ती बाबों की कानों की,पका<sup>डो प्</sup>र इसा नो इसी-न्य प्रवाप कर्ना क्ली ईफाएन्ट सीविवस केर्रा वर्ने पन दिश्वसे गान के रूप शी की को की या प्रथम को दिस्<sup>रेशक</sup> एक्स कराई करे करित क्यूक्कमाई हमो वर्षा नही. ( या रघे अ<sup>सक</sup> वर्षपामा पाटमा विराशको भाषतामां आवसे. ) कंसेपची भा माने

### सम्बा (सबी)

HE LINE गारवस्य प॰ सम्बा-क्ष्माची स्वयाप क्षमी की वार्म शम्बाची सम्बाद समा सन्दाश समाद, समाय. समाहि, समाहि समाहि

शकीमां क्यो 'राज्ञा' जमान

### ता-सी (वर)

पद्धवसम प+ सा

बहुबयन ताओं ताउताः

बीव से

सीओ तीड ती तौमा माओ लाउमा सीओ तीउ ती तीमा

वै॰ वास लाइ साय.

तादि तादि गार्दि वीम तीमा तीह तीए सीहि तीहिं वीहिं

🕶 🖰 । ताम तार. ताप. । ताण ताणे. तीय तीया तीर तीए

धारीमां बनी प्रसा सने 'इल्की प्रमाण

मा-पी(यम्)

বৰ সা जोंभा भाउ अर की को जीज जी जीका

मी० 🛊 शामा भार अर शीमा बीड की बीमा ति वाम का बाय जारि कारि नार्दि

शीम फीमा बीह बीव बीहि बाहि बाहि भा • १८० जाम जोर जाप जाण जाणे

श्रीम श्रीमा शीर श्रीय

क्चीलं क्वी 'सा-सी' अपने. का-की (किस्)

भाग कार का की को करोग की वर्गमा

प॰ धा

कामो काउ का-कीयो कीड की कीमा काहि, काहिँ काहि,

eî• €.

त॰ काम काइ, काय कीम कीमा कीइ, कीए कीहि, कीहिँ कीहिं

ৰ তেও কাম কাছ, কাম কাম কাম कीम कीमा कीम कीच.

> क्षाचीमां वर्षे 'सा-सी' अग<sup>ाहे</sup>. यभा-आर्थ (पत्रद)

दक्षप्रात

प्र• प्रसा

श्री पद्म को

र्धन र्घना यौर र्ययः प॰ 🕶 प्रशास प्रशास प्रशास र्णम र्यामा र्यार

परंप.

त प्रधास प्रसाद प्रमापः

प॰ इमा इमी इमीमा शी॰ इमें इमि

वंडवचन प्रधानो, प्रजाड प्रमा र्णांको पाँउ पाँ पाँमा-पद्माको पद्माक पत्नी-

र्यांको यांत्र यां यांचा पमाहि प्रमाहि पमाहि यांदि यांदि यांदि प्रमाण प्रभार्थ योज योषं

वानीयां क्यो 'सा-सी' प्रसम्ब श्मा-दमी (इदम्)

> श्माको समाद स्मा-इमीमा इमीड इमी इमीमा-इमाओ हमाड इमा इमीधो इसीड इसी इमीमा

त इमान इमाइ, इमाच. इमाई इमाई इमाई इमीन इमीया इमीइ इमाच. इमीई इमीई इमीई व र इमान इमार इमाच. इमान, इमार्च

रमांभ इमीबा, इमीद, इमीज इमीज इमीय

**भवरा (मारा)** पव्चिम रिचा

छादी } (बाबा)मानामाँ मनाव छापा } डॉन्वेड छापाः

गर्यामा न्या 'ता-ती' प्रमाणे

## द्याचा (स्वीसिंग)

कर्डेप्पर (चयुषा) स्थीतुं साम

समापा (संगळ) दुग्छ पीत साथा (संगळ) दुग्छ पीत साथा (संग) आरेष दुग्ध साथा (संग्र-लोगात पीतः हो दुग्ध (संग्र-लोगात हो साथा है साथा हो साथा हो साथा है साथा हो साथा है साथा है साथा हो साथा है स

श्रास्तर (नम) क्या शादिया (शंतना) रनिगरिया बिमा (रिस-देश) पूर्वीद रिका-बदा (बच) क्या वार्ल कामचलु (रामकेन) सामकेन साथ. शायकें (बैनरी) पात्ररोगी नार्व किया (इपा) बचा fur (1') der bi einl (ept) giald um मारी (नम.) नी शेमा (स्त्र) तस वर्ध श्रीष्ट्र(गीरि)स्थाय द्वाबित्रस्तरस एदा (ए) शुक्र-नुग जिला (क्रिया) गर्नि शहकार (श्रांत्रा) मृत्याः प्रा (दका) अवन

धुकार (बड़ा) और

पविचा (प्रका) प्रशिमा मृहि, प्रतिविक पिष्णी (प्रजी) प्रजी मृसि, पुरुषी रे (एजी) प्रजी

सम्बद्धी (कर्ता) क्रमां समा (क्रम) क्रम वैन बणस्सह (क्रम्पर्त) क्रमांत. बणक्सह

बस्ता (बार्ग) वर्त्य पना

- A 7 ' '	4011.			
पुरवी 🖯	बरिसा ११ (वर्षा) बेम्पर्ड			
पुरवा (पूर्व) पूरे विका	बासा 🦠			
विद्यि (स्पिनी) च्या	बसकि १ (श्वरि) सम			
संस्थी }				
बाक्रिया (गळिग)को रगे बुली	· क्या (क्या ) कारि उत्तरी की			
बाह्य (बद्ध) शब भुवा	वियवा है (देश) इन ग्रीम-			
	्षियमा ( (वर्ग) व "			
बुबि (का) बुदि	ेषपगा <b>र</b>			
शर <b>का</b> (म <sup>ुन</sup> ) नान की	विरुक्ता (विदा) दिवा सम्बद्धार.			
अञ्जाबा (सर्व्यश) गीमा हर	वृद्धि (१६) वर्षि वानी			
महिमा (पत्तिरा गाडी-	बेसा (शस्त्र) केरण			
मदासहं (स्वासत्ते) वरमधीक-	man   / mall   1999			
बली ही.	सेरमा र			
	Town (day) and aff			
रुप्तिकीत्र (श्रीसम्बर्ग) हत्त्वमी बहेः	Steel (St)			
्र <sub>ा प्रव</sub> ृष्मा <b>सर्वता</b> नाना प	वांग के अंग-कृपने (कुंग्माम्)			
९ भ्रष्टमा भएर व	के में तुंचुक जोजन होते हैं जिल्हा			
मूल के राज करा-वर्ज कराता पर तंतुरत सारव अक्समी पी है आज़ निकल कार्य के उदा				
भाषरियौ } (मारमं) स्थाननो }	ं मरिता गला (वर्षा)			
	1			
ter (com()	धनिक्षालं (क्यम् )			
मरिके हैं (सर्वया)	पहरे पार्थ (प्राथम )			



चेश्च ५ (बंबर) पंत्रवा प्रदुत्ता

(41)

नंशरकमा स्न

विसेश प्रम (विशेष) विकेश

संस् वि. (समा) बातमा

पुरा (सम) पूर्वे बहुबर्र आर्थे छ हेने स्वान

प्रकार, नेर

प्रदास ए (मन्द्रम) प्रमाप सन्दि समाच कि (नम्ब वासम्ब मिरियान नि (पार्चित) शर्मक प्राचेंड-समीविक (१ (मध्येण) वय etter. बाह्य पु. (नन) श्राम सुका सांसचीत्र हि (योष्ट्रपोनिश् ) गाँउ श्चम थ. (याच) योगर्के साव र. (गल-दर्ग) इष. **भाषि व (गमि**त्र) मांज्याचीः सार है. (स्त्र) क्षेत्र उपन रक्यस ५ (१७४१) रक्षम सक्त में (सन) समूत सम्बन वर्सीप्रथ वि दर्शशृहः) वरा नयश वर्षणाई के विक्रम ५ (विक्रम) विकासका सिमि(बि)थ रेड (मन) सन्द पिकास ए (निशाः) का समि(वि)मा हेमचंड (देशका) अम्बन्ध विवास रि (दिशाह) साई. WITH. अध्यव अरबर १ (परा) ज्यार जपा 🕽 उपरिन्ति है अवरि-रि पायका याच्या (पाम) न जा स क्षांस्त भुमा १ (ब्राप्त) क्षणण सार्द

ल्पिन मही छ सी-ना व बाब स्वारे व्यक्तनो स निर्मा

गर्हा (प्रम्यु) प्रयप्त रब्द् न्मादव (शानम) शह वर्ष da i माइग्यू (मा+त्रा) भुक्यू शक् (जनम् ) अरफ कर्युः नेदा मा-गृह् (मा+एष्) बाराधना करवी उपाछवा करवी धर (भर) बाजु दशक्ते उह रे (उत्त+स्का) बक्ब पक्षोद्ध (प्रश्लर्) कोरम् न्य-बद्धा है

जरे (टर्म्स) उत्त पाम्यु पञ्चप्य (३+म् ) मन्त्रे वर्ष वारे-गच्छ (शतकस्) पर पम्मपु **उद्दास्** (भा<del>शी</del>ष्ट्) ब्रोनरी केंब्र सङ् (तम) वर्षा व्य महे. उस्संद्र (गम) उन्हरून कर्त् बलीकर ? (वर्तानक) मध-वस्थित (उद्दर्शका) उद्देव वसाइक र पानगाः कंपकुं, कंटाक्रमुं खित्र क्यु विश्व (वित्त) दिता कर्या. 寸(1) 補 शुद्ध (शृह्म) शब्द्यु साथ पर्न्तु

कृष्य् (इम+इप्य) क्षेप कराते. गिरस् (एक्+एन्क) सामक बहुं माकत बाबया

बस्स बमो नाइको तदेश सा तस्त होर पुग्या दिला असी भ सम्बन्धि साथ सवरा किशाय विचा का धानी !।

\$ 327 T---वतो क्या इक्टे (बसः) कता करा कता (क्रा

रता तदा तमी (तदः)-

बाजरता, बनरता कागणाः (वर्गतः)-

विद्या भाषाच्या वाहिणवास भाने दो निसर्वना पूर्वना स्वर अने व्यवस्त मुख्या का

मिन ब शादिका दिमा उत्तर क बामण ।

gr# (90L)

सम्बद्ध (सर्वतः)-

अमभी अन्तरी अन्नती (सन्दल्ता),

ि पेषवाचे शेवार जुलोहणस्य

मामन

सेचाप सद तुन्हों होत्या विभिन्न हाई प्रवक्षाण कयो थासि । कांसा बेसा सम्पासु करासु न्वितया नच्चतिम् प्रतिको संव क्रुसहा। सम्बद्धा यस्मद्धारा अध्य । सन्धा दहा परमदशा विकार। मस्य श्रीहा बसीहमा स्रो परमा पुरिक्षो । नारीओ होन्हाप ग्मन्ति । श्रहाप समाचा पेथवा शरित । प्रवाण धारता वीवहं सम्बाह्य रत्यीसं विशेषा अवासार्व मद्दसि । धनरसार्ण वि धनना वस्ति मधी दर्ग मदिसमाध रक्ष ब माहरेका । सरक्ष्मा पश्चमाहिता कहिप

तिव पेवा निमा (प्रिक्स).

म्बर सिन्च (शिवा). मक्क परश (बसभा). स<sup>†</sup>त-पुरिता गरिती (नश्ती)

विषयो निसं निसा घरि अपासरह । क्या निक्रीय गण्डिका पा €वंति । होस्यां समारे, सच्छी वि सारा संसाधे धसारी ह यस्मजिस सर्द वृत्ते क्वां । थी कारणबाहाय मार्र वेही कामे संचामो हत्यीमा इ भीक्षेत्र व एक्खन्ति । बन योजं सदबं सेवाय उक्तिमस् । जो श्रीप्रस्त आजे सहस्क नो सिन्दं अविद्राः। विधेराक्ष् व्यक्ति प्राची क्षा 'क्ष' व प्री प्रयाप योग है का अक्षातामा दिक्षण बालोग सोविय प्राप्त आ अन्यवस्त बाब थे. कई रस्त्र है का सारों थे. जेगके---मारिय-नार्थिया मार्थियी (सार्थ

(फेल-(केस उनेते (स्थल्ती)

भ चळन्ति ।

कुवस्ति ।

marrier t

इन्बीयो श्रक्तादिन्तो उइति वायामयाद व विश्वय

सासूप मुसाप उत्तरि, म

य सास्य अवर्टि, अवि प

ब्लारीय १

प्या ।

नरीय ।

भद्रा पुरिस्रो।

पाळगो जासि ।

विक्रमो नियो पिष्णीप सदद

कमारो सम्पास श्रम्मास पड

पहुचा महावीरस्स महुस्टाप

सेकाप शोपमा शपहरो संखार

क्याओं लाओं वासिधार शाहिं समिण वि म पश्चिमी

देगर्भदो सरस्त्रहं देवि बारा क्षीस । सास् यहण देवाभय गमजाय क्टोइ । मो हिर्दि मीड बिड बा चरेड सा सिर्दि शहर। महिलो दाढाप विसं शरेह। विष्हा बागासेष समा वि साद्धाः । वरमन प्राप्तीय शीओ ताल

बर्टेपाए उदर्ग किन्द्रं रांगाध

य वर्ग सक्कमतिवा।

ग्रहराती वास्पा पर्मेचेनी पर्याता उनंधवी वर्दि.

भीरे बाह्यपद्मी रहती छंजनी लंबी 5वनी यह सामना सर्व कामा रिमयमी वर्ष स न्यारे सच्चनको स्टब्टि मान्य पानि स्पर्त हन्त्र नामे अस्ति कने भीरता पन स्तार पासे हा. धर्मीका पानी पृतिसी धराना लाम परश गरी. सरहारी बड़ी रहती (निर्दर)नां विकासम्बद्धाः चीच व्यक्ति है

जानन वेदनायी बहुन ग्रेमाच ए

सा जीनो नुस्त्ये (सम्ब) इच्छा स

अनं द न्दर्भ (सन्तर) इच्छन्य समी बक्तम परच में स्मल्ती आरम परे n स्वाजक पारपाने छ धनकार्य की पसम्ब इस्त्रेयी सरकार्य विश्वयित के रा रभिण दिशासम् वर्मा स्था गर्वेडकर्षेत्रपरियोज् समाक्षत इंग्लीमान र ख होता ॥ है जिल्हानी मिन्नाकोनी स्तरिको वदै स्तुनि वदं श्लं

भीनो धारमी थिरो छ सने

पुष्पी संवे छ

सी बीम बढ़े दून गीए छ

सेवाय सद तुम्झं द्वोत्या तम्मि तुद्धं पंडयाणं वयो सामि ।

कोसा वेमा मध्यास करासु •निज्ञा अच्चिमा उ विसे

सेण कुससा । सम्यानसा प्रमानसा वण्ह। सम्बानहा प्रमानहा विनेह।

बन्स बीहा बर्साहुआ सो परमा पुरिस्ते । बारीमो डोन्हाय रमेन्टि । धुहाय समाचा पेयवा निया। पंत्रवान मन्त्रा रोमहे सम्बाद

र्पवचार्य सरका दोवाँ सम्बास्य इत्योस् वक्तिमा सवासर्व बहेसि । बबस्सर्वेषं पि सम्बा शस्य क्षेत्रे क्षां सरिकासण स्टब्स्

वणस्तर्भेषं पि सन्ता शत्य यभो दर्गं महिद्रभाव रसं क भादरेज्या । सरक्षमा पदस्यादिको कारिय

निकेषमां श्रीमित्र श्राव्यां व्याप्त व्याप्त के हैं सम्प्रणानी भाग इ. एन कवारामा विशेषण ग्रातीश्चं श्रीमित्र प्रयाद का नामकारणी भाग इ. कोई स्वाप है एस स्वाप इर. केंग्रोड---

दिव दिया चिम्प (मिका). प्रियम-चित्रमा (नित्या). सम्बद्ध-वाद्धाः (न्यूस्पा). समित्र-विभिन्नः सरिवीः (चयार्थी) म बढन्ति । इत्यीमा सरबाहिन्तो वहन्ति

कावासयाइ व किटबार कुर्जाला । सास्य बहुसाय दबदि, बहुई

य सास्य सर्वी, वर्ष पर्ने शत्य ! विषयो निसं निसा य दिव

विषद्यो तिस तिसा प ११ अधारदेश । क्या रिजीय गरिवहा पाण्ड हर्वति ।

हवात । सोध्यर्ज समाद्य सम्बद्धी वि बर्-सारा संख्यारी ससानी तेले सम्बद्धिम महं वर्ड कुरता ।

ची बनाय बाहाय मार्ग हेही है। बामें अचामो रत्यीमा डुडें शीम बान रहकारित । इस बीचं सहस्र संसाय व बन्धिकेस ।

को संघरस बार्थ वर्षकामेर स्रो सिक्क परिदेश

मिन्हें — व्यक्ति नाविता शामिती (कारणी

हनस<del>्य ह</del>नसम्ब } (क्तसमा). हनसम्ब } इक्ट-हरेखा हनेती )

121 **बी॰ पु॰ स्ससि स्ससे** संह **बी० प्र० स्सार स्सा**यः स्सन्ति स्सन्ते स्य प्रमनो समाज्ञो पूर्वता आँवा है अल्बना प्रे वान छ.

इस् बाह्यनां क्यो बहुवचन

इमिस्सामो-मुम,

प॰ पु॰ इसिस्सं इसेस्म इसिस्सामि इसेस्सामि इसिहामि इसेहामि इसिडिमि इसेडिमि.

धक्रव्यम

इचिहामी-मु-म इसिडियो-भ म इसिडिस्सा इसिडिन्पा इस्रेस्नामी-स-म. इसेहामो-मुन्य इसेडिमा-मुम

बा॰ पु॰ इमिहिसि इमिहिसे इसेडिमि इसटिसे इमिस्ममि इसिस्मसे इमेम्सभि इसेम्ससे

इसेदिर इसेदिय,

इमिस्पर इसिम्सए

इसेस्सइ इसेस्मय-

इसेहिस्सा इमेहित्या द्यमिटिरण द्रसिद्धि इसेदिस्या इसेदिइ

इसिम्सइ इसेस्सइ इसिदिग्ति-ग्तं इसिदिरे. इसेटिन्त-न इसेटिए इमिम्समित स्ते

इसंस्पन्ति-मी

त्री० ए० इमिहित इमिहिए.

प्राप्तको. पर्वे प्रथमे उपर गण शक्ता etn. पुरेगनी जीवाओं सपूरा हा एव इरका दिव के

य सर्विक्टोनी वार्तामा वर्त मोप

में कोधोने व्हां का बावां कृष्णकी की समित्रजीयां उत्त

इसम्ब से साम्र बहुम्ये उपर स्रोप को क

नामाचार्या पुनिको एका त्या (बमरि) खे हे. रात्रे बीओ कमूज प्रशस्त्रण mit it. प्रमुखी सेवा करे इस्तावी कानान

कार के. शक्षो शक्षात 🕶 वोक्स सवी.

काल सामग्रातं कोटे हो. की करा को पंत्रियों अपन विका क्षेत्रको सकी

पाठ १७ मो शिवपदाय.

मान्य स

चड्ड

पद्धाः प॰ प॰ स्सं स्साप्ति रसामो हामो हिमा हामि हिसि क्साम बाम दिम रसाम, दाम दिम, विस्सा विस्पा

र्था पु॰ द्विसि, द्विसे विस्था विश्व भी॰ पु॰ दिइ. द्विप विक्ति किसे दिने

साच प्रार्ट्डमां चीता करे घीता बुवचर्या नीचे आहेश प्रान्ताना

पन मचीन नहीं क्षाप्तव 🖹

नेपञ्जस्यं	नेपरजस्यामि	नेपरज्ञहामि
नेपञ्जादामि	मेपरजदिमि	नेपरजाहिमिन

 नेपड्डा नेपड्डा श्रारे स्पो पात छ **६.र्-मा पानुनो मणिश्यकात्मां का आवेश विकर्ण पान छ.** का कारेश बाद स्वारे प्रथम पुरुषमा एकाकामी काहि एई स्प निकरो बाब के शब प्रमाण का बाह्यत पण वार्क एकुरप विकल्पे दान है. का (ह)

प॰ पु प॰ नेपज्ञस्सं

पकव बहुद ० प० पुकाई, कास्सं कास्सामो-म-म कास्सामि काहामि, काहामी-शु-म काहिति-काडिमो मुन्म काहिन्सा काहित्या

बी॰ प्र॰ काहिस में काहित्या काहिह त्री पु० काहिद ए, काही काहिन्त न्त काहिरे कर् (इ)

करेस्सं करेस्मामि करेड्डामि, करेड्डिमि वा

प॰ पु करिस्सं करिस्सामि, करिहामि करिहिमि वगेरे न्यां हुस्य प्रसान कालना पण्य दाद वास्म वाम्सामो-भु-म दास्मामि दाहामि दादामो-मुम

वाहिमि

वाहिक्सा वाहित्या

चडनारा प्रमाण विष्दित्रण विष्दित्रण थाच छ. (परिविष्ट, २ ति. ४)

वादिग्या वादिश

वी पु॰ दाहिसि-से दास्सक्ति-से वास्थाह

रत. साथगत्यरे र्थ्य । इसेन्स इसेन्स रूप । इसिन्स इसिन्स ने धातनां रूपो

पक्ष क

प= प= वेस्मं वेस्माति. मेहासि मेहिसि

बहुव॰ नेक्सामा नेहामी नेहिमी, मेक्नामु नेदामु नेदिमु नेक्साम मेहाम नेहिन,

मेडिस्सा मेडिस्या-बा॰ पु नेहिसि, वेहिसे नेहित्या नेहिह

मेस्स्ति देस्यस जन्मद भी॰ पु॰ मेहिन, मेहिए सेहिन्ति बेहिन्ते नेहिन् मेससह मेरसप, संस्कृतिन सेस्सन्ते

इल्क्सेंग्स परे 'स्त्र' कार्र स्थारे वेश शंगमां क्यो प पु प॰ मैदरसं नेदस्सामि, नेददरमि, बेदबिमि नेपस्सं नेपस्सामि, नेपदामि नपदिसि

मा मत्त्र गाँपरा रण सरवच्याचे स्पत्तवाले करी केवी-प्रत्यानं हो। यहं स्वस उत्त उत्ता नावे तका नेआ ने द्वार्ग की क्या

प॰ पु प॰ वैज्ञानम विज्ञारसाति शक्कदापि वैज्ञादामि नैकातिसि नेप्रशाहिति, मैप्रत, नेप्रता कोरे स्पी राव ध

नेपा<del>ज नेपाजा क्षणमां ब</del>र्थाः

बहुमन्द्रामी क्रि अन्यम् सन्त्राम उन्न उत्ता श्री वर्ण पत्री ए. मा--र्मादिका-का। श्रेष्टिका-स्टा (ultimar + ALE) **47** (**5**)

पक्क पहुँच ।

पेरु पुरु काई कास्त कार्स कार्स कार्स कार्स कार्स कार्स कार्स कार्म कार्म न्यू-म कार्मिम कार्म कार्मिम कार्म कार्

कर (5) प॰ पु॰ करिस्सं, करिस्सामि, करियामि करियिमि, करेस्थं करेस्सामि करेयामि करियमि क्लेरेस्था क्लेरेस्या क्लेरेस्या

कोर्र का हम् आतं व वा प॰ पु॰ दादं बास्टा दास्सामे बाहामि बादस्यो प्र दासिम वादिस्य सादिम

बी॰ पु॰ शाहिति-से वादिन्या वाहित वास्त्रसि-ने वास्सह

मकविकात ची**० पु• शहिश य. वाडी** द्वारसम्बद्धाः

43444 बाहिति-से-बाहिटे बास्सन्ति न्ते पह गयमा प्रथम पुरुष पुरुषनमां 'हिस्से' मलन अवसीने स्पो क्या ह.

इमिविक्स वैविस्स करिविस्स बोविक्स. (वर् १८/०४/१३) स्विष्यकाध-भारती कह ध्यके के क्रिया बयायी है तbert à bob.

रामो गाम गरिकविष्याम प्रमा स्थ स्था गर्था गरिककार्यन्याचे हे नगरमा जस्य

(स्रोपिय) शब्दा क्रीवर्डिसा (लम) अमि वर्ष

**सम्बद्धाः (सकेतः)** प्रता बीक्ये वाच करवा न श्रवता (अर्थ) पूत्र न्तास. विकास (शिक्षा) रील मान्य

धार्यका (अस्त्रा) अववात गरकार तिरहास. वेशविरह (देशविरहे) देवरी क्षांसा (६-क) क्या विके कर्मान पान्स सम्बंधि

श्राप्त (श्राप्त) क्राप्ता स्थान द्येया (क्यु) स्वय बारित सप्टे.

स्रोति (सानिः) क्रीक्रो समस्य क्षाकित अध्या

सारिका (क्टी) प्रांती क्रिका

ਵਾਲੇ ਨੇ

बरेश-मा (बोस) नगर बरेश-सा (बोस) रहाने

बिता (निन्छ) विन्त्र, दिवार

बिका (शम) निरा

मई (भी) भी

पचा (मम) ममा नेपीर-

बाबा (ती) बीच वरण-

र्शन्यम

वाचीको स्वांच

पाद्यसामा (शहकाच) राज्याच योप (पीन) देन. विकास (पनिया) १९४४

वासी मध् (मति) वृद्धिः मिक्कमा १ (मिक्किप) मान्धी मस्ख्या । माला (तम) माता माया (सम) मान्य कपट सक्क रचि (तिह) राजि राष्ट्र 🖁 रिक १ (ऋगु) यसेनारि स्तु मणिमा १ (पनिना) थी. विरूपा मञ्जूपन्त मि (अनुत्राप्त) प्राप्त क्रोफ भागमन्द्र पु. न. (कामराव) सुत्राचे भागमंगे अर्थ क्रास्त्रक पु. (स्वरान) सजनी BENCH भागप्र त. जनन) नेनरानी arres प्रमापि (उम) तील अवस बरमचेत ५ (उरम्बन) जिल्ल क्रक्ति पु (नम) क्रक्रियन क्रक्स

muli.

मोहि (मीनि) सद मर्जनी प्राप्ति

मित (मिटि) मिति शेवा

र्रफ्का (ग्रावण) श्रोण्ड संते. श्रीतिकि १ (ग्रावदि) अध्यक्तं श्रीतिकि १ (ग्रावदि) अध्यक्तं श्रीतिकि १ (ग्रावदि) पोणे स्वामलोनु पालन संत् पाण व्यापारणे स्वास्त स्वादि (श्रावण) ज्ञानमं श्रावस्त काल्यं म (क्षण्य) प्रवे पाले काल्यं म (क्षण्य) प्रवे पाले काल्यं म (क्षण्य) प्रवे पाले

बीचर (सम) शीम दे गामद

समाहा (१५१४) रकाव प्रतिप्र

wid.

शांका न (कन) पांचे पीत. शोधांक हैं (शोधांक) बेदात. शीधांक हैं (शोधांक) धादुर्वा शीधांक हैं गामानारी आगारा बाह्य र (बचार) चीचु कहा बाह्य र (बचार) चीचु कहा बाह्य रि (शांकिर) पारी रूपां, आक्रिस प्. (बरिन) गामा चोचा वापस ई (शांकिर) करपारी वापस ई (शांकिर) करपारी

पाकी एकम्ब

'तिद्वाच न (त्रिभुवन) अत्र लाक. थिए है. (न्वर) क्रिक दिवर, दण्द ) र (१०५) हस्य दविम } च संगति. पुद्धि वि. (दृविका) प्रची. चिंच वि (पव्लि) बनाइसे पनिद्व नि (अरिष्ठ) अवैद्य करेसे पार्च्य प्र (कार्चरे) परवी

fire it श्राचन (सक) भव गोति, द्रान मिषा ५ (पूरा) बोक्ट, फर्मक सफाइ ५ (समेट) स्रोपर सामार<sup>७४</sup> ९ (सुब्रूग) मोतर बाणिस्त्र न. (सनित्र) बेपार.

**वावारि व** ( नारानित्) व्यापारी विपाररद्विम नि (विकासिन) विकार रहिन साइम्म गि (गुल्पक) काली

स्त्रोधः चु (स्त्रोव) स्रोत सूचाः सरधापु (नार्व) नार्व प्रमा-क्रांच न्युराद समय पु. (नम) नाम, वन

क्षेपर पु. विकासी.

रम्

समासरण } व. (तमानरण) समयसरण } व्यानन्तः सार प्र व (नाम्) व्यंत सरोस व (तरोत) गम्ब

माण ५ (धन्) इस्से सामि ५ (मानिम्) सामी-सिरिवजमाण नु (वैवर्षमा) वोधेयस क्रिक्ट क्रीव्हारीर. विद्यासम् ५ थ. (नम) निर्दे

affet France सुद्धि वि (शृक्षित्) हुन्ताये. सुमिवतुस्त १ व (सञ्जन) सुविषतुक्त निमानक

सपुष्ट स्थानकी पूर्वे 'खेला 'का' शाब अब इ ना 'र विकासे बाब है.

पानगर (पुन्हायू) नेपह निम्ह (निम्ह) गोलका (पुन्तक ) परमंत्रः परिवासे (परिवासम्) सान (नुनम्() वैश्रं रिशं (विक्यू) कों स्वाने हैं बनो क्य नवी न्तिया (विकास)

<i>t®</i> 3				
भव्यय				
सतुत्र   सतुत्र   सतु   उत्पद्ध अवना धः उदाह्   (उत्पद्ध) अवना धः उपाह्म   सप्प   (इल) साटे विक्रिय सप्प	ति (त्रा) स्थारं त स्वत पप (क्री) अभागम पुरको (क्षुतम) सत्तक चु (न्) नित्रकं प्रभाव हु विभागाल			
कीइ (औड़) श्रीय कारी				
कीड् ) (बीड्) शीध कारी कीड्	इंग्ट् } (इन ) पारव बीम्			
गम् सम्) शब्द				
शस्द्र (गम् ) गळी बल्हा, सब्बु	<b>नास</b> (नासन्) नारा करन			
नास पासन् नमाध्य	सम्बं (मर सन्य) रहन्तुं विश्वसर्वु			
गर्दे अंतु, सम्बु	सरस् (मार्गम् धानवु सामवु			
बंध } (र्राप्त) वनवु करश्चे. बंध	चुक्क् } (सप ) शालनं मूक्तुं सस्द } सम्ब			
ष्मिनेत्रज्ञः } (निमन्त्रः) इपषु खुमनन्	खित्र } (विषे) कारतुः क्षार् }			
মাছত	पाच्या			
सरक सद्दे नगरामी विदिश्सालि । गोपाना पर पेणूमी कीहि हिलि । स्मामामामामामामामामामामामामामामामामामामा	कोत्रको सोगारेज हुने हुनीका । हुनेके गुरू असीप सेनेक सार्व विकास कार्याण स्विक्स क्रिका क्रामा अस्त पहुनो पुरक् निक्सि । वन्नाण अस्त बारस्थासे संस्थ च सर्वस सार्या संपेताचे जिज्जानं क्रम चार रिगिक्स क्रिका			
सियो ववेडाय पहरेहिय	सरक नह राचार्थ विताप			

र्शन वेस्स ! न करकों काहिसि तो वर्णी बार्च ।

क्रक्रिक्ति वरिया घरमैव एवं स कासिबोरे।

का सो पुरसको श्हादी समा परस्म निवाय तुसेबिइ।

पुराणे समाई न कार्र। तीय शकाय सच्यो सन्धि

का मार्स फासिशिते तथा स्रो अधिस्सर।

क्षक्के पुण्यिमाय मर्वको नांब विराहित ।

विश्वत्थियो अञ्चयणाय पा इसास वाज्याहिरं। श्रद्रणा अस्टे प्रवयक्त आ-

माने गनिहित्या । सम्हे दाचित्रकेण धामिलो क्षोत्रक्रिमी शुम्हे गाणेण पंक्रिमा होस्मह। धमील गरा सणी शिवं वा

अधिस्मन्ति । भाव समोसर्थ मिरियद

माजो किचित्रो देमधं खाडी राजित-मञ्जी

तत्थ य बहुनी अम्बा बोर्डि जबुव देसविरा धरुवा सम्बद्धिः व मिन्देविरं। कर दुग्दे स्ट्रताचि मनेग्रा तया गीयदा दोज्यादित्या।

कस्क्रमित अस्में काश्रामि वि सुविज्ञुकामि त्रियसोए को जु मध्मेर । विषयस्माको कलाइ सर्म

बीजवर्ध न पासेस्सद। कक्रिमिम पविष्ठे सुबीचं वाम शत्या गश्चिहिन्ति। भावरिका वि सीसाव सम्मे

द्धानं न नाहिति ॥१॥ नरवरको ऊर्वविमा सह प्रक्रिस्थन्ति ।

के जिलपंडिन सिजास्य वा पूरस्थनित ताज घरे विर् what I

स कि श्रात्याम विद्रोदी पायण तिहुबयम्मि सी बीबो को मुख्यमभुपर्छाः

पर्कित-५३३-

क्रिवारपश्चिमी समा श्रीर 💵 एक चरमा शोई शराम संवि वाध झ. (मि ६ श्वामे) केमके--श्रादित-होती

# शुक्रराती वाक्यो

त पारोगी निंदा करीय वा सुकी पर्देश समारामा नेत्रीहा कर्ना गरी दरशे बीडा करिंदु

वरम् काक कुरायु अस्मा न्यासीये साउ सस्य पुर्वायुः त कार्या स्टास्टर साम्यास्य यन अस्त्राचे सदिः

स्थानके महि, स्वाप्तां कर्षा सुखामा प्रांतक कर्पा तथी तु राज्य पानीक पोक्तिन सहद सन् क्रिनेक्शन वर्षित्र तांस्त्रीकृ

वरित्र डोमध्येष्ठ विस्तारमां चर्चा वास्परिकां छ ज्यारे हुलां ज्याधारवारे बाग्ध व स्थानी छ साड वर्रकोन यक्त करवड

त ताला क्षा सार प्रक्रीना भाग्ना काही तुं समा नारन कांग्य सो हुमन

र्पुंदसाबारण कर्मक हो ग्रुवन इंड्रहरू सर्मेंड अनुसाबक्यमा साचे

स्में अधुमा नमना साची रुपानमा प्रशासको त समय ये समय समीजो साचे जसर सम्बद्ध

वनमां तापन उम्र स्प कर क्र अने तपना प्रभावका रूपनी रिद्धि मंक्रमस शु वर्णकानी सेवा करीस ता

हु वर्षक्षांनी क्षेत्र करींच ता द्वाची वर्षक उसा तर्ष्यं मान्य विद्यार करणां उसे वेगस्मी सब वस्त विद्

ता जीपवर्गी सन कर वर्षि है र्तनाग्ना दुवीची बीहु हु सार्व दीला प्रदूव करीच है बीनर्द्वित्य न कर नहिला हुन्यां बरस

काण प्रीतिमें इस छ अस धारा सिकाने इस छ कर्म साम निरक्ता वाद्य घरे छ कमें सोन चर्म पुजानो साह बरे छ साम रोबानो सारा करीया.

चारों वशिष विकासी संपा है पर समी जहर त्यान चरीस है तरावरमां व्यक्ति ता जहर हुवीच रा कुमारे समाब पन बराब्य सन्दि

बीतरमा समान वर्षे बनी अने नीवर्षमा समान अवर्षे बनी

#### पाठ १८ मा

## (बासु) प्रविश्वकास अने क्रियानियस्थय सोदाः वर्गे कानुसार्थ स्वास्थाना

सं• भा•	क्षि प्राप्
<b>मु</b> -मान्ड माक्क्टु	मु <b>ब्</b> नावत नुबन्न छ।
शस्⊣व•७ वर्ष	वक्-सच्च मान्द्र-
<b>स्त्</b> नोष्ण तेषुः	छिष्∽बन्त दर्भ
विव्-२०० जन्	सिव्-भेक मानु
WINT-WAR MITT	अपन भीतन नाम

'खावक्क' क्यर वरा चानुका शिष्यत्रक्रमां १२राज ज स्में ठ्या कारकाण कानी वाका शिव्यक्कमा श्रद्धकाला हिच्च सेने विकार वाच क ठाउड माना गुरूष कृष्यकार्ष्ट्र वच जा वाहुसैने कान जनुवार मुख्यारी हिक्सो निष्ट् बाद है

### रायकर्ता करन

गच्छन	क्या	
पत्रवचनः	वहुबबन	
че де неш-	गरिकस्थानी गरिक्रहार गरिकामी गरिक्रहार	
गरिक्रम्सं गच्छेर्म	गरिकस्साम् गरिकशः यच्छिम्, गरिकशः	Ŧ
गरिकस्सामि, गर्थकेरसामि,	विकासाम गरिज्याः विकास गरिज्याः	Ħ,
गरिक्सामि, गण्डेहामि-	विकारिस्छा, विकारित	

गरिग्रास गरक्षीस ए वात्र त्यारे गरकेस्सामी गरिग्राहिम गरकेहिसि. वगरे व्या वात्र झ.

षी पु॰ गरिकासि मण्डेन्सि मण्डित्या गण्डेन्स्या, गरिकादिस्या गण्डेन्द्रिस्य गरिकादिस्या गण्डेन्द्रिस्या गण्डित्से गण्डेन्द्रेसे गरिकाद्व गण्डाद्व गण्डित्वस्ये गण्डेन्द्रिस्य गण्डितिहरू गण्डेन्द्रिद्व

त्री पु॰ गव्छित्र शब्द्धेत्र गव्छितित गब्द्धेति गव्छित्तित्र गव्छित्त गव्छितित्र गव्छेतिति गव्छित्य, शब्द्धेत गव्छित्ति सव्छेतिते गव्छितित् शब्द्धेतित् गव्छित्तित्ते गव्छितित्त गव्छितित् गव्छेतिते गव्छितित्ते गव्छितिते

उत्त उत्ता अन्यका आने त्यारे नर्या स्पां-

गन्तुः } गब्दिक्जा गव्यक्रिजा

### जिल्ला<u>नियम्</u>यर्थ

 क्रियालियस्था-विकाली क्रिताणि (निरुक्षणा) सूचवे छ.
 क्ष्मुंक क्षमा कर्जु होग ता अनुक स्थाने वया प्रथम क्षमा म मानुं प्रश्ने देना उपर लाधार राजनार वीतुं वन वयी प्र राजुं कर मेंच क्षमानी विकालक क्षमें त्याक थे.

#### पाठ १८ मा

## (चानु) मधिरवकाळ यने विमातिपस्पर्ध स्पोदक्ष' वर्गरे प्रमुवानं स्पालकाने.

सं• मा•	र्मक मा
सु-गान्ड सम्मर्ज्	सुब्ध्—जेवड तुरेषु, व्यक्त
शम्-१७७ वर्	<b>सम्</b> भागत शर्मम्
<b>श्रद्</b> -रांप्त रोनु	क्रिक्-उत्तर कर <del>्</del> ड-
विव्-तक जन्म	सित्-नेषड नेप्य-
হয়-ব্য মানু	मुज् नाम्ध कातु

क्तोक्का नगर वस बातुआ सन्धिमान्त्रमा एएएव " कर तमा करारका कार्यो वक्का अधिककाला अस्परास्ता हिया सेप किस्ते बाव ॥ तमा अस्मा पुत्रव एवं प्रकृत ना स्व बाद बाद अस्मा अञ्चलका मुक्काणी विकास रिष्टु बाध है।

#### \_\_\_

शक्करा	क्यो
मक्रवण.	नदुषकर
द पु॰ सब्द	यस्थितसामी गरिसदामां गरिसमी गरिस्टिमी
गविक्रमसं गच्छेश्यं	गच्छिम्साम् यच्छिहाम् गच्छिम् गच्छिम्
गरिग्रम्मामि, गर्पकेस्सायि	गण्डिकास विद्यास, गण्डिम गण्डिस
गव्यिद्वासि, गव्येद्वासिः	वक्छिद्दिस्सा, वक्छिद्दिस्या

1	धग-	- इसन्ती इसमाणी 🕟		इसमाणीओ
		इसन्ता इसमाणा		इसमाजामी
1		होन्सी दुन्ती	होत्सीमो	
		द्दोन्ता दुन्ता		
		शमाणी होमाचा	होमाणीमो	<b>बोमाणामी</b>
Ť	ल <b>फ</b> -	-इसन्तं इसमार्ज होन्तं हुन्तं हामाणै	इसन्याह होन्याई हामापाई	
1	गन्म	न्तो-आयो न न्याम म्ते- वेनड-इसम्ते इसमाजे		
•	•	द पुण अव कान्तोरन धा (इस अव ३४२)	स्तिता त्या	तल्य व विद्धिता।
1	Ų.	} बद्द गम्म ग्रामा द्वारा (स्वया सा १ १४	स्त्रनृत्र∓भा स्त्र ९)	वि (त) सम्बद्धीयो ।
t	ų ų	} सह साजा पहुँ तप् । } पुना सज्ज्ञ अनसम्त 🛊		
<b>3</b> ₩ी	ए ए	} नद (तुम्ह) तनवं हं व (पु. पू. १८ प्य. ४	इटावंदी व )	ाने हवा सर्दती।
		एकमि मसं <b>सन्धति</b> (१	ता) इता सहित	् <b>लम् बस्तुरम्</b> ड

भा र ) (यु वु १० था. ४)

पर्वधी प्रशं बाल्ड्रोले (श्री क्षण प्रविधा स्थल अस्पुरण्देऽ
सम्प्रमाता दुँदा। (श्री क्षण प्र २४)

उ प् } ऋ वर्श औराइमा संध्या व विद्वों दुँलो तो पुत्र हुने।

प् } (विश्वीयः सा १ पू ५)

व्याद प्रथमित सो तुस्दें विश्वालको द्वितों, स्य उत्ते दुने।

(सदानिष्ट ९८ वा ९९)

#### प्रस्पव

२. विश्वरकता किंग प्रमाण प्रथमाना एक्स्पन अने पु क्चन्य त त निभाग अन्तरा 'शतुः⊸शाका' ने सनावी तकार मपुर्व प्रत्यमें तथा सर्वेषयम सन *सर्व* पुरवसी 'उन्न-उन्ना' प्रत्यन्त्रे माठव बयाइवाची किचानियरकाँची ज्या वाच हे.

#### न्त्रैवार प्रत्यपो

वस्त	वर		वहुवर	पत्रं
पुर्व्सिगना स्मीस्मिना	स्ती			माणा माणीमो माणामो-
मधुसकता क्षां वक्ता } क्षां प्रथा }	गरो	मार्च		शाणार्

पश्चम यह्य-पुँक्तिग इस्-इनन्ता इनमाचा इसना इसमाचा

श<del>-होलो इसो होन्स</del>ा हुन्स बोमापा-होमाण

मार्थ हा शक्तकाराक्टर प्रयोगी प्राप्तन सर्भितकार्ग स्कूत **押**7 47年 47年

प्राप्तः या पन्नार सम्बन्धाः स्टापनी पूर्वे पन्ने का ६००० करताओं व्यक्ति हो. अस होन्यता हकता हरिसाच हरेसाने कारे श्राष्ट्रा नाप्रैस्थ्याची उत्तर्भा दिमानिसरसभा श्रीत दिक्यो स्थिती. कुण का सुम नेतर में व मुंद्रोता ता है संविद्धियाचा नार्थद्वेशी । (दूसार्थ. इ. अ. ४९).

## १३३ श्रीर्थिग-इसली इसमापी - इसलीओ इसमापीशा

होन्सी हुन्सी होन्सीयो हुन्सीयो होन्सा हुन्सा होन्सायो हुन्सायो होमायो होमाया होमायीयो होमायायो नपुंसक-हचन्तं हस्मायो हस्मायाहे

इस्त्रता इसमाणा

इसन्दामी इसमागामी

	दोन्तं द्वन्ते दोन्तारं दुन्तार दोमाणं दोमाणार्द
भ्याप्त	न्ता-माजो न न्वर्ज न्ते-माजे क्रक्व १व सम् इ नेनके इसन्ते इसमाणे होन्से इन्ते होमाजे
4 .	त पुत्र का कम्मोर्गपार्सता तथा तथा तथा विसंता। (ग्रा था ३४९७)
ई प्	} नद तन्य द्वरा द्वेता वात्व बनावि (त) ससर्वयो । } (संबंध या १ २७ मा ९ )
4 4	े का काम पश्च । तए ई निवासिया श्वसो टा फेरियनया रे पुणा माटा जयबस्य श्वेता (पु ४ १९ मा ९९)-
ई ए की ए	) बा (तुम्ह) तन्तं ई न इरावेतां स्वमे तुवा मर्दवी। } (यु इ ६ मध्यः )
	एनमि असे सम्बद्धीतं (ता) एमा परिमा न्यन सम्बुदनहेळ कपमाना द्वीता। (पीनेक्य ए २४)
ઇ ए ≄- ₹	} बद्द कार जीवाकुम्ये क्षेयांन विद्वो हुँसा ता नुसं दुर्नि । } (श्रवीयः मा १६ ५)
-	वह नवसमेप नो द्वारोई निवलिक्ष होती, या सुर्व हुती ।

(AUGL PL Y S & ML SS)

# Piltr उँ ए } न्द्र नृष्टे वि सेनुपा<del>लचं करेंसा</del>, साहलनरं हुर्न । व ए } (महा द्वर ). अक्ष हे मायब्द्रप्रता ताएकसमि पार्वन में डेंगी।

(पूजा पूर्वा गावह)-क्ष व्यवस्था पहला करूत वावि बहुशवा होता। तर किस्तान निमित्त होश्य इसा बलाया हरता है।

( क्यूक्तहर्शनक छ ३३ ) भी व } अरहतं युष्युंब्री सालो जस्तानि सद्यपासँती। इ. ए. } (प्ताकृत्य-काप्त).

जी र } अद्गण्डास्त्रभे मनो बाद छहा बहुतन् विवासीती है। स द } नुरुक्तमार तमिछानिहरूले वर्ष्ट्रतः । (युक्त दृश भी ९४)

म ए } जरपुत्र पुर्वाच्यायु कुळेलु स्थान स्थलनियु द्वीरी। पुत्र च कुलायुक्यपुरमा द्वार्थसा समिक्के स्थलिये ॥ (संका क्र. १६३ व्ह. ६१).

> } द्योग्य न सेवा दोग्या व निधा स्थिते पि वह व े बोमार्थ । या बॉला क्यू कारो इथ तर रेचुनाड में ।। (क्रमारपाक्रमित स ५ वा. ५ ),

न्य सम्मन्दि तिकामरिसीहि स्टां शक्तं रिद्रं हुँसै तो व कामान्या कर्माना वर्ष क्रांतिहर । (निक्रीय मा १ प ५ १-

#### होस अंगमां इपो

पुं• स्त्री॰ नपुं• बोसन्तो होसन्ता होसन्ता होसन्ता होसन्ताह बोसमाजो होसमाजा होसमाजी,होसमाजा, होसमाज,होसमाजाह

### उत्त∹ज्ञानां अयो

मन र } इसेज्य इसेज्ज्ञा वर्ष प्र } दोज्ज्ञ दोज्ज्ञा होयज्ज्ञ दोयज्ज्ञा

कियातिरस्त्रव ज्यारे सेवंत के सरत पूर्व व बक्क हांच त्या संवितिक बावबोगी बप्ताब के अंग-का को विक्रो संविक्ती ता सही होक्सो-जा त विद्या नच्यो होत ता हुनी यहर.

### व्यकारान्त शाम

अवस्तिमी किंदुम्बरमा प्रचीम बता नवी शनी अनुपारना अं **क**रनो 🕊 दमा असुक काफान को नीचे प्रमाण क्या बान 🕏

- पंख्यकार के सर्वे अस्त्राध्यक अस्त्राध्य स्थापिक गिषक के तेना अलग 'अर्थुना आहा' याय के बाने में सम्बं निरोपर 🗷 क्षण सन्दर्भ 'स्तु' वा कार्ट बाद छ. पड़ी सन्दर मध्यसम्ब क्षांतारी एका गयो पुल्किय कल नर्यनक्रिकारी माध्यप्रसा पुरिवार अनं माध्यपात मधुनावर्थिय जेवी बाय of Anni-
  - स्वेक्शवर नम-पिकर (पित्) कामाबर (जामात)
- मिक्केक नाम-कत्तार (कर्य) बायार (बार्य) प्रथमा उन्ने द्वितीचामा प्रकासन सिमान धर्व विस्तितमी इन्द्रम्त्रस्य क्रम्पन अन्तर अनुना कि पन बान के विक (पितृ) कतु (कर्यु) दरड (दरदा), धरत और उपारमत

क्षेत्राची क्षेत्री स्वाहरराम्य पुरिवाह अन अपुनवर्तिय उन्हों नान # तरी पिकर, पिंड (पितु) कत्वार, कन्नु (कर्ने) बायार, बाब (बानु) मनादि शब्द ननी न्यो कार्रा

प्रमित्रमार्ग प्रमान्त्रत क्षानुष्यम 'क्षा' का 'क्षा' करवाओं यह विश्वस्थे 3 बार के कंगव-पिशा (पिता) कता (कर्ता) वापा(राता)-

र्वर्वपनायक आधारामा कारण अध्योका एक्क्वन्त करन को ये के कर कर प्रशानी कर विज्ञानगानक ब्राह्मसम्य करामा वह मी का करवामा विकास दान वे

बनके के विश्व ! हे पिसरे ! (पिटा) हे कता !

(दाव)

के बाग !

पुष्टिमा तथा विदेशक शब्दो

क्रलार है वि (क्ष्मू) क्यार बाभाग्नर } पु. (बामानू) अमत्रे, बामार } वामान श्वार रि (शत्) बेमार, पिश्वर } पु. (निपू) निल पिश्व मापर } ५ (लगू) माडे.

अकारान्त पुरिसग

प्रविधान बहुवयन

विका विकारी विवास

विवयो विवा विश्वमो विक्रणा, विक ਆਂ. ਚਿਸ਼ੀ

विषये, विषया विकासी विकास

	विवरेच र्च	विवरेडि-डि"-डि
	पिक्या	विक्रहि हिं"-हिं
;	पिमरस्च	पिषराण-च
	पिउची पिउस्स	विकल थे.
	पिथरत्तो पिशराओ	पिमरत्तो, पिमरामो
	पिमधाउ-हि हिन्सो	पिमराइ हि-हिन्दो-सुन्त
	पिश्वरा	विवरेडि-दिन्तो-सन्तो
	पिडयो पिडची	पिडली पिकमी-उ-
	पिक्रभो-उ-हिन्तो	हिन्तो-सुन्तो
	पिबरे, पिषरम्मि	पिबरेसु-सुं
	पिचरंसि	
	पिकस्मि पिठेसि	থিমন্ত্র-প্র
	हेपिम पिसर	पिभरा
	पिषद, विभरो	पिमचा पिमड−का
		पिक्यो पिऊ
	कतार कन्नु (	<u>ৰূপু) হাদৰ্</u>
	कचा कचागे	क्षारा
		कत्तवो कत्तर कत्तमो
		कल्या कन्
ì	कतारं	क्वारे, क्वाय
		कत्तुओ कल्
τ	कतारथ-श	कतारेडि-डि"-डि
	कतुवा	कर्णांब-वि"-दि
	a mist हुने विश्वविद्या ह	Diday a com or sell

केंग-विक्रम मात्रण क्रमानि

114 च }क्रचारस्स क्रचाराण क }क्रमुणो क्रमुस्सः क्रमुण-ध कत्ताराण थे पं क्रवारको क्रवारामो क्रवारको क्रवारामो बतायर-दि-दिन्तां, बतायर-दि-दिन्ती-प्रन्ती कत्तारेडि-डिन्टा-सन्तो कत्तरा कतुषो कतुषो, कतुषो कत्रमो-उ-कत्त्रमी-य-दिन्ता दिन्ता-सुन्तो स करारे करायीम करारेतु-सुं, दशरीस बज़िम, बर्चस कत्तर-सं संदेकत कतार. कत्तारा क्ताचे कत्तवो कश्च सो कत्तवो कन्न कत्तार-कत् लढारान्त मधुसक्रका चप् कशराह, कशराहँ कशराणि कर्म, कहाँ कश्मी में देवत कतार. क्षवाराह कसाराई कवारानि कमर् कर्म् करावि बाकीनां कप पुरिस्तम प्रमाणे. बायार बाठ (शात्) शाव वश्ववाग पक्रवजन काषारात्र काषारात्रँ काषाराणि वाकर्त वाकर्ते वाकनि बायाराई दावाराई दाबाराजि स देवाय वाबार-शासर, शासरें शासचि.

वाकीमां इस कचार कच प्रशामे क्रपारास्त श्रीकियामं संबंधवाचयः शक्तोमां वयो मीचै प्रमान

क्रकार करेंगे बाब क. (पुष्टिम्) संस्करी पुत्री

मर्पेदा (ननान्द) नर्बंद

पिबसिकाः } (वितृष्यद्ध) फोद शायनी व्हेन पिबष्दाः माउसिमा } (सन्दर्भस) मार्चा मार्गक

क्सांबरा मामर } (शतू) सम्ब स

सचा } (मच्) म्हेल ससा }

मा सन्दानं त्या आकारत्य द्वावाची आकारान्त सीनग দানীৰা স্থাৰ পাৰ ৪, কৰা 'আত্ৰ' বজ্ঞা হয়। ক্ৰমণেত मीकिन राज जना बाच छ। पण प्रथमा कने दिसीयाप एकन्यनम् 'माड' चप्तमा प्रचाम वतो वर्ता

मा बीजिय राज्यो मुख्यी महराधना नदि हावाची स्वीचन प्रभावकार्य है सामा सामरा है समा प्रथमि धास के.

 'मान्य क्षरुपो पोई स्वक मात्र' ज्या क्षण विद्व को इन्द इक्स्पान्त बीजिन जैनो क्यो यथ बाग छे जैसके-प व } सर्वाका माहिउ मार्के की व }

मर्छनं मर्गन दल्लान्ति

## माबा-माबरा-धात बालतो करो

	_				
4		₹ .			वंदवयन

माबाबो माबाइ, माबा सामा माधराधां सामराज मामरा-मापरा

बी साम सामर

मानाम मानाइ मानाच, मानाडि डिं-कि माधराभ मानराह

सामराप. साक्रम साक्रमा साक्ष्य साक्रीड−क्टिंकिं

साऊप

क रा. कामास सामार यामांप.

> मामदाम मामदार सरधराण

सदस्य सदस्या माजद माजप

उ-दिग्नाः.

मामतो माधामो~ड हिन्स सन्ता दिस्तो

भाषराम सामराह माधराप मामरला माजरामा उ-मायरका माजरामो उ-हिलो दिस्तो नक्तो.

माऊन माऊना, माऊह माउशो भाऊची उ हिन्ती-माजप, मारकी माळमा शुक्ती

माजमो माज्य माज-

मामगरि-रि'-रि

सामाण-र्

मामराज-वे

मारूच व मामाम नामाइ नामाप, नाम नो नामामी उ

स माधाम माधार माधाय, माधातु-सु माधराध माधरार माधरातु-सु माधराय, माडस माजस्य सार्टर साजस्य-से

मारूच मारूचा माउद माउत्तु-पुं मारूच.

माज्ञम् संहेशस

हे सावा सावामी। माभाडः साथा हे सामरा मावरायो सामराङ माभारा-

# समा (म्यस्) ग्रम्बर्गक्रपो

प मसः समाना ससार, ससा वी सर्ग समानो ससार ससा

षा सम्म समाद्र सम्बाद, समाद्रि-हिँ-हि

च प्रकार संसाह संसाय-च

मसाच.

पं भनाम संसार संसार समता संसानी संसार ममता समामो मनाउ समाहिन्तो, संसापुन्ता संसाहिन्तो

स मसाम सराह सक्षाप. नमातु-कृ स द्वे समा समामे ससाम समा

ग्रम्

सक्त पु (तक) मूर्व-समा र (क्षा) काव्य विकार समाप्तकपु पु (असक्तव) अविकार प्रमुख्य वाच केर्नु अहिमन्त्र | १ (धनिमन्त्र)नम अहिमन्त्र | ४ अहिनने अहिमन्त्र | ५ अहिनने अहिमन्त्र | ५ अहिन संगति तह दर्ग क्रिसेस

राग्य सुव कर करत यहेता के

```
श्रासम् ५ (माध्रम) बाद्यम
                                  योजक
               रायस्त्रं स्वान
परिस मि. (१९६८) प्यू. एवं
कारण ५ (कीरत) प्रदासाग
                नंदान चौरवो.
कसार कि (क्रि) कागर
चीर्वेदण २९ (वेल्क्स्ट्रन) वेल्क
                       दहर
बक्तामी (बजा) गत्रा तीर्व
                       TITE L
काउन न (काक) सम्बद्ध प्रस्ट
बादाकी (स्मान्त्री
वामायर )
ज्ञामाव
           पु (जामन्) जमाई.
क्षीपाइ ९ (बोनानि) बीन-
        कारीय जानि सम्तास्त्रोः
व्यापार } वि । इस्य बाक्तार.
बाड
मेघ नि. (द्वेप) वाच्या शायक.
रास्त्रकाची (गल्बनाई) गुरुको
                    की बक्त.
निसम्बद्धां की (निकास) प्रम
              मध्यमेली साहा.
-रास्त्रमाच र. (गरपकार) जीवादि
                                 पिडसिमा रे
                 पत्त्वोभं बार.
                                  विश्वका
```

ि (राष्ट्र) सर्व्यः वहिमा बी. (दुविन) धैनधै चीमा देवार्थवा कि (स्म) स्कृतीर प्रभूती सहा वि (पान) चरम धाषार 🤉 प्रसास स्था बर्केन्द्र बी. (काल्य) नर्नर क्रिफ्ट्रेस वि. (निस्क्रा) निर्मेष ರ್ಷ ಕಡಿಗ वेसिरिकाचे (वैसिनिक मिसिन धाको सम्बद्ध परिमाण का (नाम) महन स्थान पश्चिमया है भी (प्रतिका) एक निया प्रमा पाडिक्या ( पर्पार ] कि (प्रस्तर) पंक. परोप्पर । बीजामीय अस्यो परुपर धरबार म पु. (हम) प्रम्भी पश्चिम (पल्य-पश्चिम लगाम, पाख्या में (पाज्य)गळन पामन

रि. (मन्त्रेष) भन्य भोई-

त्त्व.

वोपयु-

**ध्यक्तमा ग. (**अक्षम) एक्सम

रंड पु (केन) केय समाव

शक्तवा उ (कवर) कव

नरारह व (नव) बस्स

ध'समार सम्माही

सम्बद्ध पु. (सक्त्यम्) राम्यनां सङ्ग्

मध्यप्र

पियामा क्री. (विवासा) नृपा

र्षेषण २. (वंदन वेडी अतुका

स्कृति (ब्रप्ट) अपर परित

करेल अक्टन वेळवेन

राम है. (१५) समक

समाहः ३ व. (वनमः) शाव

ममत रि (प्रयम्) संस्था मचार } पु. (सर्न्) स्वासी पनि मचु } वि पापव दानान बासुदव पु (यम) शामुक्त. विविक्ति का (विश्वति) दुवा मास ग. (गम) अवट. विरुद्ध ि (विरुद्ध) कारम कुरम साबर 🕽 🖫 (अल्) माह बन्न विसर्गीतिथ रि (विप्रमिक्ति) भृषद्विम गः (शृणीतः) आप्राजा सेन्यार्व রণক্তম. **बीबराग (** (जिन्न राग**र्ना**हरू सायण न (साजन) साजन ্ব (ফন) ন্মন্ত मामा ৰ্বা (মাৰু) নক্ষ मक्तम ५ व (अक्म) रामनु माउ साइ 937 माहरप तु व (सञ्चारक्य) सहिता मगाम न (तकाः) मर्मप वास मार्गाः, प्रजन भाग्य व (शाम) शास स्प्र<del>ाप</del>्त माइनिया रे 📲 (शलूपय्) स्यमहत्रम पुत्र (**र**ण्यम) माउच्छा 🖁 भाष-नो नार **ह**बार-मीनिम नि (मिथिन) मिथा

सिक्त्य पु (निदर्श ) शिवार्थ । राज्ञा सम्मान स्वानीस्थ	साक्षा की. (धीना) ग्रोमा वैति
राजा जनरान स्थानीरम्य	-D

BUU

सेर्सुंब्री } को. (यथुध्वर्ध) सिर्मुडी - वर्धनुं नाम के.

संस्प्यं प

शंत-शंता (ऋपः) भग बासा (रे भावर्गः

बाबो राम विस्तव जानर्व चान. PATI PART

नभावता गेक्क

क्याची (मान्द्र) माध्य क्रमी महन्तिकर प्रमुख्यां प्रमुख

घोर् (प) पांडु निरियण्ड् ) (निध्यु) १४४ गु., सरः निरमञ्जू । सामग्रः विद्या कालीः

बहुबसे १ (कार्जर) जोदने नापनी

भातुमा

मिषद्व (नित्त्) प्रमू

पस्तीह } (पर्वम् ) केंक्तुं ककी परवास्थ }

त्रहिं (तव) ल्यं.

सक्की (नवार्थ) गोपम

मणिव (क्षेप) बीम बीमे;

पञ्चम् हे (मन्तिप ) द्वेश कामा क्स } (स्थ , तेब्द

विकास (श्रेगा) सेंद्र करा<u>रे</u>

सीस ५ न (बीब) मलक मानु

धरम } ५- (इन) क्रो व्यवस इंद्र मार्च क्रोक्ट

स्राहिति स्राहिति (त्राहिति) कार्य स्राह्म स्राह्म

## प्राकृत वाक्योः

र्षं वच्छाजं पञ्जाणि केच्छं। सम्दे साहुणा समासे तत्तार्षं सोधिकस्सानो ।

अया सामा जन्ताय गव्छित् तो वच्छो दुक्किया य रो-विक्रीकृति ।

मन्दे किर सक्वं योच्छि-स्थामो ।

सम्बन्धाः । सम्बन्ध्यः सन्ति सिवं गविक्रहिरे।

दे चुचुंज्यं निकास नहिंद्र निरिम्स मोदं बच्छा तह सेचुंजीय नर्ज्यं च्छा तहा पच्छा य तित्त्यपरायं पडि मामो बम्म्येय पुरस्ति ब चर्चकहिंगि, निरियो य माहं यं सोध्येमि पाना ब

च सहतं करिकां। तर मसीगर्वको नरिको कि सासु परिमाणं इणतो ता जिरप तेव निवडन्तो।

कामार के किएकिमि शीविशं

सी व्यापारंग मणेज्ञा हा गीमत्यो होन्तो ।

बर दे सर्चु निगिन्दन्ती ठया परिसंदुदं बहुणा कि इदमायो ।

बह सम्मन्स फर्क हसिन्न तथा परकोगे सुद्देश्वरणाः साहस्थितायां स्टब्स्स्टं स्टब्स्

साहमिमार्थं परद्यक्तं स्ट कुरुत्र चित्रीयरागस्य आगा। तिसका देयी देवाजंदा प माहबी पहुष्ये महादीरस्म माकमो आखि! सिरिबद्धमाणस्य पिया स्टिब

त्था नरिंदा होत्था । पुष्तको अवस्तरस्य गावी योजी अञ्चलो य वर्षन विक्ती अ-वरको य योक्तो आर येथा वा र

सक्तमीई रह संसारे मी-सार्थ कन्त्यं सरजं माना विमा माठजो सुन्या यूमा म नदयन्ति एक्की यह सम्मो सर्ग्य । वो बाहिर पासेह सो मुद्दा माथा पूथाणं पुत्तानं व बद्द भने अपरा भवो पासेद सो पंडियो मेको । के नरा मनुष्मापसे न बहुम्ते विक्यो समा विक्रिक सि ते दुद्दिणों इसस्ति । सद्दमाऊर य ससामाङ भाषयासु के सहेरडा प्रति है सिमादद कडेदा च्या भारती । नमंदा भावस्य बायाथ सि ग्रभाय साम्राप य पदप्परे चित्रसद् । सर्वेच नेक्षी मरिय । युमा सामरे पिश्वरं च सासूर्ण भागावका सहब विमा सिहेसर। इस्ति 1 रामस्म बाह्यदेवस्म य पिश्र बद्दमासगए य पिठकाय रिस्म साऊसंब परा असी सायरेषि व समावि व सरिधा। सब सिब्रगिरिन्स बचाप सास् बामाऊणं पश्चियाप #193#1 ) पाइड दाहिन्ति । दायारार्क सरक्षे कन्यो निवो ना नारी भचार्यस्म पडस्सेड पद्ममो होल्या । सासुद्र न पानेदा रामस्य माया नियस **चनकेज रावणस्य सी**से कुश्रवाधियामं मचदो देव किसीम । केंद्रा । सतेश्च बायते सूरो सहस्सेश्च य पेडियो । क्ता सवसहस्सेम्र, वाया बावति वा न वा 🛚 इतियाणं जय सुरो धन्मं अरति पंडिमो ।

वक्ता सच्चवनो हो। वाबा भूवहिए रभी 1

1 WE

बहुने तक्तर उपर गर्था स्थेद छ को रूपे हैरवाई गोजन काथ होत हा ह सूम्य पामत गरीजोने प्रक्रमस बोहा ज हार को हो। जिल्लामा परिवा शोसक्रमा होत तो धर्म धानन विचालामा क्रेयन क्या पच

उलक्तु नवी अभिन्नम् बीक्यो होता तो चौर कुन्या काळको उपर पत्र माह्यानी मोटी क्यी संख्यो जीवी हैत. चलांज मनेपुराव छ भारत सल्लानं अभा क्षात्र को सा। वर्ष प्रसन्

जेम ब्हेरामी भाषक शक्त सम्पर्ध **छ एम शुर्चे पुरुपनी क्षानक्र** का दमा द समय बंधनमाकी लकाती काम क्याची के ब्रोक्ट तरे हु सस्य कहेता. विवने दिवसं चया धार्मीका भएन

नक्ष परबोमा स्थाय क्यों होत राम छ ता पच रक्ताचीओ अभी भग्वामा शबी एम माम द्यो द मृत्यु प्रामश्च वही क तथी बीजे हा स्टब्स्ट हाम है बालनार पानेची क्ले तस्त्रीते इत नेतन्य

विधिनिक्य तम वपस्पा सारा शक्षणो नीमां अने क्या (के) **इ रामस्यानी नगरो लौत को** त राजा गर्रेश सहार काने केवने व्यापीधा त वेशवामां आन्तरन वया व मारा समे दिखनी साथे विश्वस्थानी क्षात का पर्मेंगी बरित बटा

कांच को नेत्ववरण गरीत नहि

**बर्गक्त मार्च रात्रे रीका सीबी** भूर्व यत्र चीमे भीम उत्पन **अप्रै** मोश सं≇मो. करवाकी होतिकार बाब हे.

#### वार १९ मा

#### कर्मिक इय अमे आवे दप

१ मध्यम् क्रमानि के साथि रूप करता बहात हुँका (ईम.) के इक्का प्रत्यत स्थातन के अस्त्रे ए तियार बदेश शंधने पालवा पुत्रा शोवक प्रत्यको क्रमावता.

सरिप्पण्डाक विकासियरार्वे वर्गरेशं काली सन जाने वर्गरे कारि जेलो स बाल के

#### <del>कर्मकि-</del>माचे-बंध

इस इंगन्डसीय कोर्सम काईम इत्। इत इतिका क्रां-हरण=क्रोप्रस्थ पद+डैम=पदीक्ष है-दिश-नेर्देश पर्भारत परित्र हे-भारत -नेपास बोस्स र्श्वय जोस्की व हाशिय हाईस वास्त्रभारत वोदिकात ठाभश्यम शाहरत कंप-श्रेम-क्पीश शाशीय-कार्रेय कंप+इन्ड कंपिन्ड शाः । देशमः = शाहरूत देवता श्रीमान्दे उन्हीं यः जारर्शय-ब्याप्टर देशका १ रजा व देशिया उस TRICKING WEILTH

 जी महा सम्बंधि होने को स्थिति अपीन साथ करें अपर्यात (म्प्रेरिति) होने हो स्थितमध्य शाम छ. (कारा पार्टि, दमा पेट्र, होनुं, बानुं गर्थां, जीर्थ गर्नुं, सप्तं पार्ट्यं, पार्यं

था प्रमाणे क्षेत्र तैशह करी पुरुषशेषक प्रस्का सम्बद्धमानी क्रीके से साथ बता बाद के

> पद्मीम पहिल्ड (पद्म) मां रूपो वर्तेस्यवकात्तः

ঘৰুৱাৰ **पहुच**+

प पु पढीमांगि. पदीभागि. पश्चिमक्रम

पद्मीसमी-सुन पश्चीमामो-मु-म पढीइमी-मू-म पश्चित्रज्ञमो-मु-म पश्चित्रज्ञामा-मु-म्

परिज्ञानि

पश्चित्रिज्ञमो-मु-म ची पुपदोमसि पदीशसे पत्रीकरचा पत्रीशह. धवित्रिक्ता प्रवित्रक्ष

परिकासि प्रतिकासे मी पुपडीमह पत्नीमप, पत्नीमस्ति⊸ले पत्नीहरे, पंडिनका पंडिनकप

पक्षित्रज्ञास्ति-स्ते पदिनिज्ञरे

पर्मेरिजनीतमा पर्टा जीवी विभक्तिमां शुक्रम छ सन पर प्रथमा विभक्तिमां आवं अ शमा कर्मने आयारै विकास सूचान इ बैमके--क्रीर-क्रमारी सबै कुणा, क्रीयमा कुमारेज सबो कुणी सह (केनल यह वजी करान है). रासी जिले श्राप्तींद्र शासेल जिला मखिउर्जिति (राम नहे जिनेपरो प्रांच छे) अने नार्वप्रवीतमां कर्जा त्रीजी निमक्तिमां आहे छ अने कर्म होतुं अही तही किस्तर त्रीमा पुरुष एकप्रकारो सूत्राच 🕸 अगरे----

बासी मनगद-बांधेण मन्मिनमद् (गळकरव जनाव है) ग्रम्का र्याति-वच्छेडिँ रमित्रतः (शतकावडे स्माप छ)

पुरवधणक प्रश्नोती गहेनो का या या वाव त्यारे. पहीप्य पित्रज्ञेद पहीप्पिन पृष्टीधन्ते पहीप्यते पित्रज्ञेन्ति पित्रज्ञस्य पित्रज्ञेद्देः स्थापि स्था पत्र वाव स्थारे. ज्ञा प्रश्ना प्रस्ता स्थाने स्थारे.

र्माग्यः । पूर्वाप्यमः पृष्ठीप्यमाः मसुग्यः। । पश्चित्रक्षेत्रमः पश्चित्रक्रमः

द्यम्बर भूत

महाका । अपूर्वामह्य प्रशासका सार्था । परिवर्शन

ग्दर्पमा

संस्थान रेपडीहरूचा पविशिक्तरता नर्नपुर ∫पडीहरूचु पविशिक्तसु प्रोक्तरूच रे

परोक्कन्"- } कर्नरि प्रमाय- प्रश्नीक बाब छ. संस्थानभूतमा (

विभि-भाषाय

पण्डवसम् बहुबसम्

प पु पद्मीमनु-मानु-स्मृ-पम् पद्मीसमो-मानो-सनो-पने पदिस्त्रमु-स्मानु-स्मिनु पदिस्त्रमो-स्मानो स्मिनो-

रतेमु स्टेमो बी-प परीमक्रि-पत्ति परीमक परीमक

त्रहारकसी-तम्बद्धाः त्रहारकसी-तम्बद्धाः त्रहामसी-तम्बद्धाः

पडाइरजाइ-पड्याह पडीइरुके व्यव पडीस

गरकानान्त्राम्य पर्यक्षणं एवो कर्तस्थित् हवोन करेड समी.

<sup>×</sup> वरिक्रिक-१. वि. ६

पहिरमदि-नमेहि पहिरमेह पहिरमसु-नमेसु पहिरममसु-नमेसु पहिरममस्-नमेसम् पहिरममस्-नमेसमे

पहिन्त्र

पदीरुक्षिः पदीप्रकासः पदीर्क्षाः

पदीरुक्षिः पदीप्रकासः पदीर्क्षाः

पदीरुक्षाः पदीप्रकासः पदिन्त्रकासः

पदीरुक्षाः पदीप्रकासः पदिन्त्रकासः

पहिरकाहि मी पु पत्रीमत पहीपत पहीमान्तु पहीपानु पहिज्ञात पहिरक्षेत्र पहिरक्षानु पहिरक्षानु होते । पहोपात्र-जा पहीपात्रह पहीपारकाह मेड 5 पहिरक्षान्त्र-जा पहिरक्षान्त्र पहिरक्षान्त्रहार

स्त्रे ु पहित्रज्ञज्ञल-त्रज्ञा पहित्रज्ञज्ञलः पहित्र स्रविष्यकासः भी∘ पु∘े पदिक्षितः पहिष्यः पहिल्याः प ु पविक्रियः स्वेतिष्यः, पहिष्यसः

का प्रसाप नई क्यो क्रीड प्रसाय जाका के पू १ हा ताम × बहुमारा वटित्या तवा क्याईमां ईस-वज्जों मो प्रवाय धनिरवयक्र

म चुमाता चित्रका तथा कार्यमा स्थिता स्थानकार्य में माया प्रस्तिकार स्थान क्ष्म तथी पर्वमानित्य, परिवास, परिवास,

बहुब• पश्चा-वक्तीयो प्रकरताई

एक्ष्म•		
पहल्तो.		
राज्ञानी		

वरोरे कर्तरि प्रमाले

र्श्वद } पडेरक पडेरका सर्वत

हो-होईच प्राप्तक

**अने**मातकाळ

भी पुष होईजह होईच्छ होरज्जर हारज्जेर ए प्रमाणि वर्ते क्यों क्या निर्वात

वर्ष व १ होर्गुणस्याः, होर्गुणस्याः सर्वे प्र विकासितस्य होर्गुस्ताः तर्व व ) कोईकासी, कोईकाडी डोईमडीम तर्व 3 } कोइकासी डोइकाडी, डोइकाडीम

-

शोकित्या होतिस

पर्राथम् सर्वेषु विसी दोवी दांदीय

क्षोत्रजिल्या क्षोत्रज्ञिस

अर्थमां--होस्थाः, हविद्यः पर्तरि प्रमान × बहुमादान्ये पश्चित्रते, पश्चित्रते पूर्वाएय-व्य रहिन्द्रोग्य-व्य क्रोरे प्रयोगी केवाल का परिस्तिक. १ कि. ४ परि २ मि ६

#### 198

### विधि-मावार्य

भी पु ए होईबात होईयत होएम्बन होएम्बेट गोर्ट र्ध पु विश्वका विश्वका विश्वका विश्वका र्थ व विश्वका, विश्वकार द्वित्रकार, विश्वकार

#### यकियकातः.

मी पु प. श्रोडिश होहिए, श्रव्यवि वर्तर मनान

## क्रियातिपश्चि

यक्त जान वं +दोन्तो हुन्तो को दोन्ती हुन्ती

नंत्रं क्रोलं क्रमंत

बहुबचन

क्षेत्र्या हुण्ता क्षेत्र्यामी क्ष्म्यीमी दोण्याद हुन्ताई

बगरे कर्तिर प्रवाणि.

र्क्षर } क्षात्रस−ज्जा सर्वेष्ठ } क्रुज्ज−ज्जा

श्रमीचे न मार्चमां ज वपरान्य चातुमा---

कर्तरि कर्मिक

र्गात (शर्स) हैराज़्र् पास

पुरुष (गय) मामर् वय

erfefte etigler, gielbuffe eberaler ebielern-मा हेर्नेप्रियत-मा हाइविवहित्रम-प्रमा होदरविदित्रम-प्रमा हुन्सहि प्रकोधो एक यहभारावनिकामी वंबान से + बहुमानामां-होईसम्तं होदबन्दं होईएउव-मा हाद्रज्येत्रक-उता

सरोरे प्रचीनो रेफान स

बिष्	भिन्म भिन्म	(चि) एवई कर्नु	
त्रियु	विश्व	(মি) কাতনু	
सुज्	गुण	(w) 전체 <b>제</b>	
इष	Lat	(हु) होम करवी	
पुष्	<b>R</b> 44	(म्पु) स्तुति करकी.	
सुष्	Bet	(न) चारण	
3ुप्	dest	(ए) पनिष करवुं	
युष	Fail	(म्) इपार्स्, कंगलपु	
इच्	<b>इ</b> स्स	(६२) हर्ण्यु, बाह्य कर्त्युः.	
सर्	व्यम	(दर्) कारन	
दुव	रूपम	(प्रम्) शोदा	
स्त्रिक्	मित्रम	(क्रिष्) चात्रचुं	
वह	मुख्य	(बहुः) सहन अस्तु	
स्य		(बर्ग) रोक्ना	
<b>ब</b> र्ग	ब उस	(रङ् ) राजधुं यात्रशुं	
वेस्	में बहु	(बक्रा) दासबैर	
	चस्ट्य		
भगु-दंष्	मपुरका	(अनुस्प्) श्रद्धा सस्थी	अञ्चलके दान वर्षे
दव~रंघ	3.16.33	(वयनदर्ग ) सहस्रमार्थ	
गम्	गम्म	(क्यू) अपु	
<b>联</b> 码	(PH	(स्प ) रुग्यु	
मण्	सम्ब	(मण) वाच्य जन्म	
<b>छ</b> व	सूच	(बुप) रपर्व करना	
7.00	AWT .	(Ur) mir.	

र्वन्ध

(क्य ) गोज्यम् (क्य ) नदेम् (सम् ) नाम

कर चंत्र (क) करतु तर तात (त) त्रजु कर तीर (क्) सीर्थ क्यु विदक्ष है निरम्म (अर्त्त) नेता करतु कमानु भरजु है

(ছা) বাঘৰ

सर

44

भेग

ŢŦ

बाप्

वाहर

**RD** 

पान

मुख्य

श्चीर

मञ्ब ∫

बाहिप्य

141

(६) इरन करवुं, क्यें अवुं

(वि+मा+इ) वासम्, बोब्सवम्

भाइक् श्राण्य (ज्ञानरमा) वह कानु, वारंस कान्त चित्रिमस् श्रीय (हिन्दु) त्येद करते चित्र् छिम् (श्रिक्-शिक्त्र) क्षेत्रश्र मिक्त्र्युं गाद-निषद् श्रीय (सङ्ग) श्रीय कानु क्रिय (सङ्ग) श्रीय

	4.24
22	THE .

क्यंति-- विधि-

सम्प्राप्त	भागान		40.000	वर्गव
त्री प. शीस-दीसह				सच्य सर्वपु शीसंती न्सी न्त
				वीसेरज रहा [न्त
अन मुख्य ।	रण्यहः	मण्डीम	मण्जिहिए,	भवजन्तो-न्ती-
				भुव्यस्य सा
मधीबर, ब	मीधंड ३	म्यी गईम	मचिद्धिः	स्थान्य-निर्दाः
मधिक्कर, स	व्यवस्य :	मिक्जाई म	•	ret.
				<b>[</b> €
इष्-इस्सर	(स्सड, इ	स्मीम	श्वस्मिद्धिर	इस्सन्ता न्ही-
				इस्सेक का
इसीधर, इस	रीमड इर	तीर्घाज	इसिहिर	इस्ततो ग्ती वर्ष
इसिन्मर इ	सिन्हा इ	सिक्तां <b>म</b>		इसेरब-ण्या

पुण-पुष्पर पुष्पक पुष्पीत धुष्पिहित धुष्पक्तो-स्री-

भार्यमा बीयली बगरे प्रयोगो एव देखान है.

सुध्येकत-प्रजा-

# प्रणामक, प्रजीवट गुणीवर्षक गुणिक्द, गुणन्ती-सी स्त पुणिन्द्र पुणिन्द्रव गुणिन्द्रश्रेथ

ने नेईमर नेईमर भेईमरी दी दीन ने विद ने न्ती न्ती न्ती नेरम्बर नेरम्बर नेरम्बर्धानी हीम नेरम-न्या ग्रम्बो

मर्ज्या रे को (संबंध्या) यक ममोज्या}े रेतुंनास

मण दि (अय) कोई भिकास पु. (सम्) अवस्य समय

**प्रस्था वि (अ**गव्य) गाम

मापास ९ (अल्प्ल) हार्शने

इणे नर्ने (इसम्)('इस' बब्दर्श

रयर वि (इन्हा) धन्त वीह्रं,

प्रदेश है (अध्यक्ष) तस्त्र वरुपम वर्षे

अवसार ११ (उपचर) उपचर,

ऋपग्य वि (५०००) उरकाले शहि साम्बद्धाः, निमम्बद्धाः

किशत वि (विनत्) केवर्ड-

वांववामी मृद्रो कन्द्रम

प्रमामुं एकद्वन ) मा.

बिन्द

सम्ब क्ये

आरा सेवा.

1,43

केरिसी की. (क्यांग) नेवा

गुंक्रिम न (गुक्ति) गनपनार.

ग्रदम नि (पुरु) गरीव मारा

विश्वयः । न (चित्र) निम्ह विश्वयः ।

डिवादि (स्थित) बसु छोतुः

ताराको (दम) नकन स्प

ब्रैस २ (दन्त्र) वत्र संघर

बोर वि (त्वविर) इस् इस बैन

**बेक्टी क्री** (क्य) वंदी उत्तय क्री

व (इस) दरदामा

धबस्य वि (क्ष्म) बक्स देश,

श्यासु वि (यम) वयमध्ये

दुमार )

ध्येग्ज-ज्जा

प्रश्चरनी.

ग्रद

arg.

पारापी.

चेवं

चुत्त वि (पूर्व) अप, कारतार.

निस्सक में (किर्मण) श्ययम-

महर्ग्य ह. (नगणक) बाबाध रक.

श्रीमेष ५ (म<del>िल्ल</del>म्) रमन्

अरहे, अरहे गरहा<sub>-</sub>

कर्मा क्षेत्रा (क्षम्यः). रते की (का),

रडहे है है (ति) शहर मेर्स-कोक है

बस्ता र (अस्य) क्य रूप

बिड्स ५ (बिस्) दिस्त्.

समुद्री कालों (बस्या)-

दक्ता पु. न. (इस) शाप

राह्य 🛚 (क्षम) राह्य मर

विविद्य (विवि) प्रचार मनीय न(यसमा पु. (स्वाचनार्व) बीति-शीसत्य नि (मित्तल) रिपार यमारा ५ (प्रकोग) धनाथ साधव सम्झाय इ (स्तान्यन) धान पहल बाड्रीन करके पश्चमक नि (अनव) शासनः चर्चा } (धरा) प्रमेशम स्ट्रा. सर्वेदर िमान. रबाँत कुर्यु, मार्च अस्थित **लक्स**े परिमाकी (पर्वत्) सभा सम्मोगस्य प ३ (क्यांति लको भारतक साञ्चर्माका क्रमण<del>व</del> परिसर ५ (हम) बनीप लहा को (समा) नमा-स्ट्र<sup>ड</sup> } नि (त्रत) कन्यता कर सञ्ज } नत त्रजी सम्बद्ध सीयह दि (रोन्न) होत स র্তমন্ত হা बहुम्द्र व. चल्यात्र सुख सुराहि वि (पुर्णि) पुन्ति सुचग ५. (मुत्रव) 🖦 बाह्र म ड्राक्ट् स्टब्स् २ स्थित सील. सीम सुभा ५ (छव) इन मसाण } व (भ्रवत) अवह. सुसाम } स्त्रणान्हीं मारक इ. सम्बन्ते एका काबु सम्बद्धां डेल्युच्य च्यांकन होता हो पर्वाच पूर्ण को स्पेत िक्यों बाद सं. केरहे-महो मती, (स्पः)-

## मामासिक ग्रन्थो

**भेन्तुग्रहच (क्षम्बा**ग्यम्प) पर सच्छयद्वनाइ (सम्मापनारि) स्पर स्त्रव्यवा-पंत्रिययमा (क्षेत्रकाव) क्षेत्र ब्दरा नमुदान

जोपजपरिमद्दाः (बाल्यःध्यः न) मोद्याचार नाइन प्रयाप

नयस्ट्रस्य (अवगरध) ह्यार aft fa सिद्यगुष्प (व्रयगुत्र) नावशता गुरा

महिलामण (मरिशमन्त्र) स्त्रा-भाग श्ल धच्ययं

केवार (हेमनिष्) वर्धारहे. ज्ञदरमन्ति (त्रशाग ३९) शक्ति सप्प्रधी (नः ) नर्शनक

समना (नाज्या) नारे बाउ বাসুদা श्रम् प्रकृ (धान्यत्) अवहा कारी अस्तर वान

श्रम संब (भारता ) जावा ≽1. उद-वर् (उत्तर राक्त करे ब्बद्ध (६४) देश्यू

माडीयाम गारे विविद्यक्तिः (निविधवनिय) नध्य नध्यमं वरियाः समिरवि (पंटारि) राप्र व

सिद्दरपर्रपरा (शियसमा) शिक्तानी शरपरा स्ववदुरज्ञविद्यस (१३३३-दुअर्रीग्रह) संप्रत दु कते मेर

रहक्तई (मध्या) प्रका दू } (य ) समा । । ॥ व्यु } समाना सिम्हण ल शब्दां सम्बद्ध ए

पादम ( १४म् । दूख विमाल

इम् (स्त्) मिक्र करा १८४ यो-प भाग्न (० प्र ग्रा) इन्ह

and light and KE (Link) and mend

माकृत वास्यो

के माना पुष्यको दीसीय से मदरको न दीसन्ति। सद पदणस्य रहदेशि गैवि पद्धि मक्ता न केपिज्यह तह बसार्च सरम्मेहिँ वय गेडिसम्बद्धार्थं विकारं न क्रवीहरे । धमोब सुदाबि समान्ति पावारं व नस्पति । समजाबासपदि चेर्णसु जि शंदार्ग पश्चिमाओ अधिराती-**22** 1 विडसाण परिसाय मुस्क्येडि मडचं मेवीमड सम्बद्ध स् क्कालि गरिवक्रिमित । देवेदि सीयसेच सहकासेव सरविका मार्यक बायक वेसाओं धर्ण बिय गिग्हन्ति परिमेडका मुमी शक्तको समना सपमवित्रकता । न हू चणेज तामो घिप्यन्ति।

व्यक्तिचा भवरं श्रम्हीम । गुद्धनं अचीय सम्यानं तचारं चित्राति । बज्ज वि बज्जनाय परिसरे उच्चेस दक्केस हिपदि क जेडि निम्मके नहुपक्ते धवसा सिहरपरंपच तस्य गिरिको रीसर । गुक्रवमुक्यसेच संसारोधीयः। सहे! का तुमं देवि स्व रीमसि । सदा केरिसी दुव्यपः। कल्य बेरा अस्पि सा सदा। कविस्तिम सहाक मेही वरि सेर कासे न वरिसेन्ड, श्रमाङ्क पूरुक्रमितः साहबो न प्रसिद्धे ।

निकार १९ जओ,

द्वार गुरुवाणं गवर्षं कर्मणं सोपस्मि भ उथ इचरावं । बं समिरविजो पैर्धित राष्ट्रणा व उन नारामी **॥१॥** अध्यक्ता नि मेप्पद सर्वं पत्रको भूषताय कैयद सदज। महिमामणा न बेप्पर बहुपहि नयसहस्सेदि हथा पुराकृति द्याल् अर्थो न इ सम्बद्धवहगाई ।

का करम परच संबंधा का गाया केवचा च को करम । कीरति सक्तमेदि जीपा अन्तुस्नक्रवेदि ॥१॥ गन्यस्य दश्यरिकाह व पाइसिकाह परस्य दश्यारा । विद्मा भवमवित्रका उपयमो यम थिउमाण हरह रिक्नो न धामसिञ्जह क्या वि विचित्रक न बीमाधी । म क्रवर्गेटि इपिन्तर क्यो माथस्य मीसेंत्रो ह ह बन्तिरहर विच्वयुका व व बन्तिरहर समझा प्रध्यक्त । पुनेदि न बेबिन्तर दिशिन्तर तथ पुरर्याए 🗠 । गवराती बाज्यो

महिलामा मानवा वि ६ व वस्तर जब माहर्च ॥६॥ वीपरवार रमित्रहा देविवयमा दमित्रहा स्वाहि । मर्च्य पेर यवित्रका ध्रम्यस्य रहण्यमिणमेष 13% बीसह विविद्यारिक आवित्रह शुववद्ग्रहविसेसा ।

तुं राजुषके औरश्यो. राम वर्मवदे रक्षणा जो हुमेन पर्मा संस्काल वान असाल प्रीत वान्य वसाल सुदक्षों दश्याद, विभिन्दके जिले साली प्रीत्मामा प्रकाल कर्म

क्तांना बहु कराव हो सा

लंगार वराम बोडो पर उरामा केंग्रस कें परधेषमां तुम्मी बराम उरामग्र दिगानी कामा मनाई उपम गुरुवारोडे के वर्ष वर्ष काम कु क्या न अपर वर्ष पामे कु

#### पाठ २०मा **इन्**ट

भ राष्ट्रमा अनने 'का' कं 'श्री अस्यत समाजाता वर्धनिन्द्र' इत्ता काण ए सा अस्यत व अध्या बहेगां 'का' वा 'हां यान देवड का क्षाण क्षित्र वाच ए लगे लग्ने लाग्यि क्युद्धेय ता क्षाणिकाराणी वाच ए पुंजी

पुं स्था नपुं निष्य प्रतिका क्षेत्र निष्य प्रतिका क्षेत्र प्रतिका प्र

झा+झ हाक्षं-हानं (श्वाच्) जाव ध्योदेरं इस मञ्डलिक-इसितं (१९७५) (लापुं-झाक+सञ्झाहके-हाहतुं-(चाच्यू) जाव ध्योदे}- \$83

रमत्र संरक्षत कुपन्त चपरबी प्राक्षत निकालसार प्रत्यास बड़ी पत्र इप्पतो तैवार वाथ छ. संग्रह--उक्किट्ट (उक्क्ष्यम् क्षेत्रः । प्**रुप्त (** ध्वत्यम् ) प्रतिपा<del>र ।</del>

कई रे (इम्स्) करेई **44** } गय ( तन्त्र्) तत्रबु

चर्च (शक्तम्) श्याग करावर्षुः विद्व (१९४म्) बायमु-

भन्यं ( रस्त) बास पानंत्रे पडेसु. नियं (न॰म्) नमेश नम

निष्युको (निर्वृतः) साम्य यदनोः

सुष+र सुषिउ सुषेठ

सुज+त सुजित सुजतु

सुण+रुप>सुविश्वप, सुनेशय.

(धानुम्) शांमक्याचे.

मिई (सप्टम्) मधुर साफ न्यका संबुध (प्राप्त ) शक्ते, संगध्ने सिक्क (सूच्या माग नग्रमन्

सर्व (अपम्) मामबन्द

इये (दम्प) दगावन क्रिय (१९५५) इत्य क्रावहे-बद्ध (च्या) व्यंत्र श्वर्तः श्रावर्षे शहन

भेलुप्रोमा संगम र्ड-सु प्रस्तवा अध्यवसर्वा शलव हुरस्य भाव हे. मा प्रत्यव सन्तक्रमाची पूर्वे किया होना हो किया हि काँच पान हें तमज मेथमा क्लिय ने क्लि अन्यव पन बाग छ. उसा ---

करेश परेक

40% Vic

इस+दे इसिड इसेदे इसभ्तंब्हिमतुं इसेतृ

इस+चय इसिचय, इसेचय इमानुं इसिन्नं इसेन् (६म्लुम्) इस्थाने

(भानुष्) व्यान क्रासी

समि+चप-शार्चप, सम्बद् श्रामभ्तुं बाह्तुं शायनुं शा भई-साई का ते शत

सुण। सुंब्यु जिस् सुनेर्गु शाम-प्रजाहरे शापड सामन्त्रन्द्रारते, शाप्ते

चव बार्ट वयर्ड वार्क्स, वारत्य, वार्तु वार्तु (स्वन्त्र) स्थान कार्यः स्थान कार्यः का

## रपयोगी\_जनियमित देख्य हरूतो

वेजुं (ब्वंड्स्) व्यन काले बोर्चुं (स्वंद्र्स्) वारमाते. रोर्चुं (स्वंद्र्स्) वारमाते. बोर्चुं (स्वंद्र्स्) वारमाते. बोर्चुं (सेव्ह्स्) वारमाते. बोर्चुं (सेव्ह्स्) वारमाते

### सेक्टबक भूतक्कर्म्य

र कहाना संस्था हुं वे का शून, काल, हुआ का उपाण जनका स्थापानी संजनक प्रमुखनक वान के का प्राथमों का प्राप्त पूर्वना का ना भू के भूग बात के अने कार्यमां ता सामी सु सर्व दूध प्रमुख एक कार के

बस-स्-विस्तु, इसेत् इस-उन्वसित्र इसेव इस-अ इसिम इसेव इस-द्यान्त्रसित्व बसेत्वः इस-अन-इसिद्या इसेऊव इस-भुमाण-इसित्याव इसेनुमाण

इस उमाण इक्षिडमाण इसेडमाण इस-मा इसिका इसेमा इस-मार्ग इसिकानं,इसेकार्ग हर्मश्यम्बस्यियं (हरिला) हर्गन्नः हरावश्रमुंश्वासम् हरायम् हरावश्रमुंश्वासम् हरायम् हरावश्यमञ्जाहमः हरायम् हरावश्यमञ्जाहमः हरायम् हरावश्यमञ्जाहम्मायम् हरावश्यमञ्जामः हरायम्

ज्ञाचतुभाव

इस-मृन्दसिम् इसेन्

धापत्तार्ण

मार्व प्रमाण श्राम+तु शास्तु शापतु साम+त्ता-हाइता हाएवा **झाम**+इय**=**झाइय भाष+सार्थ=शहसार्थ

साम+**उमाज≈सा**ग्रसाज

(ग्यला) भान करीने हा रातुं प्रार ग्राम श्वात्व शाउव शातुमान शारमाण. **इशह्य ( श**रगः) भ्यान वरीम

मनियमित सवयद भूतक्रश्ला

भेत्रण **येजु**माख (यूक्तिस) यन्त्व र्गनुभाष (का) यन प्राण ऋगीये

उद्वाय उद्वाय (उरनार) कठीले. वोत्त्व, बोनुभाव (उत्तरा) रहीने श**ब्दा<sup>31</sup> (**गया माने रोच्य रोच्याम (इहिसा)गेश्म व्य**ञ्चा** (ज्ञाया) कर्म्यने

मोच्य मोचुमाय (सुक्ता) TOTAL. बुज्जा (बुद्धा) शच पामीन मोत्त्व मातुकाण सन्दर्भा ) मोण्या (मुसरा) यक्षते सर्वभेने भोरका (नुस्ता) मुद्रीने. पेर्ट्य इट्डुशाम(रम्या)प्रोक्त संच्या (सरा) निपारीन

कांक्रण ) कांक्रमाण (इत्था) कर्दु ) करीने वंत्रिका (वित्ता) सर्धने, सुच्या-सोच्या (ध्रुषा) वागबीन. श्रुत्ता (सुष्या) श्रुप

साइट्ड (महरू) गर्मान संगर्भने

मा शर्मक मृत्रहरूका प्रदर्श नवेगी व वा तन अनु सार प्रशित रच प्रचेय बाब हा. क्रेम--

< । सन्दर्भ अंदर स्वासी कथा क्या का हाती उन्न सने च्या नो एका प्रकारन अनुनारे वाय क

विकास (इसा) विकास (कारणी) विकास (कारणा) कारणा (कारणा)

त्यं क्रकं तुआवं बनाव-इद्धित्वं इसिक्कं इसित् माज इसिडमाम गोरे

#### वर्तमान कवन्त

बातुत्रोतु वर्तमान क्रास्त कार्य होन तो तैवार बनभा मातुनांना कर्ति( बेताने क्ल-मार्क्य प्रत्यको पुर्विका सने कर्पुनकर्किः)मा रते हे का द्वीरिया ई-स्टी-सा-प्राची-पाना प्रस्को स्याजन के का अस्त्रा क्यारती पूर्वे का दोष ठा का ती 'प' विजये शाव **हे जै**स —

इसम्ब इमन्त्रो इसेन्सो (सन्-इतमनः) इस्ती ६सन्तः इसन्ता इसन्ता इस+माजन्द्रसमाया इसेमाको

इसर्ग्य इसेन्तं } इसमाय इसेमार्चः } (इन्स्-इममनम्) इस्यू

म्पी॰

इसभा इसर्ग इसेर्ग इस न्द्री इसन्त्री इसन्त्रो इस+स्टा=इसन्टा इसेन्टा इस माणी-इसमाणी इसेमाणी इस+माबा-इसमाबा इसेमावा |

नपुरु हाभ होमलो डोमर्ल

स्री होयाँ होर्ग होबसी होण्ली

होपर्ग्त .. होनमाची

होत्रम्ता, होपन्ता होसमाची होपमाची

.. होपमाणी

शोगमार्थ होपञार्क

होअशाचा होपमानाः

यो-योग्तो । श्रोप्त श्रोंक n **इन्दो** इन्तं होन्ती इन्ती होन्ता इन्ता - होमाजो होमार्थ होमाणी होमाणा (भरन्-मनमान-) (यक्त्-मनमानम्) (भवन्ती-भवमाना) बस्ते चर्त melt कर्मणि वर्तमान कवन्त <sup>५</sup> मानुद्र कर्मिन वर्तमान क्राप्त करन्त होच तो वातुना कमि अंत्रते न्य व प्रत्यका तम्पादवाची चर्माचे वर्तमान क्रम्पन वास क्र स्री o इसिन्छ-इसिन्छन्टो इसिन्छन्ट इसिन्छई इसिन्छई इसिन्डेन्टो इसिन्डेन्टं इसिन्डन्टी इसिन्डेन्टी इसिज्जमाणी इसिज्जमार्थ इसिज्जम्या इसिज्जेन्सा इसिन्डेमाणो इसिन्डोमाणं इसिन्डमाणी **इसिस्ट्रेसा**णी हसिरहसापा इसिश्डेमाणा इसीय-मसीबन्ही हसीसस्त इसीमई इसीपई **इ**सीफशो हमीचलं हमीधली इसीयली **इ**सीयमाणी इसीवमाणं इसीवन्ता इसीयन्ता **अ**स्रीचमाओ श्रमीक्मा<del>र्</del>ग हसीममाणी **इ**सीपमाणी द्रशीवसाधा

(स्थ्यान ) स्थाना

हसीवमाणा

(रस्थानम्) रचार्तुः (इस्थानम्) रचार्त्

<b>Z</b> •	मर्पु≎	रुपि॰
बी <del>स-बीसन्</del> यो	वीसम्तं	<b>पीर्सा पीरोर्ग</b>
र्वासेन्यो	<b>रीसे</b> र्ग्त	बीसन्ती बीसेन्ती
		शीसन्ता शीसेन्ता
र्शसमाप्यो	<b>बीसमार्ण</b>	बीसमाणी बीसेमाणी
रीसेमाणा	वीसेमाणं	पीछमाचा बीहीमाणा
(हरक्सानः) वेकान्त्रे	(बस्तामार्ग ) हेर	वार्युः (हस्त्रमाना) देखार्थः
	मधिष्य 🕏	व्यक
६ माठ्ये <sup>(</sup> हस्स्य <sup>०</sup> प्र	त्स्व नवाडी वर्तुः	त्व पूर्वस्ता प्रत्येश सम्बद्धाः
मनिम्न क्षत्ररत व	7F 16-	
विष+इस्त्र-विविद्य विविद्य	भूको } (क्रेन मामो } वि	ग्−केष्यमावः) सर्वो इसे.
जिथिसानी )	नपुं• (वेन्स-४क्सा	<b>4</b> 44 )

284

क्रिणिस्<u>य</u>मार्च मिल्य एवं

स्मी॰ विणिस्सर्वे विणिस्सर्वा विश्विस्स्याची १ (कंप्स्य-वेज्याण) विणिस्सन्ता विभिन्समाणा १ किली एके विष्यर्थ इतन्त

मनुता भोग्ने शस्य अस्य असीम (शशीय) को मणिज्य प्रत्यमा शामाणाणी विश्वमें पर्मान हरणा बाल छ छन्। तस्य

भनं सब्द्रां अन्तर समान्या पूर्वे बर्गहाय हा आर्थता दूरी के

प क्ष ६ जिल्ल अकृत व्यवसारमा तकार श्रद्रमध्ये क्रोचक आसंतु है हैं निवादम स्थानी कांग्रि भूगहरूना बादि क्षरुको बोर्च केरां.

बोह-बोहिसको, बोहेसको बोहणीओ, ) (बारकार-धावनीयम् ) बोहितका बोहेसका बोहणिका ) अलगा अवत्र हे

शाम-सार्मकं, सायमकं शामणीयं, रे माम-मारतको सायतको सामजिज्ञा (कालका्-कालिम्) सान्धामनं साथीय शान्सातयं सावित्रवं

# शतिपतित विश्वर्थ रुद्धो

भोराजे (शेषम्प्यू ) शेरहरा कायम् (क्नुन्त्रम् ) कता शक्क. सामक सारा शर्मक बेत्तक्यं (ध्योग्क्यम्) प्रदय कावा

मोचर्चा (मोचन्यम् ) मुख्या सम्बद् रोक्स्क (रोहिक्स्स ) राग सम्ब न्द्रस्यं (इक्टम् ) बच्चवा कावक ब्रेसर्क (इसस्या ) इत्तराधानक. जोबा नारमः

मुख बादुक्षान इस्' अन्त्रत्व काशकार्या वर्तुसूचा इसला

रोषिएः ? (श्रमधीन) दरम श्रायिरो श्रमारीः बमन्त्रसिरो (स्थ्याः) होबिटे बन्नर्यच्य ) इस्न क्रमाई. इमिरा } (रणवां न १०००) इसिरा }

मम् ममिरा (अस्पर्धाः ) मतनारो. इसिरं (इगनडीच्या) इधनाई-ममिरा } (श्रमक्पीका) सम-भमिरी नारी रोष रोधिरो (श्वक्यी ) स्वत

समिर्ग (प्रमन्दीच्य ) नस्यद र अर्थ अधितराज्यातम्ब प्रस्पिरोज्याधारः वेदिरोज

कामार कमिरोज्यम गडिवरोज्धर्वेष्ट. वगरे वर्ग केन.

कर्मसूचक कृश्यों शिद्ध संस्था उपत्थी वस वास है.

(पाचवः) पद्मानगरः

बायगो ) (रायवः) अत्रकार,

पापमो रे

किरिका (रिका:

खोह्नवारो ( (बोह्नवरः) हरू-

स्रोहारो ।

कक्षा (क्सी) कामाध

वायमो ( शक्ता रे (मर्वा) गोषन करवार-ब्रापगो } (राचक) समग्रह मद्दा 🤇 ज्ञापको ( शहा (क्या) बगर र्द्धममारो ( (क्रम्बर ) ईशह सुबन्जभारो (प्रकार) सुबन्जभारो (प्रकार) क्रमारा ह मा **१**वन्तोमी हेल्ल्सं इन्तन्त का शेमनक भूगदर<sup>ानी</sup> रकान छन्। सम्बद्ध को बीदा प्रकारण विदेशन छन्हि rent t केडब्रांपक उपयोगी अनियमित कर्मनि मृतक्वायो ग्रुको (प्रशः) स्त्रच नयमन **स**प्पुच्चा (सासन्त) द्वादिन वक्किको (सस्यादिनम्) पकी-**बाइलो / (**धारूको सङ माग्या 🕽 कारेद बहार्स उपराम ) भग दिस (न्ट्रम्) वर्ध स्वयंत्र <sup>एउं</sup>च्छिस्टिस्सी (श्विग्यः) वीनु प्रदे (प्रियम्) प्रश्नवेतं सम्पर्ने (पुन ) सर्व क्रावय-लिया (फिल्म्) वर मानग गिसाय (१३१६८) स्वर्ध क्रोस सर्व (स्थाप ) त्यान वर्धवन. होसिमं (भितम् ) गर्ने :-तेरी. ४७ छरानी अन्दर शतुष्यः शतमनो अन्त्वानर **'स**्र होड नो तनी पूर्वे इ' स्थाप है जेस-

> विशिद्धः (विद्यम् ) विश्वेषी-ध्ये (श्वरू.)

103 मिसार्थ (कान्य् ) तुम्पवर्ष **बर्**डो (स्थ्यः) अवका क्रमि विमद्यवर्षु व्यक्ति पामते. माधी तर्ग्य ] मुक्को है (मुच्च ) छोवाय र तर दिग्य (बन्दर्) ब्राम शक्ते त्वाव दगदा रहुई (तुरम् ) कामर्ड-दिश्ये (रम्ब्) अग्रयम् खुक्हों } (एन्) तावी खुकारें रमधी ) रहा | नद्र | रग र्शन्त स्टिक्टा (मण) मधी वदा गार उर्द (पूर्वम् ) देवरा कृत शम र रहेडा है (रापः) काळन विद्रम् (धारेन्य्) वेश करेन निगुद्दो (=िगा<sup>रित</sup> सादेश वासीचा (बन्दिन्तः) उप्तंपन 97153 निमिमें (बारिन्ड्) स्वापन योसहा (त्रिना) (रहत रूपेर. 4175 संदर्भी (एप) सम्ब सक्ती निष्क्रद्वं (प्रदूषम् ) बरार न'दर प्रथे को र श्रुक्ता (युप्त) श्रुत्तरा पेस्ट्रा दि नियुष्ट स्टाटमा सिम्पिर (शिक्ताः) म १ श्रुवा गण्य नचित्रं | निचित्रं | (ध्यम् ) हास्य प्रदर्भ ) (बन्नज्ञ) दवर्र पुर्व (गृथाम्) गर्या बराग्य The (wat ) a de for गुर्द (गरान्) म १ मन शम्ब धरमय द (इन्डर) दिन्छ ध्यमी यो (लग्न) हेटी, see [14]] wides मन्द्रिम रि (अपूर ) श्रामित् द (स्राप्त) स्राप्त

चित्रान्त

माबि

ज्ञान ९ (इन) शक

मायद् नी (मानति) अविध्यक्त

माहोपचाकी (बाबोधना)

विकास प्र (मिक्स) मिक्स सी-

पश्चिमार प्र (प्रतिकार) कान्यी

केकी प्रतिका

वस्तुने राज्यु, रोक्नो

राम क्या

पक्काच्याज नः (प्रता<del>वका</del>न) अन्यक्षिण माते योगा प्रयोगा वैकास्त्र कार्यक परिकास स. (स्रीक्षम) गरीका बरहि पुड़ी (मानि) गामनिक पील परिकास वि. (परिकात) सका सम्मन नि (उत्पत्त) मत बोडा परिच्चत ) ६८ (परिचन) खबाय प्र. (उपान) उपाच स्वाय कराव द परिचत्त 🗐 कायाकी (सन) देश वसु ५ (क्यू) पत्र किन्नरी सी. (छम) व्यक्तरवंत्री पाप्त प्रज्ञ स्. (ग्राम) इन्त्रिकारि क्षमारच्चम (बमासः) समह THE REL पाइक्टब (प्राप्तः) मेर बजार-गम्म ५ (गर्म) गर्धः पीक्सा े नहीं (बीज) पीम चारम रेगि (छम) अमह पीक्रा ∫ चरिम रे पिकसरी हो (जिस्स्की) हर्न वंशक्रमार ५ (सम) मान क पोक्स ) व (ग्रेन) प्रस्तृ काम प्र (काम) प्रकृत पोरिस | बीबस्पेम ५. (शैवलोक) वनिया अहारेबी (धर) पररामी जगह. मुक्तरिय वि (शक्तविन्) श्रद्धिम व (स्वयंत्रिय) मुनिवा चेत्र यात्रवेषः एमणी जी (ठम) मुंदर जी-भववद्य नि (पनन्तः) कानाओ क्रमा हि. (क्रम) सर्वेच पायेली शाणि ने (शामन्) सम्बद्धी SPIE-निशा थी. (मैंघा) निया. बल्धान (क्ला) श्लार्वकीयः

# ₹0§

वयजिश्च हि (स्वर्गाव) निश्म नावस वायम पू. (स्म) वायश	स्तारंश वि (नमत्र) नमत्र. साधिमा है ग्री. (श्रास्त्र) साधिमा है श्री ग्री.					
विषयमाव्यति (विवतन) होतिः वर्ग कृत्यक	सिद्धि भै (सम) माप सुद्द # (सुधः समक्र कम्पा					
मेंबेग पुलम) सरको समय	स्रोग ९ (शोध) संब					
वना गिनि ५ (म्कि) शांक मामध्य	मुचित्रम ५ (मृर्देष-५१२४) मण देव आग्री विद्यापना					
सामामिक छन्त						
<b>मजनपानका</b> (अवस्थाना) सरकारी क्या	जुषहरिया (पुर <sup>48</sup> रण) बधा रिण					
कारमण्य (काशन) वा । वर्गे. कीरम्यामय (नव) आश्वान	निवयकुर्णः अवस्त्रः) चानमः वृद्धः					
भरवय						
ञ् <b>ष-ञ्</b> षं (युक्त्) विश्व रियम याण सामुको						
स्रोतिकान् तम् आना वर्गः साराष् १ न० ६ } देखत् साराष् १ न० ६ } साराष् १ न० ६ } साराष्ट्र १ न० स्थान्ति स्थानिकार्ति स्थानिकारिकारिकारिकारिकारिकारिकारिकारिकारिकार	बाज (१४-००) स्टब कर वृद्धी १४ (क) गुरे सह (कार) भागे जब्द स्टर सह (कार) भागे जब्द सर					

प्राहत वाच्यो

पाणायमञ्चय वि शीवेदि वक रजिन्द्रं व कायम्बं, करणीध च करतंत्र मोत्तर्यः। धम्म कुषमायस्स सङ्ख्य संति राईमा । बेज रमा पुरुषी दिकिक्य बिक्का स्त्रो नरा सूर्व पत्यूर्य परिश्वके वियक्तको हो। पंगा जायह बीजो पंगो मरि क्षम तह बबाखेत । क्यो समझ्खनारे, यगा विकय पादा सिक्ति ॥१॥ कारसञ्जेष बाहरवानी बाया केम घरित्रका नरिय तत्य का वि उदामी।

इंतरवा । 'परस्म पीडा व काशका' पर क्षेत्र स साविक्षं नेतर पश्चिमाय बिज्ञाय कि ?। मक्कर्यादि श्रीपरपामधो पम्मो करेशको ।

सरवे बीचा ही पिट इच्छन्ति

न मरिचय, तमो बीवान

तह्य वस्त्रप्रिक्तं वा नाणी जाणह काई काजम करमं च यरकेट प्रशेष अ क्षेत्र पाविषयं सहमसुद्

नामेणं विस्तनन्त्रः करविश्वं

वा जीवकोपस्मि । तै पावित्रका नियमा पहिमापे नन्यि पयस्य ॥३। क्रमंतीय सोगो वहंडवीय य

बहरूप चिंता ह परिचीमाप दको सुबद्दपिता दुक्कियों निरुधे इसी विष क्रमह समन्यो धव

वंदो सं ल गम्बिया दार। **बं व्य स्वित्रो विस्त**ं र तिस् तेस संक्रिया पुरुषी 🚧 का शकी तीप क्सस प्रत्मी टाइबं । साजा जला सीस च खेडिन

अजसबोसचा विच्या । अस्य कप विश्वसदि ! सो चेन

बजो अञ्चले बामो । ६४

प्रतिया विमिन्दिने स्वाने कोई स्वाने क्षत्रमी निमन्धि पत्र भाग के जिलिए ते। ।

परिष्याय पोठले अपालिकण विक्रिकामसी य पूर्वी गुजे नियपकुर्क, मगणिज्ञण वय म्बहेरस । षार्भ मणासोइऊष सागई सा महादेवी सुराण रमणाहि परिवर्त्त सेण क्यामिहं। सरुद्धिजंती किन्नरीहि गाइ वं त्रिजेट्टि पम्नत्तं तमन सक्वं अंती पुदेहिँ पुग्पेती ६म पुर्श सम्स सणे निक्यर्थ वंज्ञणा मिलेण य ममिनंदि तस्य सत्मर्तः । उज्जेती गय्ममस्पद्धः । चौरो घणियो चल हरिनय बाध्य रमणीण तत रमणिजंब घरे पश्चिमीय । पश्चितकण धार्मरीमा । सउद्र पण्यसे जिल समिय गुरू तीमाव्य चिंता कड वि य विदेशा परमाम्सायं स

य विदेशा पञ्चरकार्थ व करिन्तु पञ्चा आवार्थ वृश्याः ग्रन्था पत्मं कुल्यामार्थः सावगाय, समायरंगीयं व माबिसारं उपयो (वृश्याः) विष्ठमा सिक्सीसमायो पुष्ठी ग्राम्या प्राप्त कर्यः ।(या संदूस्ता कृष्य प्राप्त । या व्याप्त व्याप प्राप्त । या व्याप्त ।

क्ष्मारे कुमारवामा वोषयी
भा सर्व (प्रयु लाग कीन सार्थ (प्रयु लाग कीन सार्थ (प्रयु लाग कीन सार्थ त्राप्त (प्रयु लाग कीन सार्थ त्राप्त (प्रयु लाग कीन हुँ बाड़ी मनगर्ने (स्राहिज्य) पुरामन बाउ हैं पुरामन का हुँ हान कर्मा (यसार्थ)

(इ.ए.) अध्यानोने उने स्टाम

माबुने गवरामे माहे (पद्)

43 b.

धालाना प्राप निराम बीवा

अधिनारे वार्ग्स (बारास ) वीर्ष्

स्य गाम्य को (एक्स) राज्यके प्रकृतनी (ब्राह्म) वर्ध्य

सामग्रीन (सुखू) देगान

ৰবেম অবেড (লোকা) নবান र्त अल्ब

र्याच सामने शतकां वक अजिना

राष्ट्रमानी संदा वर्ष छना दिवसी

मन्दु (कि.सू) अभेत कडी

कोड उपास मधी

पाडवा

पत्र (सद्य)-

यच (बोध्येष)

त पापांची अवशेषना लेख

-0

(बच्च) नजरा पाने छ वं समाजिएक एत् पानीन (पास) न्यांमां स्थ क्डे. रोला (क्यू) शक्कम हे थीड

स्राग 🕮

इसको बक्का विशेष

बोबानो वस करतो अस मान्स,

मक्रम करो (सक्**क)** स्ट्राय-धमा धहेगान हे.

(शिवड्) शुक्ती शसे वर्ण

क्रम प्रशास्त्रका (ग**्**न

शिष**ड्)** अश्य कर, त्यन <sup>कारा</sup>

बावका (बादा) त्यस गर-

# \$40

## पाठ २१ मी स्थापनास्त नाम

ग्रामण्या अनव श्लंबगोनो स्रोप वाल छे एक वेटकाएक बामोमां मिलेका क्ष जेलां अन्य श्लंबनारो ब्रोप वाल छे देवां स्था पूर्व बारोबां कावारान्त-व्यावना-व्यावनाय पुलिस कर्न गर्नुदर्शिय महोती सावक वाली केलां. सहते <sup>एक</sup>(बावाह) सम्मी (तानस्य), बावन्त्र, (बाहुपु) करूमी (जानस्य), धाणी (घणिन्), हासी (बारिस्ता) संवादि

. पुंजनलका वागो को 'गू' बन्तवका बागो उकिया व परपव कं पव दाम (बागर,) तिर (चिरपू) वह (नगर्) कररोजो स्वोग नरदक्कीमधी व बाव के.

प० प•

चरों (उरप) वहलबाक अस्मी (अन्तर) अन्तर. बता (वक्रम) बाद्य स्त्रम्म (अर्थन्) प्रेरी स्रीम रुद्धा (रुम्म) अपवन्त् वर्षा (रुम्म) अपवन्त् वर्षा (रुम्म) प्रवास स्त्रम्म (स्त्रम्म) मान्य वर्षा (रुम्म) पुण क्षत्र. वर्षा (रुम्म) स्त्रम्म स्त्रम्म वर्षा (रुम्म) स्त्रम्म

विक्रेय-मोर्च हराच अर्थुसचर्तिमाना यन अयोग देखान है. केरा-

सेवं (भेक्त ) कम्बास.

वर्ष (प्रमम्) उत्परः मुगर्ग (पुमन्त्र्) स्पर्धः सन प्रदार वित नामं (सर्मन्) कन्यान नामं (नर्मन्) नामङ्क

ey ep

के बच्चोमां करून व्हंकल्ये लोप नहीं नहीं हमां वीचे अधाने क्रायर बाय हे-२ विद्युत् निगण्यसः श्रमान्तः बीकिंगः सन्तानां अन्तर व्यक्तिये

'सांके 'सा' नाव के.

सरिमा-पा औ (सरिह) नचै पाडिक्था-पा र ु (प्रतिवद्) इच्या पन्नी-पश्चिमा-पा मावमा−या "(शल्द) हुन्व महस्र∟

सपमा-वा " (सम्बर्) अस्यी बिरुक्त , (बियुन्) गीनडी.

३ व्यंत्रनान्त क्रोपियमा अन्या <sup>प</sup>ट्र नो 'द्व' बाव छ तमत्र **सुस्**य भागे द्वा दिश्य श्रीम भा कक्रमण स्थिति बाब के मन बच्छरस् छलाय 'छु यो 'छा' विक्रमें बाव के

रिस्ट की (मिद्र) वाणी. विद्या की (निव्ह ) निस्त-पुरा (३१) वन्ती क्रवहर \_ (क्कुन) दिसा दुरा , (दा) इंगरी शत. सच्छरसा } सी (मनस्) बन्ध, कहा , (हर) तुन. । सच्छरा } स्त्रोह प्रेकेट

४ प्रस्त् भावे सन्त्रोमां अन्त्र व्यक्तमे 'स' वाव सः प्राप्त्य <sup>स</sup> करने पूर्वा सांबा के देश कारापु रूपना करन पूर्व के के कनुष् तकाय पूर्व क्रिक्न वाव के 'शरद' न्ये 'प्राप्तप' राष्ट्रमं क्या प्रस्कारते वक्तन हे

4 2 सरमो ५ (जर्) करूका शास्त्र- । वस्ता सर् मिससी ५ (निका) वैव मिसाओ उ. (भिन्न) वैष वाणुई पु. स. (बहुव) स्ट्रान्स पाउसो उ. (भनुव) वर्णस्ट्रः वाणु ५ पुर्विमम्मा काम् करतलका के नामो छ तम 'कान्' नो 'काम्य' विकास तम के अवारे 'काम्य' न बान त्वारे 'म्र्' नो तोप बाव छ. तैवी का प्रमान तैवार छत्यो बाय छ.

सद्ध-धदाव पु (कारम्) पूस-पूसाव पु (पूर्य) स्व सर्गा, क्या सम्बन्धमा पु (कार्य) सद्धा सर्थ-भरपाल प (अक्सर्य) सहय-मास्त्राक प (अस्टर्य)

वय-मयान पु (अपनर) महर्य-महबाय पु (मपनर) भर

बच्द-बच्छाण ५ (क्वर) वृषम ब्वर गाय-गायाच ९ (मान) गण्ड विक-गुपाण ९ (मान) गण्ड विक-गुपाण ९ (क्वर) राज

विषय-निकास (पु (१४२) सुकास हि (हुम्मन्) विद्या नक्षास ( हुम्सर् सुकस्माप्) नार्ग करेत्रस् ( स्य दारामा क्या स्वाप्तान्त पुर्विषत देशों क्षाय ए पन मूख एपो आह-माया का तो न्यासा करनेण्ड विशेषण ए. वे गीचे समाने हे

प्रसामा एकास्त्रमधी आहु प्रश्न स्थापी क्षेत्री विशेष्टर स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापना स

शहरूका बन्द्रकारी क्ष्यंभा ककाकार्य का का प्रावकरी कुर केंद्र करा बील के देवी कारायी आपणी राजणा कार्र का कुर है.

खप्ता	निकाशी	307	मगर्ने	प्रस्करो	तेकर वाय	₩.
-------	--------	-----	--------	----------	----------	----

प् <b>कृष</b>	चपुष	वस्य	(क्यान्)
च बा.	मो	वस्दा	वस्दामी
भी इमे	चो	वस्थिष	99
त वा		वस्था	•
च छ. यो	इप्पे	श्रमहाची	वस्थिपं
पे जो	•	वमहाची	•
ਦ •		•	•
4 .			

क्षान् संस्कृतका वामोगां अध्यक्षं स्मी कवित्व वाच है सर्भग दिसं प्रमान

बम्ब-बम्बाय श्रम्तां सपूर्व क्यो.

एकव **शहूब** प बस्हो बस्हाची बस्हा बस्हा बस्हाची बी बस्हे बस्हाच बस्हे बस्हा बस्हाची

वा बन्दू बन्दू।ज वन्दू बन्दू।ज वन्द्रिय वन्द्राची ठ बन्द्रेस वं बन्द्राक्षेण-ज बन्द्रेद्धि हिं-हिं

प्र सम्बन्ध व वस्त्रावयन्त्र वस्त्राह्य हि नह वस्त्राण वस्त्राण वस्त्राच्य हिं-हिं व वस्त्राण वस्त्राच्य वस्त्राच्य वस्त्राच्य वस्त्राच्याय वस्त्राच्यस्य वस्त्राच्याच्यः, वस्त्राच्याच्यः

वस्त्रणे प्रसामो-वन्ति वस्त्रणे वस्त्रामो-वन्ति, विश्लो वस्त्रा, वस्त्रामो वस्त्रामो-वन्ति, वस्त्रामको, वस्त्रामामो-वन्ति-विश्लो वस्त्रामा वन्ति-विश्लो वस्त्रामा

बम्हाचेहि-हिन्तो-सन्तोः

छ. घम्हस्स, वमाजो धम्हापस्स स बाहे बाहरिस

पम्हाणं यस्त्राजिस चे देयाइ काही काहा

बम्हेसु बम्हेर्स बम्हाणेस् वम्हाअस् हे पम्हा चम्हाणा पम्हाणा

बरहाण बरहाण बरिहर्ण

बस्द्राणाण बस्द्राणाण

पत्र केन्द्र अस्त्य व राष्ट्र ध्वरतं वयोगां विकारण ध.

THE PUT

दे यम्द्राण करदाची

सायक जानक<u>।</u> भाग-भागाय (भागमन्) चानामां सपे. प अन्या अन्याजी, अन्या

षी. अच्य अस्यार्थः अस्पिकं म राज्यस-सं

भगाजन-वं भगवा अप्यक्तिमा अप्यक्तमा

प धानाय धन्त्रका धारपाचाय धरणाचस्य MYTHE.

म्म प्रमाण गर्ने अन् एतराद्य बजानी स्या बायरी

सप्य प्रश्तने नृतीशमा एकाचनमां विद्या-वाद्या' ए वे प्रत्यका वर्षारे समाहरामां आदि छ त्वी शु प वचनमां अप्यक्तिया अन्यक्त्रका ए है को बनारे जलना सक्ष्रीमां मान्य ने मध्याच्य शक्तको तथा धरह कर चरहान्य शक्तनी

अन्या अन्याना अन्यामा अपी कच्या, सन्याज क्षणाणा सऱ्याणा भागहि हिं-हि भागाणहि हिं-हि

भाषाच सरमध्ये अन्यापाच अध्यापाचे. क्षाचित्रच

हिस्तो अध्या बग्गायो हस्तो-सुग्ता अध्यायन्ते, अध्यायाने अध्यायने अध्याया अध्याया अध्याया अध्याया अध्यायामा अध्यायामा

अप्यको.

है बयाज जयाजे

स बर्ग अप्यक्ति, अर्पसु, अप्पत्ने, अप्याथं अप्याथित अप्याथेसु, अप्याणेसुं स हे अप्य अप्यो अप्या

मण्जिप

अप्पाणा

द्वे बच्चाया अध्यायां

< राज (वाजन्) छण्तं वर्णमां विश्वन्त वा अमने ह

(१) च्ये च्या. निम. का जब अवना बचान्यं पर्वन द्वा में

निक्ष ह वान छ राहणी राहचा राहिमा हूँ व वान मार्ग- रायणी रायणा रायमिश (१) हिनोबामा एकाकामा स्त्रे वर्द्धमा स्वत्वका प्रमान

नदीन रिवार्य कर्यना श्री ना पूर्ण अर्थेश निवस्त्रे योग हा

धी. १८ राष्ट्रयं करना शार्थ धा. १८ राष्ट्रयं करना शासायं  (१) तृतीया (चमी ने पछीना एक्सचनमां 'लार-क्सो' मार्चनी पूर्व 'राथ धन्यमा 'कार्य' मो 'क्सच' निकल्पे नाम छ.

त. ए रण्या मनग राह्या, रायथा

पं ए. रक्को अवस राहको, रावाको ८. ए. रक्को अवस राहको रावको

(४) गुडेंचा चतुर्थी पंचनी एटी सने सामीय सुरवनमां प्रात्नानी पूर्वे दास सक्ता था नो विकास सैंच हैं

बाव हो. त. व. दाईडि अवना राष्ट्रि

ए व } राष्ट्रियं अवश राष्ट्र्यं रायाण

प. व द्याईकी दाईसुन्तो नवस दायाकी

रायासुम्ता न. १ राइस मवना रायस्

राव-रायाय शब्दमां रूपो.

यश्चव वृद्धव वृ

े राया रायाका राया राया रायाका गहको रायाका से रायं रायाको स्व. राया रायाक रायाका

राह्य शह्या रावाणा द रावक-व्हें शवाकंत्र-च शवहि-हिं-हिं रच्या शहरा शवणा रावाकहि-हिं-हि

राहि साहि साहि रावाय रायक्त स्वयक्त स्वयक्त

201 पं∗रायचो राषामो स्वाचनो राषामो~ड-डि~ र-दि-दिन्दो राया दिन्दो-सन्दो रायांचचो रायांचाओ रापडि-डिन्दो सन्तो इ-हि-हिन्दो रायाचा रायाचतो, रायाजामो-उ-हि-रच्यो राज्ञचे रायाची जिल्हा-सन्तो रायाचेति-तिन्दी-सन्दो ∘राह्यो रार्ममो~उ-डिन्हो-सन्तो क राम<del>ुस्स</del> राबाजस्त, रावाज गवार्ष रच्यो राहणो रायको रावाभाय-वं रापि शांच-प च राष्ट्र राषम्म समस रापसं रापाचे, रायाचरिम रावाचेल्य सं राहस्मि राईस-स [रावंसि राषाणंखि] र्ष हैराय रायो रायाओं हेरावा रायाचा, रायाणी रावा राखी रावणी रायाणी नप्सक्किंग क्षाण् समलाक्षां बामोर्गा बर्नुगक्तिकर्ता क्यों 'बच्च' नेना बान से करे के बालो निश्लेष्य छ हेनां शुनीनाची आंग्रीने वर्षी प्रक्रिंग केंगी नाम है। सम्म (समेर्) ९ मी सामा सम्मा समार समानि बेच क्यों 'बाबा आर्थित प की बार्स वामार्थः वामार्थः वामावि क्षेत्र स्मी **श्रा**ण प्रमाण द्वाची जिल्हाम १९ आर्थन दिव्याला.

#### स्कम्भ सक्तम्भाण (स्कर्मन्)

न नौ सुकार्य सुद्धमाण

सुकामाइ सुकामाई सुकामाणि, सुक्रमाणाई सुक्रमाणाई स**क्**म्मावाणि

वाफीनां स्यो 'सम्बद्ध, सम्बद्धांच' अमाने

भत् यत् सने सत् सन्तवस्य बन्तेना स्रो अन्य 'अत्' मो संत करवाची आकारान्त सन्दाना जना व नाम स

मगर्वतो (कार्ताल्) पूजः हिरियंता (ईम्हन्) तरकात्र्ये भक्यंतो (कार्ता) कालाह्यं सर्वतो (काल्) कार सिरिमंतो (धीयतः) अध्यासम्बद्धः सियसो (विधानः) वेटको सिपस्मतो (मविष्यतः) वनो सर्रिसंतो (वर्धनः) मर्थितः

न्प्रपेता प्राप्त प्रकारण एकवन्या अवर्च (सम्बन्ध) सहस (मिनियन्) चपाचे (धनवान) सिरिमे (धीमान्) सरिद्धे (र्थ्वान्) श्रमस (मंद्रसन्द्र) इत्वादि प्रवोध परा वकाव छ.

प म मगबंदो (भवस्त) अवस्तो (मरस्तः).

र प मगब्या-सा (मनाक) अवया-सा (मनक). ए मगबमो-तो (मन्द्रः). मबभो-तो (मरद).

मा प्रमाने संस्कृत उपरंगी सिंह प्रचोग वन मार्गमा **देखान हे श्रृ अन्तमालं** गामी

अस (बद्धासु) व्यक्ति सम्दोनां स्थी यन अन्यरान्त सुदरीनां क्वा प्र बाव के केम-जसो (वक्क) तमा (तमा), महे (वस ). अस (यशस)

प जमो सस्य भी कर्स नसे कसा

tet असेहि-हि"-हि र. इस्सेच−थं बाबीमां ज्या किया अगार्थ. सुत्रसम् (सुपराम) १ सुत्रसो मासा-सबसे सुत्रसा नी सुत्रमं ट सुत्रसेज-र्थ गामसीव-वि"-वि शर्वाचं स्पो देख प्रमापे. सापमां **ब**परातां सान्त धम्बानां समज शीलां विशेष क्यां 5-E. ਰ ਵ बससो (क्प्रनः) अससा (वर्ण्य) इसस्थर मजसी (मन्दः) भवसा (मन्मः) समा सन थयसा (वनक) **ब्रिय** ज्यापन बायसा (वपरा) सिरामा (विरमा) सिरसो (किट) सिर=मन्द हेवसो (वन्द्र) तेय=दर् त्तेयमा (वेश्य) तक्ता (लच) तबसो (वतः) सय≖वर तमसा (वमच ) हम-धनकर, ए॰ तमसा (तमना) बस्युसो (ग्रहर) धानद्भानक चनसूक्ता (नक्षमः) कायन्तर कायसा (सम्भन) कायसा (शश्य) स्रोग श्याव बोमसा (बोगव) E C. मणसि (मनवै) NE THE वससा (क्लेन) **भाग-**का-विधाः बास्मुला (पमश) श्वरम=चर्म धरमुका (वर्षेव) का प्रमान विश्व जनोंको एन सर्च प्राप्तानों देखन के केमक-समसा गसिका वि सूरो विद्यर्थ कि विश्ववकार व्या वर्षे प्रदान करानेको सूर्व एक हां पराध्यमने स्वाय करे छ है

े चंदरजा ने मनमा बत्-मत् मतने भारे ७ तं वर्षमा प्रक-को सातु इस्ट वस्ट सास वस्त प्रस्त इचाँहर को मता प्रस्ता करे छ

मेदो अस्स सत्य ति वेदात् (स्वेतम्) वदा अस्त वरिष ति वदास्रो (उटान्)

ष्

मानु-नेदास् (रवानर्) केनाळे. त्यास् (रवान्) रशनळा देसास् (रवानर्) रशनळा इस्स-छार्स्सो (ध्यानर्) जनक्छो

सोडिस्सो (योगत्वन्) योगताः वस्य-विभावस्यो (विश्वतान्) विश्वतवारो

र्मसुब्हो (समुकान्) वाडीवाटा बाह्य-सङ्ग्रहो (करवन्त्) करवाडो सङ्ग्रहो (करवन्त्) वरवाडो

त्रहास्य (अध्यानः) वदानसः रसास्त्रो (राज्यम्) रस्वत्रस्रो यन्त-धाषयन्त्रो (यन्तार्) यनस्रस्रे मेरिसन्त्रो (अध्यान्) अधिशस्त्रे

भारतका (भाष्य र) गावशस्य मस्त-कृषुमस्तो (स्तमस्) स्तमस् सिरिमस्तो (भीमार) श्रीमस्त सभीसस्ते.

इस्तो-कस्वद्दत्तो (कस्वनाद) राज्यस्य इर-नाव्यरो (क्रांगर) वर्गमक्र

संध-धजराजी (कनान्) फनको १९ मक्सो 'सु-इसा-स्तृज' ए असनो को के पीचर्स पीनिमा पीचरानं (पीनसं) प्रध्यकं पुज्यकं पुष्पिया, पुष्पकारं (पुन्पतं) प्रध्यकं ११ मस-(विके) प्रकारं पुष्पक्कं प्रदेश कारे है

इस्स-नारिमस्स्रों (गाने जन) वस्त्रा जराम वर्षेत्र" पुरिस्त्रा (पुरे जवा) नवस्त्रा जराम वर्षेत्रउद्यक्त-अप्युक्त (क्यानी स्वयं) जास्त्रामां वर्षेत्रपर्वारती-चरन-उद्यक्त प्रभाग स्वयं क्रा

इस्स-एन्सविद्धों (क्ष्याच्यः) गोतुं उस्स-पिराम्हों (शिक्षः) शिव वस्स-पुष्टस्मार् (शुक्रम्य) गोर्चु स-वान्त्रमा (वश्विकतः) प्राची वृद्धिसम्मा (वृश्विकतः) प्राची वृद्धों (क्ष्यम्य) जु

१५ बहु (केनु-वेस) ए जर्बमां इब प्रत्यन बाते है की सदाई प्रत्यन्ता अर्थमा प्रवृद्ध प्रत्यत विषयो नारे है-सहुरान (न्युप्पर्) प्रवृत्ता वैता विश्वसम्ब्री (विकास) वित्र क्या

शाजमस्मो } (हानसनः) शन सकर

शांक्समी } (शांतस्यः) शांत स्वक्षः १६ फेनुं एगे वन कार्यसमा वर्षे समीने रिश्वं (रव-पर्)

स्थल करने हैं. भा सकत त्याच्या सूर्य च मो भए दान हैं ठेमद इस नो ग कमें च (किस्) जो के सब है. बारिसी (बाक) केने परिस्ती (दाक) जाने नाम केरी.

सारिती (बाक) केने परिती ('रक) वाले बाज करें-सारिती (बाक) केन केते केरिजो (बीका) केने केन केने-पर्यारिती (बाक) अना केते बाहारिती (समाव) कार्य जेने-

```
कुम्बारिसो (दुष्परस) व्याप अन्तारिसो (जनाराः) बीजा
बेरो.
जर्तम तामीमो १ (वारस) प्रपाक्षिसो (प्रवासः).
वासिसो १
केसो (च्यस)- इमेरिसो १ (रिप्प)
```

सनियमित वर्षयांगी तदित राष्ट्री तुरह्मेच्ये (युप्परीय) स्वरते सम्हर्केस्ये (सम्बर्गय) स्वरूपे

٩

पारकेरे पारको परको पारको पारकेरे पारको हासेक्सपं (बोजाब्स्) एकत सासेक्सपं (बाजाब्स्) कार्य सासेक्सपं (बाजाब्स्) कार्य

धारहेण्याचे (कारतीनम्) अधार साम्बंगिको (श्राद्वीतः) सर्गत्र स्वास्त्र, कप्पायाचे (कारतीते) शतानु

त्रितिमं क्रेनिक क्रेनिकं, वेदर्व (गल्र) केट्रा तितिकं तिवकं तेरिकं, तेदर्व (कर्र) ठेट्टा इतिमं यशिकं यशिकं, यद्दं (स्थल्र) एउट्टा यशिकं यशिकं व्यक्तिं (स्थल्र) एउट्टा

धारिक पायक पहुँ (स्पर) एउड्ड केलिक केलिक, केल्क (क्लिए) केस्नु. कहुपाले (न्द्रीकम्) कर्मु केर

```
नवस्त्रो } (अव.) को.
```

मको } (एकर) एकते. पत्नो } पत्नो ।

सँगयां } (श्) ननर, बहुरा वन सीमाबिक्षे } (मिलक्षे) मिल लेखे मीर्थ विज्ञासा दे (भिल्ले) सीलक्षे

विश्वतः } (शिपुर) धीमक्री पित्रम् } (पत्रम्) क्षा धोर्तु वर्ष पर्के } (पत्रम्) क्षा धोर्तु वर्ष पीक्से } (पीलस्) धीक्क

संपति है (कायर ) शांकते संपति है (कायर ) शांकते संपति है (कायर ) शांकते लेक्क्टर्स्ट 'यम' (तम) कायर शांकते लेक्दराय के स्व स्टिंग्ट की छै. तैयें संपति काम का से है कायर ना सिंग्ट की

भग्न-धम्रवरो (चन्काः) अभिक प्रतंशापत्र धन्त्रवयो (चन्काः) धर्वविक प्रदेखपत्र

कड्ड-बहुयरं (बप्टलम्) अधिक बुण आपनाहं. कडुयमं (बप्टलम्म्) सर्वेशी अभिक बुणा आपनाह

सदु-सदुयरो (बयुन्ध) अधिक शक्ते.

सङ्घमो (क्युनमः) धर्वश्री नानो

उम-उच्छयरो (उनगर ) अधिक उंचा उच्छयसो (उनगर) सर्वा उनो

कोर्किका-पानवरी कडूवमी सहुवरी उच्चवमी गोरे बात है. कोई उच्चत झीचियां का प्रत्यन पत्र आने हे. भारतपुरत बच्चवमा गोरे.

देस्य बाह्यतमां वपराता उपयोगी शक्तो

माजो (ये) वेच पूर्वन श्याची (ये) यक

महस्सा (क्रांवर्ष ) केन-स्कर माळ (मारः) का विकस्तम्मो (स्कुपमः) लाव.

चित्रसम्मो (स्कृषकः) त्याय. बोसिरणं (स्कृषकंत्रम्) त्याम सम् करवाह (राविष्) कवा मुख्यबहर (उपपटि) छ परस करे हे. किरोड ) (Garlen) छ

विदेशा (विदेश) मैलून क्या-

मीम करा.

करे है. विविध } (चित्रविक) निकास चित्रिय } (चित्रविक) निकास चित्रव्य (विच्रव्य) निकास हो.

ले क्रम्यण सीकिंग श्री थरी यह योगी यह साम के
 मन्दी-सई को गोवीमां को सरी प्रमात तेमत 'गाव' मां क्यो
 मिया' प्रमात क्रमतां.

कक्षासुद्वी (सम्मानते) सम्मानते,

मद्रोको (सक्ततः) इतः

को घोकास

प चन्नप

संस्थिको (सभी) वाशी

क्ष्ममध्ये (अध्य) क्षम ब्रासीसा (माधी ) आबीर्वार पक्क्को (१नवडः) समर्व बहुयरं (इस्तरं) च्छ मोड मुद्दको (क्षणकः) नानो शाह सिंक्स्स् (पुंक्तो) जन्ती कुन्ना वी: श्रद्धक (मन्त्रकम् ) जन्मगर्गः, नाकारान्य प्रक्रिंग गोबा (योपा) गोबासः प गोबा योदा

योधा न योकाल⊸के गोबाहि गोबाहि भोबाहि ब हा रोवस्त वोबान तोवार्य पंगोबची मोबामी-उ गोवचो गोवाबो-४-गोबादिन्तो विम्हो-ग्रन्दो भा गोधिय

गोबास गोबास संहे गोवा! के लोका ! गामणी-सम्राप् नगरे ग्रेवं हुँकाल्य-अवसन्त धनोनां स्मो तमीना सार हरने वह इस इक्सराना-प्रकारान्त प्रक्रिंग वैशे थ क्यों मान के नाम संबोधकारों रेकानी स्वर विस्व इस्त बाल के प गावकी गामचड गामचमो गामजियो गामची

चटपपो, चटपड चटपमो चटपनो चट्टप

रं. दे गामधिः गामधाः गामधाः गामधाः गामधाः रं. दे तद्यपु च्ह्यपयो चह्यपः चह्यपयो चह्यपुर्या चह्यप् होप सपो मुखि साहु प्रमाणे हाथो

क्यण र. (स्त्र) श्रोग्तुं, श्रवः. कमिम्बा वि (श्रीमान्) परा-

श्रृत पराजितः **सवस्य** ग. (शरात) पुत्र

मासिक्य पु (भाषित) श्रासे मास. क्या पु. (क्य) उत्सव

ष्यक्र वि (वर्क) कंत्रक लस्तिर ष्यारि क्रि क्र (क्रासि) चार क्य है क्र (जन्म) बगत हुनिया क्रम है

विद्विक दि. (क्रिक्टेन्ट्रन) सम इन्द्रिका बीक्स के छैं-

राष्ट्र की. (रुद्र) सरीर द्वार दु. व (श्रम) की शदिक दीवाराध्य न (श्रीकार) वरीकार्यु

उपराहर्सार (उस्तवपरिद्य) उस्तह कर प्रकार करपूरीकरों (कस्पीडर) क

मस्यपूरीकाओं (सम्पर्धका ) न-सभी नहीं शेषोः चाउनाइसमें (शहर्धितमें) चार गरिका धेपाणीः नंबक पु (वं) गांक वाविका निज्ञारा को (निर्जा) कर्मलब निष्ट्य वि (निर्जा) दक्सहित

विद्यस्य प्र (निक्य) कर्तातीना परवा परिद्या की (परिवा) कार

पहार दु (महरू) महरू सम्ब १ वि. (युग) सरी क्वर सुक १

अवस्य व (वर्ग) गामक द्वान अंक्रक वः (वर्ग) गोमाचार, व्यवस्थारः स्त्रेपण्डि कीः (वर्ग) संक्रमा स्त्रेच्य } विः (ब्रस्म) स्त्रम्म चारीकः

सहिता की. (दीका) प्रमानी संसीता सीवार्थ होता की. (दीका) प्रमानी संसीता सीवार्थ होता क. (देसर्) सूचर्च कांस्

> निधवपरायाणुक्तं (विकासता-वानुव्याम्) योदासा व्यवसावना समान-

ह्यात. हिमसीसम्बद्धेच (जित्रसीकाकेन)

राजी. योचना श्रीचलय सहसी.

धारपुर नाप } (नार) मद इरी (दर्द) उस ग्रे नै

থাসুমা मध्य (सम्मा लागु शार्ष

मृह रे (१६) व तेर १ । 45 4 6 44 स्वित्रहर्ति । ११ १ ) १८% साद (रापर न्द्र र प्राप्त विषय हैं श्युष्त (सूच १) स् .ग. वर्गा 5-517 1 TO वारस्य-वे व र (*भाग*) mich to the दिन्दाह ४ गण संदर्भ 🖂

बारून परक्षा ।

देखिरीं व्यविषये निरिवदावीर निश्ना बनाग वना हैरे। ब्रह्मसून र्शामान अन्याचे सन्दर्शन विश्वमीसकाच सनी प्रन्तुरीयका । सुरचा आपना राज आपना नगार स पंपार्शन है

बराच गुरे वा पूरे वा का पूजा है अन्तव क्विय कवाई बाजी सम्बद्धीय वर्णनाविष् कर प नुगर मान्या निक्षि क्ष्याद ना निषयेनि क्रियेगरै SCIENCE S

का कारण कविनुष्या और हमेरा गा दश कारे दर्गात प wind is server unit and t बन्दरना अपने बरागील निदानातन रचना अन्तर्य होत्या । बर्रियो मध्ये पुरस्ता बरिर्देने स्वरूपे क्यूरवर्णिया

**त्युक्ते अपदारमार्ग अपने हीत्यु ह** farrer private with white a without a रिणा य मणधी बाहिणो हरन्ति ।
सरप हर्योशे घराण काशे अध्यत्सात व्य गाणं कुणित मध्यति व ।
मुजमा पाइसे पणाप पराहीप बिहुन्ति ।
तर बरावस्यो सत्ता पहुंचा न ह्यनित ।
क्रिक्तिम विक्तिला ह्योगा पायेण गरिन्तर निर्मा य मंति ।
रीजनेते वि हो बस्यरेष् को धम्मचेत्री स्रोणेनम्या ।
गामिस्ताल मत्तार न रोचनित ।
दुपिला ह्यागा स्तालं नुस्ता गंति ।
दुपिला ह्यागा स्तालं पुरुत्ता ।
दुपिला ह्यागा सत्तालं जुरुत्ता ।

दृष्टिमपसु नरेसु सह इये कुण्या । प्रयोग्यामे पि रूप्यो पाउनस्य पिरसुष्य बपसा नापस्या । हमें मावने विस्तास्य समित समा वा प्रापट । राहकंड इरबें प्रयाप द्विभाग द्वोहमस्य ।

जीपाणं क्षणात्त्यं भाणं श्रीमणं बरिण वा शरिष वार्त्र सम्बन्धः ।
जे निरायतं प्राचिवां कुणाँचि विच सर्वित्रकारः ।
जे निरायतं परिवादं कुणाँचि तार्णं पिरमणः ।
गायीणं तुत्रं वाल्याणं साहवं वि बच्चा प्रयन्ति ।
गं परिवेदि कम्मीर्द्ध वाल्याणं साहवं वि बच्चा प्रयन्ति ।
गं परिवेदि कम्मीर्द्ध वाल्याणं साहवं वि बच्चा प्रयन्ति ।
गं परिवेदि कम्मीर्द्ध वर्णं निराय साह पित्रमणः ।
ग्रीमणां निरायतं भाषात्रि विच्यालितं न सुव्यक्ति च ।
वा साम्यनेने विश्लेषमा च द्वार सम्म नवी समा च पिर्वृ
च प्रवन्ते ।

नहम्म मोटा बेची लतावार्ष मरण्य व तवनी वयनमीय मुहण्य य वयम् नद्धा छ । रास्या पुर्श-स्वर्थ ! विलाहा सन कवावि व बरिन्मं ! वयनमा हव समितु वाबीही जा पानह य दिवय पासेह । जीवार्स क्षांत्रियां य सम्बं बारूव निर्मिष्ठ क्षांत्रिया ब्रस्स प्रवपने भरित तेशिक्षं तारिकं च सक्तवं व सक्तवं व स्वव्ह ब्रेसकं । वर्ष मीर्पातन्त्रं, कालेश्व क्याह होह संवत्ती । मीराण मदार्थ पुत्र कत्ते बीहंसि नीसारे ॥१॥ पालेशु परलेशु च निवसा उक्त्याहवालिमसुवातो । पालेशु पत्रनेशु निवस्ववातानुगर्य गु स्था वर्षारं च विपार्वता सम्माला महत्त्वाई क्यारि । गुण्य अपन्त्रो तह बहुद स्वव्याहम्ब सम्बद ॥१॥

गुजराती वाश्यो इनामा बास्ट (गावा) क्ष्मेन (गावी) वर्ष ए.

नाग पश्चास होते (मुक्कस्त) हान इत्यां करेटे दात्मध्यां सुनी बाव है इ.स्सान कार (साम्बन्धन-स्वयंत्र) का कमार सन्तरमंत्री

स्थाना केल यूर्णीमीकी उद्धार करों कर्जमानी सम्बन्ध रक्षण अस्तान (स्त्य) १ पुरुर्वण स्वतानी बना स्वयं (परिवास) करी,

कर नामें (परिद्वा) करें। कमा जा। (साथ) शाको काम्य कर ता आ सावता बहरोने (इच्छेन

बहुदस) राज गीरे छ. सगारा सम्प्रतामा (सस) वशु (बहुबानु) गडे जीराने समर्थ

वन करी मन्दा मन्त्री मन्त्रमा कृष्यको (पादिक्या) कर्षकी द्<sup>रस्</sup> नदीमा नद्रको क

रिकास सम्मान परणास (जान्यू) त्या यहे तहे देवाल पुताय हा.

विद्यास सम्मान वालाना (काम्यु) त्या नहे तहे देवान वृक्षण से ती कर हा प्राप्त कामाना वालाव करे हर.

बाग रव वय तुरद अनुध्ये (श्राप्त आप्रता) शत्यस्थे (सेप) बाग (प्रकार) बाग वर्ग

चरका (अस्ट्रहारिस्त) वरीन जगर श्रीति करनी नोहए. र्श्व रन्त्रो रहेर्बक्टोना जन्म (श्वास्म) बच्चते मह पर्वत स्मार रहेर्बक्टोने

नदें बर्च अस्य आरोमात को के -राज्यार पंपति (संपथा) मां वर्षेण्ड (गविवर) न बहु सने

इंच्यां (बाचया) तंत्राव नहि-नीन गोलना व (काल्याचा) कर्म वह समा को इस गामे हे भीओं साथे के म जिल्ला रे उरमाना जादीर्वादो (आदिसा) वहे कम्बान न पान 🗷 देवी

टेमाबी आधार्न उन्क्षेत्रण करव नही. कारमा (सबा) वह कर्योंनी निर्माश बाव छे सने कोच वह कर्यों वंबाय क्ष. पान महेका मूर्वा क्या क्षत्र है, यह अ आवारतक्रम (साधारतित)

ते त अ पंत्रित व्यक्तेमान के. र्मेंचुए राजाने (शादा) कार के तुं राज्यनो श्वाय कर, सने नर्दिकां उनाव छो

भारी रीते राजन फार्स राज्य राजने (राज्य) वर्ड कन असे बीति आपे के

क्दरनामां (बुक्कचण) धरीरनी शुन्तराय (सुक्रचण) नाय पाने है. गास्त्रम् (पारकेर) इ.स. संगठीने महस्त्रामानुं (सहप्र) सन रक्षराह्मं वान है. (इयानु)

वर्दे पहिचयता व्यंतिभूतकाल गाएकं

# पाट २२ मो प्ररूक भेव

। सर्मित एक क्यो मुद्ध बहुदे वर यू ब्राव मार्वे र प्रस्था रामसे वर्ष केयर को ठ ठे काळा पुरस्तेवर प्रस्था सर्वाचार्य बार ठ

. मेनुमो उसल्य क्षा हो व तो स्व के या सरवा सम्पर्का निय का निया का स्व किस्स

हम्-अन्दास्त्रभ्यासम् हम्-अन्दार्शे द्वास्त्रं हस् मार्वश्रमावन्द्र हमायद् हस्-अव्यक्तिक्तिः हसायद् देश्य वैमन्द्रभीवन् वेश्यविपन्तिकार्यः वेश्यविपन्तिकार्यः वेश्यविपन्तिकार्यः वेश्यविपन्तिकार्यः वेश्यविपन्तिकार्यः वेश्यविपन्तिकार्यः

में भाकिन्यमापि कृत्यभावेद । मुख्यापुरुवसे उद्याप्त कृष्टि कृष्टि हाथ सा प्राप्त कृष्टि हो

ष भी 'उ मां भा' नाव छे जेला-रिचुश्य एव देखाः भूगुश्य-सोस्स-सोसा

पुर्श्य कोट-बाहर हुन्। से तोह-तोहर बा बानुसा आहि हा नुह हात नो की बहुना प्रभारे

L मिस् क्युने केट अंत स्थाह का फिले नार्य है

१९५ प्रेक्ट संग

मृख घातु

पह-पाड पाडे. पश्चाने पदाप AL-FIC करानि दारे, कराय रम्-दास दसावे दासे हसाव जाण्-जावा श्चाणे লামৰি सापाये माणाय बोस्य-बोह्ड <u>धोस्मि</u> बोस्से बोध्यावे बोस्डाय सम्—साम मामे समावे समाड भमाष मे—मेभ. नमिव मेधावे मेग्द. नमाय दो-डाम होय द्योधपि टामाने दामाय प्रदे - योड बोद्दरप योद्ययि चाडे वाहायं. मा प्रमान पानुपानु हेरक अप सवार की हमें न न करना पुरस्योगक गलको कवादी यूग्नी सायक बदा गांधी केरी-कार-कार, कारे, कराय करावे अंवर्ग की यतमानकास्ट. वद्रयज्ञन परवयन ۹ چ कारमा, पारामां कार-कारमि कारामि कारिमा, कारेमा कारेसि कारे-कारमि कारमा करायमा करायामी. कराय-करायमि वराधिमा, वराबमी बरायामि, वरात्रमि करातिमी (ए म्बपं मुन्म कारो-स्टाविति इन्द्रकारे रामजाते.) 41. 3

धार-धारमि कारेनि धारे-धारमि कारह कारेड

कारह

कराव-करावधि करावेधि कराबा करावेड करावे-करावेकि करावेड (ए प्रमाने को पर करा) कार-कारित्या, कारेहत्या कारे-कारेक्टरा करावित्या, करावेश्त्या € राज− करावे-करावेशया ती प कारति कारेति कार-कारत कारेत कारे-कारेड कारेग्ति करावन्ति करावेन्ति कराव-करावा, करावेत करावे-करावेड करावेस्ति (ए प्रसमे स्ते (ए हमाने 'ध' अन्यवर्ध ) प्रश्वकर्तः)

कार-कारिरे कारेहरे

कारे-कारेक्ट कराव-कराविरे, करावेरटे

करावे-करावेहरे क्स-प्रशा कार्य ।यारे.

> र्मापुरर ) कारेज्य कारेज्या मरिका | करावेज्य करावेज्य भृतकाळ.

र्थ्यदर } कारीभ, कारेईम दर्शरक } कराबीम कराबेईन मार्थमा-भूतकातमा वर्गकामा बातकामां वस 'वर्डि' प्रस्ववको प्रयोग देवान छ. जेस-बोबरंती छाँगई राजहवा लंगी शर्दि वह सबने परिका

की रक्षावेदी (शारीमगर्) बल जल्म २ आ ३६

Pot कर्तमां---कंद कारे-कारित्या कार्रसु कंदुः कराव-करावित्या कराविसु करावे-करावित्या कराविसु विष्यर्थ-आधार्य पक्यवन बद्धयंचन कारमी कारामी कारिमु कारेम कारियो कारेमो कारेमी

4 3 कार-कारमु कारामु कारे-कारेम

कराव-करायमु करायामु करायमी करायामी, कराषिम् करावेम् कराविमा करावेमी करावे-करावेश करावेमी

की प्र कार-कारदि कारेडि कारट कारेड

कारसु कारेसु बारिस्तमु कारेस्त्रमु कारिस्बद्धि कारेस्बद्धि कारिक्रे काराक्षे,कार, कारे.

<sup>कार्र</sup>मे–[कारिश्वकि कारेश्वकि [कारिश्वह कारिज्ञानि कारेज्ञानि कार्ज्ञाह] कारिकाटि कारेकारि

षागदि] चारे-कारदि कारम श्रारेष्ट कराय-करावडि करावेडि धरापगु चरायेगु

करावित्रम्यु, करावेत्रम्यु

कराविकादि करावेज्यति करावित्रकं करावित्रके कराय करावे

वर्तमा-विद्यविक्यमि व्यावेकापि

बराबिकासि बराबेकासि कराधिकाहि, करावेक्बाहि करावाहि ]

करावे-करावेडि-करावेस S. E. कार-कारक कारेड

कारम्य, कारेन्द्र कारे-कारेज कारेण कराव-करायर करावेट

करावे-करावेड [कारप] र्क्स् रे कारेज्य कारेज्या वर्ष र्रक्सकेज्य, करकेज्या

N. 9 कार-कारित्स कारेक्स

कारिहामि, कारेहामि. कारिहिमि कारहिमि

क्षारिक्सामि क्षारेक्सामि

कारे-कारेस्म कारेज्यामि कारेकामि, कारेक्सि

कराव-करावित्मां करावेस्स

क्रमाविकासीत क्रमा

मसिप्पकास.

करावन्त्र करावेन्त् करावेगन

कारेज्या कारेज्यार करावरणाः, करावरणाः

कारिक्सामी कारेक्सामी। कारिकामा कारेकामी कारिदिमी कारेडिमी।

mifefern mitteren. कारिकिंग्या कारेडित्याः कारेस्सामी कारेडामी कारेटिमो कारहिस्मा कारेहिस्या कराविश्मामी करावेस्मामा कराविद्वामी करावेदामी।

[कराविज्ञाह

क्रमाचेत्रकार्थः है

करावेड

स्मामि क्रपविद्यामि, करावेश्वामि

कराविक्रिम करावेक्रिम कराविक्रित्या करावेक्रित्या

कपने-कपनेस्स करानेस्सामि, करानेस्सामी कपनेद्वामी करावेदासि करावेदिनि

đ. g.

कार-कारिडिसि कारेडिसि कारिस्मति कारेक्सिस

कारे-कारेदिस कारेग्सस कारेदिद कारदित्या कारेग्सद कराव-कराविविधि

कराविस्ससि करावेकासि करावे-करावेडिसि

की दु

कार-कारिक्कि कारेक्कि

कपव-कराविद्विष्ट करावेडिक च्यविस्सा करावेस्स-

करावेदिकि.

करावेस्सिस (ए प्रमाने 'से' प्रतक्ता)

कारिस्ता कारेस्सा कारे-भारेतिक कारेस्सक

कार्यक्सारित कारेस्स्रमित

कराविश्संकि

कारिक्रिमित कारेक्रिमित

कारेबिन्ति कारेस्मन्ति कराविदिन्ति करावेदिन्ति करावेस्सम्ब

कराविदिमो, करावेदिमो,

करावेदिन्हा-करावेदित्या (ए प्रमाचे "सु स' सत्त्रका)

कारिक्टिक कारेक्टिक

कारिकित्या कारेक्टित्या कारिस्सइ कारेस्सइ

कराविक्रिक करावेदिक

कराविद्वित्या करावेद्वित्या

कराविस्मद करावेस्सद करावेदिक करावेदित्या

करावेस्सर

करावेडियो

कराविश्वरता करावेशिस्ता-

करावे-करावेडिक. करावेस्सा (र म्यानं 'व' जलकर्य)

करावेस्सन्ति (ए प्रमाण क्ले-१रे क्रमचन्त्रं समझ्यो

करावेदिनित

सर्पर १ कारेख कारेखा मर्पर १ करावेज करावेजा

## कि पातिपस्पध

DEE बदुव प्र कार-कारको कारणार.

> कारे-कारेली कारेला-कराव-करावन्त्रो, करावन्ता करावे-करावेग्तो-करावेग्सा

कारम्टीमो मे. कार-कारली कारे-काराची <u>कारेन्सीमां</u> धराय-करायन्त्री कराक्तीमो

करावेग्गीओः करावे-करावेग्नी < ५ फार-कारणे कारश्वार्थ कारे-कारेश्त कारेन्सर

धराय-धरावशी करायम्बाध करावे-कराविका करावेश्वारं बनारे कार्नी प्राथमित

कार-कारेख-श्या, कारे-कारेख-श्या कराक-करावेश्य श्या,

## वर्तमावकाटः

दोम दोप, दोशान दोलावे दोशवि-शयनां द्वपी 3. ए. होमिम होमामि. होयमि होयमि होमानिय, होभानामि होशाविमि होनाविमि डोमडिक

**स्क-श्रह्मा गा**श त्वारे.

होएरबमि होएउडामि होमाबेरक्रमि, होमाबेरक्रामि द्दोमविज्ञामि द्दोशविज्ञामि होपरब-रक्ष होमाचेरत-रक्षा होमधिरत-रक्षा...

## मृतकाळ-

संपनी-दी-दीम दोपमी-दी-दीम संपु दोमावसी-दी-दीम दोमावसी-दी-दीम

#### व्यार्थभां---

वीम-बोहत्वा बोहसुः वीप बोण्या बोण्सुः बोधाव-बोधावित्या बोधाविस् बोधाव-बोधावित्या बोधाविस् बोधाव-बोधावित्या, बोधाविसुः

## विष्यर्थे-भाषाय

प. ५ ए दोशमु दोशामु, दोशमु, दोपमु दोपमु दोशायमु दोशायमु दोशायिमु दोशायमु दोशायमु दोशयिमु

#### उस-उसा धारी त्यारे

होपरबसु होपरबासु, होपरिवासु होपरवेसु होमापेरवसु होमापेरवासु, होमापेरवासु होमापेरवेसु होमापेरवासु, होमपिरवासु, होमापेरवेसु, होमापेरवेसु

#### मविष्यकाळ

#### 9. V.

होम | होत्रस्स होपक्स होत्स्सामि होपस्सामि होप | होत्रहामि होपक्षमि, होत्रहिमि होपहिमि होमाव | होमाविस्स होमाविस्स होत्रहिम् होमाव | होमाविस्सामि, होमाविहामि होगाविहामि, होमाविहामि, होमाविहिमि, होमाविहामि, होमाविहामि होमविहिमि

#### ण**क्र-**कता आदेखारे

होपात्रम होपात्रमा होपात्रमा होपात्रमास्ति, होपात्रमहिति होपात्रमाहिति, होपात्रम दोमावेरमः । दोमावेरमस्स, दोमावेरमस्सामः, दामावेरमदायः, दोमावेरमः । दोमावेसादायः,दोमावेसादियः दोमावेरम-उमा बोमबिरज | बामबिरजन्स बोमबिरजन्सामि बोमयिजबामि बोमबिरजा बोमबिरजा होमयिरजाहामि बोमबिरजाहिमि बोमबिरजा दिमि बोमविरज-रजा कियाति पश्चर्थ द्योग-द्यामन्त्री होधन्ता होप-होयम्लो, दोवन्ता दोमाव-दोमायन्तो बांधाक्यता दोवादे-दोवादेन्तो द्योषाचेग्ता दोमवि-दोमविन्तो ह्योमबिग्ता होय-होयली हो धन्ती था धोपमीयो बाप-बोपन्ती द्दोमाय-दोमावसी डोमायन्त्रीमो होमावे होमाबेन्ती होमाधेन्त्रीमो द्यामधि-दोमनिन्ती हो प्रविन्ती पर होम-होमन्त होप-शायन्त होमाद होभायन्त होपभ्याह *दोषापन्ता*ह

श्रीवाचेग्टाई श्रोमविन्ताश

होमाचे-होमानेन्त

हो शक्ति-हो स्थित्तं

		Roc		
वर्त-काः	स्-मा	शि-मा	机电孔	18-4
पड-पाडर	पाशीय	पाइड	पाविद्या	याबन्तो
पाडेड	पादेईम	पाडेड	पाडेबिर	वाडेन्टो
पशानश	पदानीम	पदावड	पश्चाविद्य	वडाबन्तो-
पडावेश	पशावेई ह	। पडाचेड	पश्चमित्र	वडाबेन्तो
इस-इतमर	द्वासीम	हासर	श्रासिक्षित	हासन्डो
शासेर	हासेईम	श्रासेक	<b>कासेकि</b>	हासेन्त्रो-
क्षमाच्य	इसापीय		इसाविद्विष	हसादन्ती
श्रमानेश	रसावेद		इसावेडिड	इसारम्तो
बास्य-बोस्कर्	बोस्स्रोध	चोपसङ	बोस्छिद्धि	वीस्थली-
बोस्स्वेद	वास्तेर्वम	वास्त्रेड	बोस्छहिर	बोस्रोन्डो
		बोहाबर		बोहाबन्दो
		व बोह्यबङ	बोह्यबेहिर	बोहाबेन्द्रो
चाहिषद	बोह्नविद्रा	न बोह्स कि ह	बोछिबिहर	बोह्यबिन्दा
सम् सामद	मामीम	मामड	मामिद्रिः	मामन्त्रो-
मामेर	मामेई म		मामेदिर	बामेस्त्रो-
भगावर	समापीम		<b>अमाविदि</b> इ	ममापन्ती-
ममावेद	ममार्ग्हम		<b>ममावेदि</b> इ	समायेग्यो
मसाइद	ममाद्यीभ	ममा ४४	<b>ममाहिदिइ</b>	धमाइम्त्रो-
मे— वेशाइ	वे मसी	नेमर	नेप्रसिद	नेपन्ता
नेपर	भेपमी	वेषड	मेपदिष	विभागा.
	नेमानगी		मेजाबिदिर	नमादन्तो
	वेभावनी		नेमाधरिर	नेश्रावेग्दा
नेमविद	नेजनिमी	नेमपित्र	नेमविदिद	वेजविग्ती-

चारुमोनु क्रेल्क हेल्बक्टबन्त सक्त्यक्रमृतक्रास्त वटमानक्रूरत, विभाइरन्त धने विभवन्त्रंतिष्ट्रतन्त करन् होत तो प्रेन्क अर्धन पूर्वे च्चेता इत्तरोत्य प्रापनो समाजनानी नाम छ अने नमणि म्लाइतरण <sup>कृ</sup>तु होय ता युक्त पातुनं 'ब्रहृत्ति' प्रत्यय कवादी शृतकृत्रत्यना प्रत्ययो रुपादनाची बाग क जनवा उपाशन 'का' वो बाह' करी शूनहत्रारुनो मन्दर काहाजाती एवं बाव छ. अम---

**इस्+मावि+ध इसाविध** इम्+थ इासिय कर्+मावि+स=कराविशं **कर्**नम कारिश

इमापावर्त्त शमापितं. े कामार्थ करान्युं

4-47. 4-F

<del>}-</del>₹ कार-कारिङ कारितं कार-कारेड कारेत कराव-करावित

करावित कराग्रेश कारिस कारेम

कारेडमाय

कार-कारेलय कराव-कराविचय <del>कर सिं</del>ग करावे-करावेश्वय करावेथ क्राविक्रण कारेकव

कार-कारिक कारे-कारेक कराय-कराविक क्रमाविक्रण कराव-करावेर्त करावेळण

करावे-करावेज

चार-कारिक्तव

**₹**1₹--ब्यारिङ्ग्राण

कारको कारिकाको कारेग्वा कार्यस्थम्बो करावस्त्रो कराविस्सन्त्रो

करावेग्ता करावेशस्त्राची कारमानो कारिस्समानो कारेमाणो कारेतस्समाणो कराषमाणे कराविस्समाच्ये करायेमाणी करावेदस्समाजी

ल—ह.

कार्ख

कार्ध करावर्ध

करार्वा कारन्ती-स्था कारेसी-का

कारे-

कराब- कराबिडमाण कराबन्ती-ना कराब कराबेडमाण करावेनी-ना कार- वारिलु कारमाण-ना करा- करोबलु कराबमाणी-ना कराब- कराबेलु कराबमाणी-ना करावे कराबेलु कराबमाणी-ना

विष्यवे क्रमंगि करात

कारियम्बं कारेयम्बं कराविषम्बं करावेयम्ब कारमीभं कारेमणीय करावणीयं करावेममीमं कारिकामं कारेमणियमं, कराविषमं करावेमणियमं स्वाप्तमं वर्षं वाट्योगेनं नेष्ठ क्य नेस्य करी क्रान्ये व्याप्त

वर्ष बाद्यमोनुं हेरक बंध देखर करें हैरक कर्मीनि समें माने क्यो

पर्यागी अब वर्धनि के मार्व प्रयास करते होत हो सन्य साथ-साथे ए अवश्येत लागे अब युग्त साधि-प्रवा स्थान में हे तेलार व्येक्ष संबंध हुने क्ष्मिर वर्धनि-मार्वय-मि-एका अवश्ये कालकेने त व कक्का उपयोग्ध काल्ये स्थानार्थ तेला कालकेने त व कक्का उपयोग्ध काल्ये

रमत्र वीत्री रिते पण प्रेरण स्वयं भूते पण प्रथम सम्पर्क

4 (-4 16) [

+मानि असन समामां पूर्वता सामो स्थापन कोई स्वस धार्न है-इन्तरीमा–(बावनिन्ताकोल सं कार्यानेओटी देवसकार्य हुन सा ई नित्र उपालन 'स' हान हो। आ' करी 'हुँश—इउल' अस्वय कमाणनानी मेरकमानि-माव क्यो बाव छ. कर्+मावि करावि+ईस=करावीस कर्+भावि-करावि+इस्त=कराविकत **कर्–कार्+ईग**=कारीम कर्-कार्+इज्ज=कारिज्य माण्+याचि काणावि+ईक=जाणावीभ बाज्+बाबि+जाजाबि+इस्त्र-जाजाबिस्त्र बाप्-ईय-हायीय जाण्+इरज=श्राणि**र**ज दा-मावि दोशाविःईम-दोमानीम हो+माधि-होभावि+हरत्र=होमाविरत

हा+डेंश-कोईय को शास्त्र का असार <del>गा</del>

क्या राजी केवा इस-इसारीम इसावित्रत शासीम शासित्रत्र-मगर्ना क्यो वर्तमानकाळ

सा प्रमाण क्षत्र तकार करो त त काळना पुरस्थावक प्र<del>मान</del> समाग्री

पश्चित्रकार 43-इसाबीसमि इसाबी भामि इलाबीयमि क्रमाकिकारि वसा

द्वासीमनि द्वासीमानि, हासीपमि

बहुबबन इस(बीचमी इसाबीमामी इसाबीयमे इसाबीयमे इसाविज्ञमो इसाविज्ञामो विज्ञामि, इसाविज्ञोमि इसाविज्ञिमो इसाविज्ञोमो हासीममो हासीमामो-डासीहमो डासीपनो हासिरत्रमि हासिरतामि हासिरतमो हासिरतामो

द्वासिक्केटि. हासिजिया हासिज्जेमी ( ए प्रमाय-'श-म मत्त्रमर्थ समन्त्रा ) री-१ इसार्याक्षक इसार्वाप्रया इसाधीयह इसाबिग्डसि. इसाविजिल्ला, इसाविज्ञह हासिमध्य हासीप्रया, हासीयह दासिकवि द्वामित्रिवत्या द्वासित्रबद्

(ए प्रताब-सं प्रताबनी नमञ्जू १ टीपु इसाबीमा

<u>स्वाचित्रक्र</u> हासीमा <u>हामिस्टर</u> (ए इसच-'वं प्रचक्र) समञ्जा)

र्वापुः रे हमाबीपरब-रखा हमाबिरबैरक्ट-पदा र्मार रे हासीपरज-रखा हासिरबैरज रखाः

र्माः । इसाबीयाँग, इलाविज्याँग कार्य । हासीयाँग हासिज्यांग

वर्षेत्र | इसाबीय- इसावीरस्था क्षेत्र | इसाबिज्ञ-इसाविज्ञित्या इस्तीय इस्तिरस्था

मृतकाळ

ज कर्मा---

इसाबोर्म, हमादिनिवस दाशीरंस्

इसाबीमिनिन्ने इसाबीहरे

हासीयन्ति स्त हाशीहर

हमाबिश्वास्तिनले इसाबिश्विरे

हासिक्त्रिक को हासिकिट

#### विधि मात्रार्थः

पक्षपत्र बहुबद्दन <sup>प पु.</sup> इसापीशमु, इसा **द**मावीधमो इसायीमामी वीमामु, इसावीरम् इसावीरमा इसापीएमो हसापीणम् इसाबिज्जमी इसाविज्जामी इसाविस्त्रमु हमाविज्ञिमा इसापिउडेमी इसापिश्वाम इमाविरिज्ञम् इसाविक्जेम हालीयमु हालीयामु हालीयमी दालीयामी दामीरम् दासीणम् दामीरमो दामीरमा दासिरक्षम् दासिरकाम् दासिरकामे दासिरकामी

हानीस्य हासीराय हानीराये हानीराये हानीरायां हानिरुत्तमु हानिरुत्तमु हानिरुत्तमा हानिरुत्तमा हानिरुत्तम् हानिरुत्तम् हानिरिरुत्तमा हानिरुत्तमा गैरेड हानायां हानिर्पत्तमा हानिरुत्तमा पहि हानायां हानायीय हानायीयद्व हानायीयन्तु हानायीय हानीयन्त्रह हानिरुत्तह हानायीयरुत्तम् हानायीय हानिरुत्तह हानिरुत्तह रुत्तायां रुत्तम् हानायीय हानिरुत्तह हानिरुत्तह

मार्च इतायावन्यक इसायीपगद्धि इसायीपग्र इसायीपगद्धे इसायीज्ञ, हमायीप ( भा अपं-इसायिज्ञ-इस्मिय-इसिग्ज अंका पर मनगर्ग )

धे इ हमार्थाभग हमार्थाभगु हमार्थाभगु दमार्थाभगु दमार्थाभगु दमार्थाभगु दमार्थिभगु दमार्थिभगु

इसापीपरज-रका इसाधीपरक्ष इसाबिरक्षरज्ञ-रका इसाबिरक्षरकर इस्मीपरक रका झर्मापरक्षर erfecendum aus merfecentums

# यक्तियाकाळ ह्रमावि हाम

प्रकृतका इसाधिम्मं इमाधि

रसामि, इमाबिहामि, इसाविदिनि द्दानिस्तं द्वासेस्म हासिस्नामि हासे स्सामि. शासिकामि बासेकामि. द्रासिक्रिमि असेक्रिकि

इसाविक्सामी इसाविद्रामी इसाविक्रिमें, इसाविदिस्स इसाचित्रिस्या. हासिम्मामो हासेस्मामो हासिहास हासेहासी दासिदिमी दासेदिमी, शासिविस्ता हासेविस्ता द्वासिहित्या दामेदित्या-(इ प्रमान-'सु स' प्रतक्यें)

गै प इसाविदिनि इसा विस्ससि हासिहिस हासेहिसि शासिरसंसि शासे समित

इसाविति इसाविस्तर हमाविदित्या शामिक्टि शासेदिव द्वासिरसङ दासेस्मद बासिबिट्या हासंबित्या

(ए प्रमाच-"से" प्रत्यवर्ग) ÷महिरकात को कियारितकाँगां 'हैंस-दुवक्ष' बरकां छला। क्यों मादे 'हिम-बुड्क' धरना क्यातना निगा जानका अ पुरस्तीतक

इत्तरों क्यापन है, परिविध १ जि. र

त्री. इ. ह्याबिद्दित ह्वसायि ह्याबिद्दिग्जि ह्यायिस्सरित दिय. इसायिस्सद, ह्यासिद्दिग्जि ह्यासिद्दिग्जि ह्याविस्सय, ह्यासिद्दिग्जि ह्यासेस्सरित ह्यासिद्दित ह्यासिद्दिय (प्रमान-पिते-द्दे ह्यासिद्दित ह्यासिद्दिय, प्रमानवातिक्या ह्यासिस्सर ह्यासिस्सर

हासेस्छइ हासेस्सण नर्व व } हसाविश्व-प्रजा गर्व द } हासेग्ज-प्रजा

**व्यातिपस्य**ध

## Imalia ded c

यदुवसम

हमापिग्रीओ

दासन्सीधो दमापिकार

इसाविम्ता इस्मन्ता

पद्भवयन \$ हमायिग्ता हामग्तो श्री हमायिग्ती हासगी क हमायिग्त

दासस्य

द्यासम्ताइ वर्गरे करनि क्रमाण

वर्ष } हमावित्रक्ष तका, मांचु } हासेत्रका तका.

<b>भग-</b> गरी पर.	मृ कर
कर-करावीय-कराजीका	करातीगडेंभ

कर्-कराबीम-कराबीशह कराबिन्ध-कराबिन्धह, कारीम कारीमह कारिन्ध-कारिन्धा

कराविज्ञईम कारीभईम कारिकाईम पडाबोमईम

पश्चित्रज्ञ प्रवाधित्रज्ञः पाडीम-पाडीमः पाडित्रज्ञ पाडित्रज्ञः हो-होमार्वाम-होमाठीमः होमाधित्रज्ञः होमाधित्रज्ञः

पद-पदानीय-पतानीयाः

पहाजिज्यह्म पाडीम्ब्रीम पाडीम्ब्रीम पाडिज्यांच होमावीमसी-ही । दोमाविज्ञसी

होमावित्रत्र होमावित्रत्र हाईम-हाईमइ होइन्स-हाइन्तर, (इस) दीसावि-दीसाविद होमावीमसी-ही हीम होमाविज्जली होर्गमसी-होर्गजसी न होस्पविज्ञम

योस-नीमा (मङ्ग) संप्यासि-सेप्यासिष् संप्य-सेप्यद्ग गदाबीम-नाहाबीमा, सङ्गीवन्त्र-गहाबिन्तर, गाहीम-नाहीकर

गाहित्रज्ञ-याहित्रज्ञ

दीत्तर्देश वेप्पाविद्देश वाप्पूर्व यहावीयदेश गहाविश्वदेश गाहीयदेश यादिश्वदेश

रीम वनरे बालुआने माटे इन्छ १५५ है सुबा

कराविद्याः } कराविस्माः }	
कारिहिए कारिक्सहः }	

काग्स्तो-स्तीस्त कार्यक्रम-उद्या पडाचिन्तो स्ती स्त

হাও

शिया

पद्माचित्रज्ञ-श्रमा

पाइम्लोस्तीस्त

बोधाधिक रहा

होम्ला-स्ती-स्त

बीमाधिरत्र-रत्रा रीमक्तो-नी-कं रामेरत रवा

द्योगस-जना

श्रामापिन्नो-न्तीन्तं

बीमाविन्तो न्ती-स्ट

ये पापिग्ता-स्ती-स्त

धन्नाचित्रज्ञ-रजा

धापना -सी -स

पाडेग्ज- जा

कराविन्ता-श्ती-स्त करावित्रम-रजा

पदाविस्सा ( पाडिस्ट } पाडिस्मर द्योगाविदिद डो माबिस्सइ

दोमापित्रवर होईयड दोडिय न डीइरबट रीमाधिङ वीसड

येपाउ

गाटो घड

गादिश्यह

वि अस

क्यवीसर

क्पविश्वत कारीमङ

कारिज्ञड

पहासीधः

पदाविस्त्रत पार्वामङ

पाडिग्बर

दोभाषीमञ

क्षाम्पर ( बोसायिक्रिय बीमिटिइ चप्पावित

<u> भणापिहिंद</u> धेन्याविस्मर 5 धन्तिहर

गद्दाचीधः

गटावित्रकर

प्रिक्शिक गदाविदिद गटाधिम्मर

गादिस्या

गादिदिर

धेर्पश्य-श्रह गदाचिग्ना म्त्री-म्लं गटाबिश्य-रक्त

गादम्मा-स्त्री-स्त गाद्राज-उत्रा

#### **येरक फमणि वर्तमावक्रवृत्य**

प्रेरण करीचे कंप्स वर्तमामकुवन्तना प्राप्तको सम्बद्धानी प्रेरण करीचे वर्तमासकुवन्ता पाच छ

परिकार क्षितिय

करावीम-करावीमानो-मानो करावीमाई-व्यी-न्या-मानी-करावित्रज्ञ-करावित्रक्रमो-मानो करावित्राई " " कारीम-वारीमानो-मानो करावित्राई " " " कारीम-वारीमानो-मानो करावित्राई " " " कारिज्ञ-कारिज्ञक्ता-मानो कर्रावित्राई- " "

- प्रस्कानी वाल्यास्थ्यामा गुरू किकानो वर्णा वीमी दिवाचि के
  शीती विभाक्तिमा मुख्या छ जेम सीक्षी पार्य रच्य पे
  गुक्क पैराक करेव कि गुक्क सीक्ष्म का गर्य रचावेद
  (गुक पिराक करेव कि गुक्क सीक्ष्म कीस्या का गर्य रचावेद
  (गुक विभावती पार्य प्रव रचावे छ)
- भारतम-अवस्थि चानुसीची तास्त्ररकार्या त्मन करपर्वर्थः
   भानुबी धरीत, द्वान मोत्रक स्वर्ववस्था धानुबी सर्वे केन्द्रल-पास गर्नर धानुसीती त्रक वाक्क क्लामा सूर्वश्रको कर्ता गीती निगणियां त्रापः सूर्वत्र के नेम----

कृति— हैरू— बाबों बारा पित्रा वार्त बण्यावेद-बरगण समयो तिरक्षण पढ़ेत स्त्री लागल तिरक्षणे पड़ावेद-बरगणंड-समया विदर्शल आगरियो समये विदरावेद-प्री-बय सावगो तनार्द कार्ये-पुष्ट सावगी तनार्द बारायर-राज्य पुष्टी बाहोद पित्रा पुण्ड सावगी:-प्रीमणं

#### अबको क्रियपश्चिम देवलाइ-क्रमानो वच्छे क्रियपश्चिम देवलावर सीची परिचय

चंद्रकार्या केम स्थारकार आदि जन्म पर्वत्याओं हे. हेम् जाहरमा तथी पत्र केरणीयस प्रक्रियानो सभी आप आरत्या रेप्ट- वानों कर है. है पूर्व चतुंच कांविकाला निवानुगन पेरका कर विद्र बार प्र वार्त-— सं मार्ग सानत-मृतुप्सते-मृतुग्वार | निवान वरे छ. मृतुव्यिका-मृत्य मृत्यव्यार | निवान वरे छ. मृतुव्यानाण-मृत्य पिपासति-पिपासद निवाल प्रकार च प्रविचित्त-मृत्य सुमुक्ति-सुदृक्तम् रामग्री एका वर्ष छ. सुदृष्ण्यस-मृत्य किप्पति क्षित्रप्यान्त्रकार वरण क्ष

शुक्पते सुम्मूब्वरू-वेश करे ह. सुम्मूब्य सुम्मूब्य तांक्ष्मते १९३ व्यापन-व ह. विकिस्तिति विक्रमा-वर्ग करे छ. विविद्यते विक्रमान्यत्व करे छ.

विविश्व विविश्वका=धाः करे थः विविश्वसाण, विद श्वकाराण-विद्यास्थ्यतं करे व्यवस्थान-विद्यास्थ्यतं करे व्यवस्थान-विद्यास्थ्यतं व्यवस्थान-विद्यास्थ्यतं करे व्यवस्थान-विद्यास्थ्यतं विद्यास्थ्यतं विद्यासाण-विद्यास्थ्यतं विद्यासाण-व

यहजुगन्त-बहर्काति-बह्मस्भातार वर्ज ॥ बंदमत बंदमाय-६ क बंदमाय-६ ह

वंकसियम्ब-स इ. वकसिय-स इ

नामधातु (समशाधते) समयमार } आक्रंत्र करे ह समयमागर (गुरुकाषते) गुरुकार गुरुकाणते

गुः सामग् )
(सोडितावरों) संदिसाद् } तत्त्व वात्र हे.
(स्रादावरों) अमरात्र } स्मार्थ जम बावरत

वि (वस्थाम्ब)

भविज्ञो (शब्द )

व्यक्तिम हि. (स्त्रक्रित) वहेतुं.

स्थेतं, स. अशाव सूष गर् औ. (की) कागर, रेगरी राज्युष्य परस्प. सम्भोपयः 🕽 बार यही. सपान्त है वि (सन्तर्व) व्याप शिक्षण (ग्रह) वर-वयारिय 🕽 नारे है. वोह र (नम) का मयन माराह्मा औ. (माराक्य) <०कोरिम स. (चौर्व) चोधै बसायर र (बसेस्र) वरोश क्षतासम्ब हैपना आवत्रतीय (त. (पालीप) क्ष्मद्रम (१४८) प्रभट गावा. बाजीय े बीह्म प्रमुख ক্ষলিত্র বি (পুনিও) এবুলান্য सोमा रि (क्षेत्र) समय, समय-ननेवा नानुं, बबु हुत्त वि (इन्ह) उन्दिए, कोन्द (कम्) इ.स. पील 41 alia. वि. **ध-राष्ट्रारो**. वचरिम ५. (वासिन्) वाली क्रप्रधा सी. (क्रमक) क्रम्य, विमिर् व (नम) आंग्रजी रोप, MATERY MATER कुमरबाक्ष रे छु. (कुमलवान्त) क्रमारबास र जनारवात्र राजाः ब्र्यन्य १५ व (रेन) देन ब्राय-प जान जान केवस ६. (९३) केवळाल लाक्ष (भग) कि यू वन सर्वेच्या चासर (वं) गेग विद्यंत्र चरकां, महाभ पु. (वर्तक) मट. न्या<del>क् मण्य वै</del>रम शनम चीर्व क्ये देना क्ये स्था घरमान रंदुरा में 'घ' व्यक्त तथी पूर्वे 'घ्र' सुधव के बेरिक (स्केम्) निवा(स्वाह्) नेश्वं (नैत्थम्) क्षांच्यं (कींग्र) निप्तामा (स्ववान ) शक्ति (चान्**र**)

पर्देश 🗣 (प्रक्षिप्टा) प्रक्रिप्टा कीर्थि काशर. पपरच ५. (पराच) पराचे वस्ता. प्रयो अर्थः पद्दिज न (शिक्षित) करोज पास म (पा-4) स्मीन पासं परक्रम न. (रापडमें) राषकर्म वैषय म. (क्रमन) क्रमन. मयिम र २६ (स्टब) सम्ब मध्य 🕽 शुक्रेर बीस्थ बीग मडह ९ (सुगुर) सुगट-मृत } वि (मुक्त) सूंयां रपदाप म (रम्प) एन पियंभिय वि (रिकृष्टियन) विश्वितः वेडग्न } वेडरिम } वेडसिम } सोर्द्य ी (व स्त्रक) स्त्र alla.

निम्पूचा वि (निर्दुत) गुक्रशीहरा.

**खमजोबासय** 🛭 (समनोपाग्रक) सद्भ य. (लस्प) लस्य खब्माब पु. (बब्माब) सारा शान सत्ता विद्यमान सरवद्य न (करकर) शरमपूर्व सरप्राचा नि (तमान) प्रम सासय मि (सम्ब्रह) निस्थ अविसमार

संपद्दमरिंग प्र (सम्प्रतिनरेन्द्र)

सायक्ष 🎚 (सक्रम) पूर्न सर्वे

संत्रति राजा

मारक.

सदिन

चेम त सिवहेम व (शिवहैम) मान्यतन् मास रा. स्क ९ र. (सूत्र) द्वार शुक्ता म्बन्धि

निद्धराय ५ (निद्धान) धनाने

नामासिक शयो

कीयात्रीबाइ (जीग्रजीवादि) जीव शहीर मादि सर पहाची पीर्यकृष्य (शहनक्षण) प्राप्त पाणिगण (प्राप्तियत) बीनोत्रो नमुदाव संबंधक्यह (सनोबद्दन) सक्त द्वित्र...

मरणम्य (तम) मन्त्रो धर.

ųч

वस्तिवपुष्ठ (श्वावेरपुत्र) वस्तिमसम्य ) (१,नगश्यान) वुस्ताससम्य ) वुप्तानक प्रमाससम्य ) वुप्तानक प्रमाससम्य ) वुप्तानक	स्वभावर (कर्मर) तर्म वर्ष पूर्व सकुद्वेवच (तकुरम्म) इरम तर्दि				
स महो (छन) शांच भावर्ष तर्हता	म्पय । पुष्पकर्श्व (वे) वारंगार,				
स्पर्मश्रमानि अर्थे	खर्म (सक्य्) पोरा, पोजकी सक				
÷सकाहि (६ सम्स्) नेवारण सर्वे विशेश पूर्व कर	सम्बद्धाः (सर्वमा) सर्वे प्रसरे इंतुष्य सं तृ (इत्स्र) हर्वाने				
यातुमो					
वाचु - नाच्च् (का-ध्या) शिका- कारणे वरणा कारणे वरणा कारणे वरणा वरण् (का का काल कर्मु अपनाम् (कार्य-) ध्याप कारणे शिक्य कारणे शि	बारा (जन्-जन्) भोण गोर्ड अन्य (शराम) साम कर्ड अवस्का (कर्न्ड) वीर्स्ड बार्च (कर्न्ड) वीर्स्ड अवस्का अवस्का विरोध (स्टेंब) देवाम् अवस्का विरोध (स्टेंब) देवाम् अवस्का				
अवस्थाव । वर्गमु शाम् (पाप्य) शीयमञ्ज अवस्य । (कारव) शीयमञ्ज अवस्य । (कारव) शीयमञ्ज, वरीरते । अवस्य ।	अपकाष (पायम ) बाह करी, बाह्य मध्यम् निस्माण (भिरम्मा) कर्म्यः निस्मा रम्मु				
<ul> <li>मा स्थापन पोतर्ग प्रति विस्तित स्थाप के</li> <li>भारत विस्तास वासुनो अस्त्रमा क नक्तान के</li> </ul>					

अमिस्सार (भिर्+शस्य) 🖘र अपश्चिमाण (प्रति+भाक्त्) विश्वास श्रीसार 🕽 करमधो ×पहुच ) (प्र+रवापन् ) मोकस्तु फेब्र् (स्फेटन) निवास करको अपद्वाच | प्रस्वान व्यक्त प्रारम मैस (भूब) योजन कथ वह्रमाण् (गुगलन) सम्मन ×पथ्नाव (श + बानवु) वीदा करक मानद करती क्षराजनी ×रोमन्य १ (रोमञ्जर्) गम्बेसनु जन्मोस ६ पसम् (प्र चसक्) चानित करनी परमुपास् (गरि+कप+आस् ) सेवा ×विषास् (मि+गरम) मिग्रह सकित काबी करको परिक्तित (परि+निन्तन) विस्तन े (बेब्ट्र) बॉब्स्ट्र करो-करब निचार करतो ×परिमास्त्र 🛚 अपसील (प्र+सावन) प्रसापना सिह (गृह) चासु हक्क करको सह (प्रका) श्रुवी कानु

माइक वाक्यो । भावकार्य मेव् इत्ता न कारवेत्वा ।

पारपक्षकं सीर कस्स हिययं न सुवानेत । वसर्वता पंडिमा य जे के वि नरा सति ते वि महिसाय संपुद्धीतं नवाविज्ञानाः।

महं बेउमारिक फेडिमि सीसस्य बेयर्ज सुजावेरित वहिरं, यह जेमि ठिमिरं पजासेमि चसरं, उम्मूखेमि वाहि पसमिमि स्छ नासेमि कखोपरं थ ।

साहूमं देसवा पि हि नियमा पुरियं प्रवासेह ! रच्या सुयच्यारं बाहराविकण अध्यको महत्रहेम्म सहराई बेह रक्षाः स्थलानि य स्थालीमहेना !

संपर्तारं के समझाप विष्णीप जिलेसरार्थ वेदसार कराविशारं। समस्ती मिपन् च जिले च जिलावय, च यय, व ययावय । समजोबासगो परद्वाप महोच्छने सम्बे साहस्मिप मुंबावर्डम । कर पिभा पुने मर्न्स पढावंती ता बहुत्तजे सो कि प्लेकिं वर्ष स्टेन्टो ।

नरिषेण तत्य सिरिमि चेहम निमाबिये। चिमराजं च्यातियणं वदस्मित्यं वस्माबियायं जो उद समह तस्स अस्य आराहणा जो न उदस्मह तस्स नरिस आराहणा तथी अध्यक्षा चेव वदस्मियकं।

नात्य साराहणा तथा सत्यसा चन स्वसंस्थय । परिसा क्रम्यमा परस्स दाढण सन्यक्ष ग्रेडामो कि निस्सारि कृता है सम्बद्ध न सन्तेय ।

सहो कहं कहं बलुवेबपुको होऊज सरक्ष्यकार्ण मनवहाँ क्षिप्त भारते विकासिहामि । हेमसंबद्धरियो पासे देवाणे सक्ष्यं मुक्किय हं सम्बर्ध

वित्यपराणं मंदिराह कराविस्तामि वि पहण्यं कुमार बाववरिता कासी । सो पहित्रां मामसंता त्रियपमा परशुवासंतो सुवित्रणं परि वित्यन्तो झीवात्रीवाहणा तव परत्वे एकक्तो एक्की

चित्रपाने होपात्रीयाहणा तथ प्राये रक्कारो एक्का विताय पाणिगणे बहुमाणको शाहमित्र क्षेत्र, सम्ब परेण प्रमाहते त्रिणसासकं कार्क गरीह ! पमो रक्कस्स शोग्गो ठा छति रक्का ठविनक स्वसाहि निग्ध

मेडि अमेडि ।

पिद्रं बहा कांकि न कांका तहा एक्सेमि नीसारेमि व ।
को माराज्ये पक्तो सर्पय कार्यता कहं तरप कार्ने !
गुरुषा पुरान्ते अगुमासियों हि न दुर्णज्ञा ।
प्राप्ता पुरान्ते, मारिज्ञीतस्य होड कार्यक्रो ।
प्राप्तान के दुन्त, मारिज्ञीतस्य होड कार्यक्रें
कार्यज्ञाय स्वाद्रकुंबयस्य पुरिस्तस्य प्रवाहके होड

इसमसमय पि इ देमस्रीका निस्तविद्धप क्यवाई।

सम्बन्धां नीवव्य करावियो कुमरवाकेण ॥ <॥
ऐविस्ति करावस्ति य स्वित्यं नीवित परिवादिति ।
करवेज य स्ति विद्यं मर्गातित स्व वांति सम्मानं ॥ १॥
मरणमयस्मि उक्तगय, वेवा वि सहद्या ॥ तारिति ।
सम्मो तानं सरणं गार्चि वितिष्ठ सरण्या ॥ ४॥
हम्मण एरप्याये करवाणं नो करेड स्थाणां ॥ ५॥
सम्माण एरप्याये करवाणं नो करेड स्थाणां ॥ ५॥

# गुजराती पाच्यो

- निक्को उपाध्यावनी पार्च प्रत्रोमें तत्त्वोर्ज इल व्यय करावराम्यु (तिषद्व)
  - निश्चाम श्रेमण्यस्त्रियोगं यसे व्याच्याव स्वास्त्रं (रम्) ठवी सिश्चीम ए प्रमानि ठेतु शत्र स्वास्त्य च्यानु (रम्)
  - माग डिग्लो गुरुमोने गोखनी सूखे संस्थार के (सुण्) समें संस्थानीने पछी तथा कमार्थ क. (कार्)
  - चे पुरत्तरावा निवास को € (कि-नास्) य परक्रोकमा सुध स्थित को वोच वर्ष के.
  - मानाव कियाने राजिन क्ष्मा ख्रहतां उठाउँमे (वड्ड) हमेदां मान्यम क्याने के
  - स्वास्थ्य कथा क स्माद्रे राजाने सने समान्य क्रोफानं मस्त राजान् वाटक देखाउपु
  - (श्राय-स्थलक) सने त श्रेत्राच्यां नदे केमस्त्रान स्थात कर्यु • पिता पुत्रोने विश्वन गुरू पालेची विश्वासम् वसावे हो (सणुसाम्)
    - प्रश्ना पुरान प्रश्ना क्षणा काल काल के (ब्रायुक्ताम्)
       प्रश्नाम वृद्धिकार्था सम्बोग कालमे वृद्धिको नगर श्रव सावता प्रश्नाम वाच क्रक्यो (ज्ञांसक)

< राजाए जगान्धान्ये केवाबीने (बरहर्-बोस्स् ) नरने के राजे राज-पुत्राने गीरिकास को म्याकरणकास मनानी राने ते वक्को क्षेत्र क्षत्रकम्यु इति (सक्क्ष्य) हो तै

मध्य सन्त.

 मराप्ताय नामा वास्त्रक्रेने वीवक्रवना न कोइए (बीड्) १९ देर्बकरो क्या जीवोने संग्रात्वा वंकालंबी क्षेत्राची (सुप्) शासर द्वाचानी हे (अप्पू)

बंबोरी नोरी कार्ड रेसोने राजाए विका करनी (वैद्) १४ इमारे नेली नीषको (असिनिक्काम्) वर्तनो त्यान <sup>करी</sup>

उद्याजना जानार्थ पासे संस्था प्रदूष करों करे दमा क्रमार्थि आदम करण्यो (शिवड)

संस्थानो खेळा सामु पुरुषो सुन्तर्यन्त्र शिवता बीचाने हे. (आन)

१६ के माईबान कमें मिजोने करूपर सवाची गारे 😻 (सुरुख) वर्षे वच्छते सामस पाने मोतानु साबु क्य कराचे छ (बिंग्ड्) वे साय र के.

**चुनी** नवकी राजीए जानी पीठाया शक्तमार्थ कर कर सार्व जोजा कराच्युं, त्यार पत्नी वज्ञी असे कास्तुन्ता कारीने राम कारी

१८ इत्युत्र सम्बक्तनसः नेहीने जन्म सने मतन्त्रं चान महान्त्रे सने व्योने नामाने हे (आक-बोह)

१९ छात्र पुरुषे 👊 🐞 के कारणमीं श्रीपारे (देश) छंगारणार्मी मताहै हो. (धमाह)

क्ष्में मर्गोनो त्याल क्यो एक बीतराथ देखी हो सब ते व नर्ष

पारोधी (तथे) गुपाधक (सुद्र) \_-

# षाठ २१ मो

#### समास

सिल्म सिन्म अनुबाह्य राज्या सेचा बटन एक सर्चने जना-बनार में पर ठने नमाण बड़े छ.

प्रकृतमं सदान प्रश्नव महत्त्रनी मात्रक अची है।

त्रेम अरहणाने इत्य अपुरुष कर्मधान्य बहुजारि हिया सम्बद्धीमार गाने एकपुर एम लाग अक्षान्य जमाना साहै छ। त व अमाने माहणाने च त्रेमक—

ंब्रें य 'बहुव्योद्दी 'कम्मभारथप 'बिगुयप चेप । 'तत्पुरिसे 'अम्पर्दमाने 'वगसेले य सत्तमे ॥

#### १ इंद (इस्द) समास

न तह मुद्र कामना बीजा एक स्थाना स्थल बामी साथे मामन बाद अवका को परा नामा एक एक नगए जाये मोटी मामन का बरी साथ से से हिंगा के (का मामना की बचा मामन पुर्व हुन्य से एक्टि एक्ट विकास प्रमन्त होते सा से सामान्य करा। माने का बा बसे बोई के उत्तर सुर्व का अन्य करों के उत्तर सुर्व करवानों कार्य करवानों की है। (मै. ) पता)

 इन्ह्न् तमन ब्युश्यम्यं नाग्यं च कम एत नमसे प्री काण श्रमभं नागं थं उतः —
 भातिमसितियो (सितिनग्रस्ती ।=सिताम सं नेत्रं स-

श्रीत्रण्य को स्थानित्रण उमहरीस (क्यमर्वार्स) अवस्था स्थानित्रण

वने रीगीतंत्र**र** 

हेबराजवर्गसम्बा (वेवदाववरण्यको) न्येषा स वापत्री य गोदाला य-को शको को कंसो वाजरमोरद्वसा (बाजरमुद्धिता)-बाजको स मोरी स्व वेशो स-मान सोर को वेस सावगरावियामा (सावकमाविक)-सावगो स साविया य-आक को मानिस

देशदेवीकां (वेषदेव्या)-देवां थ देवीको झ-देशे कर्ने परीजो सास्विद्वको (अञ्चलको )-सास्य स वह स-रास्

पचपुष्पप्रसामि (पञ्चपुष्पप्रसामि) यस स पुष्पं स यस्त्र सन्ध्य प्रपः सने सम्

प शाले-जीवासीका पासकीरा समक्समणीको सन् मिताकि निवासकाकामी कपसोवमकोक्वावाणि श शिक्ष करी क्षेत्र

श्र बद्धक स्मान अवारे प्रमुद्ध कण्यता होच के ज्यारे हो मह्मूमा प्रका क्षत्रीके निवार क्षण्यतो होच कारे सम्बन्ध इस बण्ड प्रमान थान का सा स्मास प्रकारकर्मा कवे प्राथ न्युंक्तकीक्ष्मा वान के.

(बा उमलको प्रवाद प्राक्षणा व्याव कर वेकाव छे.) बैस-कराचपार्क (अश्ववदावस् ) असल खादार्ज ख पर्यास समाहाची तपर्धन्नमं (तपार्धयमम् ) तथा स संन्नो भ पर्णस समाहारो माणदसणकरिक (हानवर्धेनवारिकाम्) माणं व दंशण व वरिकं स पर्णस समाहारो रागदेशसम्बर्धोहं (रागद्वेपमबसोहम्) रागो च वासो स मर्थ व मोहो स वर्षां समाहारो

२ तप्पुरिस (तन्तुरुप) समास १ प्रदेमा निवासनी स्ट विश्वविद्यास्य पूर्वप्रदाना उत्तरपद सामे समाप बाल स्ट व्या मनामयी अनस्यद प्रदान होने हैं.

द्विरीग-मह्यका (प्रव्रमान्तः) मई पत्ती सियगमी (ग्रियगतः) विव गर्मा

रुप्रेम छाडुर्बदियो (साधुबन्दिरः) छाड्डाँद्र बन्दियो त्रिणसरियो (क्रिनमस्या) त्रिषेण सरियो पर्वरी-बृद्धमसुबन्धं (कृत्यसुब्रुप्यम् ) बद्धसाय सुबन्ध

क्तुर्ग-कक्षमसुष्यवर्धं (कक्षशासुष्यम्) कक्सायं सुपैपय मोक्कर्यः नाम (मोसार्थे बानम् ) मोक्काय इमै पैक्स-ब्स्वामहो (ब्रशनक्रयः) ईस्त्रयाची महो

पन्य-ब्रह्मणसङ्घा (व्हानक्षया) वृद्धणाला सङ्घा स्वरूपस्य (क्षानक्षयम्) अञ्चलामाधा स्वर् प्रजे-त्रिकेन्द्रो क्षिलिन्द्रो (क्षिनेन्द्र्यः) क्षिलाचा रहो (व्हानक्षयः) (व्हानक्षयः) व्हानक्षयः

ादेवत्याः ) (देवस्तुतिः ) देवस्य धाः देवपुरः )

१ नेपुष्क क्षेत्रसमी एकमी बाप गया गड़ी क्षेत्र क्षेत्रस्य रोगत परुष्क कांत्रस्ये एवमी वनस्य स्वेर्णस्य व्यक्त को क्ष्मराणी संपर हात तो विकास हिल बान क जान— विरूपमोची-निरामोगी (विधानीक) वृत्तुमन्त्रवर्ण-सुध्यस्य (इन्तुमन्त्रक्ट) कांत्रकारी एक्सस्य (एक्सस्य)

ं विद्वहादिको (विद्याधियः) विद्वहार्ण अदियो <sup>दे</sup>वहुम्हं (बयुम्लम् ) बहुव मुई धनगै-जिबाचमा जिल्लामो (जिनीसमा) जिलेस बसमी नायोज्ज्ञमो बायुज्जमा (द्वानोचतः) नायस्मि उज्जनो

रक्षात्रसंबो (क्याकुशकः) क्यास असमे २ प्राइतमां वे स्टानी शरिय विचापे काम छ (निकस

६ 🛍 सुत्रो 🕽 **इपा⊶किन+व**द्गिर≈क्विपश्चिमे जिल्लादिना (जिलापिए)

विकर्धमान्द्रभावते विश्वीमर्ग (निवेशर ) करिन्देंगरा-करीचर धर्शिमरो (क्वीधरा) साह+न्वम्माओ>साहबस्तवा साहुउपस्तओः (साहपस्त्रव्यः)

अभवात प्रंक्षिक के वर्ष प्रति विकासिक स्वर काले हा समित मनी नकी उपाध ए अपने 'जो' पड़ी पर्ध्य दल स्वर जाने सो परित्र काम गरि.

उदा+-क्यामि+जञ्जनहर=क्यामि सञ्जनहर (क्ष्य व्यर्वपञ्च) <del>वरि+</del>उदाबा=वरिजवाओ. (बान्स्वराच ) रवश्यर-सम्बंद (स्त्रोगर) संबन्ध-स्वीत्रवाध्येत्रमे सक्षितः (संवनेऽक्रियम्) देशी+सनुरो क=वेशे अधूरो व (वैनोऽनरव)

१ कमानमा संस्तु कृत्व वर्ग शैन विवास एउ**मे** इस्त सरतो की कर मन की विकासो इस्त कर प्रजोधने मेनू-**ब**दरे बान #

बच्च -दूरवनो रीर्थ-ततालीचा (एन्टर्निकतिः) नंतादेई (अन्तर्वेदिः)

# मन् तत्पुरुप

निषेत्रवायक सम्बद्ध का<sup>र्य</sup> स्वयंत्रा आर्थ्य यो नाम साथै प्रतास वाज क्षे.

षणकी काविया व्यक्त होत तो "क्ष" कते स्वर होत छ। अपनै मुख्यत हे जेसले---

सरेवो (सरेवा) म देवो । सजवार्ग (सनवयम्) न सर्परमं सविर्दे (सविरतिः) न विर्दे । सजावारी (सनाचारः) न सावारी

#### क्रममधारय (कर्मधारय) धमाध

विहेतन सावि पृथ्यत्यां विहेन्यादि उत्तरका सावे स्टास्ट नाव छ बा स्मास्टामें क्वा भाग कम पदा सरखी विस्तियां वरस्य है देवी का स्ताम स्मामाविकान व होत छ.

पर्वतः विश्वतानिकास्य स्थाप्तः विश्वतः । विश्

हिरिपरिप } (अरुप्तम्) **वस्तीयम अविकास (वस्ती**यनम्)

नस्तोत्तं -वर्दसांत (नवीभोदः)

गुल्लं-गुल्लं (गुल्लम् )

साम्बरियस (अलाधिकाँ )

विकेत्युर्गन-रत्तवडी (रक्तवडा)=रत्तो अ पसो वडी

मुंदरपडिमा (सुम्दरातिमा)=सुंदरा य पसा पडिमा परमपूर्व (परमपदम् )=परमं च वर्ष पर्य च

परमाय (परमाय) निरंपानिकार च पर पर प विदेशनिकार-रत्तस्मा मासा (रक्कनेताऽम्बः)रतो स पस सेम्रो ध

सीतव्यं कथं (चीतोव्यं कथम्) सीमं व स उन्दं व

निकेन्द्रांतर बीर्ग्जिनिको (बीर्ग्जिनेन्द्रा) वीरो स यसो जिल्हिने वस्त्रन्त्र्र्यन-बंदावर्ग (बन्द्रानवर्ग) अवेदो इव सावर्ग वस्त्रप्रेतर-बंदावर्ग (सन्द्रानवर्ग) अवेदो इव सावर्ग वस्त्रप्रेतर-बंदावर्ग (सन्दर्शना) अवेदो व्य

हिप्पन्ते (श्रिक्यम्) भुद्दं चर्च व्य हिप्पन्ते (जिनकान्त्रः)=द्विणाः चंतुः व्य व्यवनत्तर्शस्य = कानाविधिरम् )=वानार्थः

— जनावातातर (अक्षानातातरम्)-चनाप वैश्व तिसिर्द नावधर्ण (बानवस्म)-सार्ण वैश्व घर्ण

नावधण (बानबन्ध्र) प्रवसेष प्रवसे प्रयस्त्रम (पश्पद्यम्) प्रवसेष प्रवसे ४ विद्यु (विद्यु) समास्त

कर्मवारक कामन्त्र्य शहेलो कारनम लेक्यार्वक होन हो विद्य स्थान बाथ के जले हे छक्क्यार्यक के मादे एक्यक्यां सने न्यूनक्तिमां वाच क सने सन्हे का द्वार हो बीई कोई देशके रीई कि बाद के जले रूप क्यो होने हुँगछन्य बीर्तिय नाम्यों नेत्रों वह के तिस्रोमं विस्रोई (विस्रोकम् विश्रोकी) विष्टं स्रोमाणं समाहारोचि

मयतत्त (नवतत्त्वम्)-नवण्दं तत्ताणं समाहारोत्ति चडकसार्यः ( (बतुःकयायम् )-चडण्दं कसायाणं समाहारोत्तिः चडकसार्यः ।

क्षेत्रं देकल समझर दियु पुंजिक्या पन वन सं तिविगण्यो (विविकस्थम्) तिर्ण्ह विगण्याणं समाहारो सि

# < वहुच्यो**री (वहुवीरि)** समास

। अंदराज महान करों होत शर्षी सन्य करवी स्थानक आ स्प्रामानी होत्र कु तथी का स्थानीक कर बीता सम्बु विकास बात कु नवा विस्तित रक्त असे निम्न, दिक्का प्रसार बाद कु तम्ब दिस्तीत स्वामानी की की स्थित है विकेश हात्र सामानी आ नी का सक्ता है हमीक्स महानारे बात स्ट.सा

> कमकाणमा नारी (कमकानभा नारी) चरुमुही कम्ना (बन्द्रमुखी कम्या)

- श्रा सफलमा प्रवास्त्र वर्ग करीन तिसंत्य को छ क्यों पहाँमुं एर विकेश को छे काई अक्षा उत्तमान-सम व सम्वास्त स्वक पर पर पहाँ आवे छ
- ३ मा ममान में अवश चना समानाविकरण (समान विमन्तिसद्ध्य)
  - परानी बाव छ. ४ भारी उच्चान धमान विमनित न होत स्वी एवं व्या समान बाव छ

हते व्यक्तिकाम प्रक्रमीति वसे के

५ व्या स्थापना निम्ह करले जनगा सिनावनी सर्वे निजनितनी प्रमोग काथ हे. भेटेंच-परावाजो भूजी (प्राप्तकानो मुनिः) पर्स नार्ग वं सा

शुरोग-विश्वकामो वृक्षमहो (दिशकाम स्वृक्षमङ्ग)-विश्रो कम्पा जेव सो

विश्वारियको विश्ववी (जिलारियका>विका) विमा धरिगयो बेच सो.

वक्ते बहुदेखयो सुमी (महदुर्शना सुनिः)-महु देखने झसी सा क्य-क्षेत्रंबरा मुक्तिया (श्रेतास्वराः मुनवः) सेथं वंबरं आणं ते

दिश्यवया साहवा (क्सनता साहबा)=दिश्याई वयाई केलि ने

क्टमै-बीरनये गामो (बीरवर्ध बागः)-बीख नय सम्म सो-क्रवसीका ग्रहा (क्रवसिक्ता ग्रुप्प)=क्रब्रो सीक्रो बाय सा

भ्यक्रिक्यकुम्ब/--बळ्डायो अरही (बळ्ड्रसी अरहः) म्बक्कं इत्ये जस्य सो निवेचन्द्र्यपर-नीलकंडी मोरी (नीककच्छी मयुरः)-नीक्षा कंड्रे

अज्ञात हो। बागतर्मार वंद्रमुद्धी करना (बारमुखी करना)न्यान्हो

धव गई बाप सा. मनगरनपूर्वपर-करवाधवा साहतो (करवाधनाः साधनः) करणे

केस वर्ग कार्ग ते क्य पुरस्कविसेसी विजी (पुरसर्वनसेटी क्रिन) प्रमी

सामा किसेसो असर मो

निरुक्त अध्यक्ष आहे आहा. न्यां विश्व करी, वर्ष रोज रोज साथ शहर सम्दर्भ रोज रोष रोज शिवण रोज प्रमान राज्य कराये रोज बाथ स

ध मनुना (धनुषः)-कीच युना क्रमा वा प्रसदा (धनाच ) कीच बादा क्रमा वा धम मनुष्टका वृत्तिका अनुग्रहः पुरुष व्यक्ति प्रप्रका

क्षरप सा मरुवाल कर्ण (धनवण सुबि वर्गीय भारते क्षरस सा

निर्-निर्या क्रण (जिल्या क्रम > जिल्लाश रया जरण हारा निरादाण करना जिल्लाल करना) जिल्लामा स्टारा

चि-चिम्पा क्या (चिम्पा क्या)न्यस्य स्व क्या गा चिना सावम (चिम्पा सावस्य) चिनाम न्या स्था में स्व १ नगीमा भागिमा विस्के स्वीत्य सावस्य में चिर्मान) नीगिट नद्द सारिया चिर्मेद स्य स्वुका निमा नस्यह (स्वृक्ष विना सस्यहें)पुर्वित

६ क्राम्हेंबाए (अरुएपीबाए) समान अवर्ग नार क्षापुर प्रशासी अन्यर्गाए नाम पार ए का समान राष्ट्राया अने अनुस्कान्ति वार ए अने

ए का नदान रवाकार्या अने क्युंक्या क्या याद छ अन्त देच १रा रोव नो रूच याव छ यय-प्रयक्तिद्वार्थिर (उपनिद्यागिरि) निद्ययिरिका समापं

एप-उपनिज्ञिनिर्द (उपनिज्ञिनिर्द) निज्ञिनिरक्षा समापं १२६१२ समे सन् अनुनिर्दे (अनुनिनम्) निज्ञम् पट्टा०-अस्त राह्य सह-- अहस्ति (वधाराष्टि) सर्थि अवस्क्रियिन-राधि हुन्द-अहर्विह (वधार्विष) विद्वि अवस्क्रियिन-विद्यास्ति सहि-(श्रीय)- बन्द्राच्ये (अन्यास्त्रम्) मध्यमि हर्द (सासर्गि हरि)-स्वस्त्र विदे

'पर'--परनवर' (प्रतिकारम्) नवरं नवरं ति-रोव कान्तः परिवर्ष (प्रतिविजम्) विष्य दिन्नं ति-रोतः पर्यरं (प्रतिपृथम्) यरे यरे चि-रोव वरे

७ वरसेस (वरसंब) समाध

समय सम्बन्धीः

काण स्थान प्रशंनी काल पर्ध्य क्रमी एकाइ रहे हे स्मे सम्प्रेत तर बाव ह र एक संव काल्य.

किया (जिनाः) जिलों स कियों श कियों श सि-मैसार्द (नेवं) नेसंबंग नर्स वं सि

विगय सम्बन्धीः

विषय (दिनये) मामा य विमा य चि ससुय (अधुये) साथ म समुरो म चि

का प्रधान शहिनारी अधिकां श्रमाने वाच्ये माहे बर्चन स्वान्त्रिक रीत में मंद्रकृष्ण किसानुवार अ शहरानां स्वान्त्र राम क्ष भीता हुं कुम्बन्दुर्वकारीय का प्रोत्या बर्चना मां ( -7-1) गुरामो काच स्वारत्मं माहे संस्कृत्यों के व बन्धान का स्वान्त्र स्वार्थ के सामान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्य स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्व



तिसम हे पुरिवर्ण किया तिसम ( तिमस ५ (प्रिश्य) ११. बाजन पु. (रानन) महर देल. बुकार दि. (दुनक) इ.ची. करीने करी श्रामान राज हैसर वि (देशक) देकाआए,

अपने क्षा सका वि (सर) व्यक्त

विकास त (छम) स्थान वान निश्चार को (निर्मृति) गोश

निराधे सरस्य धानिः निदाण व (निप्रान) निवर्धः कारन हेता.

बेदर रे न, (न,पुर) कवा निबर 🤇 सरंग्राच विकेश न्दर बुद्धर, सम्बद पैक्ट ४ (स्त) गावर्ट पव्यामीकी (दे) अनुव पश्चिमका द्र (प्रतिपक्ष) सत्र प्रश्नम वि (प्रथम) प्रदेश स्वरूप

परिसा की (वरिवर्) समा र्जना. चैंचच ६ (प्रेक्न) फल, रिज पैमपारि वि (म्बर्धारिह)

मकार्य राज्य करवार. अक्रम (सम) भविक सामर्थात

विश्वितो नि (बक्रिए) तर्वरी Sales. वास्ता बी- (सम) जुमारी क्रीकी रूपान की. साथि नि (मानिन्) मानि

बच्चार संचीत. सहिला को (सम) ती नारी

संस में मध्युष उत्सन, रिकेष (छन) सर बाब इ. ब. (स्प) बेहुबान्ति

सोन्दर्व आइति. **सक्टि**य वि. (मक्टित) सुदर, मनोहर. खुद्ध वि (क्रम) श्रीहर स्वन्ध-

क्य पु. स. (मन) मन किया वचलाय (व्यक्ताव) व्यापाद कर्ज जनग्र

मामा भी (शक्) वामी नामा वाणी की (पात) वाली वचन विपेतिम वि (वित्रस्थित)

firem union. बिरक्ष वि. (कार) भ्रम्प गोह

विद्वर नि (विक्रा) एवी न्याइन विषेश } हु (विषेत्र) विषेत्र, विषेश } सामान्यगां निर्मय

विक्रम ) मि (निर्मात) वर्षित्र,



हैं जितुरस्पार्द तबोसवार्द सेवन्तित ते तथा सुर्याला । बाहो ज बाहु बरिय तुक्तरे सिकेदस्स सिकेहो साम मूर्क सम्बद्धक्यार्च निवासो सिकेदस्स सम्बद्धा निर्माद्द क्षेत्रो कुमहबास्स सिकेदबर्यो कुसबक्रोगार्च देसमो स्वारह्यांच बच्छको सम्बद्धवस्यास्स ययस्य सिके सूत्रा याविको न गर्केरिक सम्बद्ध न स्रोतिक स्वाधोर्द्य न स्वेतर्य साम न पेक्सिक स्वार्ट्य, महास्वाद्यंत्रर गया बेक्सिक साम न पेक्सिक स्वार्ट्य, महास्वादंत्रर गया बेक्सिको विव समन्या वि विश्विणिन्त ति ॥

स्वस्तारहर्षण अध्यक्षक अभ्यक्ष्यवार्थस्य पर्यम् स्वस्तारहर्षण्यम् स्वस्तारहर्षण्यम् स्वस्तारहर्षण्यम् स्वस्तारहर्षण्यम् स्वस्तारहर्षणः स्वस्तारहरूपणः स्वस्तारहरूपणः स्वस्तारहरूपणः स्वस्तारहरूपणः स्वस्तारहरूपणः स्वस्तारहरूपणः स्वस्तारहर्षणः स्वस्तारहरूपणः स्वस्

सोमगुषेषि पावर न सं विवस्तयससी तेमगुषेषि पावर न तं ववसरपरशी । इ.सगुषेषि पावर न ते तिमसपववर्ष सारगुषेषि पावर न ते तिमसपववर्ष सारगुषेषि पावर न तं "बरणिवरवर्ष ॥॥॥

१ ते-व्यक्तितिकम् १ मेक्सीयः



- ससारमाँ कुलो मोले हे लेक्सी मिर्नेर पांधे हे. त बच्च हाचरूपी क्रमळवडे राजाय क्यूडे क्रिक की. ٩.
- करेलु से नियाची असके एवा तेनीने बोधिनी माण्डि •
- क्यांची होता है
- तीर्धिकर गंजीर वाणीवडे ज्यासन्यमं देव-पानद समे सन्त्योती समामां देवन वले ह वने व संगर्ध रूप जीवे इप्रेन-बान सबे कारित व्यूच औ है मी साहाररहित एव बोचपर नेकरे है

पूष्पों 🕏 शासमाँ वैधान ठसे नजरी क्रमात्रोध जासमीमाँ बत्तम बना तथ जर पुष्पोनी बृष्टि क्री.

- वर्षे स्वनमां की नीने कहां हर्नको सनस्त अपनासा श्रांत के
- क्रेमोनी पासे स्वमस्पो घन 🕏 ता नपुत्रन परबोक्स यय वर्ग.
- १९ सिंद सम्मेगोने बाहार—देह आयुग कमें क्यों नदी तेथी व वे धनना सुखबाका है
- ११ में विधि समाणे सम्बोर्त नारामा और छ त बार का वारी है.
- 1) हे शक्ति दक्कंपन कर्यां विना महिला-संपन्न-क्रमें सपहार धममां क्यन करे है व संसारक्षणी समुद्रश्री वर्ग आह है.
- १४ सदानकरी अन्यकारची संघ चयेकालोने अन ते स
  - अरस क्षेत्रक ने
- १५ वे इमाराष्ट्र गीर्च सिवराजनी बीकर्यों समझ हुने ते पालकरी हेमलेहस्रिकीशी सदद्वी सबसौबी सुद्ध वरने

राज्य प्राम्ब्दे.



#### RWW

बकारान्त पुर्विका सम्ब (सर्व) यक्ष बदुव

। साथो साथे

सच्चे री. सर्प

ध्यत्वे सम्बा त. सम्बेश सखोर्च समोहि समोहि समोहि

व सम्बाय सम्बन्ध सम्बाय, शब्देशि सम्बाय सम्बाय

र सम्त्रो सम्बामी सम्बाद, सम्बन्ता सम्बामो सम्बाद सम्बाहि सम्बाहिन्दो

समाहि समाहिन्तो सम्बद्

सम्बासुन्तो सम्बेहि सबोद्दिग्वी सम्बद्धान्त्री

. सम्बस्य e. सम्बस्थि धम्बस्यि

स्रवेशि सम्बाद समार्थ सखेस सप्तेस

सम्बन्ध सम्बद्धि सम्बद्धि ट दे सम्ब सम्बो सम्बा सम्बे

समे

प अन्ते दीस विस्त (विश्व) वद-उस (दस), उदय-बमय (उमय) अन्त (सन्य), कन्त्रयर (सन्यतर) इयर (इतर), क्यर (कतर) कथम (कतम) सम (सम), पुम्ब (पूर्व) सवर (बपर) दाहिक-विकास (विशिष) उत्तर (उत्तर) श्रुव (स्व), कारि वर्ष मामोना वयो आकर्ता.

निकेप, बाह्य-बाह्यमा हती बहुत्त्वसमा नाम छ अने सहीमा ब्यूरवक्ता उद्दवद्द, ब्रह्वदं कमवद्द, ब्रमवद्दे वाव के पीर्य स्मो स्थान म क

### स्त्रमामनां स्तिर्धिंग वर्षो

ब्राएसंट बीबिंक वर्कसम्बं क्यो ब्राइकास्ट बीबिंग सम्बद्ध केश ज पाय के.

१४५ विशेष-इद्दो विशक्तिना क्युवनस्मा वर्दिन प्रस्तव पन प्रयोगमे अज्ञारी व्यंगे के बारे कार्यमां 'सिंग' प्राथम पण खागे के

माकारान्त सीकिंग संप्या (सर्वा)

पद्धव सम्बाभी सम्बाद सम्बा ५ सस्या

री सच्चे

द सम्बाम सम्बाद सम्बाद, सम्बाहि सन्याहि सम्बाहि

¥-4.

सम्बत्ती संस्थामो सम्बाउ सम्बत्तो सम्बामो सम्बाउ सम्बाहिन्तो

र सम्प्राम सम्बाद स्थ्याचः सम्यासः सम्बासं के. 🖹 सकत सकारान्त्र नपुसक्तिंग सम्ब (सर्व)

पंची सदा सं देशका

बाकीनां क्रव पुस्सिग प्रमाण त-य (तद्) पम-पत (यतद्) क (यत्) क (कि.स्)

इस (इदम् ) कम् (धवन) सम्ह (सस्मह् ) तुम्ह (युपाद ) शहरोगी अपी. त∹न (तव्) धान्त्रनां वने सिगनां क्रपो

पद्भग्र

૧. સ.સો સે

ु सबोर्स मध्याच-नं, सम्बासि सम्बाहिन्ती सम्बासन्ती

प्रसिद्धन,

सम्बा

सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सन्तार सम्बार्धे सम्बाजि

बट्य०

से ता के, पा

THE त. तेज लेखें तिका विकि वेकि वेकि नेज जेर्च विवा विकि निहि, निहि वास देखि वाज वाणे सि-च तास तस्य से वेसि जाण वार्च नसर तत्ता तामा ताउ ठाडि पंतायम्बा बच्चो तामो ताय चाहि साहिस्तो चा साबिन्सी साम्राची, तेकि हेकिनो, हेसुन्हो वतो, जामी जाउ चाडि नाहिन्दा वा वलो आयो बाट पाडि व्यक्तिको बासुन्तो केकि विशिष्ती जेसुमती तेस वेसं । तरिंस तक्ष्मि तत्यः वहिं दंखि वरिसं प्रक्रिय पाला, वेसू वेसं पहिं, लेकि. श्वाहे ताका वामा ता⊹ ती चा ची सर्विंक्य 15557 वहयसन तामी तार ता चा-तीया. तीयो तीव ती-ਵੀ ਤੋਂ लामो ताह सा लीका लीको तीव ही द. साम साह, साप ताहि, वाहि, वाहि तीम तीमा तीर, तीप, तीक्र तीक्षि तीक्षि साहे न्यानि जाने क्यां 'से बच्चते' क्या वर्धमां कुरान्य हे. +ता ये ती जा ने जी, का ने की, पता से पर्ट इसा नो इसी एवं विकार वाल के हु १९ सुसी.

RWs.

तीय तीया तीर तीप विचो, बीमो बीड विचो बीमो बीड, वीहिन्ता 87

तीविण्यो वीसण्यो वाभ वार् ठाए, वासु, वासु तीम तीमा, तीर तीप तीस तीसे च्या-क्षी वो क्या क्यो क्षा प्रमाणे आपना.

वन्द्रा, वस्त्रो सामी साझन्तो वाउ वादिण्यो

नपुंचक्रकिंग पक्रमञ्ज वार वार्षे वाकि

4. 41 } <sup>12</sup>/<sub>18</sub>

व्यव्यानां क्यो पुल्लिय समाग्रेट पक्षप्रसम

स (यत् ) परिस्रग

प को आर

đ. πi

य खेल, जेर्ल क्रिका-

**र.म. जास जस्स** 

à के सा

aft aft aft वेसि, वाण, प्राथं

व्यारं जारें पाचि

नहुने सम

वद्वयम

116

< बस्संबर्गे जाओ शती, शामी, बार माहि साथ काहि, जाहिस्तो जाहिन्दो असुन्दो. केति केतियती केसम्त्रीः 27 य बर्रिस बरिग, शत्य, बेस, नेस अहि. अधिन +बादे बाखा बहुआ बा-जी (यस) स्पीकिंग प का आयो ताथ हा

श्रीमा जीको बीव नी ৰী 💅 कामो झाउ बा बीका बीको सीज बी र बाम तार बाप. माहि, बाहि, बाहि मीम, तीमा तीइ तीए बीहि सीहि सीहि

प. ह. जिस्सा श्रीसे वेसि बाच बाचे हासि काम कार, जाप बीम खीमा शीर बीप.

पे बाम बाद बाव सम्बा, बची बाबो बाद बादिन्ती, बची कामा बाट वासन्ता वादिन्तो बीम जीना बीप त्रियो श्रीयो, बीउ

बीप, जिस्तो बीक्रो श्रीहिन्तो श्रीसन्तो श्रीय श्रीहिन्ती. व साम बार, बाय. मानु कास बीब, बीमा, बीद, बीप, बीसू, बीसूं,

वपराव के

+माडे स्थारि जाने करों जाते. वे बचारे तेवा वर्तमां

श्चा€ नर्पुसक्रकिंग

शाकोनां रूप पुर्वेद्य प्रमाचे 🕿 (किम) पूर्विस्था

बार कार्ड, श्रापि

पक्रवयन बहुवसन को के. की क के, का त. केय केल किला केडि केडि केडि ९. इ कास कस्स कास देखि काम काम र कियो कीस कम्हा कती कामी काउ काहि कत्तो काओ काड काहिन्तो कातन्त्रो काहि फाहिल्लो का केडि केडिज्लो केसन्ती

केस केस

+कादे कामा कश्मा का, की (किम्) स्रीमिंग

कस्सि कमिम काच

कदि केसि.

9 **46**7 कामो काउ का कीमा कीमो कीउ की नी कर. कामा कार का कीमा कीमो कीर की

त. काम काट काप. काहि, काहिँ दाहि

कीम कीमा कीह कीए, कीहि कीहिं बीहि

+काहे काति अन हती क्यारे अवदा करे बनते प्रशा सर्वता

बपराच हो.

प की 🕏

 े किस्सा कीसे कास केसि काण, काण कार्सिः ६ }कास कार काए, कास कीम कीमा, की। कीथ.

६ काथ, काइ, काथ, करहा कलो कायो काड कलो, काथा काड काहिन्ता, कासुन्तो काहिन्तो कीय कीया कीर कीए.

चीम चीमा बीर कीए, किसो चीमो कीठ किसो चीमो, कीर चीड़िस्तो बीहिस्तो चीहुस्तो

ष. काम नार, काए, कासु, कासु कीम कीमा, कीर कीए कीसु कीसुं क (किस्) नर्पुलकर्किय

र पी. फिं: काह काह काणि समीतं स्मो उर्लिक क्राले

नलीनो समो पुलिक झराचे यक यदा (यदाव्) पुरिस्ताम पद्ममञ्जल सहुवयानः

यक्तम्बन बहुवयनः इ. यस एसो एसे एए इ.च. इ.च.

C. पर्धा वयः प्रशा C. पराम प्रथम प्रशास प्रथमि प्रथमि प्रशास

व ] पत्रस्य से प्रयोध प्रमाण प्रमाणे विं य पर्णे, पण्डों, (पण्डों) प्रमाणे प्रमामे प्रमाम, प्रमामे प्रभाव प्रमाधि प्रमामिको प्रमामुक्ती पश्चाधिको प्रमा  स्वासिम क्षिप्तिम पर्सास्ति, पण्तु, पण्तु प्रकासिम कृष्य प्रमीति

पमा र्था (यतक्) स्त्रीकिंग

र पस पसा इर्ण इवामो प्रमान पत्रा प्राप्तिमा पर्यमा प्राप्ति पर्यं स्

की पर्स पर्द त. यसाम धमाद पक्षाय, पमादि धमादि प्रमादि

पाँम पाँमा खाँद खाँच. खाँकि खाँकि खाँकि र रेपमाम प्रभाद, प्रमाण प्रमाण-गाँ, सि,

प्रेंस प्रांमा, प्रेंद प्रपंत प्रशासि, प्रेंप, से र्याच-णं र प्रमास प्रभाद प्रमाशे प्रमासी, प्रमाठ

(यमचो), यमाभो यमाङ यमाहिन्दो यमानुन्दो यमाहिन्दो पंत्र पंत्रम पाँद याँग गर्रनो याँमा पाँउ पाँहिन्दो पानो पाँमो याँगुन्दो पाँउ पाँहिन्दो

र प्रभाग, प्रभार वजाय, वजास वजासे पाँच पाँचा, पाँर पाँच पाँस

यज्ञ (यज्ञक्) ज्युंसकर्मितः. गयमं, एस इणं, इकसो यथाई यक्षाक्रिः.

मी. पुत्रे स्थापन क्षेत्र क्षा क्षांक क्षा

बादीनां १९ दुन्तिय धराचे

## ध्य (ध्यम्) पुर्विका

त्यः अस्य इसो इसे गी-इस इक्ष्मंची

गी- इसे इची वी त- इसेवी₁ इसैवा इसिवा

वेग, धेय जिया

प. } इमस्त से थस्त प्र. }

इ. } ९. इमची इमामो, इमाव

रमची इमामो, इमाज इमाहिन्ती इमा

e. इमस्सि इमरिम, **श**स्ति

श्य श्मंसि

प इमा इमिया इमी इमीया

के. इसे, इसि इने न द. इसाम इसाइ, इसाय, इसीस, इसीमा इसीड

हमीए, वाम चाह वाप.

च } इसीम इसीश इसीय, ■ } इसीम इसीमा इसीह

्रामाय इसामा इसा इसीय, से [इसीसे] १ इसामा इसाइ इसाय. श्रमेष्टि, श्रमेष्टि श्रमेष्टि विदि वर्षि वर्षि यदि वर्षि यदि श्रमेष्टि श्रमाण श्रमाणं सि.

इमचो इमाओ इमाठ इमाबि. इमाबिल्लो इमासुन्तो इमेडि इमेडिल्ला इमेसुन्तो

इमोहे इमोहेन्छ। इमहरू इमेसु, इमेसु पस्तु पस्तु

दमा इसी (इदम् ) क्वीकिंगः इसामो इसाव इमा

दमीबा, दनीबो दमीड दमी [दमे]-दमाडि, दमाडि दमाडि.

इमीवि इमोदि इमीवि चाहि, चाहि जाहि चाहि चाहि माहि इसाव इसारो

इसाय इसाय सि इमेरिन इसास्टि इमीय इमीर्च इसको इसाको इसाउ समचे दमासे इमाइ इमाहिन्दो इमाहुन्दो दमाहिन्दो इमीम दमीमा दमीइ दमीय दमीका दमीइ दमीय दमीहिन्दो इमीहिन्दो इमीहिन्दो व दमास दमाय दमाहु दमाहु दमीस दमीसा दमीस दमीहु दमीहुं, दमीय इमाइ इमाइ दमार दमाय इमाइ समहु

पर्श इर्द इसमी इर्ण इमार्थ इसमिं इसाविष शहरी इस प्रस्कित प्रमान

भगु(अवस्) भाते पेतुं पुस्सिय ू

र सह सम् सम्यो सम्ब क्षमको अमुषो सम् भैसम समयो सम

भी सञ्च अञ्चले अस् ८. असुणा अस्थि अस्थि अस्थि ४ | असुणो असुस्स अस्थ अस्थ

 श्री भारती अमुची अमुची अमुची, अमृद, अमृद अमृदिक्तीः अमृदिक्ती अमृदुक्ती अमृदि अमृदिक्तीः अमृदु अमृदुः अमृदिम, अमृदि

स्तुतम् सतुत्व स्त्रीद्वित

प. सह श्रमू असूको श्रमूड श्रमू. पी. सर्भ ण. सम्स अस्था, सम्स. अस्डि, अस्डि अस्डि सम्य. र.) सम्स सम्सा अस्ड, अस्य यस्थं स.) अस्य.

पं समूच सम्बा, समूह समूच

सम्प समुत्रा समुको समूठ समुत्रो समुको समुक

सम्हिन्तो समृहिन्तो समृह्योः ९ सम्ब सम्बा समृह समृतु समृतु समय

नर्गुसकर्षिम

प बहु अमुं अमूर्व अमूर्व अमूर्व अमूर्व वी. समु अमूर्व अमूर्व अमूर्व अमूर्व जन्म (अस्मक्) है (जब किंगमी सामान)

पद्मवान वहुववन ९. इ. मई बहुर्य निम, सम्ब, अस्ट्रे, बरहो मी वर्ष

विन्द्र महिना से के से स्वास सिने कहे के अस्ते, बस्हो बस्ह में

र्ग मि, व्यक्तिम, व्यव्ह सन्द तः सि, से असे समय, व्यव्हेडि व्यव्हार्वि, वस्त्व समाह, सर सय, सवाह, वस्त्वे, वे

के [मपा] च.्रीसे सद, तज सह, के जो सकक्ष अस्त्रह अस्त्री.

 मई मन्स्र मन्त्र अस्त्, सस्ते, सस्ते, सस्तान-पं सर्व मन्त्र-वं महाय-वं

मक्ताच-व

244 ममची ममामो -उ-हि-दिन्दी सन्दो

दिग्दो ममेडि-डिन्दो-सन्तो ममत्तो ममामो-उ-हि-सम्बन्धे सम्दामी-उ-दि-दिन्तो ममा हिन्ती सुन्तो महत्त्वो महायो-इ-हि-बरहेडि-हिन्तो-सुन्तो बिन्तो महा मरमची मरशामी-४-हि हिस्तो मस्ता 🕶 मि सद समाद सप् से

ŧ.

महत्ता महन्नो-ह-

अम्बस्यि सिम सम्बस्थि बम्बस-सः बम्देस-सं समस्मि-सिम समेसि ममसु-सं ममेस-सं महस्ति सिम महसि महसु-सु महेस्र-सु मन्त्रस्विं स्मि मन्त्रसि मग्मस-सु मन्द्रेस-सु. अम्हे, समे सहे सरहे भग्दास्-सु [मस्दि

तुम्ह ( युप्पद् ) तुं (बचे क्षिंगमां समान ) मे तुम्मे तुम्हे तुम्झे

古中 बो तथ्ये तम्हे तम्हे

 तै है हुई हुई तका तम्ह तम्हे उप्हे मी ते तु तुवे तुमे उन्हें तुप्हें, उपहें, मे तद तमे तप

स. मे हि, दे ते तह तद. वे तुष्मेदि, तुम्हेदि तुम्हेदि

बन्धेहि बन्देदि तयहेदि तुमे तुमद तुमय,

बयहेडि तुमे तुमाद

च.}चातुंचे तुम्द्र तुद च}तुद्रं, तूच तुम तुमे त वो मे तम्म तमा

तुत्रस बच्च चन्द्र बन्नम

तुमो तुमार दि दे इ ए, तुष्म तुम्म तुम्ब स्था उम्ह तुष्माथ-थं, तुषाब-थं, तुम्हाच-जं तुमाभ-चं,

फास देखा तरता तर्हमा-उ-दिन्दी तुपन्ती तुपामी व-हि-दिन्तो तुषा

तुम्हाज-च तुहाज-च

तुमत्तो तुमामो-उ-हि-दिल्ली तुमा तुबचा तुबामो-प-बि-बिन्ती तवा-

तुम्मको तुम्माको-उ-दि-िला मुलो तुत्महि-हिन्दो सुन्दो तुरक्षो तुन्हामा-व-हि-दिग्तो-सुम्तो नुम्हंहि-हिन्तो-सन्दो-तुमसची तुमसमी-व-हि-

तुम्मचो तुम्माबो-४-६-क्रिन्दो, तुम्मा हुम्हची हुम्हामी-४ हि-विस्ता-तम्हा तुम्प्रची तुम्हाबां-व-हि-विन्तो सुम्छा तुष्य तुष्म तुम्ब

हिन्दो सुन्दी नुम्हेदि-दिन्दो-सन्तो तुम्बची तुम्बाबी-उ-दि-दिग्ती-सुन्तो तुम्बेबि बिन्ती-सुन्ता क्यती-क्यामा-क-हि-बिन्तो सुन्तो क्ष्यदेशि-शिल्तो-सुन्ता-

स. दुमे दुमप, तुमाइ, तर, तप तिम

तमः वहिन्दो

क्षम्यो उम्हानो उन्हिन क्रिन्दो-सन्त्रो काहेकि हिन्ती-सुन्ती

तस सं

तुरम्म, तुर्दास्य तुर्वसि तुबस-सं, तुबेस स तुमस्मि तुमस्सि तुमैसि तमस्र-सं तुमेस्-ध-त्रविम, त्रविस्त त्रवेसि तुषसु-सं तुषेस-सं तुष्पस्मि, नुष्पस्मि नुष्पंसि तम्मस-सं तम्मेस-सं तुम्ब्रम्म, तुम्ब्रस्सि, तुम्ब्रसि तुम्बस्य-सं, तुम्बेस्य-सं तुम्हास्म तुम्हास्स तुम्हांस तुम्हस-सं तुम्हेस-स तुष्मासु-सु तुम्हासु-सु तुन्हासु-सु

उपयोगी क्यो शस्द्र(शस्त्रद्)

F4:49

प महंदे

भी मंग्रमं

त. सप, सइ च}में मस, ड}मइ मस्झ

स महमऋडे

ष तुं तुने थी. <sub>ल</sub>

ट. तप, तुमपः च ब.तुद्द तुव

च तुमप, तप-

पं तुमत्तो तुमाधा

पं समचो समामो

बर्ग्ड, भरहो थरहेडि ४ सम्बंधम्बाण बन्द्रको अम्द्रामी धम्देस

तुम्ब (युप्पद्) तुम्दे तुम्हे "" तुप्मेदि तुम्हेदि तुष्भाज तुम्ह्राण तुष्मत्तो, तुष्मामो तुम्मेस तुम्हेस

240 चयो

श्रम्पारिया श्री. (मनवरिया) सामुख्ये. असुमाह ५ (मनुभर) उपगर ब्रम्परिक्रम है, (ब्रम्परिक्) ब्रपा-

र्जन करेते. सबिद्ध औ (उपनि) माना उरकाल साम्ब समाराम प्र (जनाईन) नास्त्रेत्र

बराकुमार ५ (नम) बङ्गेन राजाना पुत्र बानुक्ष्मशे मोत्री

**अध्यक्ति क**ि (शन) महावैकानी खायब 3. (राप्तर) नगुरंशीय. केइ मि (ज्येष) मीटी श्रह तिबिद्ध नि (मिनिव) प्रान तकरे

(शन वचन नावाप्ति). 350 A 279 (Ey in 278) तुर न (श) कु बंदे, बार,

वर्षे उर मुख्य छ। उस

बोरिजा औ. (६ रहारेश) हेरी. निवस वि. (गम) वेवविक विष्यंघ प्र (मिर्देश) आहा.

प्रवास इ. (बच्चम) स्मरम परेषरा बी. (सम्) शामप परिधय में (परिका) परिपत्त

पान्तरमा को (प्राप्त) रीकी ापुद्रशी भी (इस्ती) द्रामी पूर्व चाहिर है. (यम) व्याप मूब इ. व (मूर) <del>बाद, प्रकी</del>

मोध प्र (सम) बन्सारि निपन वार्ष है विस्ती को (देजों) नेजों पार<sup>5</sup>

報 (4) 資行 संय द्र थ, (स्थर) सन, "उर्ग वासाध्य व. (क्या) घोष्ट्रं दर्भ विषरिक है नि (निपरीत) उम् विषयिम 🖇

विश्वसिक्त कि. (विश्वमित) ग्रेताके

और सी तंतुष्य होन एता श्रीकिंद बामोली की 'बी नश्मी (श्रापी)

वनचे (नर्ना) बद्धपी (बप्ती) डक्टी (मिट्टी) तर्ग (प्रणी)

२५९

े वेर १ व. (वेर) केर, प्रमाणकर, प्रकार १ (प्रका) क्येंसे. स्ताम मे. (शंपुत) सुन्त ध्वेत. स्त्रोग प्र. (नंबात) सुन्त स्टेबर

विसाय ५ (नियार) चेर, साक

खरवा वि. (सम) हैसा समाज वि (सम्) होतु पतु व है. सहीं की (सवी) सकी हैमानी स्वामित्र (व्यामित्र) स्वामी नाजक, अभिनदी.

स्रोक्ष ि (प्रेप) धार्म

यु (वे) मिन्स स्वय बहुस्ते (खुरा) अनेकार.

भर् } (ववि) संभारमार्थमां भ }

रहरा १ (६ण्टमा) साम्यया रहरहा १ सा गेर्स हिंदि (पेप्) समय मोट्टे प्रक्रसिय (मे) ग्रीम अगरी संप्रति हम्मा मनर १ (मे) मेर्ड्स, फान पहर १ केर्ड्स, फान

मोरवाहा } (हुआ) हवा व्यर्थ. हुदा } धीसुं (विश्वष्) आरे ठरफ, वासर. दुवि } (हा-विक्) ठर सुवक, ब्युधी }

<u>चात</u>ुको

साइपम्ब् (शा+वश्) वश्ये, उपवय जापवे सम्बद्ध (शा+वर्) व्यवशु स्वयात्र करहे सशुभव (श्वय+मा) व्यवश्

वाणुसब् (ब्रह्म-भा) क्लुभव करते जानकुं भासास् (भा-भाल) वानित करावी कान्यानम् व्यवकुं भारेम् } भारत् } भारत् } भारत् } भारत् } भारत् } (भार् ) क्यु

णा ) शिष् } (राहा। सर्ग्न परशे शिष्ट् } बीष्ट् (बार्) तत्रमा पामचे.

प्रमाय् (मभ्याद्) महत्र् वर्दे सर्व (बर्) तन्त्रे पन्तु सप्ट प्रथम् (प्रश्नम् ) देश औ निमच्छ भास् (माष्) क्षेत्रबुं विक्क (मिन्डी) देवर् श्रीपन्त्रम् (लग्+१वर्) तत व्य सोस् } (रुवनबोस्) होत् सोस् प्राकृत भाषयो बह से पिया न पव्यक्तों होन्तों तो बह होन्तें। द्यस्य क्रिया पृथ्वका गिर्णाती ता स्वित परिश्च परास्थ मेक पार्विती । सम्बद्धि गुजानं सम्बद्धेर क्लममस्य । गुरको समा सन्द्र एक्कमा । कालोग मनक पुण्किमा सामि! कतो में मर्था महिस्सा सामिया कहिया को यस ति बेह-माया बहुदेवपुर्ण जरादेवीय जामी कटाइमारी नाम इमामी ते मर्ज्य तमो नापवान अराङ्कमारे छविछाया छोएम विवरिता विश्वी किविमें प्रतिका सहा । कई सई बाहरेवपुरी होऊम समस्त्रविष्ट ऋषिई सापरे विधासेहामि' चि तमी भापुविक्रद्रज जाव्यवर्ग जनस्थार्थकारार्थ गानी वजवार्थ त्रराष्ट्रमार्धे । मर वर्ष कोन्सं या सम्बग्नुवसंवया क्रोन्सा । है बीरजिजेसर ! तह कुजस अम्ह प्रसार्वे बह न संसार बारहे निवृद्धियो । चिद्वत हुरै मन्त्रो गुरुश गणामी वि बहुपतको होत् ।

म में मोत्तु मन्त्रो अविज्ञो हमीय, शा <u>भ</u>्य वर्ष हुजसाजो मी

क्रोकि ।

**Rt**•

साहर्षि हुएं अह ने आहिन्यको तो सबसाहिन अस्त्रे मेदिस्स नेकन चेहपाई चंचाविक्षे, तीन (वेचीन) अभिन्यं तुस्ते दो असे सहं देवे तत्व चंचाविति ॥

े सन्देषि काक्रमणीह समाणेषि परिणय-वय भणगारिषे पणगादिसि । कि में कई, कि स में दिश्यसेल, कि स सक्किपणां व

सनायरामि चि पञ्चहे सवा हायवळाँ।
से बेय नया हाय, जारिय कम्म पुस्तवुह उपित्रपं।
से वेय नया हाय, जारिय कम्म पुस्तवुह उपित्रपं।
से देय नया नयः नारिय कम्म श्रीयमित्रकं स संग्रहा।
से इन मम्म केन पुर को किया विशेष तृह सम्बं।
यानिम सम्प्रतिक सम्बं बीया वर्तन् से।
किसी में सम्प्रतिक संग्रह के र्रोक्षकं वर्षिकः ॥१३
सम्बंद्धाः सम्प्रतिक सम्बंधाः वर्षिकः स्थितः सीरि।
सम्बंद्धाः सम्प्रतिक सम्बंधाः सम्बंधाः स्थापकः स्थापकः सम्बंधाः स्थापकः स्थापकः स्थापितः स्थापकः स्थापितः स्थापकः स्थापकः स्थापितः स्थापितः स्थापितः स्थापितः स्थापकः स्थापितः स्थापितः स्थापति स्थापकः स्थापति स्थापत

इसड म रमड म तुइ सहिज्ञको इसामु म रमामु म मईपि। इसामु म रमामु म लेवि इम मसिडी मः पियो इपिटा।।। ४५ समाम सत्तरी (शंति तत्त्रमी) सो कृतस्य व नत्स्त्री विज्ञास्त

मुख्य हं

4 क (विद्यू) सर्वेनामना स्थान जि हूं हूँ (जिन्.) सने

पि-चि (अपी) प्राप्त तवापाणी वापार्थ जाता एति अधिक्यार्थ स्था है,

काम, काम, (कासीका) वर्धतुं जेगा, (केशीका) कोई बंद काम, कामी (कासीका) वर्धतुं को जेगा, (केशीका) कोइना वर्षः, कामी कामी (कासीका) वर्धतुं काम, केशीका (कामीका) कोइना वर्षः, केशीका कीसीका कोसीका कीसीका कोसीका कोसीका कराया है।

सामाइपस्मि र फप, समनो इद सावजो इयह अम्हा । पपण कारनेथं बहुसो सामाह्य कुल्या ॥५॥ बर में इक्त प्रमानी, इसस्स वैद्वस्सिमात रचनीय । बाहारमुबहिबेहे, सन्त्रं तिथिहेण बोसिरिशं ॥६॥ पगो इ नत्थि में कोइ नाइमन्नस्स कस्सइ। पर्व सरीवययसा अप्याचमणुनासा ॥आ क्यों से सासमी बच्चा वाजर्बसजर्सनामी। सेसा मे बाहिए। मावा सभी श्रेजीयस्थ्यका ॥४१ चैज्ञोगमुका बीवेश, पत्ता तुक्कपरंपरा । तम्बा सन्नोगसंबद्धं, सन्तं तिविद्दंण बोसिरिजं ॥धा मरिद्रेता सद्ध देखे, बावण्डीव स्रखाद्रमा गुवको ।

# जिवदन्तरं वर्च इस सम्मर्च सर गडियं ॥१०॥ गुबरावी बाक्यो

- देवो शर्ने असुरोता समुदायधी वंदायका एव जिल्हें सम्बद्ध रक्षण को
  - के मुतारेकने धारित करे **क जुल्बार्स एडेकानो क्दा**र करे है बारणे मात्रेकार्थ रक्ष्य वर्ष के वे प्रश्लीपडे प्रण्ये Marca è
  - महिंसा श्रेत्रम अने तप ए वर्ग वेशेश इरक्मों होन के
  - वैभीने देशों यत्र नसल्यार करे छ. में मनुष्य पर्मना त्याय परीय केरल ब्हास बारी सोगोले हैं
  - ते कोइएल काटमां तुमा गानी शक्तो क्वी
  - हर्व माध्यामां परित्र संच्या कर्त के हैं
  - ۹. हे बजद! धर्मनो क्यवेदा आपवाधी स्मोप गारी उत्तर •
    - मनाज करों है. ररामीको बद्धामाँ रहेर्जु ठेमां च उनाई फानान छे.

ज्यारे पुज्यनी नाम बात के त्यारे खार्च विपासीत बाव के
 दे ममा । तमारा चरक्युंतराई बहते क्यो स्टुट्य क्षमार तरहे निर्दा
 क्ष्म वीक्सी के सुद्धा के बासुक क्यां क्युं क्ये व परणांक्सी

वाने वाने थे. देशी तु सुमर्फाना संचय का 11 मा संसहना कोले बीकन सफत थे ह

१९ के बीचत एते मज्जना कमे मुनियो जनता होव समे के हमें हो परिकारी होव ऐन (जीवन सप्तक के.)

भी मा माद क क्षत्री का तार्व छ ए प्रमाण इक्टकार मनयास्टाने होन छ पण महासाधान का नार्नु मन्त्र पणितु व छ

हात के पर सहासाध्यम या जानु जान्य पान्यु व छ भैद हुँ पहुँ क के का बारकी सारी क क्षमें लग मित्र वह स के का बोरकी एनी क का कमरायाँ न्यामकी कोम क री

चित्रये एने छ सा स्थापनी न्यापी कीम छ है १५ दे सामग्रे आ होच्छाभाने अब येती सांकरिनाओं वर्षा पड़ां अपरी तीका.

१६ राजा प्रश्त थोकी बज्जा के वैस सामना कांच छ क्यांची आहे है को मारी वासे देखन हा कांग छ है

### पाठ २५ मा सक्वारशक ग्रम्स

आपमा विश्व का पर्या कर को जाड़ी अपूक्तद्वीमा किहार

१५ प्रकारस ? (१वरस्र) २१ धगाराह<sup><७</sup>} (एकत्वन्) धगावस } अभिनार पुरुष्यरहा 🕽 १६ सोक्स } (गम्सर) १२ प्रवाहस

१७ शत्तरम }(कास्पर)

**188** 

१३ तेया } (जनेत्वन्) तेरस } ज १८ सहारह } (अन्तरकर) सहारस } असर १४ कोरस

या। यस यहा, हक धन्दर्श स्त्री त्रन कियस स्पत्र ह का तम स्मो 'सम्बद्ध छन्दर्ग को बेर्राय बार छ को दी' करकी मंत्रीने बहारस सुबीग तंक्यशबक सन्दोध हनो सूक्यना माने के तमर भने निकार तमान व धाप के खदाराज सचीना बेंब्यपायक स्थानमा प्रधीय ब्याबक्या बहु कर यह अस्पर समी है.

पर्विस्ता यय (थका) परी

र करो को

भी. यर्थ वही पगा

T S. UNTER. पथर्चा, पगणा, परोसि, गुक्तियां करो 'दरका' केवा.

<sup>८७</sup> रोक्समावक कमानां अर्थक्त भू थे प्र. पान के सर्दे

**रक्ष**ना 'ल' नो ह' विकल्पे वाय अस (भवीतक).

नहीं, बसारी बजरी बनादि | एव

म्दद ए. बरुद्दि, बरुद्धि बरुद्धि | <sub>अर्थबद्धि</sub>, रेबद्धि रंबद्धि

र्वजन्द्र चेजन्द्र

र्कत्यो, प्यामी पंचार

धारकि चार्राक्षे चार्राक्षे

वज्ञ. चडण्डं, चडण्ड वं चडणो चडमो चडन

वजिष्टियो बज्ञालो वज्ञो वज्ञ वजिष्टियो वज्ञालो. च. बज्ज्ञ वज्ञालो. च. बज्ज्ञ वज्ञाले. च. वज्ज्ञ वज्ञाले.

पत्री. छ । स्व ।

पट छुम्हं, छुम्ह् पं छुचा छामा, छाड्डै छाडिम्यो असुम्यो खुस्ताह्मी खुसाह्म्यो इ. छुत्त छुम

च छत्त छत्त । स्वस्तु, सन्तर्थ चाइ (सप्तर्) नय (स्वस्त्) पत्री बाइ

स्पनेदि-दि -दि, स्तीहि दि"-दि हामानि क्यो वन जोदामां स्टब् के. बारवेदि ओवनेदि सितकामा पुत्रती ।। निर्वादः माः १ ४ १५पं. महत्ता, सहासी सहाउ मयको नदामा नयाउ महादिग्दा, अहामुन्ता नपादिस्तो नयासुरतो व बाहुस बाहुनु नवम् भयम

ना प्रमाण शृह्व वृक्ष शारिको सङ्गारस मुचीना वपा जणारी. बर (कवि) केटलां तेनां क्यो बदुयचनमां धाय छे

प की फर्ड

द कारि कारि कारि

er er allaf allaf

करची करमी काँच काँहिन्सी काँसुन्सी

कांस कांस

१९ पगुषवीसा» (एकान्यिएति)। २३ सेवीसा (प्रचायिएति) ध्रीतः

स्रोतचीत.

९ पीसर (मिंचनि) बीम

१९ पापीमा ) (एक्जिकि) पद्यक्रीमा )

रफरपीमा । एकमिन २२ वासीसा (क्षत्रिवा) गवीन

अमारमा जनस 'आ' हो 'अ पम बार छ. छवी एतृत्तीन बीच बारीन बाउरोड पनशेन एन्सेन एन्स्सेन डीम बनीप

বশীল চণ্টত জনুষ্টাৰ-মাংগীৰ চ্যুমন্ত্ৰদাৰীৰ প্ৰশানিৰ হাৰাচীৰ क्षावा - सामारीम अध्यार-जारू मात्रीय एगुरास्थ्य प्रसास प्राप्त-स-

एकाम्बल क्रमम्बन्धसम्बद्धस सहस्त्रम् सहस्त्राल दशरे साम है माना स्या पुर्वित सन म्युनश्चितनो प्रथमा तथा द्विनिश्चा एक-बक्तमा प्राप्तना (स्वमं देशाव हे

वरा प्रमुक्ति सहिवाई जीनितं थी. ए (सहेद ि १ १०८) चनारीन आक्षा मुख बस्तिम प ए (सि. ह १९) रीने वर्षातेषु अवंति तीले कुर्जागरीषु व ए. (राज्यप्रीजगन्दे)

१४ घरवीसा १ (वर्डा शिर्ध) कोरीमा १ वोडीय-

शक्रीय.

१५ पणबीसा (वंदनियति)

े १६ फरवीसा (परविचित्र)

₹१८		
4	सत्ताबोसा है (नवर्नेक्षे) संग्रीसा है सत्तरीय	<ul> <li>का का का की साथ के का की की</li></ul>
	and a second	श्वक्रयत्तातीसा । एकः

-	हबीसा ) (बयानिवर्षि) हबीसा   व्यापीय, बंगीसा		रक्तयत्तातीमा । रहाः ययवातीमा । क्रेनः रुगयामा
१९ पर् व	[यसीसा } (एक्पेनश्रिक्षण्) इनदीसा } कोधनवीनः	પ્રવ	वापाकीसा वापाका वेपासीसा
र चा	सा (विक्त्) चीन	}	बेब चामीसा वेंद्र गैठ-
EQ.	तीसा (एर्व्यंचर्) स्वतीखा रुक्शीन स्वतीखा		वेगासः तुषशासीसाः तिषशासीसाः) (तिषशः
	चीसा ६४वेचन्) नवीतः	144	तमाबीसा > (स्ट्र)
	रीसा (प्रकृतिकर्)	ł	तंबाका ) तंत्रक्रीत.
i la	चीसा ६ विशेष	ΥV	क्षक्तार्थासा । (बहुब्स-
यो	हतासः } (धनुनिकर्) चीसां } धनेतः		कोयासीसा (क्षेत्र) करवासीसा कुंतर्जन
३५ पर	ानीसा (श्वतिवन्) गंजीवः	ሃካ	प्रवचनाडीसा ) (प्रवस्ता- प्रवपाधीसा ) रिक्र )
	गैसा (पर्जियम्) क्वांच		पचपाश्चा   चीता भेष
१० सः	गतीसः (क्लिजिक्त्) सम्जीन	¥ŧ	छायाद्धीसा रूत्)
३ मा	तीसा । (अध्यक्षिका)		कापासा ) वैद्यापितः
	रतीसा 🖯 बाब्जमा <b>जबत्ताकी</b> सा (एमेनव-	Am	सनवशासीसा ) (स्तावता- सत्तवासीसा ) रिका)
	ेवा शासासार(एकनव-		संग्याका प्रभावतः
	त्ताबीसा (चलस्विर्) चार्बीस	٧	बहुबनाद्वीसः । (महबतः बहुपाद्वीसः । (महबतः सहयादाः । (महबतः सहयादाः ।

१८ भगाविषयाता (१९४	। ६ सम्बर् <sub>ष</sub> (१५) सम्ब
धारपात्रका (रजार)	-
<b>स्ट्राप्ट्या अ</b> भिगारमञ्	स्टर्साह रूक्ता १९ क्सानहि (१.४४८)
० नेरमास (१८४४-०)	रक्षमाई
नेसामा है क्यल.	
१३ व्याप्तकद्यासा 🕽 (१६७४)	१० वामीहे   (दर्गः) धार
बराबन्ता । दव वहराजाता है। १३०व	
	११ मगरि } (न्यरी) देनाः नयरि }
भा पृथ्वस्ताता } (शिवस्ता ) वायस्ता   अस्थ	
भ जिल्हामा श्रिकाण	६० खडागडि (बण्य') ब्राचिट व म्ह
नवरमा वर	नावार } जन्म
Se married (4 Mg	( बोगाँइ )
भारतमा हैगा ५७० सहस्रका	् ६ न्यस्ट्रीहे हे तनगरित
	क्त्यदि है राज्य
deletal frainz.)	स्र सामाहि है (काप ८
प्रमानवाताः । ११५३ प्रमानवाताः ।	द्वापदि है श 2
of Hiller ( fame as)	ं र सम्मादि है (००१)
<del>प्राप्तामा</del> है है है	erreit } e
Standardial \$1 and	८० ब्रह्मपृष्ट् (सम्बद्ध)
सम्माद्यकतः है होनाः तः सम्माद्यकत्त्रस्य है । नाव ना	क्षेत्रमादि है सर
THE THEFT	१६ बाग्यसमीर ) ४ जन्म) भारतमारी जे जे
स्रोराक्ताला )=) महर सरस्का	Minne } ~ H
milital }	grante
dimental & for white	famile & for my
MANAGE & MANAGE	i emir)

प्यक्रमस्टि } इंडीने	वैद्यासीच् । त्यानी
<b>१क्फ</b> सत्तरि ]	८४ व्हडरासीइ ) (वनुरवीति)
<b>४१ पावस</b> रि ]	क्षोरामीह } बोससी.
धाइसिट (शिनकारी)	<b>बु</b> कसी
विसंत्रि विक	८ पणसीह रू (पञ्चाप्रीक्ष)
विद्रस्तरि )	र्यवासीर विवासी
ण्य विसन्ति )	६ छासीइ (बच्चीटि) द्यमी.
निक्चरि { (विन्यनि) महिन	सत्तासीइ (तपार्वाति)
तवचरि 🕽	स्टानी-
ण भ्रसन्ति । (श्रुवक्षि)	बहासीर (प्रवर्षात)
क्रोवचरि कृमोश	अहासार् (मच्चान)
चोसंसरि ]	
<ul> <li>पश्यसत्तरि (गबन्दित)</li> </ul>	९ लडासीह (नवडीरी) येवली-
पंचक्चरि ) वंबोवर	वशक्तवह रे (एर्रेक्स्सरी)
। <b>छसत्त</b> ि } (बहुक्तवृदि) <b>इ</b> म्स्यपि } डांल	पर्यूषणटर्∫ नेशली
	५ शबह रू (मयति) मेर्चु
<ul> <li>भक्त सत्तर्वाति (इन्डिक्टि)</li> <li>सत्तर्वाति (इन्डिक्टि)</li> </ul>	चहर 🧲
<ul> <li>अञ्चलित (क्यान्ति)</li> </ul>	९१ घराणधर )
<ul> <li>महस्तार ( (जन्मकात)</li> <li>सहस्तार ) व्यक्षेत्रः</li> </ul>	व्यक्तवदर् (रक्तवी)
	रक्षणदर् रम्प
<ul><li>पर्याचीत् (रक्षेत्रकारि)</li></ul>	रक्षपार ।
अवस्थावेदी.	९२ बाजरह } (दिव्यति वर्ड-
< ससीप् (क्वीरि) प्रती	वासवर 🖯
४१ पगासीर् (एक्श्वीति)	६३ होषबर } (त्रिक्ति) प्रति
पकासीर } पंचरी.	( विजयार र्

९४ सङ्गणबङ्

बहुाणउइ

अहुणयह धडणबङ्

९ शबणहरू ) (भवनवति)

(पश्चनवरि)

(शम्बिरी)

(सप्तन पति)

हरू

९५ पंचायतर ]

J ( Rental )

१० सत्तापदर

**उ**च्चार

प्यापवर

पण्यवदर्

```
सरुपवर
                  सत्तान.
                                   अवस्पर्द (
    सत्तवह
      पगुणबीसा वे नवजबह पुतीय स्कोम्बं बन्ने साझरान्त है
 फेर्स्स क्यो 'द्रमा' ये हेरो बाव के सने हे छच्छे हुकराला के ट्रमण क्यो
  'ছবি' শী ঈৰা ৰাজৰা
पगुणसय ब. (एक्टेनक्टर) कवार्थ.
                               शबस्य न (श्वयन) सम्बो
श्स्य ग. (इन) मो.
                               सहस्त व
                                          सद्ध) हमा
 इसव
                               दससदस्य हे न. (१६४ व्हा)
 विस्रय
                               रहसहस्य े रह रगर
 वो सयाः ।
                               अयुद्ध र न (अकुन)
 तिसय
                               बहुंब ∫
                                               दस दसर.
 विश्यि सपाइ 🕽
                               स्यमहम्मु ४ (ध्लम्ह) सन्द
 चडसव
                               क्षत्रक नः (नदा) नातः.
 बत्तारि लवाइ
                               दस्खपुक्त थ. (दर्यन्त) दन शाद्य,
 पंचसय है व (प्ययम)
                                काकि नी. (धेनी) एवं क्रोड
 पणसय ∫
                     योजमी.
                                थसकोरि नी (रगमंत्र) एक
 गुसप १. (१३३ग) क्यो
                                                    चरोप.
 सत्तम्य व (नःसन) सन्तो
                                नवकोडि का (शत्केट)
 भद्रसय ) व (अध्यक्त)
                     ब्यटमो
                                                 ता करोड
 महस्य
        x सब, सङ्ग्र को ढाल इ धमा प्रयोगने अनुसारे पुन्तिनाता
   पत्र बरतान के यहा —सोश्य राजनहरूल अभेत्र पूर्वति एक्सार्वास
   (विविधारिय, भव. ९. वर. १३४ ). अंद्र व्यस्त्य वर. ४४
```

4/15

मस्त्रसम् वि (चर्याच्या) स्ट्य रे वि (गार्व) वोड मर्व धारा छट. संबंद 🤇 भवतम्बस वि (वर्षन्तस) विश्वतक नि (हनपार्व) दाव

द्वाच सहस् अखबसम न (नर्नेक्टम) <u>धंबच्याच्यः सम्बोती बहेश</u>

amm art सवाय-शहर-शह-पानीय-पाऊज-पोज कर गुस्तमी एन कर्तीत करा निर्द शत हे

सप्रदर्भव-व्य (सव-व-व)

सम्रायपेक स नि (तपानपत्र-१४) पानोपर्यक्त-भा) वि(प्रकोक-

गाउमपंच-म र गर-ग)

## **ব্**ডেই

शंक्यापूर	एक शप्यो
पटम-पटसिद्ध (प्रवस) १%,	पव्यम (पवन) ५ हं
बीम-विद्य-तुरुष ? (वितीय)	BE (40) 6 \$.
पुराज-वांध्य ∫ १ %	सत्तम (क्तम) 🕶 मुं
तीम-सद्ग-सद्भा (तृतीय)	बाहुम (नदम) ४ मु
विस्क विस्य रे सं	शचम (छम्) ५ ह्
चत्रप-बोल्प (क्तुर्व) ४%	क्क्सम ( (रसम) १ स
तुरिम (तुर्व) ४ हं	व्सम 🕽
	क मामा उपन्त्री धंसकापूरक सन्त्रा
	म् प्रत्येष सम्बद्धकाची वाम के स
	և केमन प्रकार सिद्ध प्रनीम उपरर्न
पत्र प्राक्षय निकास्त्रकार केरफार व	
पक्कारस-म (एकारस) ११ हो	े तेबीस-इस-(त्रयोविश-क्रिम)
बारस म (हास्य) ११ हं	3 f f
तेरस म (वयोदण) १३ स	चाउचीस-इस (नक्ष्मिस-किस्म १४ स
चउर्स-म नदुर्रण) १४ हो	रंग स पंचामीस-इस रे (क्वर्सस-विद
पम्नरस-स } (पबच्छ) १५ शुं	विषयीसन्दर्भ (५४७४६-१७
पवदस म 🕽 सोस्टस-म (बोडच) १० ह	छम्पीस-इम (वर्धिच-छिन्न
alternal (disc) is 8	₹1 ±

खलरख-म (कारण) १० हु महारख-म (स्थावण) १० हु शिमा १० हु भीग्रहम (रिचलिका) १ हु पण्डर्याख-म-मूम (पण्डीण शिक्ता) १ हु वाबीख-स्म (हार्विच-किसा ११ हु

बहायीस-तम (क्टाविचिक्तम) १८ मुं पश्चतीस-तम (एकेनीत्रप्र-तम् १९ मुं तीसहम (जिस्तम) १ मुं पनकतीस-दम (एक्टिप्र-तम)

धत्ताबीम इम (वर्ध्वरंग-लिया)

१ (क्वचतार्रंब) सच्च चाम वेचीस-इम (मर्बर्वश्य चम) १३म **धचवचाश्रीस**् चडतीस इस (बहुकिए चन) महत्त्रचारकः ) (मप्रस्तारिक). महयातीस ( lv #. पराजपन्तास(एक्टेनपन्त्रस) र्पा पंचतीस-रम ) (प्वविश-रम) पणवीस-रम पम्नाय-स इस (क इस-रूप) छत्तीस-तम (फ्रांत्रेड-तम) सचतील-इम (क्लिनेब चम) यमपन्नास हम ( तम) ५१% वायन्त-क्य (शिलवाड) ५१ ई. शहरीय-इस (नवर्तिय-राम विपेकास-एम (जिन्हास-तम) पराणकत्तालः । (एकोनकरगरिश चडपच्य-इस }(शतुपन्ताव <u>पर्येणवासीस</u> } - छन) ३९सं. चाउपम्मास हम (-तम)५४हे-पैकाबस्य (रम्बपद्यक्ष) ५५ है-बसाब 🚞 ) (बलारिंग तम) चाडीस-म क्रेन्स्स्स (पञ्चवस्त्रः) ५६ ह श्रामानीय-स सत्तावम्य-च्या(स्टब्स्ट्य्ड)५७ई यमकास (एककारिय-तम) महायम्य च्या (महत्त्वस्था) । इत् परापसक् (एक्नेन्स्क) ५९ ई बापाकीस-इस (इन्यवरिक सक्रिया है (पश्चितन) (०∰-स्त्र (मह सक्तियम ∫ वेषाधीस-इम(जिन्माविध-सम) परासद्व (एक्पड) ६१ में बासह (॥ थय) १२ ह बरवत्ताकीस−इम } (व्यवसा-विसद्ध (निक्द) ६३ हं चवपाकीस-इम } रिज-स्तो चंत्रसङ्ज्ज्जिम (च्युन्स्ट-स्टिक्स) पपदास (सन्दरशाहि) ४५ई, पंचसङ्ग (क्ष्मस्य) १५ हे. कापाकीस (क्यूक्लरिक) ४६<u>%</u> काशक (परप्प) ११ ई

मख्य

वसीस-इम (इ.जि.च चम) ३२म

सरसङ्ख (सत्तरः) (ज्युं महसङ् द्विम (मक्ष्य-क्षिम) यगुणसत्तर (एकोनवतः) (९धुं (सप्तरिक्षम) सत्तरिधम पगसन्तर (एक्जान) ७ भं धाउन्तर (विनाम) » स वाइचर र तिद<del>स्त</del>र (विगनन) ४३मु-**घाउदसर (च**्रानगर्ग) ४ह-पेयद्वसर (१२मह१) 👽 मु **घटत्तर (ग्र**शका) ४१म सत्तद्वर (शलागः) अर्थ **ब्यह्रदश्चर (**जल्दान) ४स धगुजामीय धम (एसंबारी -then (mon) धमीरम (माफिय) ८ व

प्यामीहम (एकशै िक) ४१ई बामीहम (इपर्रातिका) ४१वे तेपापीरम (ग्यापीत्रत) ४३म् धाररमीरम (नापी) ज्यादको । पैबासीहम (पशकी टिमा) ४५५ छासीदम (पन्धीरिज्म) ४६मुं सत्तासीहम (ना हीक-दिस्त) 443

बहासीय-प (नग्रर्धात-टिम) 668

वश्वासाध्य (एक्टेक्नरत) ४९म् । (नातिमा) ९ म

मपद्यम 🕻 पद्धाणस्य है (एक्नर्न) ९५म् षद्माणवय 🛭 थाणडय (जिनान) ९२छ तेषड्य (विनात) १मु धाडणाडच (पनुवात) ९४स पंचापड्य (९२ना)

इन्नडच (बनारा) धर्म नचापाय (एलार) अर्थ बद्वाणउच (क्ट्रनाः) ९८ई **अप्रणाहच**े (मानगठ-शिक्स) अधयपर्म ∫ लवयम (ग्राप्त) १ मु

र प्रमान वक्कुलरमय-वक्कालरमय पुरसामय-तिक्रमरम्प वर्गरे बंग्या उत्तरी संवयनुष्क प्रस्ता पत्र वर्ग देश.

'पदम भी 'लिइय नुपीश गंग्यार्'भन् बं'निय सन्दराची बार के बादिना नेटबार्ड शब्दानु क्षात्रिय प्रापः सन्दर

धाओं ई प्रतादी वाच छ.

वंग-पद्दमा-बीपा-विद्वा-दीया-सद्द्या-बरापी क्समी-पनकारसी-चउइसी-चउइसमा सत्तावीसी-सत्तावीसमी-तीस-इमी-बासीसमी पगस्ति बाबचरी-पगासीश्मी-सम्बर्ध गारे. छंदबाराच कार्या विशेषत होवाची तथी वनी पुर्वितकार्य दिवा प्राप्ति कर क्रीकियां 'रहा' सने 'ररशी' प्रमाने समस्ता.

सक्तात्रक क्षेत्रो करती ब्याहिएईक विश्वनिदेशो क्रूच (कृतवास) त्यव कवाववाची बाच हे, छेनव वर्णमां 'कंप्रूचां-'साची' प्रत्यत वन अध्यान हे पता है सह अवश साई नन नान्द्र

देमन कि में है, जि में सि अने चतुर में चत बात है. सा-सा थगहुचे यहसि (सहर) एकार.

**इ-बोध्यं** दुक्द्युक्तें (वि.) वेशर. विन्त्यको विकासको (विन) वनगर षत्र-चटासुचा (ग्रा) शतार

पंचाइची पंचानसूची (पण्डला) पंचार, स्वदुर्श स्वक्लची (वक्त ) धेना,

सहस्त्रहर्षः सहस्त्राम्बुस्ते (सन्दर्भ) स्नात्वरः मर्पतप्रच वर्णतपसूची, वर्णतसूची (कान्यतः) कांगारः मध्य वर्षमां ह्या (धा) यने विद्य (विद्य) मस्त्रन बन्तमन हे.

पाद्वा स. (एकक) पगविद्य मि (एकविव) एक जक्षरे, लुबिक नि (दिनिय) वे अकारे.

बुद्धा वर (दिवा) तिकाम (किमा), तिबिद्ध नि (जिलेब) वन प्रमाध

षडहा } व. (शार्ग) बढहा }

वरविष्ट् } नि. (चतुर्मन) या प्रवादे वर्गान्य }

धन्दो

महुद्दा अ. (शखवा) व्सदा भ (रचना) बहुहा थ. (ब्हुबा) सपद्दा व. (एतम) सदस्यदा ध. (महस्रपा)

वस्त्रिक्ष वि (रक्षनिय) रच प्रकारे. यहाबिद्ध वि. (बहुरीय) अनेक मगरे. संविद्य कि (एउदिव) हो प्रशाद स्रहरूसचिह्न कि. (मरदर्वक) इसर प्रकरे. मापायिद्व वि (मनाविष) सुरा भूरा प्रस्नेट

महतिह वि (संधविष) शाउ प्रचारे

मासय पु. (अधियः) अभित्र सरिया प्रभार धरा = (भर्त) आकारोवानि वार

धव छरीर छरीराश्या. **संब** ९ (मास) भौतन शाह

भारताय दु (अन्याद) प्रश्वका अमुक

AND RESERVED थपिय र (मदोइ) नत्य नरक यणुपानदार स. व व (अनुवान-

हार) लच्चित्रदेश. भद्रमागदी भा (प्रशावती। कासरा भाषा. समापासा । ही (क्यासन्य)

धमायस्या भरिक्र ५ (प्र.४) र्लबेश्य

मदियगर रि (मर्राप्त) मरित

प्रयास

ध्यातह न. (शाक्य) यत बासाचणा सी (स्परातना) विपर्शन बत्तन करमान

उपैश पुन (४०००) अंकरा प्रथम निष्युर श्रेटनार सूत्र ब्यादिए श (माश्रिमर्थश दर यीपुहान (भ<sup>#</sup>िरय व्यी

परापनि ज्ञानिकं सम्) कचित्र ३ (मर्तिष्) मिकिमन कवर्ता । (४८५) है...

। कायरह पु. (शम) कालीमा झाह्य क्रिक प. बी. (व्या) करा केट. तुरुषु क्षाव (त्य केटन कम छ कोसन्दि वि (क्षेप्टरिक) बाह्यसाल सर्वेष्ण बद्दासं इतस्य बद्देश्य ₹10℃

बोड पुनः (क्रम्प) क्रमा पृथ्वेची बसुब मान. बरिय ६ (बन्धिक) हाल निश्राणी द्भाषाहरूम न. (पुनस्थाल) निध्या रटि वादि भीत् गुलस्वानक धुमोत्र स्कार. कैपस इ (करक) चरले छात्र. बारच ५ (वेष) वेषमायः बक्रवद्वि ३ (श्वनित्) बदार्शी ड कंडनो अधिपति. 📴 पर्गय पु (इसमान) निक्रोधानि **बेब्**दीय ५ (जन्द्रीय) शंक्तु बिमवय प्र (अनगर) क्य STREET, विष्ठ देनिः (प्रचट) स्थान् विष्ठ देनी सोट्रे, केटर मासा ही (सन्त) नारा बस्त्र नपर काले. मद्दिति (सर्प) मोद्व ग्रह्म मद्देव क्षेट्र विश्वकृत

विक्रिय भी (मिथि) शिथि शिथ मॅरिस्स न (सप्तेत्त्र) त्वत बाम के क्षेत्री क्षम्दर पाच कार्योत्त स्वक्त हे. निगम इ. (१म) व्यापालको त्यान, न्यारारी स्टेशो शहराच्य

विद्विपुर (विवि) कामनो बंबर, पानरी रायमी क्षेत्री विकेश-विक्वाप र. (निर्वाण) मोक पहुम्स-स पु. व. (तकेवं-क) स्थाविद्रेप नि विवास्त-पञ्चमसाय न (पर्वनस्त्रा) भन्त, अक्सान देवो पर्यंग ॥ (फ्लेन) महिन्दे

बीच प्रमर् मृत्र म धक्त खन-वि (मृत्र) गूर्व करवत. वृदेश 🖇 पूछ्य थि. (पूर्व) सम्मनिकेष सम्बर्भ ५६ हज्यार क्रोब वर्षीना क्तुर एक पूर्व

पश्चम वि (प्राष्ट्रत) स्वामामिक

शतः वि (शक्तद<del>् गरन्द्र-भाग्नद्-</del> वरान्त-भक्तत्) भाषार्थ<del>ः</del> देववस्त कावासकारण विविध्यालम् संस्कृत् समे अचोरा अंग करमर-मगर्फे की (बलाई) भगावी

सम बाबम् संद सरहात (भक्त) करकोष श्रीकारमंदिरम् प्रथम नुक्रः

भारत र (गळ) नळहेत्र.

205

मसस ५ (ध्रमर) ध्रम धारियर १. (गरियर) बन्यर, सम्ब मस्रंतपाची (भगन्ता) राज बासकर पु (रक्यर) पर्वत पनाने पामन, बर्दाने भग्म विदेच. चर्च. खिलाइ नि (निन्द्र) बाद्य पानेत मियन्त्रायरिक्ष वि. (शिलाबरक) जो स. (दें) बारकारंग्रामां दर भिशा वर शब है. भोग पु व (भोग) सनाव विविद्यादिक वि (मिनिर्देश) विदेवे चन्त्रवि विश्वय क्षा क्षेत्रपट मजरस्य पु. (मनावैर) बनुर्व विवाद ५ (विकार) विकार कान (बीजाना सनना आयोने ध्यत्रच्य १ (शहन) पद्मी-बयालाइ हान) सिए(व (निय) हुन्न बिश्वरा मृससूच व. (म्राम्थ) स्वधिहत. बगरे चना यम र (र") यस अशत संतिषण ६ मृ (तर्राध) कार सोगंतिम १. (अध्यक्षक) दर-पासका तरी पदेश संबद्धरिय दि. (तां लादिक) RET. सुबन्गर भदनी वार्षिक. क्ष्रोगदान्त } (शेष-४) इन्प्रना खोगपान ( प्रतिसम्बद्धाः व (इस्टिब्स्पर)

षायणा धीः (रावना) शबना द्व ५ (नम) पारा, पानुमो मार्चाय् (अति चार्) जीविता चचा (मध्यन्त्र) इता पाते वरके उम्म क्रानी. अधि-सिंख (अनिश्लिष) बाषुपा (नपुरूप) शतुपाई

अनिरेष परता.

स्थि पु. (न्वि) श्रीवसत् सात्र

पसन् (प्रश्तु) जन्म अन्तरः उराम्य पर्न

थरयू (शबन्) शबन् अन्तु

महार वे

मान्त्रे मार छ

विद्व (विश्वा) कर्न करान्

प्राकृत बावयो

प्रवरहामी क्रांग्ड समजार्ज सुश्चरस यापण देह । र्चच पहचा सिक्रगिरिम्मि निष्याणे पानीम । कामो कोहा सोहा मोहो मसो मन्छरो य छ विवास जीवाय-

सहियगरा । करिल बजाये पनपीसा जैवा छत्तीसाथ क्रिया पगासीई

केठीमो सहसही वंपमा मरिय। सी समग्र एवर्गा गड़िहि सह धेक्षिपसर्गई । महे सचर्च रिसीयं सच ठारा दीसन्ति ।

समोसरजे भगवं महाबीधे वैवश्ववस्युमपरिसार वर्जाई मुद्देष्टि अञ्चमागदीय मासाय धाममादक्ताः ।

विसद्धा देवी बहत्तमासस्य सुरुकपत्थी हेरसीय विद्रोत महाबीर पुर्त पवादी ।

इसर्डि इसर्डि सर्व होर इसर्डि सपूर्व सहस्यं। इसाँद्र सहस्तेति अतुर्थ इसाँद्र अतुर्वाद्र सम्ब क्ष गरे।।

क्समे मर्द्धा कोसक्रिय प्रमासमा प्रसमिनकामरिय, प्रमा वित्ययरे बीसं पुष्त्रसयसङ्ख्याः कुमारवासे वासिया तेपद्वि पुरुषसम्बद्धस्साई राजवणुगासेमामे सेद्वाहपानी सदयहमयण्याचामा वाक्सरि कसामी बोवहिमदि छागुणे सिन्याव्ययग्रस्य यय तिथि प्रचात्रिपद्वाय स्वर्षि सर उपविश्विता पुरासर्थ राजसूप समितिया सरी

पुष्का क्रोगतिपदि देवैदि स्वोदिप संवच्छरिये वार्ष श्राद्धण परिव्यक्षणी ।

तिकाय प्रमाणस जाँगाजि जारस वर्जगाजि क क्रेपगैयाः इस परमगाई बचारि मुकसचाई, बेबिसच-वणुमोपदा राह क बोरिय कि प्रवासीता माममा संति ।

र्मते । माण कहियह प्रमर्क गोयमा । नार्ण प्रविधि प्रमन्ते.

रुष्टा-महनाचं शुभगाणं शोहिनाण मणपानवनामं केवयजार्थ सा । पचारि सागपाला सत्त व मणिया। विण्यि परिसामा ।

परायणो गईदा यज्जै च महाउद्दे तस्य (सक्रमस्स) ॥धा वतीसं किर कपटा माधारो कुव्छिपूरमी मणिमो ।

पुरिसस्त महिलाए, बहाबीम मुखेयच्या ॥धा मद्रापीयं एएमा सहयातीसं च तह सहस्तारं।

सम्बेमिपि तिणाणं श्रांच माच विविद्यि ॥४३ पडमे न पहिमा विज्ञा विश्व नजिल्ल घर्ण । पेश्य न नया नसी, चडत्ये कि करिस्तार ॥'ध्र सता सरे हरिया पाने नागा रने य पारियपे। किवणपर्यमा कवे असला गयेण विवाहा ॥६॥ पंत्रमु सत्ता पस पि जहा अध्यागद्विभवग्मना। यगा प्रयस् नसा पत्तार भस्मतय मुद्रा ॥आ

कर्यमन्त्रयद्गियात्रश्नम् नयः यद्यं तमा महानश्चारितायः महणदायाः । भा भागसीरदुण्यस्मतस्यतमगरनिगमजनयपर्यः पत्तानागयवग्महम्भाणुयायमना ॥ पररागररपणगामदानिदि-पडमहिमदस्य परस्तायक्ष्य सुक्रयाँ भू ग्रीद्वगयर मनमञ्ज्यामार्ग

छन्नरागमधाहिनामी भागी भागारहेमि सर्वरे <del>ग्रेहमो</del> ॥दा। र्सं संति संतियाः संतिकां सप्ययदा । संनि प्रमामि तिर्च मं दि विदेव मे ॥ श्रासामदिवे ॥ युप्पम् ॥पा भा ब स्त्रीमा गानिनगर संगाननी छ

+ में (भं (रेस.) सामेरिव (संस्थी (सन्दू) आहे वे क्षेत्र विकर्त ₹¤ Ò.

## शुक्रराती काक्यो

- त एक्नोस क्य चारित्र पात्रो समानिवृर्धक स्त्रेषु वाली करना वैद्य क्रोकमा वैद्य क्यो
- स्थान् नहसीर सालो प्रास्ती समावास्थानी एटिए नार्टे करीनो कर करी गोंने क्या कार कई प्रचारतं कार्तिक माधकी एके गौतास्थानीले केमक्यान वर्षे देनी वा वे निकी सम्बात केच मावा है.
- हैयों छ प्रथ्यों कार कर्ती, बीर वर्गरे का तरब रच पतिपर्न कर्म गीर गुणस्थानको स्थ छ
- भाषणेए जिल्लाको बोल्ला ब्याह्मस्त्रका को प्रस्थानी केल्पि भाषणकालो वर्त्रकी जोता.
- ५ मैं मरतक्षेत्रमा तथ यंत्र तिये ते मासुवेष बाद समें में में बंध नित ते कामकार्ती बात है.
- दर्जकरेने चार अविदायी बन्धनी होन छ (सम कमीझपपी अभियार अमिछनो १४ हेवोचाडे कराविस ओपनीम अस्तिनो इस बोबिस अधिकारोधी विकासित दर्जनको होन छे.
- छाँ अंग अने शर्याम क्येर धुनोमां नंत्रमुं ग्रमक्ती अंग भेष अब धर्मनी गाँउ के पोटड क्यों रेक्स्पन व्यर एक्कियों क्यमप्रोत्सम करे हैं.
- ९ किंद्र मण्डली कार्त कार्मेची व्यक्ति होन के

प्राकृत व्याकरण नावं है.

- १ कुमारवास पमार कार देशोमां जीवद्या पळते हुई.
- १९ भी देशकेस्प्रितीय सिराहेसस्याक्त्याना कटमा अन्यस्मी

१९ मा बंद्वतिमां छ तथार पर्वती सम सरत योगेरे सल सेत्रो छे

भी बीयो ये प्रकारे, गति चार प्रकारे, प्रतो पांच प्रकारे मने शिक्षुनी प्रतिमा चार प्रकारे थे

१४ मा प्रिन्त का ब्याच्यक्ता बाट कवाची करूबा है कहे दरेड सम्बद्धता बार बार पाना के छना है हात सम्बन्धी कर्म माज्या सम्बन्धत दे पाना मच्यों हुं १५ ते बचने में एक के क्या दाव एं देशों एक हम्बन्ध होगा है.

चीजा हापमी कहा हो। बीजा हाममी चाक करी चावर हाचमी याप छ १६ का दुश्तानना हूं बच्चीण यार मान्यों एना चारीफ हमार छन्टों बाह

भ का कुलकता हुं बचील पट सम्बो एख चारेड इसर ग्रन्सो बाद मर्च इसरेड बास्त्रो करी हुई सने ब्राह्य जुनम धार एसा सौ बार्स ?

## संबना

रुष १६३ हैराय झाराजी बहुश का मिन्स टेराजी है. क्योंनि भूपद्दराजने देन झारब सारासाधी कारी स्पादरान सादा

क्यान मृत्यद्वालय वर्ग प्रत्यस्य वर्णात्रसाधा कान्यः सृत्यद्वातः सास् वै सम्म

गय-गयर्पता (गतपान) प प. सुप-सुपर्वता (शुतपान्) प० ध.



## पाइ**थस**इकोसो धारसय पु. (व्यक्तिश्व) व्यक्तिव शकास ५ (सम) सरमय, सम

महिमा प्रमान ×शहसम् (मतिनमम्) शत्क्रका TEP. अस**र-बाय्** (शरिश्यात्) जीन-विद्या करती. (ন্দু) 🔫 मार्थेष अ. (मर्द्राव) सरकत्त. भडम ) न. (अक्टा) रखदवार, सुचनाविसंग. घरका ही (सरोध्या) मचोष्या नवरी

ममो १ व (बदः) एवा ए भौग न (छम) जननत्र धानारी-प्रति बार संब भैगम ९. (एम) मागल, बोब, चैगार-छ } इ. (भ±र) ईपार-छ } बेग्ले चेळले

भैज्ञच न (महन) सबस आँखा। मोजनाने सरमो. भोषा वि (सम) वर्ष करो अव ५ (काश) धारताश व.

भगुसी भी (धम) भारती.

ŘΨ. बरका ९. (तक) एर्व ×**शक्ता** (ग्रानकार्) रातन्त्रे अक्टान कर्तु-

यागान, (संद) व्यापक विकरि समास्रो स. (अस्तः) क्य करगरका की (कर्मका) रत्याका<del>ये</del> बाप्तरों भोगा देशे

ब्रवारिय (सम्) कर बारिग दु (बारिन) सन्ति ×धारह (कई) आर रफो सन्तान काम कीमत करके. ×सग्ध् (धन) बोमर्ड

अध्यक्ष (सर्थ) पूत्रहे सरक्य नः (वर्षन) दुराः शक्तवा वी (मर्कत) पूरा धारवास्य नि (मानर्गः) वटियम 2003 बादकंश इ. (अरुक्त) पर्दे

श्राच्याच्याच्य (अरुवय) विद्याप

निपरित माण्ड-

बाब्या और (जन्म) पूत्र उत्तरर ×बच्छ (बल) नेत्र्यु-

अजिच ६ (वर्गक) सैन्य क**स्ट** 

ब्रश्रुवाह् ५ (श्लुम्ह) उपकार

अधिष्ठ ५ स. (सक्रि) नांकः

**मच्छेर** न (बार्ब्स) विद्यान

चमस्पर.

```
करनो इसा करनी
सक्रिएफ न. (सत्रीनी) अथन्ते-
                               ×मण्—काण (क्श+एः) आधा--
महीच पु. (छम) समीव
                                                        भागधी
सका स. (सरा) धात.
                                ×भणु–ग्रष् (अनु+म्ब्यम्) सनु
क्षेत्रप्रयोष र. (क्रम्पन) अध्ययन
                                              शव करवी बागम्
भासाय पु. (धन्यक) धनन्ते
                                ×भणु–दा १ (भरू+च) अनुसदा
    म्मुक मात्र अधिकार विशेष
                                मपुन्ता∫
                                                 पासक वर्ष
 बाह्र }े सुब्द (क्षाच) यन बस्तु.
                                मणुसास् (षत्र+धाः ) विश्वागत
 सरद्य प्रजोजन ठालकं विषय.
                                          भागमी उपदेश स्थापनो
 ×बाद } (काट्र) अस्टन करहा,
                                                   व्याक्षा शायबी..
 सद्दुं ∫ सदक्तु
                                क्षणेस वि (क्षतेष) एक्सी समारे.
 महिष् रे धी. (मदि शे) भरगी
                                श्रपणसंष्ठी य. (कन्नोऽन्बस्)
 महची ∫
             शंपक करण
                                              परस्पर, एक्नीकने
 मध्य क. शरी समाव
                                 बाण्याया अ (<del>कान्</del>रा) सका<del>राहे</del>,
 मणत वि. (शतन्त) सम्रा,
                                                    नीजी बखते.
                   व्यवस्थित.
                                             ब. (अन्चन) निपर्धत
 मणंतसुर्यो ् । (कान्तस्यम्)
                                                       बीमी रीते.
                                 कापणहा 🕽
  मणतक्तुत्तो ∫
                      अर्मतीचार.
                                 सम्मद्धि ।
 मर्पदरं । (कान्तरम्) असिध-
                                 कारचाह
                                             स. (धन्दत्र) गीब
                   त्रीयः चरवा
                                 अवगरच 🕽
  अधगारिया श्री (अलगरिय)
                                 शक्याचि वि (अक्षानित्) भरागी
                      सायुपचे.
  सद्यस्य 🕽 पु. (कर्म) तुवसम
                                  थतक रे
                                           मि (अनुस्य) अधायसम
                          ETA.
  मपदु ∫
                                 गरहा ∫
                                  मत्था हु. (धरत) अस्ताचळ पर्वत
  सप्याचाड वि. (कमणम)
                                               व. सत्त, करावीय...
```

थ्द. (ग्रमशा) वर कावणः

अद्यासही भी (वर्णनावनी) शक्याकरी सामा (मर्पेय) अर्पेय पंजाम 🦠 भप्य वि (अस्प) बोह्र न्यप्पेंड वि (बारगीन) गोराज असिस्त्र वि. (धनिया) पराभूत पराजिल **मि-नंद्** (धन) प्रक्रंता फरवी ×मनि-निम्मम् (शनि+निष्+ **बन्द**) संकारी मार्ड केवा अमसि-सि**ष**् (मनि मिन्यु) व्यक्तियेष करते मध्य र, (सह) संच नावर्थ. क्ष्यारचना ची (क्षत्रर्थन) <del>प्रमास्य (सम्बर्ग) क्रमान</del>-×**व्यानामार् (व्यव**+उद्शत) उद्गत क्रमार व (धम) हैन.

मम्मो म. (१) म्यार्च व्यवस्त हु (यक्त) और R Ray, Street, थयि । (अपि) प्रज्ञा समाधन व (क्ल्प्ब) मन भारत की (कारि) कारिते, प्रकार समाज स्थापित मर्रिक्त । ३ (व्यदि) सम्बद्ध न्नवरिद्व (सर्द) समझ ब्ह्य क्षेत्र सर्थ, पूजा करवी-**बदव** हु (हम) संबद्धान **दर्द** धकी समि मर्खम (का) पर्याति प्रतिवेश सका

बाग्रेकिय वि (बाब्या) शोवित.

थकाडिया. (६) पर्यंत वर्ष

**भ्यानी** औ. (धून) केले.

भगाषासा । श्री. (मध्यमण) मगाष्ट्रसमा । सगारम्

मसिथ र . (बद्दा) म्यूड-माराव २८७

मारितम कर्म्य प्रदेश करको बसाग ५. (सरोड) वरोड. सपटय र. (अ १४) पुत्र सरम्भाज न. (सरध्यम) धृध्योन हुख विशाप स्परमा हो. (मान) अक्रान APER मध्य-सम्ब धाः। सम्ब आजा का विकास का के व्यमाच ९ (मध्यतः) भागान Personal Property मपपाप ५ (बातर) निग मरशंद सदरबद्भ ( बस्त्वत) (११५०) श्वाचे मान् सपरा मा (भाग) प्रविद्धार सपराइ १ (सराप) नने बांब ×सपर्त्रंच (नन) भाषत्र देश. भ्भविकार् ( थान ११) मोल मक्षम् 🕽 क्या वसंग्र अधार्ष (अरान्ड) देर बर्च वाता ET3 अमरे (बास) **ब**ार् ×बास् (तम) (पे वर्ष धाराष्ट्रं सः (अन्यूष्ट्) नारवार

क्षराम्य व (बर्टन) जीवन

×भक्ती (म्ट+ती) आधव करको

असाय न (बनाउ) पीश द्वार बागार रि (गम) सार निगर्तुः निरम ह श्रासुर वु (नम) मनुध श्चतुरिव ५ (धमुरेन्द्र) समुधेनो (मर **घड** थ (सर) 💵 संपेदार, SH. बदव हैन (अश्ता) दिश का बदया ∫ महिम ८ (मन्द्र) **र्म, श्यारे** सद्दितम् (भविनद्र) सन्तु ¥-पन **प**ि भदिष्णु }ि (प्रतत्र) निपृत्र भदिरक्ष } स्टित् सदिलास ५ (म भरत) म्यू राथ इराह बहुया व (४५ग) नर्र (4rt आदो म (नम) मीव पटवा Hit fines.

wit

बाए इ. (मप्ति) जनम बरदे

शसदान नि (जनम्ब) गएव

सम्बन्धी

मायरिक 🕍 (ध्यन्तर्व) शासर्वः उपवेश कायमी समजाना भागिम } म्भारम् (वा प्रा) ग्रेक् व्यापार्थेत् व. (जनतञ्ज) वर मार्थ्य ५ (शारिक) सुर्व महामी पहेर्ड न्हेंय मारख है. महात) ब्याकुर **श्या रंग**ो म्बाय प्राची-वादव् माबद्द व (समुद) सम मापस द्र (भरेष) हका चायम इ (६४) सक्त, सिक्सन्त. बागय न (शाक) सावैक

मायास पु.न (शक्तन) आशत ×**भारत** है (जानर) कारत करवो मार्ड सम्ब भाषा भी (मड़ा) धरेख हुन्म बाबास इ. (धारल) हारीने धंमकाने क्षेत्री. ×**धा**−में (बा⊹ग्रं) व्यवश्

×माइक्स (काश्यक्त ) वर्षेत्र

भाविस् (मानविक्) स्ववेक कारो प्रशासक ×मा सोम् (श्रान्योगम्) देशम् विचारतं, अन्तु भाषद् ती. (सवति) आवितास. भाषत्त थे (एम) वाबीव. मापार ५ (थनार) नागाः

भाषव () (भारत) शास्त्र सम्बो

}(धानरम) कद ऋखें व्यारेम प्र (इस) आरंग करही वस्त्रक करती जोतरक. ×का-राह (व्ध+त्व) वाराक्य

कारों सेवा कारी बाखाव ८ (शक्त) राजने सम्बद्धाः शेमकुः ब्या-स्रोय् (बास्स्रोड्) देवनु, ×मासीय (व्यक्तेप) क्लोपन कारी वैचान्त्र, निवासं

माकोपचा जी: (बानोपन) वेवारमुं अवट कर्तुः **बस्ते दोव क्येदा**. **भाषया औ. (अ**शर्**-**ग) अग्ररा पीच.

भावासच | २. (जनसङ) निय-भावस्ताच | वर्ष पर्यंत्रधार-थास छ- (वर्ष) चोने थासच न. (भारत) वेकार्यु वाराय, स्थान,

आसम्बर्गि(यत) वर्धात रहेव	इत्यी किये (नी) की नारी
स. सत्रीकः	थी }
भारतम 🐒 (शासम) आधार.	इसर्पि (शह) अन्य ग्रंडो रीन
× <b>श्रॉ-साग् (श</b> ा÷शागत ) ग्रान्ति	(याणि)
जारकी आधानन देवें	इयाणि ज (इत्तनीय् ) सम्प्रति इति (इमर्यं सा सगन्।
मामायमा स्रे (अरगण)	इतिय हिम्म सा स्गन्तः   इतिय
रिपरील बनन अस्तरागः	श्य )
मासिन ५ (शाधन) मानो सम	मिष
बाहार ३ (भागत) भागन	िष्य कि. (१३) पेडे क्रेस
क्षांत्रक क्षांत्रक.	विय   अले केर्रान
माहि पु की (भाषि) सामतिक	्रियः । सन्देशेतीरीत स
पीडा.	। विश्व J
*	, बुस्मुरिया है न (पेपथ) बेजर
EM.)	सिरिम प्रभूग
हर्षे म (हरि) एव का रि प्रधान शक्तारिक	इस है स. (१९) मरीवां मर
ति प्रधान शक्तान्यः सि	दर्द देखाँच
इंद ५ (स्प) स्थ	्रहरहर } अ (रत्नपा) अन्तरा इंदरहर } अति तिन
इंदिए व (र्रान्य) व्यक्तिंग्रवर्गः	इंदरर } पीत्री रिफ
शबंद <sup>िय</sup> (राष्ट्र शब्दा	· •
क्रम संस्तु काल)	ईमर ९ (पि) इंग ब्रम्
दिन प (सम) बगर,	(種)
इक्त व (रहे) स्ट्रंट	हैरिर े था (रिष्ट्) कोई अप वर्गी
इस्ए (१४ इस) इस्तुं बन्तुं	Aut )
रहिंद है के (चड़) रेवा	-
	क ज (गम) निया पिरमार
स्तद्भ ।	शासकर रिक्स शबन
इस्ट्रें ३६ (१७) एरी रीय,	े उस भ, (१) लक्ते देखी

٩

कम्माम् } (त्रह्ममान) क्ष् रक्षाम् 🗸 🤫 उप कार्य डेटब-दा रि (उदय-४) उत्था 她 ×डप्पञ्च (उन्।गद) उत्तम वर्षे बेब्छाइ 🖫 (उम्मद्ध) बलाह उत्पक्ष व (शर्मक) कम्म परमाध वि (इष्टा) लग्द डम्मत्त्व वि. (उत्पत्त) यत्त ग्रेडो. ×दरतम् (उद्द+ध्यु) क्यम उम्मूब्स् (उद्+मुक्कु ) सूनवी भारते महत्त्व प्रत्यां चंत्रमा ५ (क्वम) ववन सहैका, व्ययस ५ (डपरस) उपरेत्र. राजवंत ५ (सम) मिन्ह उद्यक्त् (उत्तद) उत्तम भू चेत्रभाषा न (अदान) उदान, क्यक्रियम नि (दस्तिन) नेप्र चन्त्रीग पु (स्थान) प्रमध वदम क्रिस S. (बराब्यर) स्पारम् (दम) स्वाम काशी का<sup>त्</sup>ह रे (क्लंक्स्मा) केंद्रस् वस्ता र् श्**डय-एं**स् (उपन्दर्णन ) देशान्त्रं वर्षे (३४+व) वस्तु तम निस् (वप्रशिष्ठ) स्थाप ब्रुप्तम है कि (लग) केन्द्र अक्षपंते. विचम ( डव-मूंब (डप+सुन्ह) बोवार्षु उत्तर स. (ब्रह्) उत्तर, संस्था अवयोग करते. क्लारा को (सम्) उत्तर विचार अ**वध-धर (**शपश्य) **श्रप्तह कार्या.** बर्गा रे व. (उर्व) नवी 🦡 व्यवार ३ (वरम) उत्तर, HITT BYL

विविध वि. (उदिन) चीरव

म्डम् (मि+श) क्रम्

वस्तिष् (स.) उपनेक कर्तुः बामा वि. (तम) चीन प्रथम

P.

वर्षे (जन्म) जाम भाग् अविद्यम् 5

(मानाजर) श्रमक

```
क्हसरियं म (४) घटा
           थ (टर?) उत्तर
 उवरि
                                                  रार्च ध्रामी.
 मपरि
                                  प्रक्रिय
 सवर्गि |
                                   वक्रमिश्रं
×उच-पात्त (तर पद) उत्पन्न
                                   प्रज्ञास
                                   वगया
श्वय-सम् ( उत्तरम् ) राज्य
                                              बर, (इन्हर्गस्) इसनी
 व्यक्तप्र पु. (उरभव) उराधव
                                            थ. (सप्र) स्टि
      तेन नाषुष्ठ'तु निरातस्थान
                                   ਬਾਧ ੀ
 बपडि 7 मी (उपवि) सावा
                                   वराचय ५ (त्यक्त) दशमा
               उपक्रम साधन
                                                          द्वाची,
  स्था ५. न (दशह) भाना
                                   व्यक्तिमानि (च्छा) एव पर्यं
         नर्वेच जिल्ला करनार सृज
                                            गैन्तुं जचा प्रकरतुं.
                   मूत्र विरूप.
                                           ब्द. (एवस् ) का प्रमापः
                                   वयः }
वर्षः }
  उदाय प्र (जन्म) उताब.
 श्वच्यद् (उद्शस्त्र) वहन कन्<u>त</u>्र,
                    वाक्त कर्ष
                                    व्य
 ×डिध्यब् (उद्+वित्र) ४३म क्या
                                    बेध
                                               ल (एउ) अधनाम
                     मिम्प क्यू
 ×तबे (दा+इ) पान वर्ष
   बसह रे ५ (ब्राम) अध्य
                                    चित्रच
   उसम } विवेचश गान.
                                    -चेम
   जन्म ( ९ (इस्म) बन्द
                                   ×चन्द्र (मा+°इ ) शावर्ष, हृह
                                             निवानी तरल करती.
  ×प (इ) अपू, पामश्रे
                                    अमेरिय (विश्वर) केलो.
  ×ঘ (অংশঃ) কৰেণু
```

```
भोसम्बर्धः २. (भौषष) ग्रोषण
                                    क्किश ५. (कर्षेष) करिंक गान-
 घोसह 🕽
 मोद्द ५ (मोन) समुराय
                                             ब. (१९००) शाबी है
         ) पु. इस. (भारणि) सम्बंधाः
 अवदि
              हाम (क्यी पत्तवीनी
                                    करप रे
       नमानवाद सर्वान्दिय हानः)
                                              ध. (कुल-क) कर्ज.
क्कारे नि (५०) वरेक्ट
                                    ж≰प् (चनुष्) समर्थ रहे
 कड़ र्र
          पु. (कटने) काने
                                    व्हानगर<sub>्थ</sub>वी. (क्रम्क) क्रमा.
                                    कामा की (कम्ब) कावा की.
 क्राउरण प्र (धीरण) कुरश्यमा
                                    कामक थ. (यम) पाम.
         बरान्य वदात बडीव.
                                    क्ष्रवाध है. (इतम) सिवक्रस्ट
 कारका भी (बहुन्) विद्या
                                    क्ट्रास ए म (पर्सन्) काम पर्ने
 क्रम ] व. (इरे) कारत.
                                    ,शास्त्रसमीयानि अन्य गर्थः
 क्ष्यम
                                    क्षचण्यानि (इस्ट) इस्त
                                   <sup>भिन्न</sup> शर्पकारचे<sup>र</sup>शकारार विश्वरतायः
 कंड इ (न्य) एका का
                                     मायसी है और (पदली) वेस. ४
अवस्य (रम) क्यानं शानं
           (कार्य) चार, काळ.
                                    करवा अ रे(करा) क्यारे.
 बहा र (शह) सहह
                                            मः-(पदाधित्) धौ
 स्ता म (च्या) इतस सम्बद्ध करा.
 बहर (म्थम) उपलब्ध, स्थापन
 क्रमिप्र मि (वमिष्र) वार्चु, बु.
                                   अब्दर्भ (ष्ट) परचे
                    माओं वर्ष.
                                   क्रम्यान (क्स) इति प्रमुं हेन्द्र
           प्र (प्रथम) वास्त्रीयाः
```

कसमा इ. व. (बरश) की ब्हायच्या है. (क्ष्मिन) क्षमा तास्त्र. मार्च क्टाया श्री (सस) हैर कसादी (क्य) क्या क्षांस हुए (गम) कुछ सम्ब पनि पु. (गम) कशिषुय कशीमा aver. € UF कियंत रि (दिवर) केट दे कतान (काच) काहे साकाह विनर १ (गम) किंग, श-भारती की विद्येष. **प**र्ति हे स (कन्प) आरोपी गाउँ किनु श. (गत। परम्तु पत्र £13 } कियान हरण) कम सत्या न (इ.स.) वराय र्यक्रम् (क्षी) उग्रेशः सुनं, क्किन्द्र वि (हरश श्राम कातां) च्याहे पु. स. (कार) कार 2 ሞደ स्रपान पू. (नम) पंशीका धान विरोध (दिन) समीवा कवि ५ (क्ष) बाहत भित्रप तत्त्व CET 4 (E22) TEL िगदार रचह कागर है अ. (कायीन) विल्ड्स (बध्र) जिल पर् कत्तार है क्रियम (६. इतन) कपुत्र सामी, PEG (41) 9 1 किया भी (हम) हम पदे ( भ (कान्) वन ती भद्दः गेरे केंद्रे गे कुममार है के (कृम्परा) र्मार ∫ प्रता क (क्या) बचा बार्च पुगर (इव 1) अपन ही। क्षात्ररगराग् थ् (कानोमार्ग) (बरब अन ियानी) क्राचीन स्थान क्षाप्रकार बुल्यि इ बी. (१°व) अस TTH J. (TH) ETT

कामधेनु को (बाल्येन) कक

रेन ल्य

TO.

ब्रिमी (वर्रिनीत्र) बुज कार्डी

क्षरंबि में (प्राम्प्यः) प्राप्त पाता प्राप्त कुटार ३. (बुडल) इस्रार्थ ×野母 (B) 報前 ×कुष्प् (बुग्-कुष) कोए करने कुमार हे ज. (बुयल) कुमार क्रमर ∫ क्रमारत्तव = (प्रमातः) क्रमारपर् 55 के दें(मन) वेद्याल नाम ख ×क्रम् (१-५म्) काबु, करावबु 55-26 पु. न (सम) कुल संध कैपाइ थ. (क्रेनविन्) कोई बढे केरिसी की. (कैस्सी) को देश अच्यानी केन्द्रस्य पु. (छम) केनन्द्रस्य वि अस्तिक्ष अस्तिक **केन्द्रध** स. (सर) क्रमा प्रका केविति ५ (बर्गकेन्) ब्रम्या केरबहाची वर्तत. **कें**सरि इ. (केक्सन्) सिक् कीसा स्त्री. (ब्रीवा) वेब्दल गरिय बरोसकिम न (भीवकिन) सरोकार्य जलाव परिक

×स्त्रीत (क्षणान) साइच, करण करका. एरेड पु. ल (लग) बण्डम **१०(मो समुख नाय**ः महिए (बन्दि) दत्र निर्दर्श बति क्यं (बान्च) लन्दि, क्रमा, कासम सम्बद्धिका स्त्रम पु. (स्टम्प) प्रया क्रमा ५. (चड्रग) ठावा ×पाणु (प्रम् ) कार्य क्या १. (१०) दन शहरिय. अव्याप् (बाद्) क्या करके शाफी स्त्वमी स्वत कर्ण ×कह (स्वह) रोप्तुं क्षरपत्त्रुं, राम्, मृत्यू, उत्तम् ख्यार्का (ध्या) सन्त को बनो अभाव शानित, दौनअ प्रची-

**व्यवस्था** प्र. (क्रमानाम)

चास हि. (शत) हुए, क्या,

जिक्रम में (त्यमित) पोर्चू

वाषु, सम्प्रापाम होते.

भूमेर्क व. सरस्य छवा

कोइ पु. (शेव) शाम

र्याचा की (सम) वर्धीते व्यम

आष्ट्य (ग्रम् ) शान परपु, मपु

अस्पू (मस) सन्दर्भ

क्सर कृत. (व अक्षर) रोय-

विद्वेष बारवर्षु, सास.

×पा } (याद्) नाचुं समयु चाप् गंसीर वि (धम) गंगीर अंद श्वारिष्ट् (वर्ष् ) निष् ×िंगसू (सम) निग्रा करणी रायुष्य व (पनव) शास्त्रका पर्दा करवी गण्य प्र (सम) समुणाय. ×स्तित्रम् (श्वित्) केद कला गुजहर ५ (कापर) गम्प अक्ट्रोस करते >धिय् (थिर्) प्रक्र्यु **गर्थेत् }ु ५ (**गर्जन्त्र) उत्तम मिष्यं म (क्षिम्म्) ग्रीम, हाबी एनबम वस्योधी ×गल (गर) गद्धी रहे, सर्हे, चीम ) नि (क्षीत्र) सम व्यक्ष पामयु सर्वे पासमु कंगान जीर्ज समाप्त 🖏 शक्ति 🕊 (र्वायन्) समप्र सनी मीर रे र (धोर) पूप शब्दा (यमें) वर्भ धीर र ब्राच्य पु (धर्व) मान अभिमान सु रेम. (धउ) निधव दिर्ण्य इ. नंमास्य शियवः, रा**डियाध**ि (वर्शन स्पीमानी of ic (भुभू) शाम पामधे आहेरन् (व्येषक) जीवन्त कर्ण क्षमरावं दर स भी साम (सेप्र) सेप्र नेता गय प्र (यम) इत्यी ग शरस प्र. (करह) परिवन गइ भी (पति) मी जापार यदा पर्रो देशांदे चार गति. ×राद्व (धन) म्हण दर्द वरिष्क हैं. (ब्लिब्ट) पर्यु कोई गरिद्वा भी (वर्रा) निप्त.

```
चवर र. (काशर) चीई वजार.
×पद् ् १ (बा+स्कृ) चहतु
 मा-पोद्द } वेषतुं जास्य पर्व
 चय् (लड) स्थान काली
×वप्∫ (बड्) वक्तियान
 ठर }
अबर (धम) बामनुं, बासु
 चरम } वि (सम) ≱न्द्र-
 चरित्र 🕽
 चरम र. (स्त) चारित्र
 चरित्त न. (वरित्र) वरित्र
                   भागाम.
 चरित्र } न. (चारित्र) संबाह्य
चारित्र } नत निरति सङ्ग्रीते.
भवाक् ) (सम) बालब
 पस्ते र
 बरुष ३. (बरब) पत् पर, पर,
भवाम् (रम्) वतम् प्रमू
म्बन् (क्न्) व्यक्तं, शास्त्
 मनस में (१५४) श्रंपक
                  अस्थिर
 व्यवेषा १ की (वपेदा) वपात्र
 चसेडा ∫
                 च्याची.
 चार मि (रवाकिन्) वाणी
 विकासी. (विता) क्ति केह
×ियारच्याः ) (विक्तिस्) विक्रिता
विगिष्णे 5
                       कारी.
```

चिंता भी. (सम) फिरा विचार. चित्रक र. (चित्तन) निवास्त विष र (निष्ठ) विन्द्र, **विपद**्री तांकन निधानी वाच ×खिड (म्बा+तिप्र) उमा खेष अ**विषय** (वि) एकई करत चिरंच (धम) रीष्ट्रमा क्रवी ×**মুক্** ( (মুর্) লচ করু भुक्त । कुरुने प्रमु स्ट करती ×कोपक ) (मध्) चोपव्यं मक्तुे 🖁 ीसाव व्यर्ख ×खोर (सन) बोरी करबी श्रीर्यक्षण न (केस्परम्दन) चैत्वने मगरकार. बोरक न (बोब) शास्त्र प्रस्त चोष्टवा है था (बैस्प) स्थानसम्बद्धन व्यवस्य 🕽 विश्वसम्ब प्रतिमाः क्योरियन (चीर्न) चोरी चोर प्र. (छम) बोर. ×**ध्वर्** (पुष्) मूक्ष्रं, संस्थ

×िंख्त् } (सम) विन्तान

परि-चित्रं क्यु विवार

अस्त्रज्ञो

अध्यक् (राष्ट्र) कामन् अतानः (नन्त्र) चंत्र अंत्र কুম বু. (স্থাস) ভালৰ क्रम्पम पु. (बहुरह) समर. अर्थन पु (सम) प्राची नीव छाया सी (मन) क्षामा आस्त्रित ×त्रेष् (क्ष् क्ष्प्) क्येत्रं, प्रतिनित्र भारतको समाप

29/

स्मर्दाची (दाक) क्रमा सामाना Marrie चित् (तम) केर्यु अधिक्षे १ (स्त्रम्) सर्वाष्ट्रको

खिद् े प्रदान (एक) सुवा अन **भृह**र वी. (सुमा) अस्त्र, **डेवर्गय** ५ (हेराम्च) निवीचाहि

≅ सूत्र

ब्बर पु (बस्ते) वरि माबू बाइ (वरि) बरि बा जैन जिमसम्ब

यामा वर्त समो वर्षो 🖟 म. (का.) अवादी

मध्य वि (बैन) जिन स्वस्थि बाइयासमा पु (बेनकर्म) विके मैंबिया की (वनुवा) व्यक्ति नाम

र्शन (कर्) करन के क्षेत्रके

वेकिक म. (नाविक्ति) के की

मदा है

शपद 3. (अन्तः) किय, वरः

मागर 🕽

क्रमा श्री (श्रम) प्रता, ग्रीर्व

करम पु. (अन्यन्) बन्ध. ×कस्म् (३५) बररून वर्षु

×क्रम् (बि⊸क्वृ) जचनास्त्रो

बचवय पु. (सन्तर) देव स∺ অসা,

बद्धनाचे

MF.

मिन्द

पेदा क्¥त **बाजहप्य प्र. (जनार्वन) नाप्ट**ने-

र्वची.

যাবর

नार है.

क्षूपीय हे इ. (क्रमूरीय) इ.पि.इ बंबुदोप ∫

काव्यक्त पु (थश) नध्र.

सम्प १ (राष्ट्र) वान्तुं

**नविस** पु (बटिक) तमन

शाच्च छ. (बन) बन सम्बन्

**≭क्षण** (बस्ब) तरसन्द **गर**हे



कीच ३ (छम) भीग कोस प्र. (जीव) क्वरवार, बोक् **कीवब्धा क्षी** (छम) जीवद्वा अवोध (रह) देख्तुं, क्षेत्र मीबियतः ३ (अभिकल्त) ×बोध (बोद) बक्कानु व्योगि 🖫 (गेनिक्) होवी प्राचनो बाह्य बीवखोग ए (बीवडोक) हुन्या कोण्डा की (ज्योतना) कन्हरी मोवर्षिसाकी (भौनक्षित) STREET बीगोबो वस कोव्यक्त न (शीका) वसम मीचाइ पु (जीनामि) वीव कशीव लपानी बोह ए (बोब) बाहो. क्रोरे का उत्त्व. मीचाड छ. त. (जीवातु) जीमारू-नमं भीवम साम जीकर, सर् (वर्) समु रम् व्यक्तिय १८ (बीमित) जीज्य व्यक्त स्टारी महरित दे व. (महिती) <del>वार्</del> कीसगढ़. ×वरिष् (बरुष्) करका पासची कविचि मचि भ्डेंस् ( (इच्य्-दुरुष) जोव्युं, अक्ट (वर) कला र<del>मन</del>् ग्रेन्स् (३५,५प्त) कम्तु वृह ×सा (चै) जान करत शाषात (व्यव) व्यव द्देश न (दुई) दुई, व्हाह, प्रक्रि ५. (शके) कार द्वाच नि (क्षुक) असित मील्य ×त्रम् (त्यागम् ) स्थानः कर्तुः कोश्वेद क्षेड } मि (क्यक्ट) मोडं हव क्रिड ×हा (स्वा) कथा योज डिम नि (रिका) उन्हों धेर भ्योतम् (भुष्य् ) काम्<sub>न</sub>, श्रीका ×बर् (भप्) त्रास्त प्रस्तो मोन्प नि (पोरप) वीरन कावफ

```
101
```

TIT

प्रपी } (स्प्) ब्रुगळन घाण् } स्थ शुभ (तु) रिर्न्ट प्रध भ्यक्तः }(छात्र) प्रथम् अल्याः स्रोमः } शृद्ध 🕽 🛪 (तुन्यू) निश्वत शूरा े तर्व हर्ने हर इस अच्य (गे) मा बपु बेंद्र वि (हेर) शाला नास्त्र क्षो व (1) ध्रिप स्थाप a fi RACA ( g ) Hanti प्रवहा (स्था) स्थान सम्ब # ( ) Pel A # (1) | w | (2) | 41 | 414 | dund if to diff. तरा । Can have and g ::- } **≥-4** 0 (-44) 5-4. मुक्त क (जन) रूप राज्य -<del>facel</del> e (\*~e } (∧e MAI अक्ष हत्त्र । अक्षेत्र क

**লব ৈ ল** (a) সংগ হতার MIE S ett काम् ी ्म ( पु⊁) परी महबार है ARIE (2) Aug करिय म (स्पे ) स्पो

THE R (FEE) ACTOR

COR W PET PE PER

Regulate Special Street with the trees and

**विश्वती ४ ८ ५**४५)

£ 12\*\*

र्गार !

all |

दिश्द (१४) च्ट्रन्यु नार्नु

भरद् (ए) राज्यु बर्ध्य

म्हे (त) प्राप्त

ञ्दर् (१ू) कख तिद्वमण } व. (त्रिभवन) त्रकृत् (सम) भाव तिह्रवण 🦇 चल लोड. तसाय व. (डबाय) क्लाव. विषद्धाः स्त्री (तुम्म) सूक् ×तब (ग्पू) व्यक् गोल नियम् तित्य र र. (वीर्थ) दीर्थ त्रव प्र (त्राप्) सा. तबस्यि ३ (तपशिव्) वद प्रविच स्थान तर्वसि ( वित्यवर ५ (वर्षक्) न्हेंबर विमिर व (तम) व्यवनो सद्दी स्. (ठ्या) देश व दे रोव अन्यतार, स्टान, सदा ( वडि । विख्य-पत्र (विक्रम) विकर भ. (दन) त्यां दमो. तिकापि (तीत) तोका कार्य तह HWSC. तत्त्व विविद्य रि. (तिनिव) बव प्रशादे सा (म (पन्यू) लाख्या विश्वित इ. औ. (शिक्षे) शिक्ष श्य. सन्बि साम. (स्क्री) से वंबच्छे. तु } अ. (तु) रुपुरक्त क्रमा स्ट } स्म अध्यय पार्युत्त. श्ताब ? (त्यात ) कामा कामी वास ( द्वारग न (करक) सल्लार अप्रद रे(एक-ग्रह) त्रस्य तरद ५ अनुबर् (लर्) लग् क्रवी साराकी (सम) सकता राहा साव प्र (ध्यप) ध्यप मन्त्रप पीता ×स्म } (द्वर-द्वन) वंकेन नावस ५ (कम्भ) सम्म बोबी पानवा चुकी बन् तारिस मि (यरध) का. त्वा रोपेंसि प्र. (ध्यसिष्) देवली. हरतनं तिश्रस ९. (विश्व) देव. अध्यक्त (ला) क्रमा रहेवं थिया नि. (स्वित) उस्त धोन तिक्का दि (चैना) तील

đλ.

तिच्य ।



```
विद्विबाँ (हप्ति) शर्जन अवस
अविष्यू (र्थप् ) रोप्तुं, लकसपु
 दिवस रे पु. न. (विवस) दिव
 विवह (
 विका है अर (शिशा) दिस्सी
 विद्या {
 विसा भा (विश्—का) क्वीर
                      Ru.
 बीम वि (धेव) क्रोब.
 दीयसम्बन्धः (रोक्सर) वर्शकार्
 बीच ९ (चैप) सेसा.
 दुमार Ì
           म (द्वार) वरवामा.
 इक्षर नि (इसर) हु के कांक्रि
        करी संबंधन ते कालसावा.
       े व (हव) हव
 34
              (सप्रम्) इच
 हुम्बप ६. (प्रांत) क्रांत
                  बुद्ध प्रदेश
ब्रह्मोदय ५ (द्वशंका) ध्रम के
 BE 4. ($14) 94.
```

अवस्य (क्-पासर ) इ.स. स्रोपक

र्मराग वस्त्रावयो.

```
(डार) गोरड
बुद्धि १ वि (ट्राफिट्) द्वर्षी
डेंकिंग ₹
पश्चिम
            নি (চুক্তিত)
उदिया है
            की. (दुवित्) श्रेकरी
क्टूट ए. (छन्) हर.
अवैषयः (स्त्) श्वनु, त्रोष्
बैक्ट ड. (बम) वेब
वैकिंद इ. (रेकेट) रेकोच्य रूफ.
वेबाक्सय इ. व. (ठम) वेस्ट्रं
                       int.
वेशी ब्री. (धम) देवी बराम ब्री.
देशम है, (रेशक) दंगानाट
बेसमा बी. (क्ट्य) वेएम
                     with
वैक ५. व. (क्य) चपेट
बैसाविरत्र की (स्थमिर्गत) रेक्सी
```

पारम्बागारको स्थाय, देक-

बोरिया औ. (१४१रेम) राजी

RtB.

बुरिय व. (दुरीत) शर ×पूष् } (दुव्-दुश्व) वोवैश

अस्स !



Sof.

किएय 🕻 नरिंद् ५. (गरेग्र) राज्यः सहस्य ( (सहस-मदाव) नास नास्त्र 🖯 नहरम ५ र. (वनशक) साम २. (इत्रान) द्रान नाजि दि (शनिम्) शनपछ्छे-नाम व. (बारना) बाग रोजा.

भरम रे पु. (नत्क) नात्की

नाय ५ (न्दाय) न्याच वीरिक नायकत् ५ (अल्ड्ब) भीत्राः दीमस्त्रामीतः लाग बारी की. (सम) की. माचा तो (वी) श्रीत होके. तासव ) (माएक) बाक करको चसाव প্ৰদ্ (१९५१) बोबु विश्व 🗷 शिक्सम ५ (मिक्स) निधन

बीचेली प्रतिप्रा ×निष् (नम) नित्नु निका की (नम) निका निपन्तर्ग रि. (क्लिक्टन) पार्थ **।दिन महेत्रक कान्य-**

शिविणाः १ (म+मा) पर्ण नियाद किया क्यों विक कर्यी अदमसर्वे वियम प्र- (तम) व्यापानमा स्थाल व्यापारीमां वा समुद्रा<sup>म्</sup>

विस्ताचा वि (विर्मुष) गुबर्गाल शिष्या नि (दिला) स्वित्सर, शास्त्रन निकास नि (निमार) तिया,

अवन हरें-अनिस्वार (शिर+वृ) **दम** करने बाह कावी कावी श्रुव कावी.

विकारा औ. (निर्वत) कामा प्रतिज्ञार (हे) क्षर पान्तु निस्द्रद 🖟 (निष्ट्र) विष्ट्रा निर्देश प्रदेश

निवद्व (निस्तु) सन्तरम् तुरावर्षु, जरताम क्रमा निष्ट्य नि (निर्देष) दक्षप्रदेश विद्या की (विद्या) निदा मिण्डम है (मिण्ड) मेरामे

विप्यतक 🐧 📆 म्बू, मिर्द बर्चु, गीपप्रदे

जिएएक वि (निष्यत) प्रमादित,



पंकास न (पहल) कास्य पंजार स. (छम) शोवहं. पंडाब द्व (पान्यम) पोड्र धावला दुवने पोक्सो पंडिया हुः (पश्चित) पंडित. पुत्रकः) नि (पक्ष) पालेहं. पिक्स

पुष्पक है हि (पक्क) पाने हैं.
पिक है (पक्क) पाने हैं.
पान वा (पक्क) पाने हैं हैं।
पान वा (पिक्क) पाने हैं हैं।
पान क्वा में हैं।

न्यत कवाना श्रीका मिका पच्चासंन्य पु (अल्लु) असत् स्वतः पच्चाची डॉ. (१) गग्नुस्य अस्तु पच्छा ने (रच्या) गक्का अस्तर्य पच्छा स. (रच्या) गक्का अस्तर्य पच्छा स. (रच्या) श्री अस्तर्य पच्छा स. (रच्यासर) स्व

पण्डा थ. (नेकर ) ग्रेडी अलगहर, गण्डाकी पण्डामान डु. (नेकरल) कतु यत प्रमानो पश्डामसाम न (पर्नेत्रका) लग्न, सनमान करो. पश्चाम डु. (नर्का) नर्का,

क्यांचा.

पण्डाच्या पु. (यपुत्र) वससेन विश्वनचे पुत्र अपञ्चाचास्य (पर्युपास्) केनामकि. अपञ्चाच (धनस्यापङ्) सोन्यन्यु, पञ्चाच वस्त्रो वस्त्रो

अपन्त (पर) पर्श्व परित क्यूं अपिक्काम् (वरिश्वम् ) निर्धा क्युं, पत्क कार्युं-अपिक्वमक्ष व (वरिक्रमण) वरिक्रमक्ष क्षयपुरत क्रिया, पराची पत्क पर्युं-पश्चिमा की (वरिक्रम) प्रस्कृति

पहिला की (अरिज्ञ) गूर्ड, अर्हेन्स्ट, पहिलार \$ (गरिक्त) कार्य पहिलार \$ (गरिक्त) कार्य पहिलार 3 (गरिक्त) कर्य अपित्यक्ष (गरिक्त) कर्यकर कर्यो क्रेडकर कराँ, पहिलार है क्री गरिक्त

क्यो कंटीकर परा-पाविक्या } की (प्रश्रित्त ) पाविक्या } रुप्ता राज्ये. प्रपन्न व. (प्रश्र) मन्तु-प्रप्ता व. (प्रश्र) मन्तु-प्रप्ता व. (प्रश्र) मन्तु-प्रप्ता व. (प्रश्र) मन्त्र-प्रप्ता व. (क्या) मन्त्र-प्रस्

## 104

>पय् (पत्र्) पत्रसर्वे रोबद्

×प्रचलत् 🕽 (प्र+इलन् ) प्रस्पना

पष्पक् रेक्ट्नी उपवेश आपना यथ पु. न (१९) पर सन्तरसन्ह, पण्याकी (प्रका) बुद्धि-विमक्ति अन्तवार्धं पर पण्ड ५ (अप्र) प्रश्न सन्तन्त. पर्यंग पु. (परा) परंपीय अप<del>चि</del> १ (प्रविभाः) विश्वास पयत्थ प्र (पदार्व) पदार्व पंचिम ∫ बर्श कायन करनो करदना सर्वः ×पंचित्राम (प्रति+मावन् ) विमास ×प्रयह (४+वनव्) जन्म भागवो न्यानो प्रतीति क्यावरी उत्पन्त कर् ×पल्प् ( (प्र+क्ष्मि ) ब्राबना चया की. (धना) प्रजा संगम्ध पच्छ ∫ करमी. प-वास (प्रकाश) प्रवासन परिषम वि (प्रार्थित) शक्तमा पंचाच द (प्रशस) अनारा करावेक. पयासग वि (प्रकासक) प्रकास पभाव रे पुनः (प्रमात) करतार. पदाय 🕽 प्रमात. दार दि (सम) श्रम्म धेष्ठ ×प~माक् (प्र÷समक) प्रशासका धर्परा की (बम) ग्रन्थर चरकी. अनुकार इस्. ×प सङ्ख् (प्र+स्त्र) प्रतानिता प्रकास व ४ (प्राच्य कड करवी साथ करत सचित्र समार्थ्यः ×पमन्नम् (प्र-१४३६) प्रमारः कर्ता **परकार ५. न.** (सम) मर **जी** परकारा का (धम) पर की স্পূৰ্ ×प-माय् (प्रश्मक्-माक्) प्रमाप धरपार ] मि (परसर) पद्घ्यर } एक्सीजने सन्त्रो करते मूल्युं जन्द. पमाच पु. (प्रयाद) प्रमाद, भूक धरामपच व. (परमपर) मोध वस्ति पर् अपम्बर्स् (विश्ला) मून्यु, विस्त-पराभव ५- (धम) परामव द्यपे सन

×प्रकोबद (म्थतः) क्षेत्र अपरिभास (देप्टन्) बपेटर्न्, ब्राष्ट्रीरम् गीरनं. पसारक् ] (पर्वस् ) वेंक्नु पर-×परिकार ) (परिभांक) परीका परिकार | करनी द्यालकु क्षु विपरित पसदद पसस्ये परिकारक व (परेका) परीका थ-पटस् र (प्रभामे) प्रता west. अवृत्ति वर्गीः ਖ ਬਾਣ ( अपरिचयः ((वरिश्तयक्) परि परिचयः । (वरिश्तयक्) परि चलका पु. (दलम) प्रव वानु चक्यच्य २८ (प्रवक्त) क्लाम परिष्यत्र (परिशयकः) Acres परिवक्त विशेष कर्णन परिष्ठ ि (प्रदिष्ठ) प्रदेश करेन. परिषय नि (प्रिन्त) पर्नपरन. पविचया सी. (१६३७) परिष्मीच रि (परिष्टीन) वरकेंड. विकार्य-×परि तप्प (१२२+७७) पद्मनाप पदास्ति सु ५ (मगान) सुनाम्य करवी गरम बच्च-×परिदेख (सम) विभाग कमो परवादा (प्रश्नव् ) प्रदश्ना हेरी-र्ववा रेके अपरि-निष्मा (गरि+मि(+ग) ×प**-वरक (**स्थप) स्वीत्तर <sup>करती</sup>-क्षांत क्षु यह कर्मरदित वक्ष. पुरुवक्का सी. (प्रचन्दा) ग्रीसः अपरिस्मय (परि तक्) धंका क्षेत्रे ध्यास्य (वर्षन) पर्वेट. परिखर ५ (नम) समीप पसन्त ५ (इनक) प्रशन्त परिसा पर्यद्व-पर्वषद्व) समा-MALE अपरि-ात (वर्षतः ग) वोत्तव. य-स्तेष्ट् (प्रश्चेत्र) प्रदंश्य कार्यो पारम कर्त्युः य सम् उ (प्रक्रम्) शक्ति परिद्वा की (प्रीका) लाउ. करवी-परोक्रपार पु. (परोक्रम) कमो ए-सम् (मन्द्) प्रस्त करण अध्य आरचा अस्त्रम पार्च ×पश्चाप (गराव) क्याओं, नवाले

पाय पु (शब्द) मन पत्र अने-पसाय ५ (प्रशत) मोहिकनी करो बोधो भाग-दवा द्वपा. पाय प्र (शत) पहल पस्य ५ (पद्म) पान पायड रिव (प्रकट) प्रकट पद्चार पु (श्रद्धार) प्रदार-पयक र पद्दाप प्र (प्रमान) प्रमान वास्कि पायसो स (प्रायसम्) प्राव शासर्थ वर्षु करीने पहादग वि (प्रसावक) प्रसावक पार्याद्ध ५ (पार्वाई) पारबी प्रमाचना करतार उन्त्रति दिकारी की मुगना WHEEL. ×पार्च-शक्क (पश्चग्रह) पार पश्चिम ५ (पश्चिम) सुसाफर पद्ध ५ (अस्) प्रसु, स्वामी पारेयम रे प्र (पागक) पारेवा ×पहुष्य (प्रसम्) समर्थे वसे पाराषम 🛭 ×पास (पळन्) पाध्य कन् ×पा(पा) पाच पान करत पाछय वि (पातक) पारम्या पाइम रे 🗎 (प्रान्तक) अञ्चल-पास् (प्रस्थात्) पासम् स्वराष्ट्र-पागय मिया शोभाविक याम वि (पाप) नीच पापी नीच साधारम ×पाडमाच (प्रदुष+भू) प्रचट क्य

354

×पास } (वृष्यपा) देखकुं पाइस इ (प्रात्त्व) धर्मान्त्र को मासु पाच पु. न. (प्राप) इतिय विगरे पस्स् 🖇 पास २. (गार्थ) सबीप गाउँ रस प्राची (पीथ इन्द्रिक थाह्य न (शब्द) उद्धार सट. प्रज्ञान शामीन्त्रवाग आहाः) विषयी ( सो (प्रयो) प्रयो पायाइयाय ५ (प्राथतिगत) औव भूमि\_ प्रदर्भा डे द्धिय प्रामीमी नाम चिय नि (धिन) प्रिन बदार्छ-पाचित्र (प्राप्तिनः) और ग्राची. प्र परि वजी स्वामी-पाचित्र (नम) इत्य (पा-पिषु) पीत्रं पाणिय व (पानीव) जब

पिकासा को (विशवा) वरण द्वा

पाणियह ५ (प्राधिवय) बीच वय

**1**(2

पीइ की (शीते) हेम. पुरस्रो थ. (पुरस्तु) सम्ब ×प ब् } (पीड़) पीक्नुं, द्वाब पुरे ज. (५०५) गोच वनक रेतुं क्लाजु पुरिस ५. (प्रम्न) अन्य पीडा ( भी (शम) नीश नुम्छ-×प्रक्रोम ( (१५) मेर्चु पीखा 🤇 ×पीच् (शिच्) क्रेन उपश्चको पुष्पा 🕻 🏗 (पूर्व) भीते. चन कर्नु कवर्ता गाउ प्रेरिम ∫ पुष्प (इन्द्) प्रस् पुष्प मि. (पूर्व) ५० वस्य ५६ ×पूज् रे (रूज्) पना काबी हमारकोश वर्षत्रं एक पूर्व कार मेर्डेस पुक्त नि (पूज्य) प्रज्ञा कोल्स पुष्पर सी. (पूर्व) धूर्वरिष्टः. पुडवी रे स्री. (प्रक्रियो) प्रच्यी पुष्पपद ३. (प्रथम्) रिस्प्ने-**भ्या**ष् (ए) पनित्र **क**र्श पूरम दि. (पूर्व) पूर्व कामर पज ] ×पृद्ध }े (द्वर्+द्वम्द) गोनन पुजा इन्स् 🕽 पुण्ड } म. (पुनर्) वार्त्तु, करीवी विक्ल } (গ+(কু) নার্<u>ব</u> पेच्छ ं पुजबन्त न. (वे) वारेवार. पोम्म पश्म पुरुष व (पुरुष) पुरुष वर्ष ब. (पद्म) कसल. ह्ममध्य वि. परिश् पोक्स न, (बीहर) प्रस्पर्व प्रिक्तिमा की (प्रीक्रिय) क्रम्म पोरिस प्रच ३ (प्रत्र) प्रत पर्गरेस पुण्यय हे इ. म. (प्रस्तक) क फरस मिं (पहर) स्थित पुष्यः वः (पुष्यः) द्वन ×पुर (शव) एव कर्म कर्म कर्म फस व. (तम) प्रज.

म्फार् रे (शरक्) बार्च चीलु

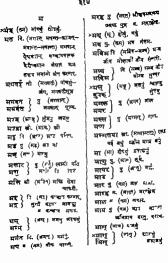
फाम्र 🕽

यहिर नि (निपर) गर्न-

करकी.

মাধ্বি

शहु-अ} हि (खु-क) प्य शहुरा है स्थारे ×फास् रे (स्प्रम्) सर्व करको बहुसो अ (बहुसम् ) अनेत्र वार. फरिस् { चास पु. (सम) सम्बद्ध. पास दु (सर्द) सर्दः अवा**ड् (श**प ) पीडमुं कारन् ×फेटर् } (एड्-प्रंश्) विकासु, \$केंद्र 🕽 प्रदर्भ आवेल धीरले चास्त्रा श्री (सम्) पुमारी ग्रेक्नी रुगल की-पुरुष य. (नम) पुरुष कुल भ्येद् (स्टेन्ट) दिवास करते धाद्वा स्त्री (शर्ड) हाथ भुमा-बूर कानु वाहिर ) वि (शय) पराज म्बैप् (नम) क्ष्यत्र प्राप्तु, दोबपु पम्स ∫ र्षभण न. (कम्पन) वेद्ये शटकाव बाह्य पु (सम) इस्य मुगा चंपन्. विंव न. (सम) चित्र प्रतिमा बैघद पु. (शम्बद) वच्. निश्र ⊭धी**ड् (सी) वीतुं** तद पासतु ৰভুড় (তম) ৰাঘৰ দিল ×सुपन्तु (पर्र) यजना चरणी बम्मयारि वि (बन्नवारित्) जहारिक प्रक्रमार अ**बुउद्धा (**बुप्+दुष्य) बोध वर्षा इस रेमचेर 💮 स. (मद्रापव) वेक्टब्बु जाग्बु समज्ञु वरद्वपरिय ×युद्धस् (मरह) इसी व्य क्माचेर बुक्ति भी (सम) वृद्धि म्बद्ध ६. (सम) सच्छ सामार्थ्यः शुद्ध पु. (बुव) पंडिय. ×वद् १ (म्) धा३क् **3**4 } अ<u>बुद्धपन्त्</u> (बुशुश्) धारानी श<del>्था</del> वसिद्वनि (बक्रिक्र) सर्वती बोक्स् (स्प्) शेव्य वहि-हिं धरमाग्, बोड् (रोड्) योग वनो अल्लु क. (कहिंचु) ज्यार बोहिं 🕫 (बेरि) स्वद् वर्शनी



क्चर,

धार्युः

विद्यापर सिधु

मिष्य ५ (मृत्य) आक्र भिद्ध पु (सम) जिल्ह ×सुत् (सम) जमने भुषम पु. (भुजव) नप ×मुब्द (शा) स्वतु, चूच्यु भूम ६. ९. (कूर) जन्, जाला. असूम् (स्वा) सामावत् सन-भूसच ८ (मूराव) आभूरत. मोद्दृति (सानित्) सोया मोगि तक विश्वधीः म्गि रे दुव. (याग) मधा मोम 🕽 प्रश्तानि निपना चानु ध, अपमागः मोपच ग. (नोजन) मोअन. सह की. (यदि) ब्रह्ति. महत्र पुन. (तुक्त) शुन्तर. सेगस व. (मग) शेवा कावाव

मासा ६८ (सार्थ) भाषा वाधी

मिक्यायरिक्स वि (मिशायर)

मिक्यु ३ (निः) निश्वक साध-

मावि नि (मादिश्) क्यार्थः प्रसिद् (तिष्) शन्तु चीनपु क्यु बातानु संत्र पु व (सम्प्र) सम्म दिशा पुत्र वा व्या स्रोति पु (सम्प्रेन) सम्मी, स्रम् व (सम्) सीत्रे सम्मु स्रोत्य पु (सम्) सदि प्रत्य स्र स्रम् पु (सम्) सदि प्रत्य स्रम् स्रम् प्रत्य पु (सम्मु) साम्यु स्रम् स्रम् पु (सम्मु) साम्यु स्रम् स्रम् पु स्रम् (सम्मु) स्रम् (सम्मु) साम्यु स्रम् (सम्मु) साम्यु

मगा पु (मर्म्य) ग्ला

×मैन् (गैन्धन्) विचार कारो.

नि सन् (निमन्त्रय) निर्मत्रन

शब्द्ध पु (स्तु) मार्च मार सब्द्वार पु. (साना) हैमां हे दे अग्रह्म पु (साना) हमां हे दे अग्रह्म अग्रह्म साम्या का स्वा सहस्य अग्रह्म स. (सार्च) सर्वा सहस्य सम्बद्धा स्वी (सार्वारा) सीमा हर महत्त्वा

साहा ब. (सम्ब) श्वर्मा मंतिरे,

WHITE.

अञ्चलहरू (अञ्चल) दिवतनो मद्भिमा बी. (दक्षिक) समी. सम्बद्धः (सन्धः) सर्वे वित्तः -**मध्यप्रक्रम्** ५ (मल:र्वन) चतुर्व इस (वीशान्त सक्य गानीने वयानवार्व द्वार ) मकेंद्रि में (मनमिन्) प्रधरत राम्बाको

अ (सनाक्) करन मचिमे) सभि पु (तम) समि. सन्द्रापु (सन्द्र) क्रोच मधूस ३ (स्तुष्प) मनुष्यः सप्तारह ५ (सबोरण) मनीरथ

देवता मजोरज १ वि. (मनेश) शुन्दर मधाण्य 🕻 सन्त वि. (सम) भरवन्त

सल्यम् ५ व. (भलक) भलक. भागु असम्बर् (सन्-मण) शत्मा

(मर्) मसिमान, गर्ने,

दि. (का) अधी गरेत

महासहै की (महारहें) राष्ट्र महि**दारु** ५ (महिएक) एम महिस्स सी. (सम) सी वापी

मार्च |

शह ब. (सच्) नव शहर वि (महर) महर, इन्स शहसव महिता | स. (मः) मा

सम्बद्ध पु. (सदन) ऋगरेर ≻सर्(ध) मर्ख

अरक न. (बस) बरचु मखें आरिस (१५) मेंगाउ

ध्यारिस (५४) सहय राषु, क्या

भक्ष्य 🕏 (स्वासन्) महासा

सद्वाबीर १ (छम) चीमीहम्ब

क्रम्ब

श्रीक्षणको सी-

सिम्ब भीडे सदौसद (इ.(महोतार) होटी अब्दित्त मि (महत्त्) स्पेर्ड महोरतहि भी (महीरवि) भेड

चिच्छा व. (मिक्स) क्ला<del>ब</del>

मुंग् 🕽

मा <b>रण्या</b> । मार्चा मार्चानी योज
माज्(सम्बु) सम्बाग काबु स्थार कावो
साम पु(सन) असिसान वर्षे माचित्र नि (सानिन्) असिसानी स्टीहर
मायरा मामा माड माड माड माइ
मापाकी (दम) करण दक
मामाको (ग्रम) स्वक्राः मासाद्व (६२) सहिनो सत्त
मास ] ग. (मात) ≡ान मंख
माइप्य ३ व. (माइसमा) गहिमा
मोउन्ह, प्रमान
माइष ) इ. (त्राक्षण) त्राप्तण. चैमण )
मिमंद्री ६ (यगात्र) पनः
मर्चक्र मिरा   दु (सूरा) हरण.
मध्ये । इ. (क्या) हरण
मित्तपुतः (मित्र) मित्र
मिची को. (नैकी) मित्रवा चोरती.
मीसिम वि (मिक्रित) मिनव करें

मार्गसमा | भी (प्रानुभाष)

मुक्त } द (ब्र्न) मुक्ता महामी मुक्तरिय वि (मोबार्विट्) मोसम्भे अवी ×सुरस् (सर्-सप) समार्च मार बामार्थ भेरा बर्ब मुख् (॥) वानर्तु मुच्चि ५ (वृत्ति) सुनि बापु भुक्तिद् पु. (मुबीन्त्र) भागार्व मुसर ो मूमा } ज. (श्य) मिणा योद् भीसा 🕽 मुद्ध न. (नुष्क) सुख माह मुद्द्ध-१ वि (नुचर) गमड. } अर. (सुपा) अपर्थ मोरव**त**ः 🕽 भूग वि (स्क) मृंग्रे. मृद्धानि (नम) सृद् मंद्रानी. सुस्त व. (सम) सूच वारव जादि पाएक

मूखाबाय ) वृ. (श्वाबाद) क मूखाबाय ) तत्व भावन गुड भोसाबाय । मोस्सू

×िमसा (मी) गिम्म वर्षे, कर

(गुच-गुप्त्व) मृद्यु छोरव्

मदेतुं..

মাৰু

31/4

रद्वन्तु (ग्व) जात काबु दर्वन्त्व्य ग (ग्वान) श्वान करत् दर्वन्त्वत्य हैं (ग्वान) रावेक्ष रत्या व (शाता) रावेक्ष रत्या व (शाता) राव्य राव्य वि (ग्वा) मान्य कावेद रावको दर्वास्त्र वी (व्या) को कुन्दरी रह्म (स्वा) राव्य रावको

रासकी की (GH) की कुम्बरी राष्ट्र (रक्षण) रचेनु, स्टेटानुं क्यारेट्टं क्या कि (रण) जानक कान्य प्रमेश बाही कर्बाई रामा पु. क (राम) रहा, रामा प्. (राम) रहा, रामा प्. (राम) रहा, रामा क्या कर्मा कर्मा क्या क्या रचि पु (ध्य) पूर्व.
'रहस्स मि (ध्वान) पुत्र इ.प.
'रहस्स मि (ध्वान) पुत्र इ.प.
'रहस्स मि (ध्वान) प्रीत वर्षितः
'राह ) की. (प्रिमे) प्रीत वर्षितः
'राह ) की. (प्रमि) प्रीत वर्षितः
'राह ) की. (प्रमि) प्रीत वर्षितः
'राह ) की. (प्रमु-मि-प्रम्)
मि-प्राय ) की.मु. मिर्चरः
'राह प्र (क्षा) का मिर्चरः
'राह प्र (क्षा) का मिर्चरः
'राह प्र (क्षा) का मिर्चरः
'राह प्र (स्प्रा) क्षा

दक्ष न (श) धन्त श्रदेख करुत् कर्म कर्म-न्या दि. (शन) ऐमी

रिचक पू. (सम) रीज

क्षकर पु. व. (१०) द्यार इच्छा (१५) १४ पु १४ पु रोस् प्रदू विरामी वी. (१४ सम्प्री) सिन्धरी सी.

() (वद्) रोधुं, बरत कर्युः () (बद) उर्युः, बक्युं

क्त प्रस्त (स्प) केंद्र कानित ×स्टिप् (धम) डीपन्, चापम्ब मुम्दरता माञ्चति ६४ क्षित्र 🏽 (निम्ब) श्रीवत्रामु श्लाव ×६स् ] (६४–१७व) कोश कावो ×िक्रेड (धम) चाटश् दश्मे [ रोप करवी (मिख) स्वा अरेड (एड) स्रोम्स् ≈केंद्र } ×रोमन्य् ) (गिरन्यत्र ) बाग्रेज्यु **अपुष् (क) श्रापक्** चम्गोस 🕽 लुद्ध दि (मृष्य) बोमी स्पेसुन रोग ९ (मम) राम, व्यक्ति ग्राचक रोम दु (रोप) रोप कोम अस्ट्रक्का (सभ्य) होन करही ×खुड् (सर्) योषु, शाप कर्ष् स्कारका म (मध्यः) विश्वः नाम स्वदु क्म(ज क्षेट्र १ (क्ये) क्षेत्र कतान समा वि (स्ता) संबद्ध कामगुं.. क्षोरा 🖫 (बाच) लांफ 🖫 निवा **सम्पर्धको (न्ह्नी)** सङ्गी स्रायबास्य १ (शक्तान) स्ट्रानो भराज् (स्टा-बार्च) नामा रिकृतिल, पामची करमार्च कार्यातिम १ (नोफल्लि) दव सह वि (४) ध्रम्बर मिद्रेप स्रहि पू (बाद) लाक्नी कासी मुंडिय रि (मुच्छि) ध्यारगावी **एराइ)** व (क्याट) गहर वाद्यास व्यं केंद्र नेटी केंद्र **छिय** नि (बनित) सुन्दर, मनोद्धर भसम् (बप्) धोनकं वहेन् य (का) का अवका के, असर् } (डम ) ग्रेळवर्ष पामर्थ বুন (ৰয়) ৰয় सट्र~स वि (बदु~क) नुष्ठ वर्श ×पंच् (सम) उत्त्यु, केन्द्रां,

×बार्ड् (शन्त ) प्रक्रियुं, शक्तु चेंद् (छन) वंशम चनतुं, बरातुं बह्द न. (शतन) शतन. **भ्यपद्धा**ण् (लाक्यकाः) ध्याद्याप **ब्रा**बु, एक चनजावत् वयन्त्राच्या स. (अगक्ष्यान) प्रशास विदेश करात. वनापु (शरी) वर्गक्रमूह बन्ध दु. (न्याप्त) शाम अवच्य (स्त्) स्त् मध्य 🐒 (रूप) शाह बाराह पु. (रहर) शक्षण वाजरते. मच्छाप्र वि (रश्का) राजी **बरध्यः** १. (शरफर) शर<del>कर</del>-प**त्रं, क्यु**रागः ×वड्ड (र्म्बर्) त्यल करहो. श्यारवाद् (कर् ) च्येतं मबद्द (श:नर्ग) वर्त्तु होतुः म्बाइड् (इज्-वर्षे) तक्तु वप्रस्तार ) औ. (गम्बर्गत) वप्राप्तार ) क्यानात विश्वा ) वी (विश्वा) की (धर्मम्) वकालम्

बचार ] हि. (रहा) रहा ब्राय न (१क) रस. बाख र (रहा) वर्ग कर ब्राध्यद्व यु. (सम्प्रव) शासकः अवयं (मह्) दोसनुः क्क पु. क. (प्राप) प्राप, जिल्ला-ब्रध्य र. (श्वम स्वर क्यचित्रक मि (स्वतीत) शस्त्र, निरमा अन्तर बार (र-पृ) कर्तु, व्यंत कड बार हि. (छन) गर, हेग्रू बराय दि, (स्टान) परीय ×वरिक (१५) वरतन, इटि कर्प बस्सि । इ.स. (गरे) पुत्रे, बाह्य । कस्त्वर, सम्र तर वरकार, बरह. बरिसा | बरे (ग्यों) चेमखें पासा आक्रमा (क्रान्स्) पश्यं

वश्वसाय प्र. (व्यवसाय) ज्यापार

वसर् ] वरि (श्तरि) रश्री वसर्वि । साम मान्य

धर्म दश्रम. अवस् (का) भव्मं, प्रेक्ष

कण्डि इ. (वर्षि) अस्ति

बचा जो. (बार्च) बट. 🕶

बास एवं (वर्ष) वास व, वन्स बस्ता पु. (सम) वरान्य ऋहू. बसम र (अधन) क्रम्म इ.स. ×षमीकुच ) (वदी+क्) वस्रगां वसीकर 🕻 बसीह्रथ नि (श्डीमूत) वस वर्गन न्वड् (छन) महेच, ध्य सब् बहु पु (बय) बन्ध बहु सी (क्यू) वह आयाँ. भ्यायम् (वि+आ+क्) वहेर्थ भोकक प्रतिसत्तन करले. षागरको न (म्थानन्त्र) न्या वापरच उपवेश उत्तर वाणिक्क न. (शक्तिक) व्यापार. माची की (सम) वानी वननः वास वि (देस) इत्य । तिवस्तः बाय (राक्त) गांधके अवर्थ बायका भी, (शक्या) शक्या वायस ८ (तम) कागने षापा (शच-चा) शची शचा. षारियर ५ (शारिकर) ऋषर, गत्म्बारि. बाधार ५ (म्बला) न्यागर, श्वमस्त्रव. यायारि वि (मागरिन्) न्यारी पानी की (कारी) बलबी-

मारत भावि केन बासहर १ (वर्षकर) पर्वत विश्वप धासुद्व उ (सम) गसुदेव श्रविवक्तारी जिले वीच राष्ट्र ए. (ध्वाप) श्रीकरी साहर (वि+शा इ) मेम्बु बहेन बोरा ने बादि दु (ब्बावि) ब्वाबि राग विकास १८ (निवास) विकास चित्रक्य (मि+क् ) क्लावत करतुः বিশ্বৰ विक्रोग ह (विक्रेग) विकास बिंव रेग. (इन्य) उन्नताय. **3**3 5 विक्रिय 🤰 प्र (इक्टिक) गीडी पिम्चुम ∫ विश्व ५. (विश्व) विश्वापत पर्रत (मि+की) वेणश्रुं यहारे कराहे चित्रम (विद्+विद्य) होन सब बिज्जरिय ए. (विशाबिन) अव-

बिज्ञा भी (रिवा) विदा

नार विद्यार्थी

साल हान

विज्ञाहर ५ (निवापर) शिवा-	विरक्ष वि (तप) भन वी.
वर विद्यासको	विराक्तिय वि (निर्योत्) रोप
×िकार्स्) (म्यय-विष्यं) शीवर्षु,	द्या मिताक
मध् (न्यचनगण यात्रा,	
	चिरुद्ध मिं (सम्र) मिन्छेत.
×ियदक् (अर्ह) उरार्जन करनुं	प्रतिकृत उपद
्र अकातुपेश करतु	विक्रम विक्रम करण
चिपाइ नि (रिपष्ट) बास्र गानेस	पुरुष.
विषय पु (निक्क) क्लिक	विगेष पु. (मिरोप) निरम्ण.
विष्या स. (क्रिप्र) वक निराव,	विवक्ति की (नेपति) 🕶
विविद्या है (दितिर्मेश) िवरे	
क्रीने स्वेशवर	विवरीम नि (नेप्पी) विवरिम उर्फ्राणि
×विष्णव् (गि+इत्रव्) जिलेखे	विकास (शितार) वर्ग सन-
प्रत्ये प्रार्थम् कार्यः	
	14
विक्याच र. (दिज्ञान) सब्दान	अ <b>विवाद</b> (विश्वालय) राम करा-
्र च्या निवित्र ग्रामः	विविद्व रि (मिनिय) क्लेक
विकास के निवार किया	प्रशाद स्पृति≪
विद्यां गुश्चन,	विवेध ३ (निवेब) गिया
विमाच ५ 🔍 (ध्य) विमान	वहुँचवी संद
विस्ह्य ५ (विस्त्र) कार्य	
वियंशियं नि (मिमुस्सित) मिकान	विसादः वः (विष) निष् हेरः
पामेल केवानेल. वियममाना नि (मेनक्रम)	विसमावि (निक्म) सकत,
इन्द्रीयार, प्रशास	श्रीभ व्यक्त
	विस्तय पु (विषय) वांचे इन्द्रि-
विषया) की (नेरण) केशना वेषणा - गीस हुन्या	क्षेत्रा समस्ति विकास विकास
विधार ५ (निका) निवास	विसाय द्र (विका) यर बोर्ड
<del>सरवर्</del> गिय	
वियार ३ (विक्र) निरुद्ध,	विद्यास व (निवन) मोई-
Ping.	वि-सीव् (विश्वीद् ) नेर वर्गे-

विसेस पु म (मिशेन) विस्था प्रकार, तेर क्ष्मावारण, पिदव पु (पिमा) एवर्डि, पेदवन विद्वति ति (मिमिनेन) एवर्डि, विद्वति ति (मिमिनेन) एक्टा-तेम विद्वति प्र (मिमे) तित्र कल्लुक्ता विद्वति ते (मिमे) त्रीति विद्वति ते (मिमे) त्रीति विद्वति ते (मिमे) व्यक्ति

बिद्धर रि (तिवर) दुग्वी धाइन श्रीब-द्धे (ति: शा) काप त्यान्त्र बीचा कः (त्या) वीमा बीचरातः) वु वि (वीतव्यत्र) बियरातः) पनरीतः तिन-बीतरातः रि (विश्वरों) विभाव बाह्यं

धीमत्य वि (विकाश) विभाव बाई म्बीसर् (ति म्ब) मूरी विस्तर् वे जुं, धांत्रजु पीसस् (विभ्वम) त्रियान मरातो करवा. पीसाम 5. (विभाव) विकासित, बीराम क. (विभाव) विकासित,

चारे चार.

अपुष्क (सप्) कम्मु अस्य (इहिं से (इहिं) इकि, सरहार पुष्ट्रिकाण व. (इहिंस) इतिग्र अबेह (विष्) देशिंदु समेरम् पुष्क से (इहिं) इदि वार्गाः पुष्क से (दिस) इदि वार्गाः पुष्क से (दिस) वेदः सेन्स सु (देश) वेदः सेन्स सु (देश) वेदः

वेद्यास्त्रम् ३ व (११४) वर्षः वेद्यास्त्रम् । त. (वेद्यास्त्रम् वेद्यास्त्रम् । व्याः स्थान्त्रम् वेद्यास्त्रम् । व्याः स्थान्त्रम् वद्यः व (वेद्यास्त्र) वेद्याव्यः श्रोद्धः (ग्यः) वतुः ग्रामत्तुः अस्यस्य कृतुः ग्रीमत्तुः

बेस्तबण १ (भाग) इतं वेस्तराण विश्वतात्र बेस्ता वर्ष (वेश्वता) वेश्व बोस्ति ए (वेश्वत्र) वेश्वत बन्ती धोर्म

अविश्वास् (अनिश्वम् ) **उत्तम**पु

×र्स-पत्रम् (सम्पव) प्राप्त <sup>सन्</sup>र-×स्रे-प-सम्ब (सम्<sup>स्य+स</sup>र) कर् िसम्बर wed find we क्षेपणि की (सम) क्षेत्रा करि

NAR

सार् ) म (एका) (मित्री समा

स्तर् । व (स्त्रर्) एकमा सर्वे

सर्वाका (सर्वा) सर्वाकी

स्त्रण ५ (४५%) 🖚 🔍

सक्ता ही. (कुट्रण) शंतक

स्तंब इ. (सम) शंच स्थापन

×र्म-जम् (६+व्यः) गंभ्य केनो

सम्बद्धि बाहि निनित्त

करणानि अतुर्वित संग

प्रवस्त्र परको व्यक्त सैजम द (क्या) सका करित्र

क्यमी

बरको बाज्येस परमे

दिसादि यायोगी निवास

में इस (स्थला) सारी प्रजित

से-बस् (स+ज्यम ) अस्तु, क्षेत्र

संजुक्त वि (अनुन) कुक प्रतिस

क्षेत्ररेश दु. (स्थान) संबंध केळाप

संकास इ (लगर्ब) सर्बे संबंध इ (सम्बं) स्वर्ध तेन

बोद्यम स्त्रो अर् अर् ] (वंशम्) समय वरव् सम्बद

वस मन संबेग १ (प्रम) सदरकी देगान मोक्समित्राच

संस्था ५ (र्वटर्य) सेर, मन्द्रन

समार ९ (धन) हंबा साइका व (हेन्स) हेल्य

**447**( सम्बद्ध (धम) स्त्र

×सम्बद्ध (सङ्) समर्व बर्ड. सम्बंधः (शतादः) प्रमा

स्तास व (तक्षक) वर्गीय

शामा 🖫 (सर्ग) सार्ग देशकोष.

स्रक्रम न. (शत्य) शाचु नवार्य

क्षेत्रोस ५ (बन्दान) बन्दान **सं-विस्** (त+वित्) सम्बन्ध

कडूका समाचार कहेगा-संघ् ) (छ+मा) सामग्र श्र–धरा ) सामग्रं, महर्ष् सक्तवयं वि (क्षत्रर) प्रामारी

इतपद् अ (कामति) इता हमना.

सम्बन्धि (छन्) हैबार, स्तरथान (शक्त) सक्त इचीमार-सम्बद्धाः (सम्बन्) मह्युद्धः सुरुध न. (चान्न) चान्न मागम सम्भा} ♥८ (ग्रम्म) ग्रमन सम्बाती (ध्वा) थेप्य, अन संख्या पवारी. सामाम्(माना) नारा कारा सम्झार ३. (साम्बान) सूत्रनी सुप्प पु (मव) सप. सम्बास परावर्तन स्व्याज नि (सप्राम) प्रामी मारि ऋव सक्टि. ×स ६ (ब६) सहयु गर करती **स्त्रकाय** पु (नक्षमा) सर्गा खंडिम नि (ग्रामि) सकेन साम अस्टिम सीराम खंड वि (स्ट) मुल्बो समेना ) थ. (समन्त्रम् ) बार समियं स (सर्वम्) धीमंशी समिषा बाह्य वर्षे लगा-सर्६ (सर) सम समय पु. (धमप) भमव वादु म्प्त**रह (भर्**श्वा) अद्या कावी समजोबासय-ग ५ (भन्योपा-सद् ) ३ (भाष्र) भवक सद्द ) अ **सक्) भागत सामुमानी** भवास তথাক্তৰ, सद्द ) सी. (अहा) सहा स्मार्थ समस्य वि (समस्य) सपूर्व रह सम्भाष वि (समर्व) समर्व सर्दि (नार्पन् ) गावे शक्तिहास्रो सत्त न (सत्त्व) वत्र पराजना

समय पु (सम) समद काई, सति भी (घषि) वामर्थ वसार अवस्त दाल. **पंतर**म असमाय् ) (शब्+गप्) वृक्षण सम् ५ (यम्) सम यमाच् 🕽 सर्नेत्रय ५ (धतुरभव) स्थि-समाय वि (स्थम) स्टब्स्

विदिशी बाजानु पाम के स्नुबई ) की (वनुष्त्रकी) नेरीतुं वाग छ. संद्रुधी 🕽 सरध प्र. (शर्व) काव चतुराव, ं कार्तु, पूर्व करत चरप्

समाज वि. (१९१.) व इ. विव

ন্দ ৰূপু

199 सयायार ५ (स्तरप्त) रहन भक्त जावार्ष, कर्ज्

व्यवस्य कर्त् असमारेस् (समानस्य) सह

समायरच ४. (छ्याचरव)

×समायर् (मम्।मा।बर्) कव्,

खमीदिम दि. (नगोदिन) इड.,

समोमरम ) इ. न. (शमनत्म) समजसरण )

सम्मंत्र (सम्बद्ध) सरी रहे.

सम्मच न. (झन्तरन) सस्य सस्य

सर्च 🕽 🗷 (लच्यू ) पारं,

सपज ५ (श्वतः) हरूवी

सबर्प भ. (सन्तर्) विस्तर,

संपन्त वि (त्रका) पूर्व की

बन्द भट्टा, सम्बन्धांन

पाचना केले.

meric

**श**नु दिना करती समाहि दु. को (यमापि) विकेशी

समीम दि (तथीप) पासे

नवीक

বাঞিচ.

समित्रि ) औ. (नएई) समुद्रि

स्वस्थाता मनवी चोरित सामिदि सारानी पार्थी.

सरक व. (एरव) छत्व ध्याधयः सरवन्त १. (इत्करा) एताई. खरस्यां ती. (तरतवी) वानी, खरिष्धा । नि (क्रम्) करक

सम्बद्धाः )

सरिक्क∫

चर प्र (धर) गः=.

खर 📱 न (अप्त) झारर

सराय व. (नरोब) क्या खरोदह व (तरोस्) कान

सर्(स) अस्तुं कन् न सर् (न्यू) स्मरण कर्त, पर

**असमद (श्र**ष्ट) प्रदेश करने सकाडा की (श्राप) रकन असम् (१) जन्म बत्तरोः

प्रचलित । श्यक् (एए) बार देशो छोला देशा. संघण न (प्राप्त) शतकां

थः (स्र्वेडम्) वर्ष

arc.

कार समाज्य,

बास बंबी.

अधारे बारे लाउनी-अ. (नरम) वर

सरवरपु ५. (छिन्न) धर्मन

सामाह्य र. (समादिक) समादिक मगराम् ध्य जाणगारः े वे वही समस्यमा ग्रहेन् सम्बदिरङ् बी. (तर्वविश्वि) पश्चि साय व (शह) सुप म्बाज्योनुं पालन सर्व पाप खार वि (छम) भष्ठ उत्तम सारद्वि पु. (शार्म) सार्वा व्यापारची स्थाप. सम्बद्धाः मः (कर्षश) पद्मः हंगेर्धाः साथग ५ (धारक) मनक. सम्बद्धा म. (नर्बंबा) क्वं प्रशाद. साविमा धी (भ्र.विका) श्र विका साख्यान (शास्त्र) सम्पत्र साह्र पसा ) की (गत्सः ब्हेन ससा 🕽 बाद्धा दिसन सास्य वि (शायत) तिला मर्मक ५ (चग्रह) चन्द्र व्यक्तिभा ×सद्र (सम) शदन कन्द्र सास्मी (थम्) शापु ×सद् (पर्) शमबु साह (क्ष्र) वहेर्न महस्य (गम) छात्रे ×साह (नाप) सामनु स्टिक्ट सहस्र }िर (गक्रः) प्रजनहित साहस्मिम दि. (स. ५६%) स्था सम्बद सम्बन्ध पर्मसङ् **सद्दां का** (नमा) समा साहा ी (शया) घाया. सदाब ५ (म्बनाव) प्रशृतिः भारतु पु. (नान्) न्यानु, मोशमार्म सदा सी. (मनी) नहबरी **भाषका**र चाउ वि (मात्र) बद्धाः शाहित्रज्ञ ) न (नदाप्त्र) सरर स्थादकार् सादश्य स } पु (भर्) कृत्यो साम | साद्द्रम 🕽 विष } इ. (निष्) न्दिः सीदः सामि ५ (शास्त्) गानी ×िरास् (नय) डाटर्ड वीन् कार्चुः सिक्क (भिन्दू स्पिष) क्याँ वो बती साममा 👫 (ताधान्य) वाचान्यः

B94 सीय में (बीव) ठेर्ड 🛂 ≈**रि**क्रम् (रिक्।दिन) विद वर्ष असिकिना (लिक) स्नेहरायशे सीया की (नीटा) राजयं के सिना ५ (सम) विकासिक सीयक मि (बोर्सन) चीर्त 和資素 **विश्वासम्बद्धः (सम)** सिन्नोधः सीचास पु (सीतपान) श्रीको . श्चित सीस ग. (धीव) शीव्य असिडिक (विश्वज् ) विनिय <u>इल्प्स्</u>वर WY) ×हीं हर् सिक्स्ट्र क्षेत्र राम्यु हिल्ले सिक्सि की (सम) मिन्नि, मोक्स सिजेड इ (नेड) मेब क्रेम सिप्प न (फिल) कारीकी श्रीस् (<del>स्व</del>र ) स्मेरं विकासि-विकास सीस ३ (किथा) सिमा सिरी की (भी) अपनी सीसा उ. न (दार्प) नस्त्र , ×सिकाद (रधष्) मक्ष्मा करनीः सिकोस् (किन्) नेटतुं, सक्रिमा स्तमात्र (सर्ग) उन करन सुद्ध नि (हरन) हुन्न स्वर्गस् ×सिम्ब् (सि<sub>क</sub>-सीम्न) शीवमुं, शावकुं ₩ सिविव ) सुद्द व. (श्रृष्ट) मारो (रेट. स्रविच র ন. (কবে) ×सुष् ) 🔅 धोमका विक्रिय स्तिम 🕽 सिव न (फिप) कप्यान भा सुरहा है की (खन) उत्रक मोश. गरसा 🕽 सिस ५ (विक्र) वर्षः লুৱাণ (বুৰ) ঘুৰ ×िसद् (१४६) चारत इच्छो सार इ. (इस) देव. सिद्दर ग. (विकर) विकट सत्त वि (इप) इत्य

123 •समर् (स्) सात्र **बर्**षु, | सेणायद् पु (नेनाति) धनाना

संभक्षम्	स्याना
सुरिह नि (दूरिंग) मुक्यी	×स्तिस (नम) श्वेषा करकी
<del>पुत्र</del> न सुनवी	द्रोचाकी (नम) सना वाकरी
×सुब् ( (नर्) कंपनु स्यु, सोब् कियान्ति केवी.	ম'ব
सोच् } विद्यान्ति क्षेत्रीः	सेस व (धर) बरी वन
सुष्यव्यात (मुत्रर्थ) श्रुरणः	असोय ) (तुष्-धाष्) गांक स्रोत
सुपित्रज्ञ पु (सुबद्य) सारा वैद	खोच ) करवा
सुवे मः (इन्) माती नामः	खोकर व. (गोरब) सुग्र
सुम्राज 🕻 🛝 (शक्षात्र) समाध	साग स पु. (बोक) शाव
मसाग 🕻	दिक्र <b>ि</b> री
भसुद् (पुराव) चुनी कर्यु	सोख व (धन्न) की कान
सुद्ध म. (५ग) मुन्य.	सोम ९ (सन) पन्द
सुद्द न (पुन) संगठ कन्नान	असोस्स् (रण्) परावतुं रोपतु
सुद्दा की (नुपा) अपून	×स्रोड् (दाय) सम्बु
सुद्धि (बुलिन) तुर्यं	सोड् (छापन) ग्रुद् नरमी
×सूस (नूबन्) श्वम करा	वनेत्रमा <b>कर्रा</b>
स्र ५ (ए) एर गावनी	स्रोह्ण रि (ग्रामन) मुन्दर
स्ट्रिंट 🖫 (स्टिंग) आवार्थः	मोद्दा सा (योगा) शामा
स्म पु. व. (शून) बहुत शोध	चैसि
िशेष शाम विद्यार	
म्म् १ (८३ ६००) गुरुषु	
मृस् । (छा छः । गुरुष् सुस्स् ।	इक्क (निश्विष्) विवेश गरवी
सेणा थी. (मेग) नेमा	हिरम इ. (राज) द्वार.

11 इत्यिकाश्वर ग. (इन्तिक्कुर) बासिश १. (शक्ति) चंद्रप भगती गाम. द्विश्वय } व. (इरण) इरन मा द्विश्व } अन्दान्तव बस्य ३ (इन्टिन्) हावी अहिंच् (धम) वर्षु, शमर्षु बाबि रे थ. (हातिक) खेद वदी∫ क्रिपी भी (ही) सम्बद्धा पष्पात्वाव

न्द्रप् (हर ) इन्तु सार्थु इष ५ (धम) बाबो वर्षी कर्र

महर (F) हान नर्छा, कर कर्नु ×हरिस (हर-वर्ग) वर्ग को न्द्रस्य 🗷 सेन प्रश्ना ₹व **> 발단** (하다) 발명함

अधिस् (ध्य) विद्या कर्माः अहीयह (क्रिमा) होत्रमा नार्यो सिराकार **परवो** निवा **स**न्दी-अञ्चल्य (इ) होन करही

हेन्द्र व (अवस्) मीचै-

हैस व (हेमव) ध्रवर्ग

द्विभवांच हा (देशवान्त्र) भी देश-बाग्र सरियो

अही (मू.) होच्छे पत्र

## ग्रमराती-माक्तत-स्रम्दकोध -----

शम्बरा श्रव्याह-हा स. (मन्द्रश) क्यी व्यक्ति पु. (अधिन) क्रपमान करबु अन्त सम्म् क्षेत्र क्षेत्र होता है (एस) (व्यव+शक्त) ৰ্মানদ হলিখেল (মাজন) श्रमिनन्तु सहिसन्तु सहिसन्त्र मतीर क्षत्रीय दु(मतीर) ⊶क्तुपु अमितस्<u>य</u>) ष्कानी शक्याचि ३ (ध्वानिन्) व्यमिमान स्वय पु. (सर) मतिएव बदसय पु. (बनिएव) भाग्यान कारमाख ५ (शान्यान) क्ष्मं संस्तेत हि (ऋकत) कमर असर प्र (सम) नरत सदत्त सविष्ण नि क्षमारा सम्बारिस वि (भरत) (अस्मार्च) मदा बहस्य बहस्य म (देव) अमारारका अमायस्मा यो नको बहुस्स दु (लवस) (अमाराज्या) बजार धान्हाय पु (अन्तार) अपूर व्ययप समिय व में अपन भरस्यक न (मध्यक) (अपृत) भाव सवत्थ-हु पु (अन्त्र) धर्भित धरिईत सर्हत मांक अर्थतसुत्तो व बरहेत ५ (१६६) (mirthain) अतरून असंविभा र (मनरन) क्नाव धारत हा. (शस्त्र) जर्तम (दम) समृद्ध म. (अधुम) क्रमेल श्रणीमाई ते (क्रमेक्ट) मनुषः रत्तं अणुगिष्य् अणु अगल काराच्या ॥ (असम) रतम् (अनु+सः) मुसापाय मृमापाय क्येन्स्ने सण्-सर (भ्येनस) मोमाबाय दु (स्वारत) मने घष⊸प र∟ (व) अन्तर कास्तार ि (स्म) भेरणा तिमिए व. (तम) शम करी करण परधान (सप्र)

রুল (ব্যবু)

व्यक्ति व्यक्तिमा भी (तम)

**\$**\$2

**ब्यानि करने घरा-बद्**द

नागलय बासायमा नी

कार्रेष्ठ बाराय क. मू. (जाक)

न्यशा राष्ट्रणी अधितन्तु, अवेषन्त्

आवर्षे संबद्धेर नः (स्टबर्न)

ब्दसन साम्राच पु. (अपना)

अन्य आसत्त रि (**अस्य**) रच नि. (रत)

(पराभग्ते )

(बाधकरा)

(भग लेख्)

भाषध बागास ५ न. (माधन) मर्च-भ्यं संयक्ष मि. (तक्रम) सम्बद्धाः (सर्वे) मोच पान्त्र ए. स. (पशुर्) बेस्य पुरुषः (नेत्र) भाष्म भागम पु (सम) मध्य सम्य गः (म्क) पुरस्रो ₩, (मुख्य ) माधन आयार पु (अलार) नारात भावरिय भाइरिय ९ (मत्मर्न) सरि छ (एरिंग्.) मद्रा साचा भी (मद्रा) मार्वेच आपस पु (मार्वेच) भागि बाह्रिय सी (जारि) मानद उपनापश चीचा (श्रीन ) माओं संघी (शम) मागत दा दे (वा) बासूरव मुस्तम व. (सूपन)

m

स्पष्ट माउस माह १ % (a.21) मताच्यं अर-राष्ट्र (शस्तायः) मारम ब्यारेस प. (सम) न्यरोक्त साक्षीवणा गी.

(आचोचना)

(अमरकर्)

राश्रं भागभक्त र ह.

बिर डिसर ऊ (विर)

उद्दार करने कहरू (कर्भ)

g. (CF)

बम जना वि. (३म) वर्ष बहै (उद्भवी) वत्तम बत्तम बत्तिम नि (उनम् धर वि (क्स) बराय विकास वि (शाय) बलाश उच्छाइ ४ (उल्प्य)

वक्रम वज्जीम 🖫 (उद्योग)

पारितासिम नि. (गरिताकि रूप्र इस्ट पू. (रूप्) सरक

ब्समो मान **बासिय** उ. (म्ह<sup>2</sup>स्<sup>ब</sup>)

भारतम् व्या**दारः ५** (रम) **श्वास प्राह्यक्ष र (शस्त्र)** 

क्मातुं बाउल चिडव (वर्ष)

बदम काशो बद्धाम् (उद्भवम्)

<sup>कृत्</sup>या करणा करणाया ती (करणा

<sup>क्रार</sup> मास व. (त्या) छलाड महाछ व. (१०१३)

-कावदा)

क्षेत्र (कार्ज क्षि

स्ट्रांस विस् ५ (क्षेप्र)

and party and (middle)	and an entra all the district is (astually
र हेन बन्धस द (अपन्त)	करव्यु कस्य कह् (रग्)
जारण करता उद्य+दिस् (उप+	क्ष कर कुल् (ह)
रिय)	कर्ष समायरण न (समापाप)
उर्गाउदैग पुन. (उपाइ)	करण ग. (धम)
द्यान बचाय ५ (अपाय)	कर्म करमा व (कर्मन)
वेगाच्या उच्चरहाय करहारय	वर्मेंसव क्रामक्खय पु (वर्मतप)
माञ्चाय द्व. (इपाणान)	क्रमाम कल्याज म. (क्रमाप)
बनाग्हेचुडा (स्वा)	क्यारी <b>जिद्द</b> स इ (निकार)
वे १९५ सहस्रम् (वति । वस)	कांद्र पथ कियि किसवि भ
में देश देश दिन की (क्रां)	(फिमपि)
क्ष विश्वि % (क्षांप)	कागश चापस ५ (सम)
ए	नारनं किंद् (किंद्)
एकाम <b>सहसा</b> म (सम)	कामडेर मयाया पु. (मरन)
पद्मसरिय स. (१)	क्ताम पु (धम)
(यं समास (धनः)	काम काउलान (कार्य)
ए त्रमात्र यम क्लि इक <b>ब</b> क्का	•क्रव कारच व (स्म) निमित्त
M. (15t)	न (नम) द्वेड ५ (६५)
<b>4</b> .	यान करता न (पान)
का बाद द (कार)	काञ कास ए (सम) समय प्र

(**4**4)

काम्य बहुद्ध्य व (कंप्य)

कीर्ते ज्ञस ९ (वरम्) इवेर वेससम्ब वेसमय ९

```
क्रमारच न (क्रमार
                                               स
                                  चोड और प्रसः (चन)
 राच)
                                  वार्ष सुब्द (सृष्यू)
वृत्ती वयत्रक मोद्दम वे कथ्,(बेन्स)
करा विद्या हि (विस्प)
इनसे स साच ३ (पर्)
                                  दवी वदेश सुद्दल क. पू. (हुनित)
कृत्य कि स (कृत्य)
                                    तुरिसम-स्सिम च ४ (इप)
इत्य कियान, किविया नि
                                   वानु रे करिस (१९)
  (इएम)
क्या किया की (इस)
                                   चेहर दाखिय 3. (हार्टिक)
 इल क्रिक्ट, क्रम्ब इ. (इमा)
   বিষয় ও (মিজু)
                                   वनवर शयहर उ. (पनवर)
 देशकान देशसमाण ग किन्छ
                                    चरि दाद श्रि (वरि)
   MIN'
                                    गबीर गमीद में (सर्ग)
  केरको केपसि ५ (केपसिन्)
                                    क्खं रुक्ट्र रोप् (स्प्)
  क्ष्मी एवं क्होंकि क्ष्र (कोवि)
  बोर्ट्स कासर स. (क्रमंकित्)
                                    वरीय बीच मि (वैन)
  कोई स्पर्ध खया ल (क्स)
                                    व्यव शक्क ३ (स्ट्र)
  क्षाप-क्रोप क्रीब ए (क्रोप) कीव
                                    बोबे मच नि (सर्ग)
   g. (499)
                                    লকা ঘাৰুণ (লন)
                                    विकार वज्जनत ५ (वज्जनी)
   क्रोप नरवां कुच्य (बुच्य)
   कीय कठरवं पू. (कीरत)
                                     क्रमं भेष्ट गर् (मन्द्)
                                    नुबन्धानव गुजहाज न, (नुबर्गन)
   क्य करया कह कहि कहि
                                     गुर सुरू, सुरूब ५ (ग्रूर)
बोहम गोषम ५ (व्येशम)
     গ (রুখ)
   क्याची कस्ती, कमी क्यो
   क्रवो क्रमो क (इक्त)
                                     प्रमुख करतुं शिक्यू गङ् (म
    बमा कमा नी (समा) केति
                                                  u
     क्षी (स्प्रमित)
                                     वर्तुंबह्या, बह्यावि (मृ)
    बर करो सिरमाई (निहन्दू)
                                       वाईस व्य. (वर्णन)
                                      भर घर थ. (ब्रह) शेष्ट व. (त
    क्षेत्र केस ग. (हेन)
```

116

**12**1

गरेलं भूपकानः (भूतन) काक्य बाद्धा और (सम) ची छए न (इट) द्योकरो बहास्त पु (सम) काश कारत पु (क्य) वका इसर क्षय न (प्रदन्) नदार्श अपक्रपष्टि पु. (नस्तरिस्) जगर रायका अस्तवा व (भारत) चंद्र मियक सर्वक ५. (मृत्यक्ष) क्रम श्राच्या शब्दाचातुव (अन्यन्तु) अर्थंय अवरीय देवरीय प्र पर चंद्र इ. (पन) रंड \$ (ল্যু) (सम्बर्धिंग) बस्र अथस्य म. (अवस्पन्) वात धक्कण व (वर्ष) नव सरह व (वस) <sup>बारित</sup> चरित्त नः (बाँख) बाग्नार कायार, व्याड नि (शह) वित्र सञ्चम ५ (मेक्क) चरित्र कप्तु पोद्द पुत्रम् (५२/५७) म (कामित्र) खर्म म (पर्य) शास स्राप्त व. (सम) बाद इंदर्स (ज्-रह) क्रम जिल् (वि) विन विक्तन (विन) दिशय जिनदिश जिलायिच (निनांदन्त) हिम न (इरन) विष्य निषद्व स (विष्र) जिनास्य जिलास्य म (जिनास्य) क्रिया जिल्लार, जिलीसर उ. चैत्वांदन खीर्यद्रण व. (कैत्वास्टन)। (Driver) भागतं परिसा-धामा था (वक्र) बीन किम्मा सीद्वाको (रिद्य) चेर बीर द्र (बोर) र्शन क्योप धीप तीम वि षाग सोरिम = (वीर्व) (धीय) जोर जीव प (नम) **पंतर्व सिन्ह** (मिन्ब ) जीरहरा जीवरया भी (५८) धना छादी छाया (टाना) शील जीवण जीविध टीनदेनेषु शहराङ् (भावविष्) (जीवन-वीदिन)

गेन बरम बरिमा (शत)

धोर्भुमुख् (गुल्ब)

नीर्शांना जीयदिना भी (तप)

बीव बर्गरे जीवाह चु. (गैसाह)

388 तथा तक तका झ. (त्या) र्वत्यु जीय् जिय् (गीवृ)

अवानी जोडबया न (बीवन)

केषुं ब्रारिस वि (पार्य)

बोचु पाछ पहन्त (पत्रकृ)

চল বাজা কাথ্য ব. (ছান)

हेलाव विस्तरीसिक वि

इस्त् चिमारक जुमारक

(विद्मिक्ति)

(जिस्सम्ब

तत्व उत्त न (नत्व)

क्लाइक तत्त्वाचन (क्लाब्रान) क्लमर्ल राज्यस्या भी. (परन-

इंकन (स्पृ)

(লগড়েন)

a (44)

(नम)

क्बारे तथा म. (ना)

कातव उ⊾ (ङल्) al क्यार जीवार पुन्न (जीवान) रुपाल करवी अञ्चय (मार्थेष् ) स्तक पद अ. (प्रके) केम इस विस स्थान (६०) व्यं तर (३) त्व्यान लक्षांग तकाच (तक्षन) जैव बन ऋष्यद्यस्य पु. (जैववर्त)

त्सन सामस उ. (दर्व) करण द्वारम नि (तन्द) **शास्त्र नायपुरा नायवस्य** ३

वाये सहस्य व. (सन्द्र) द्वारा हेळाड विश्वग ३ (कि.ड) र्श्व तित्य सुद्ध म (देवे)

ज्या बहि, सहि तह जस्य र्शर्वकर विस्थागर ह (वैर्वकर) वृथेतं तृष्टिभ 🔻 🔏 (वृद्धिः) उप संख्यिम, संख्यिम व. (म एवं ठर्ग) बार बच्छे हैं (रेम) तब है-

तेनी तकी व (फर) व्यु तारिस वि (बच्छ)

तो वय सद्दिय स. (क्यारि) लां तहिं। तहि तह तत्प लाग चरपु साम् (त्यम) (मारै द्यापा नः (तरा)

बी (नम)

ल्बानी **चार** मि (लारिन£) त्वार गर्ड स्टब्स व. (त्तः)

कर धाणान (पन)

र्षक रियान दाविकिस्स

..

```
विकाणिस्स नि (शाक्तिकारक)
                                कर्म धारम पु. (बन)
र्थ करतो सुद्ध (११वन्)
                                वर्गितन धारिमङ्क पु (वर्गिप्ट)
बर्दब इस्तुष्य व (बर्द्धन)
                                याग्य द्वाल्य व (धान्य)
वदी वृद्धित (वनि)
                                जारन करतुं धरि-द्वा परि-धा
ৰে বাজাৰ (বাল)
                                   (परि+धा)
रिवन विश्वस विवास प्र स
                                विकार प्रम चिकि चिकी चिकी
  (विक्स)
                                 थ. (विक्-विकृ) कि भी म./विक)
निका दिका क. (निका)
                                धीरम चित्र की (पृति)
रिकादिसार्वा (शिक्ष)
                                बीम बीम खिलाय म (धनेमू)
पैच्य दिक्स्सा की (सीमा)
                                चान क्षांच न (माम)
र्यमा डीच छ (र्याप)
                                 जनाध्यक्ष सक्षापु (चन)
इ.स उह देशक थ (इ.क)
इपी दृष्टि दुविका वि
                                 क्यं ल्यर न (क्या)
   (इम्प्रेन्)
                                 बट सक्क पु. (बद)
दुर्मन दुरुज्ञप ५ (दूबन)
                                 श्लंग गर्पमा की (स्वास्त)
इंटर्न पाषकस्म व (शरकर्मन्)
                                 नमन् वस्⊸सव् (नम्)
द्व द्वस त (द्वाव)
                                 गान्तर करते समस् (साम्ब)
रू का वाद-के (मप-धा)
                                 शक जिरम नरम 🛚 (शक)
द्र मुख्य पु (सम)
                                 न्हीटर अस्मद्द-अस्मद्दा अ
 रेवधात्र देशस्त्रीग पु (देवलीक)
                                    (अंग्यवा)
 चंप्र जाजस्य पु. (अन्तर)
                                 गवनुं पविकाष् (प्र+तिपृ)
 देखा देखवा की (क्राना)
                                 বাগৰু সকল (ৰুখ)
 इस्य कृतिका सुक्कात (प्रस्त) आया
                                 वारक माहरा मुद्द ४ (मारक-
  न (धन) शह बरत्य ५ (धर्न)
 हर मच्छर ~ <sup>(mass)</sup>
```

११८

पंडिय ५ (प्रका) दुव ५ (१९) माध नास ५ (गक) वहेर्न एक्किम रू मू (विता) नाव पामनुं शस्सु भास्नु (नत्त्र) वन अरवी पि वि व (वनै) नाम रामो साम् (शक्त्र) नित मासय वि (पाक्त) िद्धाः 🗷 (सम) भिरमु जिल्ल (किन्स्) अस्ति ( क्रिं) वस्य प्रकाष्ट्र मि (वर ) निमित्तिको नैमितिका वि पाक्षेत्र परस्रोध परस्रोग 5 (विमितिक) (परकोक) निवादे निवास व (निरान) प्रमा**पदमानि** (नम) मित्रंग निज्ञारा को (निर्मेश) क्त्जी परकारा ही. (तम) प्रत्पर सक्तवय सक्तोक्व निर्देश पासरी **मिटिवारम् (**निर्+दिव) निवास निवास । (निवा) अपन्यसम्बद्धाः सम्बद्धाः स निकार्य निक्सर मीहर (मिनार्) (भागो नम्ब) बोरी माच ५ (म्ब.ब) मच इ. वर्गमा कार्य परिकटः परिकट् (नम) लीह की (बीटि) (qR+m) बीनिशन मीइसत्य न परोप**क्षय परोपपारि** नि (मीटिकर सर) (परावसारितः) कुन नदस्य वं (प्राप्त) पर्वाच पद्धाय ३ (पर्वाच) मेत्र मेश्व पु.शन (वेश) प्रभावतु रक्तपाद पालाव हे नीम जिलेश निमि पु. (सम) (ma-ma) न्याम भाग ९ (न्याम) क्यन प्रमुख 😩 (पतन) बार्ड स्वरमार्ग सायमसा पु. (स्था<del>र</del>-🖫 (पान) सर्गा र्मंत प्रधाप गिरि 🗷 (र्मन-

कार्य गिवडू (म्ह)

पक्षी पश्चिम 5. (प्रक्रिन्)

नग्री पच्छा भ (स्थलः)

पंदित सहित्यु नि (प्रतिक्र)

(PMP)

पत्र पत्त प (पद्ध)

(पनतार)

वधानात चन्द्रस्थाया र्

क्षेत्र परिसा श्री. (क्वर्-वरिवर्)

(पुन्तक) गोश पु (पञ्च)

पक्षेत्रपञ्च **रक्ष**्रीय् (स्तृ)

म्बर काम, पहर दु (बाग-प्रकृत) प्रत्य पुरुष् (प्रवर ) धोरा प्रर-पुरा क (पुरन्-पुरा) पूत्रन अरथकाण व (सर्वन) <sup>माने</sup> चंपकाते (पस्त) पूत्रनुबरुष्य (शर्व) प्रशास पाइसासा को प्रभी पुरुषी पुरुषी की (प्रनियी) (গতরুলা) विष्णा की (प्रणी) प्राणी **बस**न (छन) वारिय-पेदा काशु काउन्न (मर्जव-भर्षु) (स्स) उद्य-द्रान (उदक) पारानुं निश्न वि (नित्र) सप्यकेर पार **पाय** स (पाप) दुविका स वि (शारमीय) (दृरित) मन्त्रस पदास ५ (प्रभव) पर्तिपाद दु (राष) प्रशासको प-पास् (प्रभन्नाम ) <sup>वामन्</sup> पाद् (प्र+आप्) प्रचारतार प्रयासमा नि (प्रकासक) पर पानद पार्रगाङ् (पाधाच्यु) प्रमापद्मार्था (प्रमा) प्रस्तु पास् (पादन) प्रतिमा प**रिद्रमा की** (प्रतिमा) पळ्लार **पाछ**ना वि (पाउक) <sup>।</sup> अकिस्मन प**क्रिक्स**सम्पान पारव करते पाक्रिक्टेत का (श्रीक्रमच) व (पल्यस्तान) प्रयुक्त ग्र**रतृत्या** पु (श्रयान) <sup>किंच</sup> पिंबर पिंड ड. (शित्) प्रमान धृद्धा पु. (प्रमान) मणस इ (सन्तः) प्रभाग **एक सूम्य-इ**. दु (प्रस्**र्**प) पीव्युपीस् पीस् (पीवन्) अमालमा चूच् अ (मग) पी**द्रापा पिव्**(श⊸विर्) म्मुपद्व ५ (अमु) उन पुत्त इ (इन) सुम इ म्मार प्रमाय पु. (म्मार) (स्व) मनोय पद्योग पु (प्रवाद) प्रत्य पुरिस 🖫 (५४४) माणव ं अवृत्ति करवी यक्षक् यसङ्क ৪ (নদৰ) হৰু ৪ (কৰ) (श + वर्षु) इम पुरुष व. (दुव्य) जनेक करको च-विष्ट् (जनकिए) उत्तर पुरुषय पोरुषय इ. न. प्रभ भ्रमस् पु. (प्रज)

नार नास ५ (बाक) नास बामनु सहस्य भारत (नर्व) गम करते जास (गमन) मिश्च सासय वि (शामा) विरम् सिट् (स्थ्यू ) गरिङ्क ( 🔏 ) विधितिमा नेसिनिस वि (बेमिनिक)

नियमं नियास न (नित्रज्ञ) मिर्वत निज्ञास का (निर्मेत) मिरेच वारता **मिध्यग्रह (मि**र्-दिश)

क्षित्र निद्यक्ष । (२ वर) निरापुं निरसर बीहर (क्ला)

मीने शाय ५ (न्दव) शय ५ (ध्या) सींह की (बीति) गैनिस्ता नीइसरच न. (मीनिसास) फून संच्या नं (द्राप)

पेत्र नेच इ.सर (नेप) मैंम जिलेश क्षेत्रि इ. (स्त्र) म्बान शांघ ९ (त्वान) स्थानकर्ष साध्यक्षा ५, (स्थान-स्करी

पक्ष्मु गिक्क्स (स्कृ) क्की पश्चिम है (प्रकृत्) की पच्छा वः (भक्त्) other sufference for (-19-1) गदेश पश्चिम = मृ (पी<sup>न</sup>) वय व्यक्ति पि सि स. (क्री) किंगु ब्द (स्प) बच्च एडक दि, (११.4) बन्धेत प्रस्तोश प्रस्तेन इ (पाळांक) प्रत्न **प्रतम मि** (नम)

क्ली परदाय ही (हम) परस्पर अक्सन्य अन्योक्त श्चायमच्या सम्युप्त रि (भागोऽम्प) वरीका काची परिचय परिच्य (qR (gr) परोक्सप परोक्सारि वि (पराचनामिन्) पन न प्रशास प्र (स्वांग)

प्रधारतं रक्तांव पाकाव मे (अप-गच्यू) प्रथम प्रमुख हु, (प्रथम) बार्ड क्ष (बानु) वर्गत पच्चय, मिरि प्र (क्येंत (RR) वर्णस परिस्ता औ. (वर्षच्-परिवर गार पास इ (गार) पबस्तान पब्छापान उ-

(marroy)

#U1

सवसप स. (सम) मर्यात्रा स**क्ताचा की**. (सचारा) सर पासचु ची दू (सी) महत्र्या सह्य्य ५. (महासन्द्र) <sup>मरक्</sup>तेत्र मर**ाइकत्त** न (मनक्षेत्र) मबामणी महत्तर्गति प्र. (मदा-भए भर (य-मर्) मन्त्रित्) भग्नजीन सम्बन्नीच पु. (सम्बर्गान) महोक्छम महोक्छम महस्रम मन्त्र मस् युक्क (भग) महोसब ५ (म्होलब) <sup>अर्थ</sup> सायर, सारु ५ (भागृ) माम्बुक्ताय् (बाव) <sup>मार</sup> माचपु (नम्) मार्चम् संच्छ पु. (मान्ब) भिष्ठ सि**मन्तु** प (मिश्र) सारे कथ, कपका कपका स. गुरु कस्तिम न. (स्वकित) (EQ) मेरम पाद्वद्व व (अञ्चन) भाजन बाज पु. (का) अण्ध मोध भोगगत (त्रम) ९ (मनुग्य) मागत्व सुब् (सुज) नना माधरा, माड की (मनू) <sup>भाइत</sup> सोयच ६. (लाइन) माधु **सत्त्राय (शत्त्र) सिर व** (सिग्म) सीस पुत्र (गीप) मस्त पासाम पु (शापात) নাৰু হাজা হাফাৰি (কাল) यर व (यह) मान माच्य पु. (मान) मेंगड संगद्ध व (गम) सामन् सम्बद् (सन्य) नरर साहरू साहरू न माया माचा 🕬 (सम) (माइएय) | सम्बुताइ, चास् (वाडन) मनिर मंदिर व (छम) चौत्रका सको अस्य पु. (मार्ग) भारत ४. (केल) मन्त्र माध्य थी. (धन) মৰ মতু খ (নভু) गोन मास मेस = (मोन) सभामसः व. (समा) भित्र मिश्र पु. न. (भित्र) भंत्र संत दुव (सन्त्र) मिथ्या सिक्कार व (मिथ्बा) मंत्री मंति पु. (मन्त्रन्) सुक मुक्त, भूता वि (सुक) नीव मराय न, (नग) सुक सुद्ध स. (शुक्र)

न (प्रापृतकातका) प्रत्र पाज पुन सन्त्रभक्तां (आर) प्राणान श्रीवियंत ५ (अपि राजा) प्रामी पामि इ (श्रामिक्) अंश्रा

प्राप्त स्वयंत्र याद्वाबागरण

3. (37d) प्राप्ति पश्चि स्रो. (प्राप्ति) जिन पिय नि (प्रिन) मीन चीइ नी (प्रीक्रि)

पा पास र (सम) भागु पाइ एनस् (पत्रव) रेंग्ड किय (क्यि) <sup>कामद</sup> स**दा** म (शक) मोरडाहा

年, (年)

क्रीतपुरक्त (स्थ.) नेत समक मि (तक्का) सम्बति (नव) क्षण बेखाज व (क्षण्या) बधु बीच्य छ (क्लु) का वाहि वाहिणंबः (वधुन्)

म्द्र बहुम वि (स्तु) आहेंब

थ. (महीब)

याम् सद् (र") वार्ड दुसार, दार, वार र

वीतु सरम्ब कि. (मा<sup>म्ब</sup>) बुर्वे बुद्धि की (छन) इदिशारी सहसेत वि (म<sup>म्बन्</sup>र) केमनुं जब-बिस् (कर+विष्) वाच पामको बुज्ञम् (इत-इन्ब) बोकि बोडि ली (गर्वि) मार्च्य कम्बुचेट, बम्बुचरिय

(ETT)

बहेन बहिबी मंगिषी <sup>को</sup>

बहेरा बहिर वि (वीवा)

बाय उद्याप व (उदाव)

राज्यक वास्त्र पुत्र (सन्त्र)

(घयिमी)

क्षेत्रकेर व (स्प्रवर्ष) जनस्य माह्य वेसम ५-(मस्य ) ~ 19 (अगलग् )

समर्थ सम् (भए)

अन्तात धराबेत स्थवंत 🖫 जननां कंत सम्बद्ध-कंग य (भव्यती-म्द्र) गुनवं सोद्ध (सम) शन्तुं सम्बु पद् (मन् पर्) अगर श<del>सक,</del> समर ५ (भ<del>गः)</del>

THE इन्तो सह (इट) क्षंत बतुधसत्त पुदर्सतिरिक केष क्षेत्र व (केक) क्री (बनस्त-कर्नु) क्षेत्र स्रोग स्रोग (क्षेत्र) बला बाल्यान (बक्र) बप दु. (३३) तद्व सद्भावी (वप्) <sup>बोट्युं</sup> प**र्धोहरः (**प्र+सर्) बहेर्स पुरुष-पद्धम वि (पूर्व प्रचम) क्षोत्र होह ५ (क्षोत्र) बाब खरध पु ( बाद) कोबी स्रोदस ३ (सुप्यक) बाचाल सुद्धार वि (सुप्पर) बाजी बाजी श्री (मन) वाया स्कृष्ट समय ५ (धम) कास ५ की (शक्-शका) (<del>84</del>) बारमस्य श्र**क्का**द्धः स. (बारसम्ब) वक्त स्यस्य पु. न (क्वन) बाररा कथि ( १५प) बबीर गुद्द गुद्दश वि (गुद्द) बादक सेह ए (सेम) बन्न बरद्व श्रंद (बन्द्र) बार्ला बच्चा का (बार्ला) वंशवत अदिस क मू (वन्तित) बाह्यस बाह्यदेख इ. मम) **वय करतो हिंस्** (छम) निगरे बाह्य पु (मानि) बब्द वहद (रर्थ) विचार प्रया मरिस (मम्) मंत् क्ष एक्प बारच्यात (अरम्म) (सम्बद) वयम (~न) विचायर विक्रजाहर ५ (विचापर) **बस्ति दणस्यद् बणयाद्** रिक की विजनस्थित. (दिवार्षिक) सी. (समस्प्रित) श्वित विज्ञस में (**श्वित**)

वण्ड वस्तु (पंक)
क्या व विकास ए व (पंक)
क्या विकास ए व (पंका)
क्या विकास ए व (पंका)

विरक्षिय रि (विर्धिर) र्मुभूग भूका वि (त्क) रहेषु बस् (वम) संस्था विद्वसिम विद्वस्थ थे. रोर्ष यसण २. (वनन) (Alpha-Ren) বাদে হৰবান র (গ্রহণ) सम्बद्ध सुम्बर् (५७) शक्त मध्य सम्म द्र<sup>त (सन्त</sup>ः समि मुच्चि ५ (मुनि) त्तव दाव द (न्य) मुनाका पश्चिम पु. (पश्चिष) लामा नरिय मरेव (अरेल नुर्व भुक्य सुरुक्य इ. (सूर्व) निवद प्र (१पी) स्थ्यु सच्चु ६, स्थ्यु) राज्य ४का १८ (शाम) मेथ सेद पु. देव) राजी संद्रिसी की (मदेवी) मैकाबुलाबु(न्स्) यम राह रिंड मी शबे) में पर्यन सेंग 3. (छम) संबद्ध क्षि रिष्क, रिक्स ६ (स्त्र) S. (44) मिट्ट रिक्कि इव्हिक **व्य** (कार्ड) साथ मो**क्स** सुक्ता ५ (गांव) समिवि सामिवि 🕏 मोधा मीक्सपंच = (मोकपर) (तस्वि) मोर म्द्रोर पु. (मयूर) विकासी करिएकी की (वर्षाना<del>र्थ</del>) स्तु र्यव व. (रक्त) क्तिर्स्त अष्ट्यास पु (वनियम) मा बेटा न (कार) लं क्लं के (के) Sस राज्य × (१४) क्ष्मण सम्माम न, (बन्न) कोगी कांचि पु (बीक्निए) सम्बद्धाः व (क्यूनियः) क्यों संबंधी की (असी) रक्षत्र कातु श्वापन ( का ) लाउन्हा पामनी **सम्ब** (सम) **१६म रक्षा**च श. (१४४) कार्यको सब ५ (मर) बीर ५ रम् रस् (रचन ) (dtc) क्युं संस्थ् (त<del>ृत् तृत्त</del>) रम अपरचा की. (अल्हा) क्या छया सी. (इस्स) रलो सच्चा ५ (मार्ग) कार्य का में (मानगी) र्धाल पहिला थे. (रहित)

```
वर्धतं च्यायसक् पुवसंवरिङ
इत्य सह (छ)
क्य क्षेत्र ३ (क्ष्य)
बोड स्रोग स्रोध पु (बोड)
 MW S. (34)
मोरतं पस्रोद्द (प्र+बर्)
बोन खोइ ए (बोम)
```

बाबी छाद्यस ह (सुरवर)

<sup>बब्द</sup> समय दु. (छम) कास्ट दु (<del>प</del>्य) धक्त ययध्य दुत्र (वजन)

क्यैर गुरु गुरुष्ट वि (तुरु) बरन करम सब (यन्त्र) क्यावन वृद्धिक स् (पन्तित)

बच काबो हिंस् (सम)

बब्दु (र्न्ड) मन रक्या बरक्यात (काम्य) वस न ("स क्लमहि दावस्तर दावणाई की. (बन्हान

बरमञ्जू श्वरिस् (वर्) बानार वरिम बास पु.न (वर्ष)

नर्जनुं बज्ज् (नर्ज)

वर्ष वरिस यास उ. व (वर्ष) वर्षपा साम्बद्धर ५ (वर्षका)

वनके समहि पसद् की

(ব্ৰস্থি)

बागळ सेह १ (भेर)

185

वर्गा बचा 🕶 (वार्ता) । बाधुका बाह्यदेव ३. पम) निगरे बरह दु (भारि) विचार दरा मरिख (**६**म्) **मंत्** (शम्ब्रम)

क्री (बगन्त-कट्<sub>र</sub>)

मताधास्थान (सम)

बहुबहुदी (बन्)

बाव श्वराय पु (बाज)

श्री (राष्ट्र-वावा)

बांचरा काचि ५ (गाँप)

बाचाज शुक्षर वि (मुखर) बाबी खाणी थीं (मम) वाया

बहेर्छ पुरुष-पञ्चम वि (पूर्व-प्रवम)

बास्त्रस्य खच्छाहुः मः (बारास्य)

ब्रि. (निपर्धत) विवास विकास इ.स. (विवास)

निवाय चित्रज्ञाहर ५ (विदार) रिच वी चित्रज्ञरिय प्र (विद्यापित) शिक्ष विश्वस्त्र वि (निक्रम) विवाता धाषार,धार पु. (विवास) निवि चिक्ति प्र. (विवि) क्षित्रच शिवाच प्र (निमय) विवा चिपा क. (मिना)

विषयेत विद्यास्था विद्यारिक

व्यापार वावार ५ (ध्या) विवाग विकास इ. (विवास) M ME S & (M) **अं**राशित विद्यक्तिम क मू-(Rafth) तम सन्तुप्र (ब्यु) रिवर

TVV

रिक्ट किटल कि (गर्म) विरात विद्यास ५ (निवार) मिधारित केरी बीसम् विस्पम्

(PH) मिश्रम एको बीसम् विस्सस् (P+44)

निय विस्त एव (वि) PADR प्रमा वि-वद (मि+धर)

निक्ष विकास विकास (**विद**4)

बाजाय बीयराता ३, (बीत्रयय) दौर बीद पु (नम)

राग्ड बुईच्य र. (खत) क्षक्ष कानी सरिक्ष् (नई)

बबदु विक्रिप् शिक्ष (विन्धी) देशन क्षेत्रका विवया वी :बेरम

यन्त्र विद्या गी (वेला) बच बेरास प (बेच)

१४/२**२ में प्रा**राच्या न (रेकान्य) न्ध्रव श्विरका प्र (ब्रह्मव) त्रम्य बातरण यापरत

पारण न (शध्य) प्टाराज **वक्ताच**न (प्यादधन)

भाष बाहि प्र (म्बर्गि)

इवन सम्राप्तित्वा के (हम) चल्चं सरम र. (घाट) बरीर झारीद न (बरीर) देह S. K. (96)

(Pg) शब्द सद् उ (शब्द)

वर ऋतु आ-र्रम् आरहे भाइद (≉ा+र≠) क्ष संस्था है (इस) बान्त संति कः (रानि) बानिर जिन सीति उँ (पानित) ण साढे कि (निम्)

विकर सिक्षर व. (विकार) दिगळ सिगांक ५ (एयर) किम सीस ३ (गिन्द) धीर सीख म (धीर) समर्ग सुद्ध थ. (धन) हावने शार्ध (प्रकृत)

धान्यं साह् (बान) विन्य (D+174)

भारा स्पन्ना सहा की (गई

स्तराज सुसा**ज** समाज भ (धमसम्)

थहा एमनी सत्त्वृह् (शह+वा) सनुदान विद्यं **पुंत्**युन (दन्द) भाग सब्धान (अश्य) सम्मापु (वर्ष) प्रमुक्त सामगा 🛚 (ध्यक्क) मनुत्र स्नामुद्ध पु (शनुत्र) स्तागर भेष्ण सद्दास्ति वि (महत्) प्र (सम) सम्बद्धाः सम्मास्य म (सम्यक्त) स तत्र संख्य पु (सम्) वसाय व (बर्पन) समय करतो स-किया (संनीत) मन्द्रमी सरक्सई ही (मन्त्रमी) र्मणेष संतोस ३ (सन्तोष) परोदर खार पुन (सन्म) धर्म खर्प दु (नर्प) स्वम संज्ञम पु (संवम) <del>एत्र प्रसार ३. (स्त्र</del>) नर्शत्र **सम्ब**ण्यु वि (नर्गद्र) नमारक संसारकक न (समार वर्ष ठेकाने सम्बन्ध, सम्बद्धि कारबह व (मर्वत्र) स्कि सिकी की (नकी) सर्वेची सोई खेला क्रिक वि स्टब्स सङ्गण पु. (सङ्ख्य) (384) सरव सरक्ष ह. (महत्र) नक्त कर**नु स**रम् (सम ) **भाष्ट् (सम)** <del>धरकामा प्र**च्या**मा प्र</del> मामञ्जू सूख् (ध) (मरम्ममा) सामर्कने सुचिक्रप स भू (भूरा) धनगरी स**रधन्य** वि (अवस्र) साजार प्रवासका वि (शतक) मारा **सहस्र** समस्र मि (मण्डा) स्त्रका स. (समार्) क्मा सदा की (ममा) माबे शह म (सम) सदि म सम्बंसमस्य वि (नमण) (माचम्) समस्मन समोसरण समय शावविक साहारिमाध्य वि (माधर्मिक) सरक स. (स्थानक) वाश्र साह्य प्र. (सात्र) भिक्तु मनावि समावि भी (नगापि) ३ (विश्व) बद ५ (विते) समज समान समाच है (बगान) सरिस प्रभाव) ष्ट रि. (गर्स) सरिच्छ सरिक्स नारी रीव सुद्दु भ (सुप्र) सम्मं मि. (नरश) स. (सम्बद्ध)

रात्रो वेद सुविज्ञ इ. (प्र<sup>वेद</sup>)

स्व सिंघ सीह इ (शिक्र) नाम सिक्स प्र. (माम) सिद्ध बब्र स्टिब्स्स (नियम) विकास विकास प्राप्त (विदायक) रिक्टेन सिक्टेम न (निक्रीम) विकास संस्था ५ (ग्रह्म)

क्टिक्सिटि ९. (ध्य) विशव विद्या व्य (दिना) क्षेत्रम् अरहराम् (का स्त्रा) द्वार सोहण २ (धांगन) मबाउक-मबाक्य मि. (अनेव) तुक्त सस सरम् (प्रम)

हुए सुद्ध व (सुरा) श्वन्यर्रात सुद्देश (इत्रेन) ए ए. इत्या सुद्धि व (तुम्बर्) दन सच (६व) सुभाव (মুশ নাস্থ্য (য়ালা)

द्वको सुचक्छ (शुर्ण) केंग सेना दः (गरा) ते । स्पेशा क (४४) मार्गः सूद्यवयायात् ५ (नुवर्तवार) नम् सम (स्थ्य)

स्त्रिम्बर् ७ (१५%)

न्तुनि कर्य शुख् (ग्यू) को इन्दी दी ल (थी)

स्राज्यक स्टाम्साय द (स्थापन सामी सामि ८ (साह्य) रुचु इस्स् (१११) हरदा हव र सू (रू)

हमको सहया व. (त्रकुः) (मेथ सह, समा थ (क्स) इस्स हरू हर (तम) ETS ME REN PL (TE) 2 P. (FE) शप इत्य ३. (\*रः) दार हार ५ (बन)

स्तोत्र बोच र (सन्त्र)

निवर बिक्ट कि (विक्र)

क्त समा द (का)

नेह मेह सिवेह 5 (स्व)

सान सिमिन सिवित प्रक्रिक

स्वित द र (म्बन)

दिस दिस्म ति (P4) (श्मचन्त्रच्मित्रः)

विश्वाच मि (मित्र<sup>क</sup>)

हुस्तकारश स्ता-विस्त (जानी हार दियस दिस स (हर देवकान्त हेमचंदम्दि उ

हावी हरिय 5 (इंकिन्ट्)

होशियार स्वतिष्यु नि (सी

## परिशिष्ट १ संपिना नियमो स्वरसंधि

(१) महन्त्रा सिन्द भिन्द है पनंता स्वरोगी संति विकस्ये दान 🗷 भा वं पता सामान्त्रिक हाना बादए नोट ठनाच सराप्रासिक न रहोमां पन संदि याच 😝 (प्राक्रममा ज्या संनि नाम 🕏 रचे सञ्चरका निकास प्रमाण सचि पर्सा एटके के समादीय स्वर मर्का समादीय स्वर अपने हो हने हारो मध्ये अह धीर्य स्वर नाम इ. इसाब इस का पड़ी इस इ. चीम इ. चंड माने तो ने रक्तीने वत्रके पश्चीता व्हराना गुण बाच 🛡 ) (टिप्पण ६) भ<del>ागाना-स्थाहियो स्थायहियो (वयरावि</del>र) भागा-मा-विसमायवी विसममावधी (विमान) भा+म मा-पूराबनचे पूराभवनटा (जा<sup>नसर</sup>) मा मा चा नाताळच वंतामाणणे ( ब्राक्ल्म्)-१भा ई-वारीस् अनिवृत् (अरीप् )-इन्हें ई-मुणीसो मुणिईसी (न्नीम) रें +इ-ई-पुरुषीको पुरुषीहको (प्रविद्यीत) रंभं रं-पुरवीसरो पुरवीर्मसरो (वृष्यीध्र ) रार द्र-माण्डमो माणुरव्या (गान्त्र) काळक-गुक्ताहो गुक्कसाहो (गुक्ताहा). क्र+क-क्र-सास्ववागे सास्वववारो (शश्ववा)

क्रमक ऊ-बहुमची बहुऊसबी (श्यूसता). बम्म-य-बासेसी यासासी (श्वार्वि) (१) रक्को बन्दिनी ॥ १-५ ।

बारो वैध सुवित्रत्र पु. (सुवैध) सिंद स्थिय सीह इ (सिंह) सिद सिद्ध ९ (गम) थिए बहु सिउम् (तिरः) विद्यात सिस्टराय है. (विद्यात) विद्वारेम सिद्धारेम न. (न्याहेम) विकारण शतिक ६, (एपुक्रप) **धिक्**गिर्दि पु. (स्म) निराण दिया स (दिया) **श्रे**ण्ड काइन्स् (का÷ग्रा) इंगर सोहय ि (प्रोम्म) मणोरस-मणोरण वि (स्वाह) इन्त् स्स सुस्स (३०४) हुत सुद्द व (सुग) ग्रुप्ति सहस्य (इकेर) तृ व हरो सुद्धि व (मुकिन्) **एवं सुत्त** (६व) सुदा व াট্রশ দাব্য (যালা)

प्रवर्ष सुषण्या (गुनर्ग)

मारं भ्रेयवयसार व (गुर्वक्षण)

बेग संबा रू (नग्र)

वे। मोवाक (त्या)

क्षा हिम (११२)

লুমিং ক্রিটা

रपुल + च श्रुष्य (ग्यु)

भी रत्यां यी क (ता)

स्वेद मेह सिनेद ५ (स्व) म्बज सिमिया सिवित सि प्रविद्यः 🎚 🗷 (म्बप्त) माग सम्म ५. (स्म) लाकाश समझाय ५ (साध खामा धामि इ (समिन्) ध्य इल (१ए) हवायत ह्या व मू (हा) इसको सङ्ख्या स. (मनुग) इमेच श्वर श्रया स. (नग) इस हरूव र. (स्ट) इन्ड सह सहम १८ (न्ड) त्रबद्धी (स्म) (PF ERU 3. (FPS) शबी इतिश पु (इस्पित्) ER ETT S. (ER) बित द्विम नि (बैत) श्वाम करका अग्र-क्रिस (अ+िन् हरा दिशय दिश्र म. (१६4 देवनप्रवृति हेमचेषस्टि उ (रिमचलव्यात्रा) होशिया अधिकान् वि (अभिन्) निक्रम हि. (मित्रम)

स्ताम धोत्त न. (स्त्रोम)

Ret far fr. (Ret)

# महसोसं नांसोसं (स्वीधाव)

## **बहुमुद्दं बहुमुद्धं (**बधूमुद्रम्)

(४) इन्त क रीमें इ-कें क च-स्क पड़ी निजातीय स्वर अध्य ता संवि बाद महि, तमत्र स के क्यो पक्षी कार्रपण स्वर आर्थित इंग्रियती सवा (ति. १३ ८९)

> **बेर्**गिम अञ्ज्ञसहर (सन्दामि-सा<del>वर</del>क्रम् ) पदाविक्रमहम्मो (प्रशासन्वरूपः) वह सबगुढो (वयसगुर ) नद्वतिद्वमें वार्वधतीर (न्वात्केवन जवजन्ता) तियो आगच्छा (जिन कानव्यक्ति)

भावविकासे पण्डि (जातकसम्ब स्टार्गाम्)

महो अच्छरियां (महा मामर्थतः ). (५) इ. मादि पुरुषोक्क प्रत्यय पक्की त्यद आव ता स्तवि मान 曜. (元 11).

होड इह (मनवि १६)

(६) मोजन स्रदेश स्वयमंत्री स्थानका साथ वय कर होप स्वरनी र्फिंग सर साथे लंबि बाव वर्षिः क्षेत्र ब्रुपण संबि केन्यवामां पन कार्य छ (हि. १ ),

नियामरा (नियासर) क्रममाचे क्र्याचे (क्रमकार)... रपविभरो (गामकाः) | संबंधिमी संधितो (प्रपत्त्र) पयावई (प्रजापति ) बोह्याच खोहाचे (बाह्यार)

(४) व क्लर्भस्यास्त्र ॥ १–६ । एवाता स्वरै ॥ १–७३ (५) त्याचे ॥ ५...५.। (६) भारत्योगहरते ॥ ५-८ ।

भ-मं-व्य-नरेसी नर्दामा (नरेष). बान्द्र-च-महेसी महातनी (महर्ष). बान्द्रं च-महेसरा महामंत्ररी (महर्ष). बन-म मा महरामां महुरक्षणे (महेरप) बन-द-भो-चमनोमहा समन्त्रक्रमण (स्मरोच्य). बर-द-का-चेगाऱ्या मेगाव्हण (बाह्रोस्प).

धा-वन्त्रान्यंगद्या गंगावस्य (बहारम्) धा-व्याप्त्रास्या सहारुप्ता (बहारम्) बप्ताप्त्रां - इहाबिएस्ट इह स्रवेस्टार् (स्रवेत्र) सर्वाप्त्रां तत्र्य साम्रो (स्वाप्तः)

() एक ज परलो के लगो लागे काने तो शिव वर्ष वर्ष. इसका इसकारचा विचालो पर पंत्रके के के देव देव वर्ष शिव वर्ष ए. (हि. ६) देखिए, होती (लिक्पिट) | पाक्षिक वाड़ी (पार्टिंग).

वर्गित्य, दोही (मन्दिन्दी) वर्गित्य, दोही (मन्दिन्दी) वर्गित्य, वर्षी (क्रांत्वी) | दिवस बीधा (ब्रांका) (व) स्वाप्तामां स्टारेसुं शब्द को स्टिपिशव टरके हुन हुन

) न्याप्रस्ता स्तरोत्तं इत्या अने ग्रीविश्वातः पटके हुँग प्र ग्रीवे कार अने ग्रीवे स्थान हुन्य हार अवेदाने न्याप्त बाग के (वर्धेट देशान नित्तं अर्था देशाने विकर्ते में क) (वि. 3)

लमा र्शव-मंतावेई (क्लावेदि । संसावीसा (कार्वेशिः). पाँबर, पश्चर्र (पतिस्मय)

सराबोद्धा (का बेक्टी). पाँबर, परदर्श (गरिस्स). बारीमहि सारिम्म् (गरिस्ती). बेमूचर्च बेलुक्के (ब्यूनक्स) रोकां रस-स्वेड्यवर्ड बेंडव्यवर्ड (ब्यूनक्स).

रीमां रस-विश्वधवर्षः विश्वधार्थः (वक्तसम्). गारिहरः, गोरीहरः (गेरीहरः (गेरीहरः). (१) वववित्र प्रकारेकी (शो) १-५। (१) वीद्यस्ति मिना स्त्री ॥ १-७



 (०) लगपर क्यां चृत्रिय लगना प्रशास्त्रे अनुसारे प्रकारोत वर । (भार २ वि २)

विमनीसा (निष्केश) विजीसरी (दिश्या) मारि छ।काम के शक्तकता अर्थान्यसम् प्राप्त होते छने

मान्द्रे। पाय मान्द्रस्य (वचात्र). अहम्भाई अहट (वयाई)

 भि भि (मी) अन्तर को एक व्यक्त नहीं आहे ने <sup>[स]</sup> मानिने धर निक्रम तासाय छ, (हि. ४) नं अपि लेपि लमपि (तर्श) कि भवि किया किसकि (किसी) केश भवि केशवि केशायि (दराति), कई भवि कईपि कदमपि (कामी) (१ ) पंतरणात्री तस्त्री वार्ती देखि में नरूप चित्र सुपान है वर्ग पाला भारत होय ले लि सुपाय है छात्र समुपनी लामि इति ने कात हम मुख्य के (हि. ५८). नद+इति नद्दशि (तक्षीत) विक्रो इति विक्रांति चित्रक्ति (क्षित्र इति).

शक्र+पृत्या=सञ्चल्य (क्र<sup>ा</sup>

() स्यव् आदि गत्नाय अने धन्यक्ती पन्नी अनीग स

(R +)

हो।सा नोमा (गळा)

मीसामृत्यासा (जिल्लानारकाली) क्रिविका (विकेट)



म-संसुधो (क्षानुषः). । सहज (सायम्यः). प्-धंनुषो (क्षानुषः) । अकडा (अक्षाः). न-संद्रा (सञ्जा). विस्तो (विश्वः).

(१४) 'ब्रह्म' व्यक्ति प्राचीमां प्रवास्तर-विशोधनर को पूर्वभार का प्रवास्त्राचार (निक क विकार) प्रमुखार पान ह प्रवासकर कार-बाकी (बाका), कींस्र (कांस्त्र), सेंस्

प्रसासर उत्तर-क्क (कुम्य), संश्व (संग्नु), तस (प्रप्र) ऐसर्थ (कुम्य), विधिस्रो (कुम्बर), प्रशाय । सरकार्य ।

रिरोमसर उपर-सर्वेद्धा (श्वरणः) ग्रणंद्धा (ग्वरंगः) गृहीमसर उपर-सर्वार (श्यरं) श्रामुख्यं । श्रामुख्यं । स्रामुख्यं ।

(१) राम्पर्वा सदर रहेगा अञ्चलकारो दर्धीय व्यंक्रम पर कर्ण र प्रदेश सन्द्रदानिक विकार वाच के (दि ३०).

क्-पंको पहो (पष्ट) संबो सङ्खो (क्क्स) क्रेन्पको पहो (पष्ट) संबो सङ्खो (क्क्स) क्रेनचो क्रको (क्रुक्स) (क्रुक्स)

य-केनुमो कम्युको (कनुकः). कंक्षणं कम्बर्ग (वास्त्रण्) सैतिक सक्षिणं (सन्तिकर्) सङ्गा सन्तर (सन्तक)-

श-बंदमा, कप्टमा (शब्दकः) व्यक्तित राज्ञपता (शब्दकः गंडे कप्ट (शब्दम्). संश्ली सन्त्रो (शब्दः).

ब्र-नेतर्र क्यारं (अनुरह्). पंची कची (प्रत्या). वंदी कची (प्रत्या). वंद्यती कच्चती (प्रत्या).

म्-केपर करपर (करपा), वंशत करपा (करपारी) कर्मची करपारी (करमा) शार्रमी बारपारी (मारामा)



कासर (स्त्रका)

बीससा (<sup>३</sup> सर)

मीसरा (Pस्साध)

प्य बीसे (विध्यक्) प्य-वीसिची (शिवकः). म्य-सार्स (एक्यन ). च-बासंमो (विकाम) स्य-विकासरी (धरस्यर). मीसी (१ स्वा) स्स-पीमहा (मिन्सरः).

क्याद-कोई डेकाम का किया तावती वर्षी शारे भी कस्तुर (क्रवित)

निकारतुसारे दल खेर 'स-व-व' प्रयोग्नुसार दिन दल है. विस्सरह (P-इर्स्ट).

 मन्त्रवोमां तमक जल्कास कार्य प्रकारोमां करे क्षत्र प्रसार निर्मित्रके इदि चरळ के 'जा' ठेवे निक्त्ये 'जा' वाच हे. (है. ४६)-<del>बन्द्रयोगं बह-बहा (न्या)</del> तह तहा (त्या

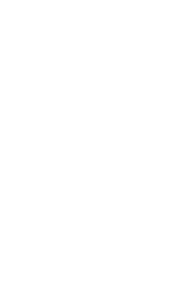
महन-भव्या (भन्धा). व वा (वा स का (का) क्रकाताति-बक्तर्य-उक्कार्य (अकान्य)। बमरा बामरो (बान्र डविमो टाविमो (स्यामिक). पवर्ष पायपं (प्रास्टर)-

इक्षिमो हाकिमो (हानिकः). इ.मरो इ.मारो (इमार) मभ मत्पयान्त-पवड़ा पवाड़ो (श्वार'). | पहचे पड़ाचे (श्वार')-पथचे पवारो (श्वार) | पत्यको पत्थाबो (श्वार)-

इस्तो छ (१९) श्रामा ब्लेजनरी पूर्वे 'ह्र' होय को विकले य बाब हे. (सि. ४४८)-

धेरहे, विश्वं (विकात). सेन्यूरं, सिम्बूरं (सिम्बूर्य) धारीहं घरिमहं (परिमक्त्य). केन्द्र विन्द्र (विन्द्र)-कों देखने 'य' बड़े नहीं बिन्ता (बिन्त)

(१८) शाजक्कांस्कारमञ्जूष्टा ॥ १-१४। वनुष्टेची ॥ १-१४। (RV) FR WILLIAM THE (PS)



च्य-पीर्ग (भिष्या). प्प-मीसित्ती (श्रीपक) स्य-भागं (१४४५) घ-बालवा (विकास) क्य-विकासरी (श्विप्ट) रम-नीमदा (मिम्सः).

बन्पयोमी--बद-बन (नया)

बस्यातात्रि -

E ST (ST)

क्रमार् (क्रम्मिर्) मानो थ

स्वार-भी देवते सा निया काली वर्ष गर्द से निवसत्त्वारे येथ रहेर 'स ४ म' प्रधारमुक्तरे दिन द्वार है

बीमसा (१ स<sup>प</sup>) बीसी (श्रिका) मीसरा (Pसरा<sup>ति)</sup> Server (Bert)

कासर (श्राकर)

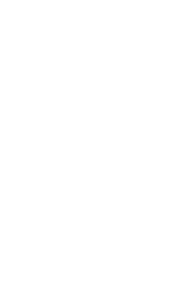
(९) व जनस्यां कात्र प्रस्मात स्पृति चण्डीयां समें सन् स्टार विकित इदि बदन में 'सा' तथे शिक्ये 'स' बाप से (R. vi)-तह तहा (त्था

महब-महपा (नावा). थ वा (वा बमचे बामचे (बान्त) दक्सपं-दक्तार्थ ("त्याम्)। यवर्ष पायर्थ (प्राप्त्य)

हविमो डायिमा (स्चाक्टि). डुमचे डमाचे (श्मार) इक्षिमा हास्त्रिमी (हान्कि.). धम् अत्ययान्त-पक्का पक्काहो (श्वारः). | यहचे पक्कारो (श्वारः)-पवचे गवारो (श्वारः) | यस्यवो पत्त्वावो (श्वारः)-

इ लोप (१९) बर्रुक्त प्रक्रमधे वृद्धे 'क्ष्' होच तो विक्रमो य बाम के. (दिः ४४ )-पब्दे, विवर्ष (विक्या) समूर, सिन्दूर (सिन्द्य) वामेतं परिमतं (वरिमच्य). केन्द्र, विवह (विन्ड) कोई डेकामे 'य' वडी वती खिल्हा (खिल्हा)

(१८) राज्यकेकासारामग्रदः ॥ १ १७ । बसुकेर्यः ॥ १-१८ । (30) to the 11 3-44 1



	4.74			
किया (हण) दिवये (हरक्य) निष्क (हरक्य) निष्क (स्वयम) विक्का (स्वयम) विक्का (स्वयम) स्कि (स्वयम) स्कि (स्वयम) स्कि (स्वयम) निक्का (स्वयम)	नियो (सूत्राः) तिरहारा (सूत्राः) विश्वारा (सूत्राः) विश्वारा (सूत्राः) विश्वार (सूत्राः) स्वत्रा (सूत्राः) नियो (सूत्राः) विश्वार (सूत्राः) विश्वार (सूत्राः) विश्वार (सूत्राः) विश्वार (सूत्राः) विश्वार (सूत्राः)	विकास (हराच्य) चिम्बुमी (हरिक्य) विका (हर्ग्य) विका (हर्ग्य) विदेश (हर्ग्य) वादिक (कड्य) विदरका (व्ह्रण) चिमा (व्ह्रण) चिमा (व्ह्रण) उत्हिद्द (क्ह्रण)		
that fand the the				
(ৼ) তিয়ে তিনী ঘদনীয়া চনত আনেনিত ভাগ কনি ঘীশ ভালনা তিনি ভাল ভ				
दक्ष (ब्रह्माः) इन्ह्रंसा अहा सा खा				
	निश्वमं (नियुप्पः)	इक्टी (इन्ट)		
द्वारं (त्यूब.)	मिनमें (विक्तार्)	बसदो (ऋरम)		
पुषर्व (पृथ्यि)	विक्रमं (दिश्वाम् )	शुकासं (सुनक्य )		
पंजनी (जुले)	संजुले (तंतुत्स्)	वस्यू (स्ट्रः)		
पारुखी (पहुर)	हताची (इसकः)	স্থানার্মা (ক্সার্ম)		
यावनी (शमूर)	विम्मुम (विश्वेष)	यासमा (मभुषः)		
मु <b>र्ह</b> (मृष्ट )	मिम्बुर्द (निर्वेदिः)	वादमा (मतुरः)		
पद्वा (प्रवृतिः)	पुर्न्न (बुन्नम्)	सरहमो (ब्रमुष्ट)		
पर्धाः (शभूनम् )	मुखानको (सुन्यस्यः)	विक्रमी (श्लूण)		
परह्या (परमुख)	अवसे (बुरः)	प्रमुखी (पूर्ण्य)		
माजमेशक (मास्त्रकार्य)				
माउडर-बाडघर (मात्रुबर्ग).				

(६)-दह न्यानी ॥ १-१३१ । धीनानन्त् ॥ १-११४ ।

rd



रिसडो-उसडो (शुक्तः). रिक-रक (स्था) रिसी-इसी (करिंग). (१४) फ्रिट्र रसरको 'बुक्कि' बाब w ( प्र नि ६ )-किसिम्बो (वस्त्रः). किसिमो (वस्त्रः)-चेतो य तथा भा (१५) राज्यती सन्दर दि" में घू" वाद राग्य दत्व" अनि इस्पोर्ज सप्त' काव के (दि. ६ केकासी (बैगाव) सेखा (चैन्र) सेन्न (रेन्स्) बेज्यो (बैच) केवयो (केवमा) रेखक्कं (वैशक्का) बेहर्स (वैनन्तर्) यराचची (येखनः) देस्य" कारि कको बारकारे (वेशक) इर्च्चो (रेल्य) बास्सावरो (ब्यान्य) सर्ग्नं (देन्द्रम् ) महसरियं (पृष्कृत्) कश्चर्ष (चन्नम्) मदरबी (मेरव) बहसाहा (वेडाध्र) बद्धाको (वैद्यार) ब्रम्भं (रेक्ट्र) बद्धासीचं (नेप्रजीवम्) सहर् (स्तेप्यू ) महपसी (वेंक ) चार्च (केल्प्) बह्यहों ( केन) सी ने ओर तना साव (११) क्लूबी अन्तर की को की बाब रेमन 'पोर' अली धमीमां अड नाम छ ( फ्रि. ६६ ). (२४) व्हत इतिः ग्रहण-मद्दाने ।। १-१४५ । (९५) केन यत् ॥ १-१४ । अव्हीन्यारी च ॥ १-१५१ । (२६) मीत कीन् ।। १-१५९ । अवा वीरारी व ॥ १-१६१

194

```
200
 المدؤها بالتره
                        बागनी (व्योगमने)
 शंक्षचं (दौरम्)
                       क्षीयो (बीब)
 Build (Aller)
                        पानिमा (वी'एक)
               age my suit
 Tri (7 )
                         च इस्र (वी ।)
 abe ing (afbaen)
                         सरार्ग मौी।
 कारना (की र)
                         बर्ध (बीग्र)
 ( Inala ( April )
                        महरा (सीए)
 defet ( Little )
                       : बाउमा (वी )
 वार्ड (क्षेत्रा)
Min.
 17.44 (47 -1-)
                     पुषारिमा (री र १)
  June 1 of
                     सारच-राउस्पे (गी रए)
  with ( ) is a wally
     मारत्यां चना बरायान्य रहेशतमा नारवारा
(1) eg g- mg y eg - y eg
    m a s see a see a deal he
    ma (C .)
    8"E (EFE)
    Tid (e)
    La lon
                         WINT (R-II")
    BREETS JEWYPT
    # the } (and )
    Straded sedared)
                        बहुताची शक्तार (१३३४
  (19) true expect 3 3035 1
```

धवर्षेता (६वर्षेत्रकः) अवरोता (वर्षेत्र<sub>कार</sub>) (९४) 'विद्युत्त' वाण पत्रीने स्थानान्त श्लोक्विमां अन्त स्थानने श्ले सा<sup>र्क</sup> "द्या" याच - रोसम स्थानना श्रीस्थियम् अन्तर <sup>प्</sup>र्<sup>ध्</sup> रिर्देश के अने प्रियाही मारि करोगी करूप स्वेतनी

का बार के (या १९ मि. १-३-४ )-सरिया सरिया (वरित्), पाडियमा, पाडियमा (क्रीन्द्)-संपद्मा सप्त्या (क्लत्).

बिरा (वि.) प्रशः (क्र.)- प्रशः (क्र.)-सरमो (बरद्). शिसमो (तिपर्).

निकेप सुद्दा (छप) विसा (निङ्) बावसी-मार्ज (बापु ). अबक्रटसा अबक्ररा (अबस्रू )-करहा (१३म्) धलुई-चलु (वन्:) वार हे

(१९) सम्पनी सम्पर रशरती प्रक्षी कर्मकुछ ने फि.-स.-स.-स.-स.-स.-स.-प-य व है अंत्रनीयो प्राप्तायो प्राप्त कोव वाव के प्र क्षत्रकी वर 'प' आने हो 'ध्' वान हे, देन क स्वर्कनी 🕬 क्यार्च अपने हो। 'का' मो 'धा' बाच छे, फोर्ड डेवार्च का मो में

मान के (दि. १४ ). 'क'- सोबो (बंदा) वित्ययरो (क्रेक्फर) ग'- नमो (था) नगरे (लाग्)

'ब'- सा (एवी) कायमणी (राजमणि) क - रवर्ष (रज्ञम्) वयाका (रज्ञातिः) त - पापाक (भनाका) आहे (वितिः).

(१८) क्षित्रम् अस्-मनिवृत्ता १ १५ । से स् स १-१६ ।

कारादेग्य ॥ १-१४ ॥

शया (गरा) सुप्रविशतं (शपूरण)

Y- [1x (64) \* - fruint (finte) वामामा (स्थायः) द्र = क्षांतरचं (०वन्यः) को (विव क्षेत्र क्षेत्रस्याच्या (सन्त्रः) बाबहा (एकर) (La) (LL) <sup>क्रम</sup> गल्हापमा (परक्र) - ग्रमेना (राक्र)

311

(1A1) (RAIR - A

ੇ ਵਿੱਕਰ ਮੜਬ ਦਿ ਇਹ ਕੇ ਇਹੋ 

(1) Early Areas been also section in the streat-ordering ed to see o it to a s

PPF

(११) क्रम्पर्ने सम्बर्ग स्तराधी पक्षी कार्यपुष्ट मिं हो 'या' वाच है. रेसम बाम्यो आधियो है। श्रेम वा विश्वे वा बाद है ( B 34) वार्थ (शबस्) नार्ण | (हत्वम्) नरो (४००) घर्ष (श्वस्) वार्ण (४००म्) (११) फल्पनी ब्यापितां प्या होता हा प्या वान के हेमन बज्जरेंगे

पर्द्य पि नाव ल नोई इन्द्रमे 'क्क' बाप के. (श १५०)-क्रमों (यमा) खंडमो (वंदमः) वसी (दम) खंडोमो (दमोच) बाद (यान) व्यवस्था (करवन) (१) अनुस्थानको एको 'ह्व' अन्ते हो 'ह्व' हो 'ह्व' विकारी जान में सित्रों } (जिंदा) संपारों } (हिंदारा) सीहरों }

(81) 4ma aftet e. ii 3 554 1 4m-aleife b. ii 1 94 1

(देश) के मात्र पर । कारी ॥ ५-१३९ /

(\$\$1 miligit at 11 9-244 1 (६४) हो योज्ञुलासम् ॥ १ २६४ ।



## भपवाद-

(३) पौर्मन्यर रामा अञ्चलार पक्षी होयम्थाल होमा नारेकाहा न्योत्मं दिल बाग नहीं होमा प्रि-मूर्ण पत्र दिल गण नहीं (१८ ४३).

0 वेसर फास्रो (सर्थ) अनुस्थापण-र्देस (प्रस्म) वेसरो (विषय) अस्त (विष्य) स्थापा (श्राप्ता) स्थापा (श्राप्ता)

साधा (क्का) संद्रा (क्का) र- सुनेर (क्किन्) वंशवेर (क्वार्य) ह- विद्रश्चे (वेहर) वह (क्वार्य) (क्वार्य) (15) सामार्थ शिर किल्ले क्वा क (क्वार्य) (क्वार्य)

दैवार्ड्यं-चैवर्ड्यं (देवस्तुरिः) नहमामो-नहमामो (वर्णमामः) इस्तुमन्पययो-कुञ्चमपमये (इस्तुमन्द्रः) ( ) संदुष्य मोकस क्षेत्रं 'म-स-य-ख-य-प-प-प' हार डो ट्ये

( ) র্যুক্ত নাজনা ট্রিট 'ছ-ল-জ-জ-ঝ-ন্-ব' হাব তাঁ তথ্
লো জনুক্ত করকার গৃহীতা করিব 'ছ-জ-জ-ব' হাব তাঁ কবি
লল উস্থা কবি পাঞ্জনাই প্রবৃত্তি প্রতি ক্রিট কবি
কবি কবি কবি কর্মান ক্রিটেল কর্মান্ট অনুনাই জানিব

ज्यां करों श्रांकाचे क्षेत्र वहीं होय त्यां क्रमेको श्रहतारे वैनॉर्थ एक्से क्षेत्र करते ( श्रि. ४४ ) देश करते (वक्षात्र) (क्यां ) करते करते (वक्सा

कार्य (कार्या), प्रकृते (कार्या) सावहै-सवहे (कार्या) दारे-बारे (हास्). (क्रि) म रीजंबसमान स १००१ । हन्यों ॥ १ २ ३ ३

(३८) व धीर्म्युस्तमस्य ॥ ५-५९ । १-वीट ॥ १ ५३ । (३९) समावे वा ॥ १ ९७ ।

(¥e) धनो ल-न बास् । १-० । वर्शन क-व-राजपन्त्रे ह

4-49

```
मॅं-सरा (ग्राप्त) । वृद्धं- यक्कं (ग्राप्त)
  १८- नामा (न्थ्र) वि- गर्म (श्वर)
व- पाम (म्याम) वि- यहच (नहत्र)
   MAT (Situal)
                          सन्दर्भ (४४८)

 व्याः श्वारत्) '('= वाता ।साः

() हेरू प्रभाग वह भा क्वत बाव के अरे वाद देवारे वास
   विर्माणक के नेपार का स्टालाक वाल्यान्त वाच
   + { tt } }
    Mat (str)
                         सरिष्दा (१५)
    **** (41
                      i Pedi t 1
    भीते हैं (भीत्य)
                       , जीति ।
                         Um bielimie
    रियो } बर
                         ferret ift )
                         वरण (तर)
```

चवर (त्वजली नच्चाः (दृत्यति) सच्ये (स्त्यम्) वास्रो (स्यावः) पण्यामा (प्रत्यवः) वास्रो (सैर्यम्)

(४४) प्राथमी सम्बर प्रवादने शतुसारे बोद अवन 'स्प मा 'पण' 'चर' । 'चळ' 'ख' मो 'उझ' समं 'चर' मो 'नह' पन 1 ( R vs )

'ला'- किया (शसा) 'a'- चित्रत (निकास) मोच्छा (प्रया) 'प्य'- बन्सा (प्रवा)

मच्या (गरवा) ... समासं (ग्राप्ताप्र)

'ख'-पिच्छी (श्वा) समो (भार) म्य<del>-प्रा-त्स-व्स</del>'शाचे हो 'क्क' (४५) इस स्वरंगे पटी

माम के ( दि, ५३ ) 'च्य'- पच्छ (त्वयम्) 'त्स'- रुप्पाहो (असार)

सवच्छरो (वंसस्यः) मिच्छा (मिच्या) ब्रा – पण्या (मदार) प्त'- क्यूप्पर (स्टप्संट)

मध्येरे (मळर्बर ) .. अच्छरा (अप्साट)

( ६) क्रम्पनी मन्तर 'श-क्य-वी' होत क्षं 'क्क्स' यात के उनक न्धनिमां हान टो 'क्क' बाव छ. ( हि. ५३ ).

च- मन्त्रे (रचन् ) 'ब्ब'- शक्ता (एप्पा)

बेज्जा (वैधाः)

कावज्ञे (कारहास् ) 'र्घ'- अक्का (ध्यपी)

.. सर (पुन्दे) ... पत्रवाको (स्पीक)

(VV) ल-व्य-स्-मांच-क-प्र-साम्बर्गाः कवित् ॥ १ १५ ।

(४५) इलाग्र, प्य<del>ान्य न्या प्रक्रमणिको</del> ॥ २ २९ ।

(**४६) य-व्य**र्वी कटा १-२४ ।

#### 250

(४०) स्प्रती अन्तर क्याँ बने ह्याँ नो उन्हा बाव छ अने मारियां होन यो क्षां नान के राजन 'खाँ नो निक्न्ये यहां पन नाम छ। च्य'- चुम्झर् (गुप्यनि) ्**डा'- गुरुशर** (5द्वारी) » सिन्मर (निध्यति) \_ পদরহ (ক্রানি) गुन्ह } (प्रहान्)

(ve) पूर्त कादि सन्द वर्जन किं वो द्वा बाव के (रे ६६) पपहर (अवते) संबद्धि (कार्तिक्य) किसी (बोर्तिः) तहमो (क्रिनः) वसा (वर्ताः)

(४९) बामज़ी अन्दर 😾 वो 🐒 बाब 🕏 अने आदियां होत तो

दप्-एग्र-सम्बद्ध मा शन्तामां 'छ' वा 'हु' वचो वदी. अहरे (उप्टूर)

व्यक्तिह (बद्धिम्) वहा (स्था)

(४८) र्वस्याञ्चलीही ॥ १-३ । (४९) श्लाहयेश-सन्दर्भ ॥ १-१४ ।

सम्मो (न्ह्या)

पवत्तर्ण (अवतन्य )

संबद्धाः (धन्यच्याः) (३४) साम्बद्ध-बद-इर्ग स. ग २-२६ । हो को । २-१९४ ।

झायक् (च्याचि)

- पिंझो (रिज्या)

केषहो (केन्तः)

ठ बाव हो (हि. (४)

प्रद्रो (सम्) बहु (बहुद्

स्त्री (नदिः)

» समि (घ्याप्य ) • पंद्रा (कथ्या)

### 114

( ) समयी मेरर 'प्रम' सने कारियों 'म' के 'स' वान	भूती चलाक जिल्लास के क (१८ ५६)		
'म्म'-पश्चववे } (श्वामः)			
न निर्ण्ये (श्रिमम्) निर्ण्ये			
करनार — 'ह' (स <b>−दा</b> ) ना 'बा'	मो शार एव विकासे बाब है.		
पद्धाः } (अवा) पच्चाः }	स्योग्डं } (म्ब्येक्ट्र) स्योग्जं }		
मझा } (भाहा) सर्वजा }	बार्थ } (बारू) पार्थ }		
(५1) प्रध्यमं अस्त 'स्ता' होन को 'स्था' वान के को व्यक्ति होग हो 'शा' वाग के (ति ६२)			
	बोसं (स्तोत्रम्)		
फ्रान्य (लस्ति)	वनो (स्तर)		
भारत—समस्य को स्टाम्ब एकामे स्टाने 'स्ट' हे घें को क्वी			
समचो (स्पस्तः)	तंषा (स्तम्द)		
(५९) सम्बन्धी अन्तर प्रह्मां असे 'क्षम्' सी 'च्या' बात के. क्ष्में			
आभिर्माद्दीन सी प्र'नाव र 'अ'-क्यार्क (क्रमाना)	थे. (शि. ४०) 'क्य'-स्टिम्मी' (स्किस्सी)		

(५०) व्यन्तीर्थः ॥ ९-४९ १ को या छ ९~ ३ । (५१) छल्य योऽक्रमस्ट-स्क्वे ॥ १ ४५ । (५२) कृम-यगोः ॥ १-५३ । (६१) क्लबी कन्दर 'ह्या' करें 'व्या'नो व्यक्त बाव क्रे करें आदिगाँ होत का पत्र बाब के (दि. १८).

"ed.-Ant. (Antil)

भ-निरुद्धाते (विभागः) स्प-कास्ते (सर्वः) भ-पंत्रकं (स्पन्धः )

क्षेत्र टेप्लकं पेत्र' करते लक्षी त्यारे पूरोंचा निकासनुवारे पिटा यात्र के

विप्यद्वी (जिन्नमः) परोध्यरं (परस्पध्य )

(hr) प्रस्ते सन्दर 'क्ष' हो 'हम' विषये बाल के सने आदिमां शेव तो भा काय हो. (टि ५४) बिम्मा, बीहा (म्ब्हा) विम्मतो विहस्रो (महरू).

(१५) एम्स्मी कन्सर सम्बो किस वाच छे कर्न क्याँ को क्साँ विकस्पे याव के (दि. ३६

ंसा-बस्सो (क्रम) व्याप्ते (द्वरस्) रमा-बस्सद्दो (क्रमः) व्याप्ते (द्वरस्) विमो (द्वरस्)

(५६) राज्यं बन्दर रहेवा 'हार-वार-सम-का' यो 'म्ह' बाव है <sup>क्रमे</sup> पहन करूना इस्त<sup>ा</sup> नो एक फेब्र्ड वास के कोह देकाने धा मो कमा क्या बाव छ (दि. ६).

(५३) मस्पर्ध कः । १-५३ ।

(५४) हो भावा। १-५०।

(५५) स्मी मः । ५-६९ । स्मी वा ॥ ५-६९ ।

(५६) पस्य-स्य-सा-स्य क्षी आहः ॥ १-७४ ।

'सम'- करहारा (क्सीप). 'पा - पिरहो (सेपा:). 'मा'- पिरहों (सेपा:). 'मा'- परहा (क्सा). 'हा'- करहा (क्सा). 'मा करहारों (सकाक:)	कुम्हाची (१६मा)- बम्हा (२५मा)- सम्हारिमो (डस्माप्ट)- बम्ह्येर (स्वार्च्य) सम्बर्धेर पर्न्स (ध्वम)
काइ डकाच रिद्वा का। वर्ती रस्सी (गीरमा)	सचे (स्मः)
(५०) सन्दर्श अन्तर खेदा 'इह स्ट्रूमा' स्टब्स्न 'स्ट्रम' से 'स्ट्रस' स. (हि. १९)	
'स्त'- पण्डा (मध्र'). 'क्य'- बिग्हु (म्प्यु').	निगदी (मिना)-
'स्त'~ डोव्हा (अवस्था).	क्षत्रहां (१६०३:) पदार (स्मा <sup>ति</sup> )-
क-पन्दी (सक्कि),	वण्ड (बरन्)-
'क्य'- सन्द्रं (श्रह्याम्) 'क्स'- सन्द्रं (नृक्षम्).	विषद् (ग्रेड्यम्)- ड'- बध्दाम्रो (नदाम)-
	» पश्चाओ (श्वार)
(५) धन्यनी सन्दर 'हा' तेतुका धा क्षोप विक्रणी वाल हो. (टि	١)
बन्दो-बंद्रो (क्यूः) ब्दो-ब्द्रो (क्यूः).	समुद्दो~समुद्रो (इन्छ).
१-५६ । १-५६ ।	सर्वाच्या स्था शोक
(NA) it at an an an an	

(१९) सम्परी अन्दर 'हैं' शा 'रिह्र' बान छ, समत की-ड्री-हत्तन-ब्रिया था सलोमी संबुध अनवासरती पूर्वे हैं 444 g. (P. (4-49) परिश्वतो (भारत) सिरी (धीः) मरिहर (महीर) हिरी (ही) परिद्वा (वर्षा) कसिणो (शस्य) वरिक्टो (व्हि-) किरिया (भेजा) (१) बच्दरी सन्दर 'ही' के 'पैं' वो दिस्त' विक्रमें बाव क्र मने तप्त-पदा शम्पमा पन संयुक्त सम्स्य नक्तनी पूर्ने 'ह्र' मानम विकल्पे सुराव के. (टि. ७९) री-बाबरिसो ) (आरहाँ-) तविसं (तन्त्रम्) **पार्यसो** \*-बरिसा } (वर्षा) बासा } बरिसइ ( (वर्षेत) (६९) चंपरको अन्तर शतुष्क कोकाना अस्ताक्र 'क्क' हाच ता दनी पूर्व दूर न्दरम 😻 (वि. ००). किकियो (क्रिन) विकार रे (ब्हाबरी) गिसायर सिक्कि (श्विक्रम्) मिसाइ } (म्हावर्ध) सिक्षोगो (स्क्रोकः) किसेसी (क्लेस) (५९) ई-की-ही-क्रम्ब-क्रिया-विष्यपारित्तः ॥ २-१०४ (६०) <del>६ - ६ ला-</del>नक्ते वा॥ २–१ ५ ।

(42) max 11 2-9 4 1

कोह डेक्टने कि आता धारको नगी. सम्बद्धपद्यो (ग्रहणकः) विष्यको (विषक्ताः) क्रमो (क्रमः) (६९) स्याद्-सम्य-चैत्य तमत्र घोर्य वन तेन केर कररामी रोजुन्त से व्यंत्रम क्ष्म अस्त्राक्ताचे पूर्वे ही मुक्स के (दि ८). र्ध-कारिका (क्यों) सिपा (स्पान ) वीरिनं (वैर्यम्) सिधाबामो (स्यादामः)

बेरिय (लर्पर)

भविभो (नव्यः) गंमोरिमं (अम्बोर्यम्) चेइथ (शयन) सरियो (न्यंः) य-बोरिमं (शैर्यन्) शारिक्ष (गीर्वम ) बायरिको अवार्धः) संदरिक (बोन्दर्यम् ) बस्डबरिमं (नग्रवर्यन् ) (६३) मन्त्र चित्र स्थुक स्थापन होच एस कार्किन नारोनो 'दी' मी पूर्ने 'ठ' मूफाय के (मि. ८४)

दशुबी (जबी) पुद्वी (श्वी) सक्वी (स्त्री) सहयी (खी) वहची (प्रांत) (tv) को अक्सपने बान्त 'क्ष' होत तो की क्लके 'हि इ-न्याँ WEIT BL (BL. 1). स्वति सद सत्य (१४) । श्रृति, श्रृत्व श्रृत्य (१४) तदि तद तत्य (१४) । अस्रति सम्बद्ध सन्तर्य

(६९) स्ताद सम्प-केश्य-वॉर्नकमेतु बाद ॥ ५-१ ७ ।

(६३) कन्द्रीयुक्तेषु ॥ २-११३ । (६४) चर्चा जिल्हा-स्थाप्त ॥ २-५६५ ।

### **छिगान्**गासन

(१५) मातृष्-रारब्-तर्वाव ए क्रमी पृक्षिको वपसव अ. ( R. (4)

पावसो (मक्टू) सरमा (धरद् ) वरची (ठरायः)

(११) दामन्-शिरस नमस ए चन्त्रो विना 'स' कागस अमे 'म'-

करान्य सम्ये पुष्टिका। बपराय 🕏 (टि. ४९)

सान्त इसी (वयः) । नास्त सस्मी (क्रम) पमो (पव-) नम्मो (र्थः)

उसे (नः)

वमो (तमः) सम्मो (सम)

वेमो (वेमः)

दार्म (दाम). सिर्द (किर ). वर्ष (दम:). भीषेत्रः सञ्दोनो कोई डेकाले वर्तुसक्तिंतामां एक प्रचीप

रेवाव ध.

सेपं (भेक)

चिपं (भेषा) वार्यं (क्या) सुप्तर्थां (सुप्तर्थः) चरमं (वर्षः) वारमं (वर्षः) वारमं (वर्षः) (१७) महिन (नेज) वाजक शब्दों अने 'शब्दान' आदि कन्दो पुक्रियां निकरों मण्डल है। रेमन बुद्धा गोरे चाको वर्षुनवर्कियार्थ निकरो बपराव छे (डि. १७.)

(६५) प्राष्ट्र-सरलजनः वृति ।। १-३१।

(**११)** सम्मरामधिये⊸याः ॥ १–३९।

(६७) बाउरवर्ष-स्थनाचा ॥ १ ३३ : गुनाबाः भूमि वा ॥ १–३४ ह

```
संस्की } (महिन्दी)
संस्कित
                                    चयणा ) (रक्याः)
चयणार्थः)
बस्पर् } (वध्यो)
                                    विज्ञाचा } (विष्ण)
विज्ञाप
नयजा } (श्यो)
नयपाई }
                                    भाइपा ( (यःस्प)
                                    भाइण 🕽
स्रोधणा 🏃 (लाव्य)
                                    दुक्ता ( (इन्हार्थ)
स्रेवनाइ∫
                                    3ुंपचार ∫
                       शुषा धारि शक्ते--
गुणाई } (ग्रनः)
गुणा }
                                    वेवाणि } (वेद::)
वेवा
विम्बुको } (दिश्वाः)
                                               (गर्य)
करवर्ष } (कारहा)
करवर्षा }
                                   शक्ता (१मा)
बन्का
(६) 'इसन्द्' वर्ष शाव एवा शक्तो टेमन 'बाह्मस्टि' गेरेर संस्
      श्रीकिंगमा विकास वपराय छ-
ष्यामहिमा } (१९ मध्या).
यम महिमा }
                                    यमा गरिमा १ (१४ वर्षम्)
यस यरिमा (
पसा बडकी ( (एव जबकि:).
                                   पण्डा }
पस सक्सी }
व्यव्यक्ति } (अक्षि).
शक्तिक
                                   वारिधा } (नीर्बम्)
वोरिधे
विष्ठी } (श्रक्य)
```

(६८) वेसावान्यसा विन्तार्। १-३. .

#### कारक-विश्वस्यर्थ

केंग ऐर्डिटमां क कारण के टेम वहीं प्राप्तकों एक धर्ष क्लाल्याचे संस्कृतन मनुसारे जानवी तमा विश्वपता नीचे प्रमाने के

(११) प्रमुख्यां शिवनमें स्थाने बहुण्यन थान है हिल सथ सन्तरामं प्राप्त वपुत्रवर्णात नामनी लावे निमन्दर्श हिं सन्दर्श प्रश्रेय वाल है

दोष्यि कुवस्ति-दुधे कुवस्ति (ही इस्टः) दुग्यि नरा दोहिस्ति (ही भी व्यक्तः)

हरेया (हम्मे) याया (गारी), शयका (अपने) (\*) अपूर्व मिमकिमे आने गकी निर्माण बाव के पन देने मादे कार्यन्त बहुवी प्रश्नवन्ते स्वये छुड़ी निर्माण विश्ववे यात के द्रिया द्वाराती व्यक्ति प्रकायनाव्य संस्कृती कीन स्वास के (दि. १४)

सुधिन्स सुणीय वा वेडू (सुनव सुनव्य वा दराति). नमा देवरस देवाचे वा (श्ला दश्वर देवेम्यो वा) नमी मायस्स (श्ली झानव) असी गुदस्स (स्ली दादे)

द्यारकात क्षेत्रक्त क्षेत्राच (क्साव-वेत्रक्त). (७९) दिवाच-तुरीका-वेवती को स्त्रतीते व्यक्ति काह डेडल्के क्यी

हेसि पथामणाइका (तरेक्सनीर्वम्),

विमन्ति एव बराज छे विज्ञेसन स्वाने—स्तामाध्यस्य बाल्यै (वीमार्थः यन्त्र) युक्तेसने स्वामे—स्वामास्य स्तुद्धो (व्येन कृत्यः)

(६९) विश्वसम्ब बहुबबस्य ॥ ३-१३ ।

(७०) चनुष्यां वडी ॥ १-१३१ । सार्व्यक्रेवां ॥ ३-१३२ ।

(७१) नाविष् दिखेनारः ॥ ३-१३४ ।

#### 101

क्यांन स्वान-चोरस्स वीहर (वीवर विनेत) की-परलोगस्य मीको (रणोगस् बीन) कर्मने स्वान-चिट्टीय कैसमारो (१८के केसमार)

(७१) कोई डेक्टने ब्रिडिया का तुर्वकारे स्वाने तस्त्री विकास यात के तथा पंचायीन स्वाने कोई डेक्टने गुडिया की तस्त्री एक काल क. (दि. ४४).

स्त्रियं पण का क. (दि. ४८). विदेशने स्त्रोने स्थाने स्थानी -गासे स्वासि (स्त्रं प्राप्ति) - स्वरं स्त्रासि (स्त्रं प्राप्ति)

र्यंत्रते त्यां करती—सेस सकडिया पुर्व (केन्स्ट पृथिक) पंचान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान (बीवर (मेर्बि) करती—सरेवरे रसिंद सामसे प्रा

(शन्त पुराष्ट्र एक्स एक्स (स्वाप्ट प्राप्त प्राप्त )
(1) राज्यस्ते स्वाप्त कोई डेस्क्स विशीवा पात्र के 
विज्ञानार्थिय साम्य परित्त (शित्रपुरात्रेश सामित गर्नेया) 
व्याप्त वर्तना पत्र का वास के 
वेष व्याप्तिक विशे सामयार्थ (प्रविक्त कोई स्टिस्ट काई)

<sup>(</sup>अर) दिशीका-तुलीकाः, मणशी हः ३ ११% । एकानास्पृत्री र ४ १–११६ । (अर) क्रयस्या क्षितीका हः ३ १३ ।

## भारमोनां रूपान परिश्विष्टः---२

 प्राप्ट क्लाक्स्वर्धा आपेका अपूर्ण पानुष्ठीमां से 'क्ल' कर के. वै करवारको साटे छ रोगी छ पानुशोने व्यक्तान्य सामीनै क्यू कर्यु एवी द्वार इस दिनेरे धातुओं व्यक्तवाना होताची मूरफारमी किया प्रदेश नवाक्षत है हैवी ह्रवीस हमीस इसीझ दिगेरे क्यो वाब छ

🦫 कर्मींब व्यव प्रेरड वातुमीनां कर्मारे मने कर्मींब स्वव हो व्यवनात्त्व वाद उपरथी बनेत्र होन का मुनकका 'कुँम' प्रतन सम्बद्धन मने रस्तान्त करावी क्षेत्र होग तो सं बारने विश्वी-दी-दीया प्रत्यव मारी के

(गहुमानाचरित्रपामां भा प्रमानं प्रजीयो करेका छे)

मृतकासमा कपो

क्षेत्र अर-कर-करीय-करीयाँ व करिक्क-करिक्कांस

हो-होई म-होई मसी-ही-हीम होरस्त-होरस्त्रसी-दी-दीन

फर्मणि सबै माबे दपो

चिद्धरेस स्वाच्यलमा अच्छम क्रमान (प्राप्तात) मां क्रमति सा**दे** क्लोबा क्रिक-प्रजन्न प्रश्वको संदिध्यक्तम अने विकासिपरितर्द

٦. वहुमारावरित्रकायुत्र (13-9-9) ब्लकार उच्चारवार्वेः प्र १४५ ।

٦. बहुमाना सूच हर- ९१६ छ १२६।

1 मा प्रस्कोतो वीर्वस्तर पशुमायायनिक्यामं इस्य करेळ क्वे Bilt-18-184. 89-8-998 8 949 1

वहमाना स्पात ईम-इस्ती सका ॥ १-४-५१ ॥ दू-११५३

रनोयां शराकेस नहीं एक वहसासामनिकामां क्रमीनामा की विकासिपरिकां क्षिम-बुरास अन्तरम क्रमानि रसो कसाये कामनो हो

म्मनि गत-कर्-करीस करिन्न हो-होईस हार्ज्ज बीजा पुरुष यक्तवसननी क्षेत्री

र्गः —करीमाः-करित्रबर कोईमार-कोरश्वार

स्था-कार्य-कार्यको दी-दीम कार्यक-कार्यको-दी-दीम विक-समार्थ⊶कर्-करीवड करियक

> हो-बाईमत होस्कत बोईपत हारस्वेत

गरि दैसन्तकः समान --कर्-करिश्वित करेडित

को-कोविश विगेरे कतरिवत् वासाय प्रशाव :--

क्रियह करिस्केब

कर्-करीशहिष्ट करीयहिष्ट करिकादिष्ट करिज्योहिष्ट

हेमत बार्रमां का बाह स्कोर हुँका-हुका है सवाओ देखान है-वेज-सार्मित्रक्सामिति जगतः वाहरिज्याचे व वालर-बेहरिक इनि बागति, शंकीकमार्गा व जागति-कम्पाल ह सु. १

यो-बोर्वपश्चित श्रीप्रपश्चित ultibufer elevatier रूका-काईय-कार्यप्रतिष्ट कार्यप्रतिष् कारण्य-कारश्यितिहर कारण्येतिह क्रियतिरति-वैक्करावम्य प्रमाय ---

कर-करन्तं करमाध

हो-होम्लं हुम्ल होमाणं बहुमत्वा प्रमत्वे ---

%र-\*करीमन्त करी**म**माण. करिज्ञमत करिज्ञमाण

हो-कोईमन्त होईसमाज बोइन्जन्त बोइन्समाण प्रेरक कर्तरि सकः :-

<del>ष्ट्~कार-कारे-काराव-करावे</del>

प्रेरम भद्रभियां श्रीजापुरक्ता शकानमना स्मो क्षान-कारर कारेर करावर करावेर

मान्त-'कार्यंग कारीम कार्यम करायांम कराबीम करावेईम

श्री-श्रोम होए, होजाब होमावे <sup>1</sup> होमंति र्श्व-क्षोक्षत्र क्षोपत्र क्षामानत्र क्षोमानिक क्षोमानिक.

 वहुमोषाचरित्रकार्ग क्रिकारियशियां क्याँ क्ले 'आण' प्रत्यको स्वयक्ते स्रो मरोच छ स् ॥ १ – ४ – ४ । ॥ ॥ ३। **५ पहमामान्य-प्रदेशप्रकात् पोरतः ॥ १-४ १ ॥ ४ ५३७।** 

वष्ट्रमाना स्त्र-प्रवेशिवनी ॥ १-४-११ ॥ प्र. १३३-१३५।

द्वावसी-दी-दीम होमायसी-दी-दीम होभावेछी-दी-दीम होस्रक्तिनी-ही-हीस

विवि-वाग्रल-का-कारण कारेज कराबड कराबेड क्रो-क्रोमय क्रोपव

340

होमाच्ड होमाचेड होमविड मनिन-कारिबिर गारेबिर करायिक्ति कराविक्ति

urfer unter einieler क्रोबाकेटिय, क्रोमपितिय

Describering .....

कर-<sup>9</sup>कारण्डी कारेल्डो . करायग्तो करावेग्तो कारमाची कारेमाधी कराज्याको कराज्याको

होसायको होनावेको होसविक्टी होसमाची होपमाची

को-कोकामो क्रोपमा हो बाबसायो, हो माबैसायो, हो सबिसायो-

गरमामां कारन्य कारेन्य होतन्य होएन्य स्मिरे प्रचेनो परेतर हो. ४-१९३-१३६

प्रेरक कर्मिक---

अक् कावि सह

रूर-कराबीम कराविस कारीय कारिस हो-दोमावीय होमाविस होईस होइउज

र्व —करावीभइ कराविकाइ कारीमद्द कारिकाइ दोमाबीभइ दोधाविकाइ दोर्मस दोदम्बा

यः -- करावीकां म कराविज्यां म कारीमां म भारिज्यां म 'क्षेत्रमानिभक्तो-श्वी-श्वीम क्षेत्रमानिज्यां निश्चीम क्षेत्रमानिज्यां निश्चीम क्षारज्यां नी न्द्रीम

विवि-स्टार्ट :---

कराबीमंड कराबिनमः कारीमंड कारिनमंड द्दोमाबीमंड द्दोमाबिन्संड दोईमंड द्दोरमंड

मविष्य-कराविद्विष् कारिहिष् दोमाविद्विष् दोदिष् योरे वर्तरिक्षः।

क्षियः - कराविश्तो वराविश्तावो कारस्तो कारमायो वगेरे क्षीरेवर द्वीमाधिस्ता द्वीमाविशायो द्वीस्तो द्वीसायो  वहमायायमित्रवामी 'हमा इक्का' ज्ञस्यव लगावी अनिव्य अने क्रिया दिवारिकां क्यों आयेगी क्रे

🕳 माम 🖚 🕏

कर्-कराबीदविद कराबीपविद कराविक्रिविद कराविक्रविद करादिविद, कारीपविद

कारीहिक, कारीपविष कारीनिजविष कारिन्जेदिक को-कोमानीहिक कोमानीपविष

बोभाविजित्तविष्यः, बोभाविज्येतिषः बोर्वेपविषः, बोर्वेपविष बोर्वेपविषः बोर्व्यवेतिः

काराज्यावर वारज्यावर ज्ञानिगत्त-कर्-करावीग्यतः करावीग्याप कराविज्ञानः कराविज्ञाना कारीज्ञानः कारीवज्ञान कारिज्ञानः कारिज्ञाम

हो-होमाणीमस्य होमाणीमस्य होमाणिकमस्य होमाणिकहसाय होम्बन्य होम्बन्य होस्त्रक्षा होस्त्रमाण

ण्या-प्रश्ना मां मणे सम्बन्धी तुम्मा १ पर्वमानकम् विभिन्नसम्बन्धाः स्थे दिथि-व्यक्तर्यका स्थे स्थान्य कमे वचलमा महासेस्या सम्बन्धे श्वानं 'खा-प्रश्ना

९ पर्वाचा एवं ॥ १-४-१४ ॥ वृष्ट-१४४ । १--१. दैस्पुत्रम्-प्रतिमा समित्रमध्ये उद्य स्था वा. ॥ १-१४४ ॥

मुख्यत के स्वरान्त जातु होत को पुरुष्धायक प्रश्ववानी पूर्वे पण किस-प्रज्ञा' मुख्यत के

चिम-प्रशा प्रत्यवनी पूर्व का दोव तो अर नो द बाम हे चैन्द्रन---

> भग इस्थम इस-इसेन्ड्र इसेन्ड्रा इन-दोन्ड्र इन्डिज़ इनेन्ड्रा होन्ड्राइ इनेल-दोपास दोपन्ड्रा इन्डिज्ड्रा, दोपन्ड्राइ विन्ट

कापनमाह, कापनमाह पग्ट +रहात एकना स्ता सर्वस्थानमा सर्वद्रश्यमोन स्वान जन्न-जन्ना स्पर्वे क्ष

होरत-होरशा-सविठि अवेत् अवतु समयत् समूत् वपूर मूपात् अविठा सविष्यति समविष्यत् स्तर्वः

ने निम्मता :— हैम्मना प्रमाण तथ पु छोत्र मां 'प्रमाद प्रस्थ करे पहुमाचा मान्ये 'प्रमाद-कृतांव' प्रत्याप क्षमानित प्रयोखे करेका छे

हैम — इस-इसेन्बर, इसिन्बर हो-दोन्बर होम-होपन्बर, होरण्डर

सभ्य च ज्यास्त्याष्ट् या ॥ १-५५८ ॥ ज्यान्यम् ॥ १-५५९ ॥ चक्रसाराम्यम् च्यामे व्यापी ॥ -४-१९ ॥ ४, १८६ । सभ्ये चात्रमाम् ॥ १-४ ४ ॥ ४, १८६ । → दैस्सम् ४-४-१० ॥ शस्त्रम् वृत्योः ।

 दैस्सून काल्लक्यमा वर्ष ॥ ८–३–१६५ ॥ वह्याचा सूत्र विकासीक्ष्र ॥ १–५–१४ ॥ १–१६९ ।  क्ट्रा-द्रस्वेत्रज्ञर्-व्याह् द्वसित्रज्ञर्-वजार् द्वी-द्वीवज्ञर्-वजार् द्वीम-द्वीवज्ञर्-वजार्, द्वीरवज्ञर्-वजार्

बर्गायमा प्रश्विकामां हिं गर्नातं प्रश्वते स्वमे वज्ञ-वज्ञा ना प्रयोधा स्वीता है

ना प्रश्या आरम्य है कैम-- इष् स दय-द्विषिद्वित्रज्ञ-उत्तर द्वेदिरज्ञ-स्था-द्वी-द्वादिरज्ञ-उत्तर

दैशक्यारमायकं - इचेशक-एका डोडक-एका इन्यारमां विकारितीच्यां रागान श्रम्तां 'प्रतन्नाक प्रस्करी पूर्व का कार्क स्थाने 'प्रज-एका वा इने करेनी है देश - इने-दीडकरम डीडक्साक डीडक्सामाय

का--हा-काश्वास हाउद्यास हाउद्यास होउत्र-होउला परे होस्त होसाम. हव+स हय-हवेउल हवेउला-हयस्ट हवसाय-

इच+म इप-इचेश्न इचेश्ना-इपन्त इचम। देम स्वाकरण प्रमाणे—

हो-होग्छ होग्या होग्यो होमायो हए-हवेन्त्र हवेग्या हमस्यो हपमायो हेम ब्याच्या नगाल मानूना अववशी शुं 'क्य-प्रवा' ह स्वस्य क्रांश हन्य क्षेत्र क्यी. त्व क्ष्म्या मां वर्टेक्स्यप्स 'क्य-प्रवा' वा वा शे मि-मां-सु निर्मा क्षेत्री सुँ विकले

वर्धाराम्बर्धः न्यान वशान्तुं न्यान नारिवाति ॥ ४-१९॥ छू-१९॥ । मन्त्रिति ॥ -४-१ ॥ छू-१९॥ १ । वर्धाराम्बर्धाः न्यानमधीन् च स्थाः ॥ १-४-४१॥ छ. १९॥ ३

े बर्डसध्या-स्थिति हु ड-क-३ द के ३ । वर्षशस्त्री-संभागामान्ये व व्यक्ति हु ड-क--ह स्य मना प्रमुखानां प्रवेशो करेला होवायी सर्विष्यकाश्मा एक मरकानी पूर्वे पृत्रकालका वा स्वाल के सु प्रवासने सनुसार वर एके के तुवी ----

हाजिबदिह होज्येदिह विगरे व्यो पत्र वाय #.

पर्मेकिमां 'उन्न-उन्नर ना स्था ---

स्व चित्र-राज्ञाना प्रधायो क्यांकि अन ग्रेन्फ क्यांक्षिमां प्रस्कानी राजन व वरराएणा राज्यान क्र स्वरी प्रश्चनांनी पूर्व क्या-प्रशासा प्रवास प्राप्त क्यांस

र्वभीत श्रान्द्रोन्द्रों क्या द्वाराज्य द्वार्-बसीश द्वाराश र्वभान-दोईपण्डा-श्रा द्वाराज्येण्डा-श्रम देसीय ज-ता द्वाराज्येण्डा-श्रम

मिक्सिकाइएवं -

मधि किया -होउल-हाउला इसेउल-हरोज्ला कर्तरियत्

बङ्गाता प्रमानं —

मधिनम-बोर्च्यद्विज्ञा-जन्ना बोर्च्यविज्ञा-जन्ना बोर्च्जाविज्ञा-जन्ना बोर्चिमाविज्ञा-जना बसीयविज्ञा-जन्ना बसीयविज्ञा-जना बसिजनीविज्ञा-जन्ना बसिजिमविज्ञा-जन्ना

विश्व--वृद्धियरस-यसः वोद्दरस्या-रसः वृत्तीयश्रव-यसः वृत्तिरस्या-रसः क्रेफ क्रीरित एक-एकाचे क्यो बान्द्रोक-होय, हालाब होजाव बोमिन बसु-बास-दासे बसाव दसावे

बद्भाव ---

वर्ष वांपरज्ञव-वोण्डवाद वोबावेडसद्-द्वामावेडमाद वोबावेडसद्-द्वामावेडमाद दोपरज्ञ-रजा दोबावेडम-रज्ञा दोबवेडम-रज्ञ

होपरश-एका होबावरह-रहा होबविस्त्र-पश हस्-हासेरब-रका हसविस्त-रखा शिक्-स्टब्स —

हो-होपनम्ब होपन्नाउ हालापेत्राउ होपानेग्याउ हालापेत्राउ होपापेग्याउ निर्मः

होमायकात्र होमायकात्र सम्प दोपरम-ज्ञा दोमायका-ज्ञा दोमपिनम-ज्ञा-दम्-दासेक्म-ज्ञा द्वमायकम-ज्ञा

विष्यु वास्त्रकात्रका क्षणावन्त्र विष्यु वर्ष व मा— क्षो-कोपनकात्र क्षोपनकात्र

हो-होपनका होएउसात बामानेकता होपानेकास बोमानेकता होपानेकास बम्मानेक्ता बोमानेकास बम्मानेक्ता बसानेकास बसानेक्ता बसानेकास बोमानेकासिक होमानेकासिस बोमानेकासिक होमानेकासिस बोमानेकासिक होमानेकासिस

दरिकेट र प्रश्**केट र स**्था हाले

दोपग्ज-रजा द्वांशावेग्य-रजा दोशयिग्ज-रजा दम्-दासेग्ज-रजा द्वसावेग्ज-रजा +रम्मसावर्ण्जस्य सत्त. (४ १३५)

हो होपहिज्ञ-ज्ञा होमानेहिज्ञ-ज्ञा होमनिहिज्ज-ज्ञा हस्-दासिहिक-ज्जा हासेहिज्ज ज्ञा

हस्-दासिद्विक-ज्ञा दासिद्विज्ञ ज्ञा हसाविद्विज्ञ-ज्ञा इसाविद्विज्ञ-ज्ञा

मिना---शोपरश शोपरशा शोधायेरत शोधानेरशा

> होमधिकत-होमधिकतः इस-इसेक्त-कता इसाधिकत-कता

पड्नाम प्रमानकः— स्टरास्य कातुम्ये 'स्त्र महावे अस्टरवनी पूर्व कन्न-कन्ना' भावे

सार होपाक्रम्स होपरक्रमाण हापरकामाय

होधापेरकस्त होमापेरकमाण होमापेरकामाण होमपिरकस्त होमपिरकमाण होमपिरकामाण देख कांक्रिया कक्क-स्वार्थ स्था

प्रत्य कामका एक कार्य करा भारतको स्थाने प्रकारका वा प्रतीयो करता

रेशक कॉमि मा

दो-दोभाधील होशाविक्त दोहैंन दादरव दस्-दसाधील इसाविक्त दासील दासिका वर्ष दिष-बार्झ —

हो-होमार्वापन्त-एका होईपन्त-एका होमार्विन्द्रेन्ज-एका होइन्हेन्क-एका

। परिक्रियर, २ यू. ३८४ मि. ४ I

इस-इसायीपात्र-जना इस्सीयात्र-जना इसायाज्ञेण्य-जना इस्सियत्रात्र-जना नरि क्रिय —होजन-जना हायात्र-जना हाथाविज्ञ ज्ञा-हासोजन-जना हसायिजन-जना क्रतीवर्य

वह्तरा स्पर्ने :--स्टि:--हो हामार्गहिट्ड-अस हामार्गहिटड-उड्ट-हामार्गिडिहिड-अस होमापिउदेस्स डा-

होर्रहिस-जा, हार्रविद्य-जा हार्राह्महरू-जा होर्ग्यहरू-जा-हम्-हमार्थरहिक-जा हमार्थाण्डिक-जा-हसार्थिजहिज्य जा हमार्थण्डिक-जा-हार्सारिजहिज्य-जा हार्सारिजहिज्य-जा-

हासिनिवदिन्त-एवर, हासिन्देहित्व-एवा

होर्चयन-जना हाराज्येजन-जना हार्च्यन-जना हाराज्येजन-जना हाराच्यन-जना हाराच्याच्या-जा-श्राह्म-जना हाराच्या-जा-जा-\* हार्च्यक्षिते ॥

ष्ट १ ९ मां का तियन केवानुं हः बारमां - विद्यातितियां १४-१३म अवनीया प्रयोग वन देवान है.

कारमा---मन्द्राध्यासम्म हम-हात्र अस्त्राम्य प्रधान करणात्र क क्षम-न्द्र यहुष्टिया मान्ये स श्रद्धिश्रोतो त्या तस निवर्ष नेपकार्य पार्याभ्यात्र ।

# ॥ सिरियाङ्ग्ञ-गज्ज-पज्ज-माला ॥ <sup>नमास्</sup>र पं सम्बस्स मगरमा महादीर-बळमाणसामिस्स ।

( **१** ) ॥ मंगल ॥

।। पत्र नग्नरकारमहामंत्रो ॥

नमो अतिहत्ताण

ममो सिद्याण

नमी कायरियाणै नमी व्यवसायाणे

मगी कोए सम्बसाहूर्ण एसो पंच नप्रकारो सम्बगस्यवासको

नगराज च सम्मस्ति पहर्म हनह मैगर ॥

चचारि मंगलं-करिहेला मगढं सिद्धा भगढं,

सादू मंगळ भेनळिपसत्तो घरमो मैगळ ॥ भत्तारि कोगुलमा—

भर्षिता क्रोगुचमा सिद्धा होगुचमा साह क्रोगुचमा केनक्षिणहची घम्मो क्रोगुचमो ॥

### चचारि सरण प्रश्नमामि— अरिट्रेटे सरण <sup>१</sup>पनस्त्रामि सिद्धे सरण प्रश्नामि साह स<sup>र्म्</sup>

व्यक्तिं सरण <sup>व</sup>यबस्त्रासि सिद्धे सरणं पवण्यापि साह सर्व पवण्यामि, केवस्थिपन्तच धर्मा सरणं पवस्त्रामि ॥

> (२) रैसीयाचप्पर्का (डिविकार्स्टनम्)

सीया क्वणीया जिल-१रश्स जरसरलविष्यस<del>्वकार</del> । भोसत्तमस्त्रवामा **बढवछ**पदिम्ब<u>ङ्</u>यमहिँ ॥ १ ॥ सिविपाइ मधानारे, विकां कररणगढवनिवहमे सीहासण महरिहे, रापायपीतं जिल्हरस्य ॥१॥ भाष्ट्रमगळगरको नासुरक्री वराभरणकारी। क्रोमिक्वत्वनियत्वो अस्त च ग्रस्कं सपसङ्ख्य ॥३॥ छट्रेज व मधेर्ण अवस्वतायेज हैर्रिय विस्ते । कैसार्द्ध विस्तर्माती बादहर्व उत्तर्भ सीचे ॥ ४॥ बीबासमें निविद्रो, शक्कीसाव्य य होदि पासेहिं। बीधित पामरामिं, मणिरवनविधिकांकामिं ॥५॥ पुष्टिं विकाश माणुरेहि, सा बहुरोमकूनेहिं। पच्छा वर्षति देवा सरअसरा गरकनार्गित ॥६॥ पुरको प्रसा वर्षनि असूरा पुण वाहिणीन वर्सनि । अपरे वर्षति गरका भागा पुण क्वरे पासे IIvil वर्णकरं व कुसुमिनं, पत्रमसरो वा बहा सरक्याके चोद्द इसुममरेणं इच गणनवर्षं सुराजेहिं ॥८॥

सिरास्त्रणं व तहा किंतवारकल व स्वयमणं वा १ सेवर क्रमुमारेण, इय गाणवर्षः सुरगणेहि ॥९॥ वरपकार्मामहोन्-संस्त्रस्यस्वसंहित गुरोति । गरपराके परणियके नृगमिनाको परमरम्मो ॥१ ॥ वर्तवतत स्वामुस्तर आक्ष्य चत्रविह बहुविहिय । वर्गत क्यास्त्रस्य ॥१३॥

बाबाराङ्ग-द्वितीयमृतस्कन्ये

(8)

## रै(दियविसयमानणा श्रेष्ट्रियनिपयभावना)

न सक्य न छोड़े सहा सोचिक्सयमागया ।

रानदोता व ने तत्य स मिक्न्यू विष्क्रय ॥१॥

न सक्ष स्थानदुद्ध वक्तुनिक्तयमागर्थ ।

रानदोता व ने तथा द मिक्न्यू परिक्रय ॥१॥

न सक्षा ग्रमागाः, नामापिसवमागय ।

रानदोता व ने तथा दे मिक्स्य परिक्रय ॥३॥

न सक्षा रासमानाः, जीत्राविक्तवमागर्थ ।

रानदोता व ने तथा दे मिक्स्य परिक्रय ॥॥॥

न सक्षा रासमानाः, जीत्राविक्तवमागर्थ ।

रानदोता व ने तथा दे सिक्स्य परिक्रय ॥॥॥

रानदोता य ने तथा दिसम्य परिक्रय ॥॥॥

रानदोता य ने तथा दिसम्य परिक्रय ॥॥॥

भ<del>ाषाराष्ट्र-द्वितीपमृतस्कापे</del>

(४) <sup>४</sup>निम्ममो मिनस् परे-क्यरे पन्मे जक्लाए माइनल महीसवा।

संबु धर्मो बहावस्य जिलाल ते सुनेह स ॥१॥
साहण करिया देस्सा चढाल बदु बोबसा ।
सरिया परिया द्वारा के य कार्रमणिश्व ॥१॥
परिमाहरियों के रे सिंप पढाड़ ।
बार्रमणिश्या कार्या गर्ने छुक्काविमोरमा ॥३॥
सावायकियमाइक, नाहजो विस्परियों ।
व्यो हरिये व विषे कामी कमोहि किवारी ॥१॥
सावायिकयमाइक, नाहजो विस्परियों ।
व्यो हरिये व विषे कामी कमोहि किवारी ॥१॥
सावायिक व व विष्णा स्वाया अवना पुष्पा थ कोरसा ।
मार्छ ते वव वालाय, छुप्यतस्य सक्कमुण्या ॥४॥
परमाहु पेरीहाप परमहाणुमानियां ।
निस्मानी निर्देकारों, वार सिक्कन निर्माहवां भीवा।

(4)

स्वकृताल-वितीयमृतस्कर्णे

<sup>8</sup>पुनस्वरियोषकास्य (पुरक्तरियोषकासन्) से नदाणामय पुरुवारियो सिना बहुबस्या बहुसेस्य <sup>1</sup>ना पुरुवान करहा <sup>1</sup>पुनरोकियो पासानित नरिसर्विया अस्टिस् प्रतिकार करें

पुरुकका क्युडा 'पुडरोकिणी पासाबिका वृत्तिविधा अभिस्य "पडिस्का टीसे में पुरुक्षरिणीय तत्त्व तत्त्व वैसे वेसे टार्ड वर्षि बडरे प्रमावदर्शियों "बुक्या " आनुपुष्कुट्टिया " इत्रीय <sup>11</sup> दश्का वष्णमता शैषमंता फासमता पासादिया दरिसक्तिया वसिरूना पविद्वा तीसे णं पुक्तरिजीय बहुमाक्तरेसमाय पगे मर्द पामतरपोंडरीय सुद्दम्, जाणुपुच्दुट्टिय दसिय ठद्दके बन्नमते गंपमते रसमंत पासादीय काल पडित्य ।

<sup>११</sup>सम्बावित च में वीसे पुक्यरिणीय क्य क्य श्वे के के विके प्रके परने पत्रमारणोहरीया पुत्रमा आणुपुण्युद्धिया क्रसिया क्ष्मा बाल परिक्ला सत्याबंति च कं वीसे वा पुक्तरिणीय कृतकर्मसामार यहां माई पत्रमारणोंडरीय बुश्य आणुपुण्युद्धिय बार पहिल्ले । ११।।

स्बद्धताल-वितीयमृतस्कम्पे

(₹)

<sup>5</sup>निष्पब्दङमा (निमिन्नवस्या)

नद्रक्त ब्रेन्डोगाची वन्त्रको साणुसस्ति छोगस्ति । ज्यस्त्रनोहित्रको, सर्व्य पोराणिये बाद् ॥१॥ बाद् सरितु सक्तं सर्व्युद्धो ब्रजुन्तरे बन्मे । पुन्न उन्तु रक्ते ब्रामितिनस्त्रमद्र नती राव्य ॥२॥ से देनकोगस्तिसे ध्यन्तेवरत्तराभा वरे मोप । बितु नमी राज्य पुद्धो मोग परिवयद्य ॥३॥ सिद्धिसं सपुरकात्रय महम्मोतेष् च परिवय सम्ब । विद्या सपिनिनस्तानो एगान्यमिदिद्धो सम्ब ॥४॥ कोसस्त्रमानुक सारी गिद्धार पम्बस्तानम् ।

चर्या राबरिसिन्मि भमिन्मि अमिणिवसमन्तन्ति ।।११। भस्मृद्रियं राषरिसि पश्चजाटाणमुक्तमे । सको माइपल्पेण इमै बयणमध्यत्री ॥६॥ किण्णु भी काञ्र मिहिकाए कोग्राहरूगर्शकुछा । मुम्पन्ति शरवा सश पासाम्य निश्च व ॥॥ एयम है निसामिता इउकारवानीहर्ते । तमो नमी रायरिसी पृथित्र इजमन्त्रशी ॥॥ मिदिसार चर्म बच्छ सीयच्छण मण्डेरम । पचपुरक्षमञ्ज्ञांबेय, बहुनं बहुगुण सवा ॥९॥ बाण्य द्वीरमाणनिम बहबन्मि संयोरसे । दुव्सि वसस्याञचा एए इन्तृति भारतमा ॥१॥ म्यमट्ट निमासिता इडकारणवाहको ।

स्पादः । निर्मात्वा इक्ष्मात्ववाहानी ।
वानी नामि शर्वार्थि वृष्टिन्ती प्रकाशवा ।।११।।
पत्त कामी य वाक्र व पर्य हम्बादः मन्दिर ।
स्पन्नं कन्दारं वेणं, कींस शं नामिक्यरूर ।।१२ ।
प्रमादः निसामिका हैक्क्षरप्रकाशि ।
वानी नामि एवरिसी हैक्नित्ववास्ववी ।।१३।।
यादं वसामी जीवामी नीति मो मनिक कि क ।
निर्मिशाय वम्मानीय, सम बस्ववह कि क्यं ।।१४।
वस्तु प्रकाशियर निस्कृती ।
विर्मे त निमाद किस्कृती ।

गृ तु मुक्तिनो मर् भागगारस्य भिक्त्युणो । सन्त्रभो निष्ममुक्तस्य यगन्तमणुपस्सभो ॥१६॥

परमाद्र विसामित्ता, इतकारणचीहको । वको नर्सि रायरिमि, देविन्तो इत्यमध्यकी ॥४५॥ मिरव्य सुकर्ण मिनिस्तुत्त कर्म इस व बाइलं । कोम बहुवद्दालं, सभी गण्डसि स्वचिया । ॥४६॥ परमाद्र निसामिता हेजकारणचीहलो । सभी समिरिस्ता होस्साहलो ॥४७॥

द्धरण्य-रूपस्य च पश्चका अव सिया हु कंछ्यससमा असंक्रमा । मरामः दुर्द्धस्य म तेहिं किंचि इष्टा हु (७) शागाससमा खण्णवया ।।४८।।

पुर्वा साठी जना केन हिरण्ये प्रसुक्तिसम्ब । पिरपुण्य नाक्ष्मेगस्स इह बिन्ना तर्न वरे ॥४९॥ एक्सटु मिसामिता हेक्कारणकोहनो । वर्मो नामि राजमिति हैकिनो इमारणकी ॥५ ॥ क्ष्मोरामसमुद्रये सोए "बयसि परिवता । । ब्रास्ते कामे प्रकेषित संक्रयेण विहस्सारि ॥५१॥

<sup>\*</sup> वरित

प्यमहें निर्धार्थिया है कहारणचोह्ने । यजो ममा रागरिसी, देविन् रूपमरचर्ची ॥५०॥ सर्वे कामा दिस कामा कामा कासीविसाचमा । कामे प्रयोगाया बकामा कन्ति दोमाई ॥५२॥ बाहे दयनित कोहणे, मार्थि बहामा गई ।

सावा गारपिक्षाणों कोवासा हुएको सर्व (१९४१) भवकरिकारण साहण-तर्व विविधिकण हुन्त्यं । पत्यह अस्मित्युक्त्यों हसाहि सङ्ग्राहि वस्तुहि (१९६१) बहा वे निरिकाश कोने कही माणो पराविको । बहो निरक्षिया सावा बहो कोनो पराविको ।। ५६।।

बहों ते बकार्य साहु बहों से साहु अरब । बहों ते बकारा प्रती अबहां ते हुए बकारा ॥५॥। इह सि करारी मन्ते पष्का (१०वा) होहिस क्यारी । मेंगुचहुक्ता कार्य किंद्र गष्कारी तीरारी ॥५८॥ एवं असिनुष्यन्तो रावसिंत क्यारा सहार । प्रवाहित करेन्टो पूजी पुणी क्यार साह्य ॥५९॥

दो बनिक्रम पाए, वर्षकुसक्षराणे सुविवरस्य । बागासेजुल्पह्वो, क्रक्रियवपक्षकुटक्रतिरीडी ॥६ ॥ नमी बमेह बल्पाल सबस्त सबेल चोहमो । वहरूल गेर्ड च "वेदेषी सामण्ये पण्डुवद्विनो ॥६१॥ (७)

<sup>ए</sup>वयप्रनङ ( व्रतपद्रकृम् )

विवयं पदमं ठाणं सहापीरंण देसिञ । विस्ता विकास दिद्वा सम्बस्यम् एसु सबसी ॥९॥ बार्वदि छोप पाणा तसा बादुव बावरा । ष बाजमबार्वना न इने यो विधायए ॥१०॥ सम्ब बीदायि इच्छंति कोविष्ठन महिन्सिक। दम्हा पाणिबह घोरं निर्माया बञ्जयति यं ॥११॥ वापकहापरहाया कोहा वालाइ वामया। हिंसगम सुद्धं बुका नो विकास वदावय ।।१२॥ द्वसानाओं य क्षोगस्मि सन्त्रसानुहिं गरिहिको । विक्सासी व मूभाण तमहा सासं विकास ॥१३॥ विचमतम्बिच सा अध्य दा बद्द वा बद्दा। र्वसम्प्रमाच पि धमाईसि अजाइया ॥१४॥ वै अप्पन्नान गिण्डति नो वि गिण्डावए परं। जभ वा गिज्यमार्जवा नाज्यार्णित समया ॥१५॥ नर्गमनदियं भोरं, पमाय दुरहिद्वियं । नायरंति मुणी कोय, अञाययणवश्चियो ॥१६॥ मृष्टमेयमङ्ग्मरसः महात्रोससमुस्सर्थ ।

वन्द्रा मेद्रणसंसर्ग विभावा व वर्षति ज ॥१७॥

विश्वमुक्तेह्यं खोज तिश्वं सर्जि च फाणिर्व । म ते सन्निक्षिमिक्कति नायपुचवजीरमा ॥१८॥ **धोद**रसेस अणुष्त्रसे मन्ने अन्तयरामणि । के सिया सन्तिक्षिकामें निक्षी पञ्चक्य न से ॥१९॥ अस्पि बस्पे अस्पार्यका अध्यक्ष पार्यपुरुषं। रं पि सबमसम्बद्धाः चारंति परिदर्शतः वा ॥२ ॥ न सो परिस्तको बच्चो नायप्रचेय चात्रमा । मुख्या परिमाही बची हह बुचै महैसिया ॥२१॥ सर्विम भ्रष्टुमा पाणा तसा भरूष बाबरा । बाइ राजी बपानंतो क्यूनेसणिय चरे ॥१४॥ एज च दीस इडढूज नायपुरोज शासियं। सम्बाहार न गुंबंति मिमाबा राह्मोयथं (१२५)।

व्यविकासिक्स (८)

/ -----

राहणसम् पञ्छापाची ( राहणस्य प्रधातापः )
वरद्भः जपस्तम्य छेत्रं छहादिवस्स अद्देशपुर्व ।
विकरोत् वुष्पादिकसः स्य जिल्हा इसं सुरित्यो वि ॥०१
मा पर्व करमुप्तमा स्था छहादिवस्स स्व मिण्या ।
साव्य करमुप्तिः व्हित्य छन्ति विकरणो ॥०३।।
साव्यं वर्ष किछोम्परि । अर्था छन्ति स्वस्ता ॥०३।।
साव्यं वर्ष किछोम्परि । अर्थाहिकसः पामपूर्णस्य ।
अपसामा परमहिका स गुण्डिमाका मान् सिपर्वं ॥२३।।

सुमर्त्तेण वय त. म मद रमिया तुम तिसाक्षण्छी ! । रमिशामि पुणो सुद्धि सपड माछन्त्रणै द्वेत ॥५४॥ पुरस्विमाणान्त्वा, पेरप्रमु समर्थं सकाणग पुरुष् । मुद्रमु उचमसोस्य सभा पमाण्य ससिवयणे ।। ता सुनित्य इसे मीया शमारकच्येण समह दहवसम । निमुणदि सक्का बयक जह में नेह समुख्यहरित ।।२६॥ षणकोनवसगएण जि पडमी सामण्डली च संगामे ! एए न घाइराज्या अञ्चादिय ! अदिमुदावडिया ।।२७।। राष यं जीयामि अहं जाव थ ण्याण पुरिसर्साहाणे । न मुपेमि मरणसर्वं इचयणित्रज्ञ अयण्यमुद्धं ॥२८॥ सा जिम्हम एव पहिया धरणीयक गदा सोह । निद्वा य राज्यण, सर्वाज्यम प्रवक्तिपस् ॥ ९॥ मिरमात्रमी क्रणण काओ परिचिन्तित समाहची। कम्मीकाल बढ़ी कीचि सिमही आहा गुरुओ ।।३ ।। बिदि चि गरहिजान्य पानेण सर्ग इसे क्रम कम्म । अमोश्रपीद्वप<sub>र्सि</sub>दं, विकोद्दयं अणिमं मिधुणं । ३१॥ ससिपुण्डरीयसम्बद्धः, निषयमुख्धे क्षणमे क्ष्ये मलिए । परमहिसाय कवर्ण वस्महमणियत्तवित्तेण ।।३२।। बिद्धी शहो शक्तको महिला में तत्व पुरिससीक्षण । क्षप्रहरिक्रण वधाओ बहाजिया सरजमुक्षेण ।।३३॥ नर्यस्य महाचीही कहिया समामाका अव्ययमुनी । सरिय का कुतिकविक्या वज्जेयक्या क्षत्र सारी ॥३४॥

जा पदमन्ति सन्ती, अमयण व ममा इसइ महार । सा परमसत्त्रिता, तथर्यावरता इह जाया ॥३५॥ बड़ वि च इच्छेज्य समें संग्रह यसा विमुक्तसम्माना । रुष्ट्र च म आवद्य विश्वे, अदमायनुरुमियमपस्स ॥३६॥ मापा मे भासि अया विशीसको निययमेव अनुहुत्से ! कारसरधे दश्या न मचा पीड समझीलो ॥३७॥ बदा य महामुद्दहा व्यन्त वि विदाह्य पहरजोहा । ध्यमाणिका व रामो, संपद्र में करिसी पीई ॥३८॥ **बर् नि ममणेमि कई, शमस्त किवामें चणकनिवटनया।** सामो दुनगहिंद्यमो असचियन्तं शर्वाही मे ॥३९॥ इर सीहगरककेट, संगामे रामसक्त्रप क्रिजित । परमविमन्द्रेण सीचा पच्छा वाणं समाजे हु शह ॥ म य पोदसस्य द्वाणी यह कर किन्सद्धाय में दिसी। होद(बि)इ समज्जोर धन्हा वयसामि संगाम ॥४१॥

प**रमच**रिष-

(९) **द**यागीरमहरहमरिंहो÷

अन्तया य मेहराहे हन्युक्षमूचणाऽअहरावो पोसहस्राक्रयः पोसहकाम्यासण्यतिसम्बो-सन्त्रपरप्रमूखं कमजीवहियं सिवाक्रवं प्रकृषं । राष्ट्रम परिकृद्दं हुक्कविस्तवशं तहि सन्ते ॥१॥ Well

'बनकोत्ति स्वह राया, 'या माहित्ति योजय ठिका अहसी। वस प्रकारकार को हैकिको के कि

हस्स च बजुममाबो वको, हिमिडिबो सो दि मजुममादी ॥३॥ बद्दस्थनो राष मज्द-भुमाहि एव पारंबर्व एस सम मक्नो।

मेहरदेण मणिय-न एस वाकाबो सरणागता मिडिएस मणिये नरकर। जह न देसि में धं मुद्रिओ सरमास्थाच्यामि। सि

मेहराईण मणियं-जब जीवियं तुष्यं पिर्ध निरसंस्यं वहा सम्बद्धार्थ !

मणिय च-इन्ज्य पराधाण अन्यार्थ को करेड् सध्यार्थ । अप्याण विवसाण करून वासङ् अन्याण ॥॥।

पुण्यस्स क्षाम्यको हत्या पर करेक् पडियार । पाविहिते पुणो दुक्तं, बहुययर विभिन्निकण ।।५॥ एव अणुसिट्टो सिडिओ संगठ-

क्यों से परमायो 'शुक्ताहुक्ताष्ट्रवस्त ! मेहरहो सनद्-जन्म मंस साई तुह हमि गुक्तपविधार्य,

सहरक्ष सणाइ-व्याप्य श्रीस बाद द्वाद द्वाम गुण्यापादाच्ये, विसम्बद्ध पारेचय शिवाओं भणाइ-नाई सर्य मर्थ येमे ग्रामि "दुरुकुरेंगे सूर्च मारेड मेंस बर्च ग्रामि

मेहरक्षण समिय-असिव पारावसी तकक तसिमैं मेंस सम सरीराको

जित्तव पारावको हुस्कः तत्तिर्थं मेंस सम सरीराजो गण्हाहि भार्न गवव कि सण्हा (जिडिसो) । मिवियवयण्य व रावा पारेवर्ष हुसार वहारेहक, वीव-

पासे नियमें सैसे छेतक बडावेडू । बाद सह <sup>१</sup>सुनोडू सेसे सह यह पारावको वह दुनेडू । इक वाधिकल रामा सारवह सम <u>स</u>कार व ॥६॥

हा । ह । चि भरविष्। । कीत हमें साहसे बविषे ! वि । कप्पाहर्य सु पूर्व म शुक्रह पारेशको बहुर्य ॥।।। प्यन्तिम देखवाळे देशो श्रीकालकारी दरिसेंह स्वयन्त्रे स्वयन्त्रामा काला हु ते सुकक्षा जीसि पूर्व दणवंती. पूर्व

काई जनावेता गती ।। वसुदेवहिंदीय प्रयम्बच्ये हितीयमामे (१०)

महेसर्वचकहा
<sup>1</sup>वास-विचीतकीवे मह्तद्वचकहा- स्वचक्को । वस्स विष सहारवामी विचर्षक सारकल्ला-परिवृश्कियामिसूमी सभी <sup>स्व</sup> सम्बद्धकामी विचर्षक सारकल्ला-परिवृश्कियामिसूमी सभी स्व सम्बद्धका सरिक्षो काको सम्म केच विस्तर । सार्याचि से <sup>1</sup>र्य

विनियविक्रसका बहुका शाम 'चोरक्काइजी वर्सपेरें मगा सुनिया जाया तरिमा नेव मबदे । महेसरन्तरमा गारिका तरिका गुरुवणविद्यदिए यो सर्फों इंपिक्टपम पुरिशेण सह करसंक्रिया पत्रोसे त 'चत्रेत्रकार्य चिद्वर । हो ये से वर्षसे सावदो बचामो महेसरन्तरस वर्ष

मार्ग परियो । तेच पुरिशेज अत्तर्धरक्तवनिर्मित्तं महेसराण

र्वाकतो 'विवादित । तेल छहुदूरस्याय गाडस्यहारीकमो नाइन्ह्र्यं गृह्य पडित्रो । चित्रेह्-ब्रह्मे ! क्याय्यरस्य फर्क पर्छा आह् मंद-यगो । एवं च कप्पार्ण निंदमाणी जायसवेगो महो गॅगिकाय तथे हारागे बाजो । छवच्छरजायभो य महेखरक्तस्य पिमो पुषो हि

धिम व समय वितक्षिक सो महिसी येण कियेजम मारियो। सिद्धानि य वंजवावि पिक्मंसानि, इचावि वामस्म ! निर्दियन्तिसे त मैसं अळ च आसाएमाणो प्युत्तमु**र्था**ने काइम्ब दीसे <sup>६</sup>माउम्मुजिसाए सैस**र्वा**डाजि सिक्ड । सा वि दाणि परिद्वा मन्तर । सात् च अस्तराजपारणय व गिर्मणुपविद्वी, पसार्य महेसरक्षे परमपीविमेपवर्षं वर्षस्यं 🔻 ै सोहिष्य जामोरञ्ज वितिजनजेलं-बहो । अज्ञालधार एस सनु क्यमेंगंज बहर, पिडमंसाचि च सायर, सुणियाप हैइ मंसाजि । भक्ताति प बोल्य निमानो । महेसरक्षेत्र विदिय-कीस सम माह अगद्वियमिकतो अक्टल 'ति य बोल्य निमानो (। सागनो व साहु गवेसैतो <sup>१९</sup>विविचपरसे स्टक्न परिकाम पुष्पप्रकृ-सक्तं। किंज गहिम निक्कं सम गहे ! जंबा कारणमुदीरिय तं कहेड । साहुण मणिको-सन्दर्ग ! य ते मेंत भागम । पिश्रहरसं कहियं समार्थ्यसं सत्तरसं च <sup>१९</sup>सासि-प्यापं बहादसम्बद्धार्थ । त च सीकण बायसंसारनिक्षेत्री दर्सोंच समीवे मुखगिङ्बासी पम्बङ्को ॥

#### बसुदेवविशीय प्रयमकण्डे प्रयममारी

# गामयगोदाइरण-

पर्यान्त भगरे प्या महिका सा मचारे मर कहाईनि वि ता 'निकीयहर्ग 'विषक्षमो ति ता 'वजीवमाणी तुर्ये पुर्च केचु गाम गया, भी दाराओ बहुंदा सावरं पुण्डर-कर्म सम पिपा है, तीय सिंहु कहा सभी इति, तको सी पुणे पुण्डर-केण पागरेण सो 'जीविकाइको है सा समार-'वोकनार-

ता 'त्याह अब पि कोव्यमाधि सा अण्य-न बाणिहिस बोक' मिट, तओ पुण्यह बढ़ खोखमिन्बड, अणिको-दिवर्ष बरेब' सि बेरिसी दिणको है अण्य-अनेवारो सामस्वी सी मेर्र बेक-मियकं 'छंताजुलिया होसकं तो सो सामस्वी सी मार्र बिकेन, अस्तर असेन बाहा स्थाण सहस्य "तिलुख दिहा हिंदी मो बहुन खहुन होसे बाकारो ति सण्य तेण सोब सम

ै रहाया यमो वर्षि बहुँदि हो युर्चु यहूँचो <sup>१६</sup> हास्ताचे ब्यूच्य कांडमो, वतो ठेदि अध्यि ब्याय धरित वेण्डेतमारित, यया लिड्ड कंडर्सि मेरी कागवर्ध्य न य बहावित्तम, सम्बेग वा बने ब्या गण्डेटेय रच्या दिंद्वा तमो बिहुक्की स्थित्ये सम्बिद्ध टेसि व रस्ताचे योचना होर्सित ते ठाव विविद्धा रहसीटे, सा निस्त्रकेना यह, यह चोटो ति ठेसि ग्रीव्या विचित्रो विचित्रो य सम्माप कदिव ग्रामा ठेसि अधिवान्य समितातारित्राहित

नीरमें निम्मल च मध्यु, कर्स पड़ड़, तओ सो नपरसंग्रुई पार् ६मल्य चीवाणि चाविश्वीति तेल मिल्यें–मार्ग् सर्व मीर्स् माइ, उसो य पहड, सभी तेहिं किमकारणवेरिओ एव भासइ? पि, गर्विको पंतिको पिहिओ य सब्सापे कविए सुक्को मणि-यो य-परिसे करने पर्व मण्या६-वहु परिसं भवतु <sup>१३</sup>मंड मरेह रसम्म, वजो पुषा नयरसंगुर्द पद्य, यगस्य <sup>१४</sup>मस्य नीयिम्बर्त बद्द मजह-बद्द एरिसं मक्त, अंबं मरेड् एयस्स तथ वि गहिजो पिट्टिको च सबमान कहिए मुक्को, गणिको य परिसे कारे एवं पुषड धरिसेणं अवसवियोगो सवाः, असस्य निवाहे मन्द-अव्यवविभोगो मदत तत्व वि विद्विभी सब्मावे कहिए क्षको, मिलनो य परिस कडल एवं मन्नाइ-निचर्च परिसमाणि पेरिक्रमया होह, सामय एवं अवड ततो सच्छतो एगस्य <sup>१५</sup> नियक्षवर्द्धं इंडिय वृद्दूल एव सलह-निच्चं ग्ररिसयाणि पैच्छं-वदा होइ सासयं व भे वर्ष इवट, तत्व वि गहिओ पिट्टिमी य, धरमावे कहिए मुक्को भाषानो य-परिसे काले पर्व मणि-म्बासि एयाओं में छत्र मुक्ताो इवड चि वतो गच्छंतो गगत्प केंद्र मित्ता <sup>११</sup> शंकाहय करिंते पिक्छाइ शत्व भण्णा-एयाओं मे 🛂 मोक्स्को सक्त तमो तत्व वि पिष्टिको सब्माव कहिए सुरको, गर्यो नगरे, वत्य एगस्स ईडि(ग)कुळपुचस्स <sup>१७</sup>जडीयो सी सेर्रतो अवस्त्र, असया दुव्यवसे तस्य इक्युक्तस <sup>१८</sup> जंबलक्षिया (जवाग् ) सिदिक्षिया तस्स मञ्जाप सो मण्यद भादि महाज्ञणसभ्याओं सहावेदि केंग मुख्य, सीपक्षा अपामी-मा। भविरसङ् क्षेत्र गर्ते सङ्ग्रामणसन्त्रे वर्देण सरेण मणिओ-पहि पहि सीफडी किर होइ अंत्रलक्षिया सो अस्त्रियों पर्र गएम १९ अंबाडिको मनितो थ-परिसे करके नीयमार्गत्य करूपे कहिरवर, कमपा वर्र पतिचे तस्स भव्जाप मणिदो सह

सर्ताप्द टर्डर नि यनो सा तत्य मत्रो सन्तियं सन्तियं स्वितं क्षणके दीउण कप्न कर्दा, जाप सा तत्त्व गरा सन्तियं स्वितं क्षण्यं देउला अस्ताव पद्दे ताव सा तत्त्व गरा सन्तियं स्वतं क्षण्यां होत्रे स्वतं क्षण्यां होत्रे स्वतं स्वतं क्षण्यां होत्रे स्वतं स्वतं स्वतं क्षण्यां होत्रे स्वतं स्वतं क्षण्यां स्वतं क्षण्यां से प्रतियं सा ते क्षण्यां स्वतं प्रतियं सा ते हित्रं स्वतं स

थापरवकस्वकृतीः

(१२)

निमुनामकता [ निगुपानकता ]

बहुरैरसुमाय सुन्ना बन्नयोमनाविषेण महीए ! बामो बन्दुम्नीऽस्मुय-बक्करिमो कहब्पण्डूने ॥११ बहुद्म तमो सम्बन्ध, बन्द्युन्य पुत्तमन्यून्यम्पर्य ! सन्दरित्तमंत्रमृष्यमुद्ध, पुष्पद्द नेमितिय सहस्रा ॥२॥ लेमियण्य प्राव्यम्य, साहिये तीद् बहुद्दिच्याय ! बहु एम द्वारम पुत्तम् साहियो दुम्बन्नी स्वर्ते ।३॥ प्रपत्त पत्र बहुद्म, बोद सामाविष्य पुत्रमुख्ध । बोदी तमो विष्य मर्च पुत्रस्य ते महित्य सीहरे ॥१॥ साहित समे विष्य मर्च पुत्रस्य तो सहस्र सीहरो ॥१॥ साहित समे विष्य मर्च पुत्रस्य नाम्बन्स्य । साहित वस्त्री तस्त्र विस्तर्य साहित्यमुक्ताक ॥॥। वो कम्ब्रस्स विजवका, पुत्त पावेड्ड पायवीडीम 1 बनग्रहतामकास, सो वि सर्य से स्मित्सामि ॥६॥ विस्तुयाकी ति हु जुम्बण, न्यरूल नारावर्ण कमस्पोर्ड्ड । वयनीड समझ से वि हु -कमड् तमाण समस्यो दि ॥३॥ कमर्यहस्य पुण्ये वारिकतो ज विहुद बाई । कम्बर्ग तका क्रियो वारको क्रमण से ।८॥

### ন্দ্ৰহতারন্দ্ৰহুর্থী

(१३) समयागेया

ेवारवारंप वळ्वेवपुष्यस्य निस्त्वस्य पुणी सागरवरी साम इमारी हरेव य विद्धृते सम्बेसि 'सवाईज हृद्दे। तस्य व वारवर्ष्य वाल्यस्य वेव अञ्चास प्रणो कमकामेका नाम मूम विद्युत्तरीय । सा य वैद्यासय्यन्तुस्य प्रवर्षेत्रस्य सिरि किसा । इत्ते य नारस्यो सागरव्यस्य इमारस्य सिरि कामो । अस्मुद्धियो । वत्तविद्व सागर्व पुष्यब्द-मण्य । विति अस्प्यर्थ विद्व । बार्व १ । वर्ष १ । वर्ष १ । वर्ष स्व पर कमकामेका नाम वारिया । करसाइ विभिन्नवा १ । जामं । कसा ॥ वमस्येवन्तुस्य वर्ष्यस्य । व्यत्रे सो स्वार्य्य सम वाप सम सत्रोगो होत्तवा । १ व्याच्यमुणि सन्तिचा गत्रो । सो स सागरवार्य विदे व्याच्यानुष्य सन्तिचा गत्रो । सो स सागरवार्य विदे व्याच्यानुष्य विद्यान विदे स्वय्य विदे वर्ष । ये वारिस "कस्य्य पास्त्री नाम च गिल्युतो अस्वद्य ।

विरुवचणण भजरूनो । सजो सागरूनके सुविस्तवा वयन्त्रे निरस्ता । मारएण धासासिमा । तेव शतु सागरवरम्स आइक्तिवं वहा इच्छड'चि । उठो य सागर्यंदरस भाषा सन्ने य दुमारा 'महन्य-सरति मूर्ण सागर्वतो । संबो कागओ जाव विश्वह सागर्वह विस्तरमार्थ । साह् अपन "पच्छको चाहतम अध्योगी राष्ट्रि वि इत्येदि काइयाणि । सागरश्रदेण मणिय कमकामेके ।। संदर्भ मिनम माई कमकामेका कमकामेको है। सागरकीय मिन भागं दुर्म चर कमकामंत्रं शारिय मेकेहिसि । वाद् रुद्धि इमारेहि संबो मजिजो-कमहामेर्ड मेकेहि सागरवहास । न सम्बह । वजी संस्के पायकण अस्त्रवराच्छाविज्ञो । तजो विशयमञ्जा विवर-कहो । सप (आठो अस्मुक्तमो कि सका इवाजि निव्वहित्र) वि परमुक्त प्रकारि कियां समाह । देश दिन्ता । तमो बन्ति मिवसे वजदेवस्य विवाहो शस्य विवसे विस्ताप <sup>क्</sup>पविस्त विवस्तिकणं कमकारोका जवहरिया, रेवप कालामे गीया । सर् प्यमुद्दा कुमाय कामार्थ गर्छ भारबस्य खुस्स मिहिचा कमझ मेळं सागरक्षं परिवाविचा तत्व किनुवा अवकृति । विज्ञापिक समर्ग पि निवाहे बहुमांने बहुदुहारी काइज कपहुँ । शमी वाभी कोमा । म मन्त्रह किया हरिक सि है। शारको पुण्डिको मानद-विद्वा रेवद्यप् कावाले केल कि विकाहरेज अवहरिया। तमी समझवाहणी भारायणी निमाली । संबी विकाहरस्य फाउन मुन्तिक संपद्धमारे । सब्दे १ बसाराहणी पराह्मा । वसी नारा-पनेन सर्वि समो। तभो बाहे येल बाब 'रुहो ताव'ति तमो सं वक्रणेस परियो । कन्द्रेस १ विवाडियो । तस्रो संवेज मनिर्य

पता मनद्दिं गवक्केण जप्पाणं सुवती विद्वा । तभी कण्दण रमसंजो बणुगामिको । एच्छा इमाणि भोग भुँशमाजाणि निष्रि । व्यन्तमा अवस अस्ट्रिनेमिसामी समोसरिओ । तभो समरको कमजामेका व सामिसगासे धन्मं साकण गहिमाणु व्यवि संबुद्धाणि । तजो सागरवदो भद्रमी-पदद्दमीर्सु सुम्तवरे वा सुसाध वा पगराइये पहिल ठाइ। धणदेवेणं एय नारूय <sup>९२</sup>तक्याओं सर्वको भदाविभाको । तको सुन्नयर पहिम ठिम स्त पीसम् वि अगुर्शनद्म <sup>६३</sup> वको (क्लो) टियाओ । दमी सम्ममदियासमाजो वेबजासिम्हा कास्रगतो देवो वास्रो। वदी विद्यक्षिते गवसिंतेहि विद्रो। कक्ष्मी बाओ । विद्वाको स्ईको। गर्नेसिवेहि १४ तमकुद्दगसगासे स्वस्य-यणदेवेण कारावियामी । कसिय क्रमारा घणदेवं अमांति । तुल्ह पि बक्राणे सुद्धं संप सर्ग । तभो लागरचवो देवो सत्तर ठाउमं क्वसामेइ । पच्छा कमकामेका सदवको सगासे पञ्चक्या ।

. . वृहत्करापीठिकायाम् ।

( 88 )

# मुद्दा तरुणा च मंतिणा-

परिजयनुद्धी बुद्दा पानायारे मेच पदचड, व्यस्य कहा-पगस्य रुगो हुविहा संतियो, तहया बुद्दा च । तहया सर्वति एए बुद्दा सहससपच च सम्मै संतिन्त । विभिन्न राया सवाह, भी साविशा। को सम सीसे श्वीव्यारे सक्तर, उस्स की वृद्धों श्रीरहाँ। वरुमिंद्र अस्तिः किले बाणियपर्थ। तस्स सरीर तिछं तिष्ठं कपिक्वर, 'हुइक्युपाले बा कु<sup>3</sup>ध्यह। वात्री रन्ता बुद्धा पुरिक्षणा। वर्षि एमो गार् अस्ति भें श्वासंक्रपण्याला सहर्तेषों के एक केंद्र, वार्ता पूर्वा केंद्र कीएए। प्रश्नेतकों कर्मक ति निक्तित्रम अभिन्ते, व आणुस्तिरस महामहस्त्रमाल्या, वस्स सरीरे 'वस्रसंत्रमालं क्षाक्रपरस्त्रसम्बद्धां स्थासित्रमहा। हु स अनिर्वं रन्ता गाह्य देशास्त्री ते स्वकारिका ति हुन्ता के केंद्र प्रसार्थ कर वि 'ध्यो दुवा नाहितेषु मार्थन्ते वता बुद्धानुगैन सविवयस्य सोडने

या असमेपर्वि । अन्द्रे अन पहाजा । सम्मया हेसि शरिपर

बनेब पापे न प्रवतः केन बेतुना है इत्याह साहत्वनिना ग्रामा प्रतिको स्तु । बत्त प्लोक्सम् क्रम्पत्रवाससम्बा<sup>त</sup> हैसीखरिए पि कुन्नह सीक्स्स । बह नेत्रमितिक्वमा जबे पि कुन्नह सीक्स्स । ११

श्रमरानप्रकरणे १

(१५) निवजो सम्बद्धनार्थं मुख्य-

रायामा स्वापुणाय सूक्तः सम्पर्शवक्षमंद्रजमूको व्यवक्रसमिको सातिकामो वास

सगर्मव्यमेवजम्बी वजवनसमिद्धी सादियामी नाम गमो । चल <sup>१</sup>पुण्यसकाहान्द्री (तस्स थ) च्छसान्द्री नाम पुची नाहेसि । <sup>१</sup>पयर्मस्त्री पयद्रविजीतो पद्धीगमील व । वेज वन्मस पादस्यो सुर्य । को उत्तरोस विजयं पडसङ्, स्रो अन्मंतरे उत्तर्मु-मो होइ। तमो सो ममस अणमी जनमो नि सम्बायरेण तस्स पर पक्तो । अक्रमया दिह्रो कणओ गामसामिस्म विणयं मिदी। तथो एको वि स्मो क्समी कि अरणसमापुष्टिकरण ाचा <sup>र</sup>गामसामिमोखिमात। क्याइ देण सर्दि गम्भो रायगिई। ष गम्मादिवं <sup>क</sup>महत्त्वयस्य प्रणामात्र क्रुजनापमान्नोङ्कण ामी वि एस प्रधाणी कि कोळिणिको सर्वाव । द पि नेक्स विजयपरायकमथस्त्रोहरूण सेणियमोखिमारमारसी ह्य दत्व मगन वसमाणसामी समोसहो । सनिको सबस् वेदेड निमाओ। तको पळसाखो मगर्वतं समोसरणकः पि "समाइच्छित्रं "नियच्छंतो पविनिद्दश्री । मूणमेस सस्तुत्तमो पत्र नरिवदविष्याणनिवृद्धि वृद्धिकाइ का असम नेहि । स्त केव विजयं करेमि । तको शबसरं पाविकण समानेह-त्ये चक्रमेस निवडिकण विव्यवित्वं पश्चो । सम्ब ! अञ्चला-, घर में कोलनामि । सगवना समियं, सर् 1 साह समा महत्वेदि ओडमिनवासि किंत "रखोइरजमुहपोत्तिया पिन्हें बहा एए अस बोसमीति । तण मणियं बहा कुम्में नवेद तदेवोक्रमामि । तक्षो खोम्मो सि मगबया प्रधानिक्षी... ५ व पानिको। एवं निजीको बस्मारिही होद चि ॥

सर्वेषस्य प्रस्ते ।

(88) **कु**मारपाष्ट्रभूगासस्त

**W**7\*C

जीपर्हिसाइ**या**मी-इस जीवद्यालमं यन्त्रं सोकण हृद्वविषय ।

रमा मणियं मुणिनाइ ! साहिमो सोहजो धन्मो ॥ १॥ एसो में ब्रसिद्दकों एसो विचित्त मध्य विजिविही । एसी विष परमत्येण चड्ड जुत्तीहिं न हु सेसा ।।र॥

मझति इसे सम्बे वं उत्तमसस्यवसम्पम्हेस् । हिन्नेसु उत्तमाई, इमाई खन्मन्त परछोर ॥३॥ एवं सहदक्तेम कीरतिस परस्य इह अप ।

वाह चिय परकार, सर्जात सर्जनगुजनाह ॥४॥ को अबद मरी बिंस परस्त को अबद जीविविधार्थ !

विरमद् श्रोककविराहे, संराज्य संवयासक ।।ए।। सो पव क्रममानो परक्रोप पावप परेशियो।

बहुसी जीवियनासः सुवृत्तिगर्ने संप्रशाच्छेपं ॥६॥ में बप्पद् एं सन्मद्द, प्रमुबल्दरमत्व सब्दि संदेहो ।

को छन न बच्छ जीने हो तेसिं जीनिये सर्वनियर्ग।

बनियम कोहरेसु, कार्गति हि कोहवा येथ शशी

न इपर क्लो करस कि वं न इप्तर को वि परछोर ।।८।

हा मरेग व नृतं, कथालुकपा मध वि पुज्यमंदै । र्ज संविक्रण वसवार्थ, रज्ज्ञक्रच्छी इसा छन्छ ॥९॥

व सपद् जीवर्षा कानजीर्व सप् विद्याच्या । वसंन मक्तियकां परिवृत्तिकमा व पारकी ॥१०॥ नो देवपाण पुरक्षो, कीएड कारमार्गतिकम्मकप् । रमुमिष्साच विचासो निवारियम्बो सद सो वि ॥११॥ वाको वि. प्रयद्भ एवं जीववद्दण ॥ स्टब्सइ सम्मो । कि पन्नामुक्ट्ररामो, होइ पीऊसरसमुद्री ॥१२॥ वी गुरवा बागरिय, मरिंव । तुष्ट यनमधपुरा बुद्धी । सम्बुक्तमा विदेशो कणुक्तरं सक्तवसिकं ॥१३॥ वं पीचव्यारस्त्रे, घरम कक्षाणवणकककसे । समापबसापुरसमा – वृंसणे हुइ सर्ण कीर्ज ॥१४॥ देशो रम्मा रावाएसपेसणेण सम्बन्धामनगरस् बसारिधास वापद्वासणपुरुषे पवत्तिया जीवद्या । गुरुणा मिक्को राजा महाराय ! हुप्पश्च पाएल मंसगिद्धी । भनो हुम मार्क्य स**रुङ्कहा**णार्थ जल क्षया मसनिविधी । र्वपय मञ्जयसण्योसे सुणसु-नवद् गायद् पदसद, पणमह परिममद् मुगद्द बच्च पि । वृक्षः क्रमः निद्ध-रर्णपि महरामक्रमको ॥१॥ वर्णाज पि विक्यमं विभयम 🎮 कर्णाणं वर्णो विमानस्तो । सहरामपण सन्तो शस्त्रागध्य व वाणह ॥६॥ न हु अप्यपरमिसेस विद्यालय सञ्जयायसूदसली ।

बहु सस्तद्र कप्पार्ण, पहें हैं। सिस्मल्बप केंग ॥३॥

818

मारपासप्रतिसेने

बरुपे पसारिए साणया, विवरसमीय सुचैवि । पष्पडियस्त सबस्स व द्वरूपणो मञ्जानसस्स ।।४॥ षस्मत्त्रकामनिन्यं निव्चित्रवसृक्तितिर्वतिसम्मार्थः । मर्ग्य सक्षेति पि 🗷 भवर्ष दोसाव कि बहुमा 🕯 🕬 व जायना संस्थाना संपरियना सनिद्धा सनवरा व ! निष्य सरापसचा काय गवा व वय पंड ॥६॥

एवं नरिंद्र १ बाओ सम्बाओ बावबाय सम्बन्धनी ।

(89)

वा रम्मा निपरवर्ष सरवपविची वि पश्चितिका ।। भी

पाइज-सुभासिभ-प्रनाणि-न वि मुडिएण समणी न बॉकारेण बन्भणी । म मुजी रज्यशासेण, क्रसचीरेण म खबसी ॥१॥

समयाप समजो होत. जनमनरेच वैमजो । नाणेज व सूजी बोड, वहेर्थ बोड वाबसो ।।२॥ क्रम्मुणा कम्मणी होड. क्रम्मणा होड सालमी । बह्ती कन्युणा होत्र, झही हमह कन्युणा !!३!! बस्यो--

बल्प व निस्त्यनिस्यो कसायवामी सुवैस् वजुरामी । किरिपास अप्पमाओ सो कमी सिषस्ट्रोचाओ ॥४॥

बाएग जीवकोश, वो नेच शरेण सिविकपम्माई । क्रमीय जेज जीवड़, केंज सकी सेमाई जावि ११६। बानेन क्रमण्याहे, बानेश य दिक्तहनसंस्त्री ।
पर्माय पगसिन्द्री धानोश सनित्यस कीसी ॥६॥
या प्रमह बितासको, प्रसाहभरवानि कीस बीसमाह ।
विनित्र क्रम अञ्चलसा, रोगी वा जारा या सम्बन् वा ॥॥॥
समी ताल पराने सहस्या, सम्बन्धानाविन्न ।
वेद्यानाद्यानको निरयण, सम्बन्धानाविन्न ।
वेद्यानाद्यानको विषयुद्धं पर्य कर्मोहद्दे ।
वे सम्ब विजवनमहम्महर्ण बहुवि क्रम्याया ॥८॥
वेसमाह्यान विजवनमहम्महर्ण बहुवि क्रम्याया ॥८॥

### दाय-

मो वेसि इष्टियं व दुण्यामाक्राके, आकोरण सन्मुद्दः मो मिस्केट्र पर मन्नेष्टमहिया पासि वन वेसि सिरी। सेब्यामानुष्या वर्षति न गुषा-८ऽवद्ध व्य वेसि वर्षे के वर्षास समीदिकस्यकाले कुल्यति वस्य क्या ॥९०० वरवावरुके पिद्दो विद्दस्य एक मुक्तविशिकोगी। व वरवावरुके पिद्दो विद्दा वि का दुग्गद्विभित्ते ॥१०॥

विशुप्रमयि शुक्रके, समझीणे पि शम्में

#### सच्छी

जडानी महर्में मेश्सर्य पि सूर्य । बहुक्यमपि हुकीयों से पर्वपेति क्षेपा मनक्यायदक्यकी, व प्रकोग्द क्यकी ॥११॥ बाई हुने विकास, विभिन्न कि निल्वितु करूरे विकरे । कार्यु विकास परिवाहक, केला ग्रामा क्षेति ॥१२॥

# धर्द सीर्लं

क्षमता होत्र तक्षमा पाणियहे प्रमुख्य सम्म होत् । परविष्ठम्न बहिरा अध्यमा परक्षम्यस्य ।११३॥ को बस्मा परवारं, स्रो श्रेषद् नो कृत्य परवारं । स्वच्येचे पंतुहे, सबस्यो सो नदी हार् ॥१४॥ वर अस्मित वर्षको वर्ष विद्वद्वेश बन्द्रुवा गर्य । स्रा गरिसम्बद्धिमा स्रा जीक अध्यस्तिस्स ॥१५॥

बा इस्के होह महं बहुण ठडणीह स्वागतीह ! छा जह जिलारपामे करफासम्बेर दिला सिद्धी ।।१६।४ यक्तिहुमी निज्ञा, करजायहीयो व्य पंडिमो कोए । माननिहित्रों कार्यों तिन्ति नि गूर्ण इस्तिकीय ।।१७।। बंद्र निति बहुत्य एस्वप्रवेश अस्त्रामाई विच्या सहमार्ग विला महत्याहरण बाल विच्या एसमा । सहमार्ग विणा पुरिस्तिएं नाई विच्या मोक्य एव धम्मसहान्त्रमं वि निवुद्दा सुद्ध विच्या मानवा ।।१८।।

मापो

#### €या~

किं तम पडिआप, परकोडीए पक्षक्रमुखाए । कांश्वित म मार्थ परस्स पीडा म कारक्या ॥१९॥ इक्टम्स कर निम्मवीविकस्स यहुआओ कोषकोडीओ । तुन्दे त्रमित्र वार्थ किंसासर्य बीज है ॥१॥। र्षं बाहमापुरमामपाहित्य धाणेसरचं कुड, रूरं बपाहिरपद्वसम्बद्धाः किची धणं सुब्बणं । पैद बाद धरचजो परिस्रणो पुचा सुपुण्यास्या, द सम्बद्धाः स्वत्यस्यमि कि जय, मूण इयाय एउट ।।२१।।

# सच्च⊸

सन्देव दुःष्र किसी सन्देव कर्णमि होइ दीसानो ! समापत्रमासुद्दमं-प्यात कार्यति सन्देव ।।२२॥ पढ्य ति महापुरेसा पढिवामं कम्बद्दा न हु कुणति ! मन्द्रति व दीवाय (खाद्ध) कुणति न हु पत्यवासमा ॥२३॥ तेव परो दूसिकाद्द पाणिवदो होइ तेथ मणियण ! कमा पद्दा कप्यत्ये न हु त संपति सीकाव्या ॥२४॥

### युष्य--

र्धनामे गयदुमाने हुमबद्द बालावशीर्धकुके करारे करियम्बसीद्वित्ताने सेके बहुमब्दे । बंशोर्द्दित समुद्रस्वरुक्त्य्यी-श्रंपिकमार्थयरे सम्बो दुस्तमदाव्यरिक्ष पुरिसो पुत्रस्व पाक्षिक्य ॥२०॥

# बानादि –

नार्यं मोहसहंचयारखहरी-संहारस्टरमामो माज विद्वभतिहृहृहृपण्या-सक्त्यक्यवृत्तो । नार्यं हुअपकम्मकुंबरपश्च-पण्यपण्याययो मार्यं जीवभञ्जीवनस्वित्तर-स्वाकोयये क्षेत्रयं ॥२६॥ ४९८ वहां करो चन्त्र्यसारवाही सारस्य सारी न ह चन्त्रस्य ।

पत्र सु नाली परणेण होणो नाधस्य मानी न हु सुमाईच ।१००१ सुना चाप्पर फक्ष्मण, सुना खाणह पावन । चमर्य पि काणह सोचा च सेचे वं समायरे ॥२८॥

वम्भ त बाजह सावा व संय व समावर ॥२८॥ वं क्लंबत्व गुणा व निष्ठ व विस्तरं वस्त्रे । सो अल्बो को इस्के च विकार्य कोई सम्मो ॥२९॥

### पश्चितगादा─ वाव विश्व होड़ सुद्धं साद न कीटह पिन्नो क्रणों को वि !

पिमर्सनो अब कमो हुकसाल समस्तिमो बस्सा ॥३॥ स 🗷 दोर सोडभन्नो, स्रो कास्त्रगको वर्त समाहीय । सो दोद सोदभन्दो तनसंजगदकाको को स ॥३१॥ व विम विद्येणा क्रिहिकं रा विश परिवास संबद्ध्योगसः। इस काणिकव बीरा बिहुरे वि न कायरा हुति ॥३२॥ पर्च वर्धवमाधं रिक्रिं पावति सक्छत्रवर्धाः । वै स क्योरे वर्ष वा कि दोसो वर्सनस्य ॥३३॥ पद्ममि सहस्यकरं सद्धीययो विच्छाह सम्बद्धीमी । र्चन प्रदुष्टो पिष्काह सहस्त्वकिर्णस्य को होसी ॥६४॥ रायनमि गदा संवर्णमि सुनिजना संज्ञामा वजनीतः । वह बाहरीते पुरीसं बाह बिट पुल्बकरनेहिं ॥३५॥ करणह क्षीमो नक्षमं करणह करमाई द्वेति नक्षिकाई । वीवस्स व कस्मस्स थ, पुरुषविषद्याई वेटाई ॥३६॥

रैपस मत्यप पाहिकण सन्तर्थ सहित कापुरिसा । रैपो वि दाना संकन्न जेसि तेको परिप्पुत्रम् ॥३०॥ बीम मरमेण सम कपजब जुन्यण सह जराप । रिदी विजाससम्बाह्या हरिस्तिवसाको न काम्प्यो ॥३८॥

वयगण्य दोस्प्रकृतः इक मंतेष्ट्र व कर्य सुक्रय । सकते हंससदाको पिशव पर्य बच्चय भीर ११३९% सरगुजन्दिक्रेण वि पुरिसा सञ्जवि त्रे महास्ता । इयर बप्परस प्रसमग्रंग द्वियण न मार्यति ॥४०॥ संदेषि भरातेष्ठि व्य पास्स कि जापिएवि होसमि । मच्छो ससो न सब्सइ, सो नि जमित्तो कञी होइ ॥४१॥ निर्ध को श्रद्धवह भावहपढियं च को समुद्धव । सरकार्य च रक्ताह, विस् वंतु अर्क्षकिया पुरवी ॥४०॥ सह बागराण सह सुभाजार्ज सह हरिसस्रोक्षर्यनार्य । मपन्याम व बामाणी आजन्मी तिष्यक्ष विन्सी ॥४३॥ निषद सिस्सपरिकना सहक्रपरिकता च होइ संगामे । नसमे रिचपरिनका दाणपरिनका य हुन्यां ।।१४॥ भारंमे मरिय इवा महिकासगण नासय वर्ग । संकाप सन्तत्त प्रभाजा बलासहगण । ४५॥ रीसर् विविद्यक्तरिम, चाणिज्ञर् सुमगदुकाण-विसंसी । काप्पार्ण च कवित्रगद्ध, दिवित्रगद्ध रोण प्रकृषीय ॥४६॥ सत्वं विश्वयपविद्वं, भारद् वने परिवर्तिणे ! ष पि गुक्का पर्वर्ष, कीवायह विच्छ जव्छरियाँ ॥४७॥

हम्भित्रं न याण्या, रिक्कि पको वि पुण्यपरिद्वियो ।
दिसके वि बाके विदिश्यो बीह्याय सरको दिवह ।१० ॥
काक्ष्मीक्रम नीरं, रेवा रक्त्यायरस्य व्ययेह ।
म ह गरकाइ महर्षेसे सम्बंधित सरिक्षा सरिक्षाय ।१०१॥
सा साई विषे प्रकृत पणियेख कार्य गुरुके ।
कारिमुद्धी पत्रिक्ष गरके, विरोधको द्वाचित्र हो ।१०१॥
केरिमि होह विच विच कार्यक्री मुम्ममानार्वि ।

चित्रं वित्रं पर्च दिग्णि वि वैद्धिक सम्तार्थ ॥५३॥ करन दि दक्षे न गर्धे करन वि गेवो न होड् सपर्वे । इन्द्रसुर्मिम सहुवर । वो विभिन्न गुल्या न बीववि ॥५४॥

कं शवसरे न हुने गार्च विषयो सुमासिल वस्त्रं ! पच्छा गरकाकेण, जनसररिह्मण कि तेण । ॥४९॥

1230

कर्य व वर्ष न स्थाय कच्च वि साया व सीजस सहित्री। बाहसामार्थापुर्व में यहित्रा । सरोतर विरुद्धे । १५५॥ रूच वि तथे न यस्, कस्य वि तच्चे न गुज्रचारिसे । तत्त्वत्त्वचण्डाविमा सुविको वि स्व बोत संसारे । १५६॥ पुरुवाल व्य पुरुवी गुड़बाय जवाग हिजयससंति । वर्षि वरा प्रविकास, बीर च पराच्चायोगी । १५०॥ कि कि न रूप, को को न परिकास, बद्ध कह ग गामिस्ने सीचं है। हुस्सरमारस्थ कर, कि म कर्ष कि म कार्या । १५८॥ बीर्वति चर्ष्विपक्रिका, चतुद्वचिक्रम्ना स वीर्वति ॥५९॥

र्षं अधिवयः चरित्तं देशुणाण व्य प्रवाकोडीय ।

पै वि क्याद्रयमियो हारेड् मरो ग्रहुचैण ॥६०॥

व मस्य पर व मन्यि राज्यं देश्य वि व नस्य ।

बत्तं अकारमञ्जूषिका हो विन्नि कका न दीर्यति ॥६१॥

व्यवस्मण्या न कायन्ता पुणक्रमणेष्ठ सामिय विक्ये ।

पित्र पि महित्रमणं एउड्ड म्ड न संद्र्यो ॥६२॥

वही नरित्याते वक्याल पाणिका च महित्रमणे ।

प्रया य वक्तति समा जल्य य पुलेहि निक्यति ॥६३॥

वस्यो य वक्तति समा जल्य य पुलेहि निक्यति ॥६३॥

वस्यो पहलते समा जल्य महित्रमणे ।

प्रयोग देशि हि ग्रिमास्य सम्बन्धानिकामा विषय ॥६४॥

पे पंत्रीह न गम्या, नोम्रह्मही न मीवय कर्य।

वर्गे विशायरिक्षा संवर्धीय कणुत्तर हृति ।
प्रत्मे वि अञ्चिक्षमा, साम्स्यसार्य व सम्पुरिसा ॥६६॥
कणुष्तिमसा वन्म सा हु किंक्शिक्ष सुद्रुद्ध वि पियस्त ।
विष्ठाय होत्र ग्रुवं विज्ञायमीम वर्धत्तस्य ॥६७॥
रणीम कामेसारिकायो कोरा पर्यास्तमा व रण्यति ।
वाक्षायरा सुमिक्क वहुकमा कहा हिम्मक ॥६८॥
वै विवि प्रमापने म सुद्रुद्ध में वहुषे मय पुन्ति ।
वं में कामेसि आई, निस्साको निकसानो सा ॥६९॥

हुन्ति न हुति क्या वि हु इशियमुक्त च मुक्तं च ॥६५॥

क्षेत्रेस्य पियं विजय, करिस्य बस्तेत्रका पुत्ति ! वर्रावित ! बसमे वि मा विश्वेषम्, वेद्यान्य व्या नियमत् !!७२!ः किं कट्ट क्रियोरी वर्र विषयमें किं वस्स संपन्तिकी किं कोच समुद्राहच निष्णुण-मामेच रहिरसय !

गुणहाद्विभस्स क्याँ, व्यापरिशिक्तो व्यापायामे माह । गुण्यभिस्स्य न सोहह, नेहिनिकृषो व्यापहिला ॥७ ॥ व्यापहुर्य व्यापहिला व्यापसायाम् भाष्य गुरु । हारस्य य वासेस्य व सारंब्य व स व्यापित ॥७१॥

कि बीड परिपालिकी पसनित्ती, कि पुत्रमेश पुर्व विदा प्रतिमाह निक्रण सक्तो सबहुद कन्यमा ॥७६॥ पन्मारामकाचे कामाक्मकिणी-संपाधनिकारणे, सम्बायातहिपालणे सुद्दमणो-ईसस्य निकासणे ।

हर्षि क्षेत्रस्वरूपसस्य काणण, सत्ताजुष्वात्त्र्यो, संपादेद परिगादो गिरितद पूरो व्य पर्ववत्र्यो ॥५४१ दा इर्गिद्वस्वरूपको कद्वतियो वापस्य वैद्यो गय, वपूर्ण प्रदर्शकरम् य द दा रिन्तो नसीकृषयो । ही तेष्कुरुपादिरासुरस्वरे-जुष्णुकिय सम्बन्धो;

ही तेष्ट्रकारिकियुस्सर-जुज्जूकिय सम्बन्धे;
भिन्नी गैमममुक्सवाण सवर्ष, तुक्साण क्षणा कमी ॥७५॥
कसस-नीसस-रिदेंग, गुक्यों सेस वसे इवह वर्ष्य ।
तेषागुज्या सुरुष, कार्याह दोसी मने सरस ॥७६॥
म सा सहा जल्द व सी सुद्धाः
वहसा म ते के म वर्षति क्षणी

धन्यो म सो, बत्ब स निव सच्य,
सच्यं न त, श्रे छटणाणुविद्ध ॥५७॥
ए व श्रो धन्ये प्रिये विविद्देण चण्ड नएण ।
गर-चारत-नार्य, सो भणु करकाण्याचो सि ॥५८॥
रह्या द्विपाणे परिचयोच निर्दाण सच्यदिय ।
एसामो मट्टो सा मट्टो सम्बद्धानार्थ ॥५९॥
सामार्थ सर्व कदमसामार्थ गुणो ।

स्वानत्ये नाण नाणस्वानगर्थं इया । ८ ॥

प्रेमी बहुमोदी, अहुहुप्ती दुन्नणहिं संवादो ।

उम्मत्री य देखी पत्र वि गहुर्य पि छहुत्रित ॥८ ॥

एजी साहुरू देमयारी अहित्रणी सहूर् विकत्यापी ।
पुन्नी मीहृरू रायमंत्री अग्नामुम्नी सोहृरू प्रापणी ॥८०॥

दमस्कामा परसन्ति इन्हों न पालिहिंसा पत्म अहुर्यं ।

प्रमुक्त परसन्ति इन्हों न पालिहिंसा पत्म अहुर्यं ।

प्रमुक्त प्रमुक्त शही से प्रमुक्त दमारा ।

प्रमुक्त प्रमुक्त शही से स्वापन्ति स्वापना ।।८०॥

प्रमुक्त प्रमुक्त नासी, स्वापन्तिस्त सुक्तम नासी ।।८०॥

प्रमुक्त सुक्तमनासी, कीपैपन्तस्य सहस्य गही ॥८०॥

प्रमुक्त सुक्तमनासी, कीपैपन्तस्य सहस्य ।।१ प्रमुक्त प्रमुक्त ।।

। इरिर्स्स पहुरसा सती इच्छानिधेहो व सुरोप्त्यसः । इच्यर इंदिर-निन्महो व चतारि पत्राणि सुदुष्टाणि ॥८६॥ विविधसरयासी ।

#### 'पारम्परम-परममासा' मौ मावेका कठिन रायाना अध

(t)

पवकाति (प्रावे) हे स्पीकर कां हे (B)

 सिविक्तसम्बर्धा मधुक्रीमहावीरस्वामीया शैक्स क्रेस्प्रं विनियम् वर्धन क्रोल क्र

पर्ज्ञक-१- साथा (किनेश) विजित्त । बाससक ×(मत्त्वक) कार्येचा। १-०सिक्षह्य (त<sup>के</sup>लस् ) श्राप्तितः। १-धास्त्रह्य० (शक्ति) नरप करना अमञ्जा (तुक्ट) तुक्त अर्थ (है ) क्येर, योगिय (क्रीमिक) काम के क्यात वनेस तक अतियास्त्रों (र ) परिदेशक पहेंख। ४ छड्डेच क मलेज (ब्लेन ह अल्लन) में उत्सालको। केसादि (भगानः) कलना वर्रवामोवह। सक्कीसामा (प्रकेमके) क्ष्मेन्य सने श्लामेन्य । ५-वीवति (धीमकाः) वीरे छ - ५-सिकायवर्ष (विद्रामसम्) सरवातु वयः क्रमायारः» (क्षत्रिका) कमेल कार । ११-चतवित्तत सम्म (तावित्रां का ) क्षेत्र कारे कारे কলে ব্যৱহা

**(B)** 

 इन्द्रिक्नीचनमात्रमान्। वर्षे अस्, सानिकः श्रीवृत्ता अने राष्ट्रमा मा पांचे इन्दियोगा विषयमा आवना देखाडेड हो

परर्गक-१ संक्ता (धन्द्रचर) श्रोकमन नार, सोतबिसर्प (क्षेत्र-चरम्) क्वेंन्त्रिका निवस्ते। रागशोसा (स्कोर्ग) राम क्षे

माना निष्ठतावा प्रश्ती राज्यात्री है

देव।१-मनबार्व (बायकुर्) अधि प्रवणले. ४०० व्यवसार्व (बारवादित्रम् ) सार अपि वेदारं १ ५-क्सवीयर्क (अनेवावित्रम् ) वेदन विदे काराणे । (४)

१ एस्य सीसुच्यमींस्थामीश्री अवनाम् श्रीश्रंबुस्वामीनं उत्त्रीनं दलेश बारे ७ के "बारंस परिवारियां वालक अव्येती संग स्थल की शहरोत्रे निर्मारामांचे रहेचु जोवते." त कार्यक थ्रे.

पर्यक्षक ने मतीमता (गर्मण्या) क्ष्वकार्गी ज्यु बीज्युवीर लागी, अंतु (ब्रह्म) माना-नंव रहिएं एवळ बाहारकर्ष (व्यक्तप्रमा) क्षेत्र (ब्रह्म) माना-नंव रहिएं एवळ बाहारकर्ष (व्यक्तप्रमा) क्षेत्र विकास हिंदि व्यक्तप्रमा के योग्वस्था (दे ) मर्वतंत्रक व्यक्तिक्व प्रसिद्धा (एक्स्प्र) के योग्वस्था (दे ) मर्वतंत्रक व्यक्तिक्व प्रसिद्धा (एक्स्प्र) देकि विकेट नेल्यानेया (व्यक्तप्र) विकास क्षेत्रक लागी एन्यामाय विचासिक (व्यक्तप्राप्तकार्यण्या) व्यक्तिनंदिक्य स्वयंत्री (प्रकार) व्यवस्था (व्यक्तप्र) क्षेत्रक के क्षेत्रक्ति (प्रकार) व्यवस्था विकास (व्यक्तप्र) के प्रस्तिक के स्वयंत्र (व्यक्तप्र) के प्रस्तिक के स्वयंत्र के प्रस्तिक के विकासिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक के विकासिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक कि विकासिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक के विकासिक के प्रस्तिक कि विकासिक के प्रस्तिक कि प्रस्तिक कि प्रस्तिक कि प्रस्तिक कि प्रस्तिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक कि प्रस्तिक कि प्रसादिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक कि प्रसादिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक के प्रस्तिक के प्रसादिक के प्रस्तिक के प्रसादिक के प्रस्तिक के

(च) १ पुरुक्तिचीना वर्णनारी-समा क्षमधोनी स्थित समाज्यकुं वर्णन करेल के

च बहुतेया (बांग्रेक) वनो शतक श कीमी. १ बहुपुक्तका (बहुतका बहुतक्ता) च्या जनमी गर्गकी. ४ क्रवहा (अटलब) वाक्यताहर, ५ कुंडरीबिजी (स्ता भेग काम्भावंत ए सासादिया (अत्यर्धिय-त्यारिश) अवस्तुबत, म्हाक्यास्क्र ७ सहिन्द्वा धरेष् (भौसल्या) राज्यंशानि पविश्वच श्वंपर ८ पश्चिष्टमा (अर्थेरण) प्रतिविध्या व्यक्तिम इप सहिए. बुद्दया (उच्छनि) गहेल है.

भ साञ्चनुष्यिद्विया (अञ्चल्केक्लिमार्क) विकेष्ट एक्लाएर्क रहेगे. ११ उत्तरिया (विश्वाकी) गाउँ को कारको स्थाप की बार रहेगे. ११ इत्तरिकार्थ (विश्वाकी) उत्तर कारिल्या १३ सम्बार्थित (कारको के विश्वादित (कारको कारको कारको

(६) १ वरिक्राज्यामां-सिविद्या वचरीयो टेमब एवळ राज्य-वर्जनो त्यव वरी स्वयुद्ध वक्का मसिरशबर्जियो छावे हाक्ष्मुनी संबंध कार्यण छे.

४ मोरोह (मन्दरिया) अन्युर्श विवाहा (लश्ता) लच्च गर्छने प्राप्त (एक्ट्रम्प) इन्नो एक्न्य क्रिके उद्यामित्रात कार्यो एक्ट्रमा हुएको कहा कार्यो एक्ट्रमा हुएको कहा कहा है। इस विवाह एक्ट्रमा हुएको कहा कहा करें हुए एक्ट्रेस कहा एक्ट्रेस (धींक्ट्रार) धीतर धांबाधी। १ सामा (सार्यं) पीति वकेता। १ मा मा एक्ट्रिया (क्ट्रिया ) एक्ट्रेस कहा कुछ यहां अन्याप्त । ४ मा मित्रिया (क्ट्रिया ) एक्ट्रेस सार्यं अन्याप्त । ४ मा मित्रिया (क्ट्रिया ) इस्ते । क्ट्रिया (क्ट्र्स) सार्यं अन्याप्त । ४ मा मित्रिया (क्ट्रिया ) इस्ते । क्ट्रेस । इस्ते (क्ट्र्स) (क्ट्रिया ) इस्ते । इस्ते (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) मा क्रिया । ४ मा मित्रिया (क्ट्र्स) इस्ते । इस्ते (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स) मा क्रिया । ४ मा मित्रिया (क्ट्र्स) सार्यं (क्ट्र्स)

प्रक्रीक-१ सुर्सी (सरवि) पूर्वमक्य क्षमाने स्थरन करे छे।

(क्यून्य ) हु एक्टा क हु ए दमान अवया । भा भा भा प्रित्त (क्यून) (क्यून) कहि तिमारी को मोहोबो । दूर्व (क्यून) (क्यून)

६१ सम्बर्ध (राष्ट्रात्) प्रत्यक्त, केदेव्ही (वैद्धी) निरोह बद्याना गरा स्थासम्बर्ध परहा (श्रासम्बर्ध पर्युगरिक्त) कारिक्षने नित्रे बद्यमरामा वना (0)

 मन्द्रकृषी संदर प्राणातिपान-स्वामाय-अद्दारान-नेतुन-गिक्ष को एत्रियोजन से हमा स्वागती उपयंग्न स्वपनाश्वक छ मानेतु कि देखाँक है.

पार्श्वक-भ पुरुष्ण (है) जल-भीर, २९-व्हस्सा (स्पन) स्टार रे १३-तामार (व्हरा) साह साक्ष-त्वां ग्रेप । १८-स्टार रिग्ने सामव्यसाहें (ज्याकाशिय-मध्येत्वा) स्था कता स्टार के ब्रेड क्रेके-क्रीड्र पार्थक । १९-व्हाविक्स (मध्येत्वा स्टार के ब्रेड क्रेके-क्रीड्र पार्थ । १९-व्हाविक्स (प्रिया) स्टार के ब्रेड क्रेके-क्रीड्र पार्थ । १९-व्हाविक्स (प्रिया) स्टार के ब्रेड क्रेके-क्रीड्र पार्थ । १९-व्हाविक्स (स्वार्थ) स्टार । १ वारवारतो (१ ) कम्पाल-कंत्रवे २ मिक्रिको (१ )सर वारी-वीवारो १ मुक्कापुरुकोहियसस्य (मुक्कापुरुकोरास्य स्थाप

434

इन्बर्ग पीरावेशा । स क्रिक्किट्स (गीन्स्यानाम् ) शस्त्रे स व इन्त्रो । प्रमुद्ध (क्षित्रेश) मोत्रे हे ।

(० दामबियी) (जनमिति) एव मार्चेन कार्य । सारवयनं (संरक्षण) थे. वर्षोह निमयिकुस्ताहा (उन्नरिक्टिकुम्बा) वर्षे स्मर करामां इत्य । ३. सोज्यबाह्मधी (बोड्मपिस्टी) ग्रीप कां मरियों । ४ प्रमोद्धे (आपे) लल्ल्यको । ५. उन्हिस्समयी (परिक्रमण) प्रमोदी । विषाहित (पितरिक्षम् ) मार्य केस्परे ७ मंत्रसामि (लाक्नाम) राज्य स्वर्ति सारव्य स्वर्ति रहा । ८. वस्प्रमे

(बलार) प्रोज्जा। ९ आहसूचियाच्य (सस्युप्यस्थाः) "स्ट्रा वर्धने कृती तर्वत बत्या अ तरी"—हत्यपने वरस्य वर्धने आहे. १० सोविया सायोपळ्य (तरस्या-स्ट्रायेक्स) न्यप्यस्थिते स्ट्रापे ११ विविचयपसे (विविच्यायेक्ष) एक्सव प्रदेशना "स्ट्रे-प्य-स्ट्रापे ११ विविचयपसे (विविच्यायेक्ष) एक्सव प्रदेशना "स्ट्रे-प्याम स्ट्रापे एक्स एक्सप्य सम्बद्धां व्येच हुकेते जोते ।" १९. सामि स्यापं जवाचर्च (गामावारं व्यावस्था) विकास द्वित केत्रं स्ट्रापं

१६ (विकासीयाइचि विशेषक) "बारवं वारे?" वेनते. १. विकासी (विश्वणा) को क्रियरे ना नया. १. वाडीपताची (विश्वणा) को क्रियरे ना नया. १. वाडीपताची (वाडीपता) "जेरी ये कार्या" आर्थिता व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था के व्यवस्था के व्यवस्था कर विश्वपताची (विश्वपताची) कार्या कर व्यवस्था कर प्रत्ये कार्या कर्या कर वाडीपताची कर वाडीप

<sup>र्मा</sup> से संतरा (मन्तरा) वचमां. ९ निखुकका (निजीना) प्तिने प्रतिने बढामा साई पुत्त रहेमा" १० सब्देण (६ ) (झन)भोटा स्टानके, ११ पस्ताचा (फाक्तिः) प्रसानन करी गमा सम्माबो (स्त्राल ) स्टबार्च १६. मंद्र (माण्डम् ) बन्तल बगरे. १६ पडर्प सीजिडकेरी (म्लबं नीनमानम्) कह सबला मण्डामे १५. निवसक् हेडिये (निवन्दें वृष्टिकम्) वेशीमी वंशवेला कामना म्बेरे १६ संघारयं (वण्यान्यम् ) सङ्कान १७ सस्सीच्यो (वाणीना) क्षेत्रे क्रो-वादव कर्वो १८. अचकारिखया (अन्त-क्वागूः) राज-भा रतेशी क्रेमी वादी क्ल. १९ व्यवाहियो (निरम्दः) जिल्कार भारे २० सामियं (पालम्-मधनम् ) च्याद् २१ सूर्यितस्स किंदा) की काया १२

फर्जक-१ सुसाय (११६१) खेन चडक्युको (नहुर्नुनः) पर होतराज्ये कासहयस्ताहा (अवस्थानार्थ) अवस्था नासस्य विहत्यं (बहरिस्कम् ) रशमानिकः ६-वच्यमेगं (वचनात्रम्) मराजः

े **चारवर्हे**च (हारकत्वाम्) हारिका वयरीमा २ **श्रेवाई**जं हमनारीनम् ) सास्य वर्धरे ब्रमारीने ३ वसुस्य (क्युः) श्रीव फेडप (प्रजे) विश्वपंत्रात. ५. बाइन्सा (६) चेर पान्ता. क्ष वस. ६ एक्सक्रमी (पथासः) पाकन्ती » कास्त्रकारक्सा-मी (मन्द्रपाप्रितः) श्लीकार करान्त्र ४ व्यास्त्रो (शकः) शास्त्र वारीत्व १. पश्चित्वार्थं (प्रतिक्यम् ) समान 'विका वर्षे कामता-क्रिय ! स्थ क्लाबीने" १ वसारावच्यो (श्वर्त्तराजानः) समुत्रविजय सावि ह राजाओ १९ व्यंबाहियो (शिरस्ताः) त्रिश्चस करायो. १३ वियामी (तमिका) लोगनी नोनो १। अवसीडियामी (अकी-ग (काश्रहकः) स्रोमाने कटनात.

१ विक्यादारे (प्राप्तिम्मू) राजी वर्गते श्राच्या

साली १ सुनुषद्वाराकं (जुडु द्वारो) नाते की होमान बीसे • पुस्स (शिवा) बागर ४ साहायवादाया (है कि कारण) विचारकं भी स्वेत्ती स्वतीयहाँ (विचेशाय) समय को वन निष्ठ ६ सीह्यहरिंदू (वीसाम्ब्रा (विचेशाय) समय की वन निष्ठ ६ सीह्यहरिंदू (वीसाम्ब्र ) देव वाका दिन्ते देव नाहायहर्ष (है प्रणिके) नात्र ६ स्वयस्महमा (स्की सहत ) हाता ही नाह । आसीवाई (बार केव्यू हे केव्यू केव्यू कार्त ४ सहिन्न (बारा) नक्यों क्या क्यां वार्ष पर्या

५ रामाइच्छिये (के नामचन्य) नामाय कार्यक ६ तियस्त्रीये (रागर) मार्ग निक्कम (गाव) कार्यक समोहराबाहुदगीरि सारापानिट (रामेरान्युगरीनिकस्तिनिया) हम्मेदरा स्त्रे हमाविम हास्त्रमं नामा वर्ष

बहुर: ११-चुराव्यसा (प्रायवा) हुएवव-दुः वे धरेते त्यार वर्ग प्रायव प्रायवेक-रे स्वयाचि (क्रमाने) क्रम बक्तना प्रधानने निकेतेप पर्य निम्म ११-चरवारि (क्रमान व्यापन) १४४मेने अन्य प्राया माने व्यापना (क्रमान) को वर्गित स्वरूपा इसेते स्वर्म प्राया माने व्यापना (क्रमाना) को वर्गित स्वरूपा इसेते स्वर्म <sup>करमार,</sup> १४-सङ्कटप्**० (६ ) साभूपम** १०-सीक्षे (बीविटम् ) जीवदर २१-उद्मा (बन्धम्) मनोदर ३४-उद्भुको (इहरू) पुरव पदी १५-सहव्यया (शक्रा.) धुमाञ्चम स्वक विक विक्रीओ ४३-सहज्ञाग-राप्य (मह साम्बरक्ष: सर्व स्थपना राज्य प्रशास्त्रको ) साथै जामका यारे स्टब करात साचे हर्ष यन शांकारामान ४१-भागाय ऋखिरप्रद (भारमा कृष्यत) भारमा बणाय 🛊 बाह्यान करानस्त्रो कान ४ - सत्य (प्रक्य-गायम्) यस पक्ष गातः - मेइलो (मन्छ ) कुमा १-महिसुदि (अधिमुख) वर्षण मुख्या सिप्पक्रहे (श्वकिपुटे) छीयको सन्पर सुश्चियं (श्रीकिएस्) मोनी ५६-सर्च (तर म्) तरखाम. ५ - यउ (एरच्) मा ५९- खडडु० (३ वह) बरा केट के पूजा खाराक महि परमतारा<sup>ध</sup> १२-वहिंद्रां (रिपे) दर्श सहिज्ञातं (सरक्षमानस् ) सक्त कातु छहद् (सुनति) त्यांग करे के ६४-वाधारचे (राज्याचं मरवार्षम्) योज्ञां सहेव रोजन जोराजेंवे भारतं (सर्दम् ) धन-ताकन परमार्थन-तराक्षातंन सुन्नदां (मीटम् ) करात्रवानं पासे के चननं प्रदेश करीने तथो त्थारा कर के<sup>37</sup> मोहमें पासे के 'क्लाबानों प्राप्त करीने शमानान पाम के <sup>वर</sup> परस्कोच (पजाके) चैत्राधानी ज्ञार, परकाचनां «सारिच्छपा (कात्राः) समहरः 🗡 पंग्रीहि (पविस्थाय ) के मार्ग वह कीमुक्सर्य (विसुनीस्पी) ने स्पनार्ध सोव सीयप क्रंच (बोमाठि कमाम्) काले धीरै छ १५-मागुपदि-सरसर (अनुपरिचत्त्व) को सामकान तैया नहीं बचनाने विकडाये (विच्यापा) क. नेताबित-मनित्र चमैतस्स (कार्यः) काराने देख्याने ६८ समिसारियासी (मनिक्तरिकाः) गणस्य सकरने गाउं संकेतस्वले क्यारी झीओ 🐠 काञ्चनपानस्य (न्यार्चनस्प) 'कोमस्पी' माटा ए-प्रजी कृतियुक (क्रमोला ) क्रम्पन्य थेन श्वन्य प्रथा इत्युक्ताला. तेकोती क्षेत्र करणना विर्मेण चतुपुक्तियं (उत्पृत्तियम्) शुस्त्री स्थान्त-अक्टिंग्स कुला निरुप्तर वंदे जारे काहनी वैद्योदन मुग्री हीते ।

# पगर्थी

menters where it for the state and first t कारतान्त्र अति । अत्या क्षा का श्राम श्राम । ११ बाल्य हिजानम्हें शहर अविज्ञानम्ब बहै है मर्चनात्र मध्याचः नात् स्वतः व सर्वार्थका १२७ warmer of ever of over seen to meet the f the backerships the Subrit policy, क व दिव गालरी ने अन्द व चाटा क्यी वर्डनार्य १ बार्बाराज वीर्त । जार कर्न स्वितंत्र करण १४३ wir a कन्यग्रन्थात्मा विकादकीता सहाज्ञाकाचे १ # white an shandaring a sky I rit there is not time to the section of the section of " I'M & STRATEGICA WEEK faryalangthan in an germen कण रह थे एविज्ञणनिवासमधीश er fengengenfent f. .

> भी माष्ट्रजरिशान बादमाकः वरिष्टेगमनम् ॥

#### 414 र्वादी अधिव 딿 3 3 पुरत 300: ŧ , ₹ " ₹, एक्नो 15 एक्ग \* पो्च ٩ म्बेड 33

" शुद्धिपभक्तम् "

٢ ٩ ¥7w¥6 \* 33 RMST 4 ¥ मध्म

9

۹ \*\*

٩

•

٩, n 11 ą

٠ \*

4

33

38

34

٩

٩

11 98 ٩

\*

×

11 11

.,

24 ٦4

ą.

अपूज्य

श्चेत शेत ŧ बोम्बेम

(अमे) बोच

[ 편 उप **SER** 

पाडवा लक्काओ अविष

ŢŒ

इस+इत्या

ψź

पाडवी

सम्बाको म'नेत Φŧ दुरम

<u>स्</u>राज्**यह** 

<u>fant</u>

भद्रम

क्षेत्र

होत्र

٠

दास्क्रीम

(अमे)

ग्रं मण्

पुरुष

**90** 

नोच

क्र्याच

(सम्हल

			KIA	
पानु	भीरी	बार्ग्स	Eđ	
1	11	<del>सु</del> समे	शुक्रमभे	
	13	(11)	(±)	
		भगको	अशा छो	
	33	<b>(</b> तम)	(গেন)	
10	1	Devel	बीतुपर	
14	3	पञ्च	आस	
	•	शुपद	<b>ह</b> रण	
	٩	<b>पृथ</b> ित	<del>प्र</del> चिमा	
	11	<b>ভি</b> শমি	विचमा	
٦		<del>तुः</del> ध	<b>तु</b> च्ये	
		859	हम्बे	
	1	अलरे	वामेहरे	
	11	₩r	fe हैं	
-	1	(भिका)	(d:m)	
1	4	बहुवचन,	शुरका.	
	14	शने ४	धुम्बे हुवै	
	1	व विशिष्ट	क्ष समिरे	
	1	<b>⊈</b> È	करी और प्रसाने	
*		र्द शत	हं राजाचे	
4.3	11	7	4	
	4	•	ML	
*	٧	(a)	(₹.)	
3.5	•	माध	गामो	
		समै	<b>ल्मे</b>	
	44	हों + द	हो + प्रम + इ	
٦.	*	<b>इ</b> रिज्जिस	होन्मानि	
				2

		a fi	1
पर्य २०	मीटी १६	angur <sub>(</sub>	990
1	14	Reality	होज्यहरे
		₩.	क्रो
41	15	•	स्रो
	4	धारी	<b>मे</b> न्दि
77	15	काचि	सविष
	12	তৰ	क्षेत्र
11	٧	রদ <del>ক্ষ</del>	उग्न <b>ाम</b>
4.4	٦	विष	जिल् <b>ए</b>
*	A	हुने	2.4
*	4	पुत्रके स्वयूग	इ.चे.करीसदम
-	•	पुने देखान	ह के करी देखान रेखें
**	1	<b>स्त्रहो</b>	निस्त्रहो
N	15	ग्र+उत्त	इर्+उत्तर
*	*	प्रमित्रको	प्र <del>विका</del> मो यूप्रिको
44	*	<b>PROPE</b>	etHT
*	15	मर्मगरेह	<del>न</del> म्परेत
14	1	390	प्राप्त
\$ 10	*	विशक्ति	विमत्ति
34	1	यं आणी छो	पंथाने तो घंबो
	**	विकारेगो	विष्येभो
	44	(कोच्च)	(mj.dr.)
१९	14	प्रचमा स्थानिसी	मरिमा
**		(कावरा (रजनिवारः)	रमविकारी
34	١ .	(रमानवरः) वा <b>वर्ष</b>	(रजनीचरः)
	,	erikilu	पवास्त्र[
*	<u>~`</u>		PHL 3

WK4

		nst.			
गर्स	white	चम्रद	च्य		
15	٩v	(दालम)	(दालप्)		
Ý	•	€t	स्यं		
	13	<b>41</b>	स्य		
-	18	हुनका	नहुनक्त		
-	90	T.	चरा		
41	94		ec (वम्) मे <del>वार्</del>		
49	*	न्यानी	चोरो -		
-	98	परक्क	प् <b>रा</b> चनं		
*	34	माद	बाई		
Хį	¥	स्वयंत्री	मूर्वामी		
.00	4	चलु	ब्राचुमी		
-	•	केश	44		
	3	<b>≠</b>	बरफे		
w		विवासि	विमरि		
H	23	सुकाम	मूकाच		
	9.9	सुजन	গুড়াৰ		
w	4.8	सुचान	Cald		
	4.8	च्छची	बहुवी		
44	4	<b>अस्</b> र	ofec		
¥4	4	<b>(प</b> र्म)	(वर्म)		
84	44		सके) बिहण्यहं (इहसके)		
¥	٠	( <del>ব</del> ৰ)	(444)		
-	11	( <del>1-1</del> )	( <del>=</del> 1)		
-	4	वियो	आविषो		
-	41	(भगति)	(भिमपि)		

	We			
Ų	#AD	अमृत्	<b>ध्र</b>	
*1	•	(अर्थ)	(a(2)	
	33	(forg)	( <b>8</b> %)	
١.	35	मामग्र	सावयो	
	318	स्रोगम संय	भागमभोध	
	7.0	सामुद्धि	चीरो वि	
33	94	मेळक्या	मेळगरा	
20	•	mg	नां है	
	30	निहत्ये	विद्यागी	
*	15	(গ্যৱৰূ)	(d <b>v=:</b> )	
ALS.	₹.	व्यक्तिसम्ब	कर्म <b>अ</b> ग्ने न	
	4.4		-मार्र	
44	*	(संस्पच) स्पच	(बल्पर्ध) <b>लर्च</b>	
	4	-918	अस्पो	
-89	13	धूमनो	पूर्वको	
	44	बरस्य	~भागस्त्रचे	
N	44	निम्समी	विस्तामो	
46	3	सम <del>्बद्</del> शर्भन	<b>धम्मम्</b> रसंग	
-	24	picto	<b>एका</b> य	
70	43	विपरिष,	मित्ररीष	
מר	1	(8.6)	(स.ए.) क्ष्म्भत	
-	14	(धन् )	(कार्ष्	
٠,		मेलपु	येळातु	
40	13	कररिय	गरिष	
	94	क्रानिस्कृति	Subjection .	

**Per**R

नेपांगि

		AJC		
4	**	3-2	£1	
		8-54	entitie	
•		Fee 10	Ec.eth	
		F179	af-t	
		9 111	₹ 41	
	3	¥έ	- ig	
5.9	4	4 gir	4140	
		** \$7 ***	and from	
	14	<b>*</b> \$	de	
	•	يدمو	Gq.	
		1	e4)	
	•	and see	ahus cas	
	11	450	eren	
	10	p-frager	er tarl	
17		स्पर	Tq.	
	×	277	-4	
		days.	est,4	
		4.4	BEC-18	
•	4.2	EM .	516	
-	11	43/3	134	
40	•	\$4EARS	i cere	
	15	ethe.	e <sup>e</sup> cst	
**	**	er	mas.	
•	10	fazqli	Dynetl	
	**	Fre	urg	
	4.5	सन्दर्भ	बन्दो	
"	•	943	44R	

Rád.					
पानु	संगी	ग्रह्म	HK		
ţ	11	अनु	न्य		
19	11	-	ओन् (बोत्) प्रकारमु		
•	1	विभक्ति	विमत्ति		
20	*	घरचनो	अरमयो		
41	٧	सुविद	मुर् <del>जि</del>		
44	11	सरप्य	सम्बद्ध		
	88	(*)	(ब् + स्)		
ωį	*	मान्तरे	व्यावरे		
,,,	33	( शक्त )	(2014)		
A.S.	38	(पश	(पस्य)		
46	98	मयुं <b>प्रकारि</b> म	म्युमक्षितः		
46		काराहर	<b>अं</b> चार		
4	13	नेतुम	बीगून		
44	11	बोनु	कांनुं		
45	16	843	শ্বযুদ্ধ		
45	14	नैन्छो	नेमदी		
١.	•	व्यवसी	मध्या		
n	36	माप	जाभ		
11	4	होस्ना.	होरणा (स. स.)		
33	¥	वसाध	निसाञ्च - विकास		
	3.5	ी पुक्तिगर्धा सीर्वेक्ट	पुंग्लिक <b>ः।</b> <del>र्यार्चेश्वर</del>		
44	*		राज्यकर वेत्र		
11	11	अन चना	सम धनो		
	15	441 44	यमः यमु		
31	1.				
**	•	( <b>e</b> é)	( <del>134</del> ).		

		W-			
प्रमुं	सीदी	म्बद्धम	W.		
3.5	11	(5%)	( <del>st</del> )		
10	11	इसेविवद्	हरीज्यम्		
30	*	ी्रज्याह	वेजम्		
٩	19	प्रो	पक्षे		
7 4	11	ध्रुपी	ग्रुपी		
,,,	33	कार्मप्राक्ति	লাগ্ৰহ <b>ন</b>		
3.3	9	(#×₹Ţ)	(用+要U)		
	4	(व्य + दिख)	(धा+रिष्)		
	18	बोकिएमा	गोक्रिका		
70	4	निष्य	Brok		
	9.9	धेबुवस	<u>चंद्र</u> श्च		
	4.9	(90)	(ouf)		
	4.4	( समितम् )	(संबर्धियः)		
3.8	٧	<b>प्रत्यस्त</b>	व्यवस्य		
	18	युष	पर्र		
1 4	34	नामक	484		
1 1	14	li .	क्रमे		
	1	विनिवित	निगव्धि		
1		पुर्दीव्यर	पुर्दामो		
11	14	ध्यीना	खरीगा		
11	16	<b>ब</b> वो	इस्से ।		
225	3	क्रमीवि	<b>श्मीर्धि</b>		
118	15	( Rankshif )	(क्र्यस्य)		
	#W	विभव	निकरो		
111	¥	श्राम्	सास्		
۲	44	नारंच करनी	जल्बकरनी		

#### WWX पहां with महाद सर 111 व्यक्तिजी प्रतिको 10 714 ٠ गरु गर् अस्तरा अम्बद्धी . 88 114 4 **न्य**साय नुसाप ¥ भाषक्रभेड **भाइक्ष**मेह . 122 बाधिमा<del>ं युन्</del>य का बनो बोदन. \*\* 111 पापीना पानमा ۱۷ (पाटचाका) . 88 (पद्धधाना) 124 ल्यमी ल्यमी 44 114 • स्कर्णा REST eq! 33 व्यक 775 कोश 33 RIT 11 तम् ठेना 11 à, 11 150 ~सुम्द्रो 4 -धन्य धानी 115 मामो ٩ 141 माळको माञ्च माञ्च भा स्त्री बोहसे. नेडचेल 141 मन्द्रीह ٩¥ (सम्ह) 24 (PPE) 144 44 रोक्स रीक्स विधिनिभए विमित्तिभाष् TYW 96 74 परीभर्द्ध है बरणों ने पार क्यों के छमांनी

पद्योग्रम्भ 🕽

पद्योगुज्ज

-म्स मेहरअस्रो

343 10

4

-940 9

नेफ व नार बोहबे.

वधीएज्य ~श्रुं

विश्वसी

	क्षार				
पर्सु	चौरी	क्समुद्	धर		
14	4	यानु	गारतुं		
~	48	स्मगा	इनसा		
375	ŧ	निपहचरित	दिनिहचरित्त		
353	11	सपान	चहा क्याव		
364	15	काम + काउँ	सम+ ४		
94	14	काहाच-	urchit-		
1 5	15	(पानन)	(श्रापत्म)		
365	4.8	( इसप्रीकृत )	(अरुएऐहरू)		
155		<b>गीनाक्ष्में</b>	शीन <b>ामं</b>		
₹ ¥	3.5	4.3	42-		
	- 5	हवाक्न्छो	(धापैन्डो		
	3	वेजनारे 🧎	<b>पेएमा</b>		
		<sup>क्</sup> एल्बो }	न सम्प्टी		
* 1	*	इमेरक-रबर	हामेश्रम-श्रम		
3.1	1	<b>गाः वर्</b> कनामा	कारण्यस्यवार्गा		
	3.5	पति व्यामी	अविन्यामा		
315	15	पर्यामा	चट्टमञ्च		
240	1	<b>प्रका</b> म	र्वक्यम्यम		
44	34	(भमर)	(FMC)		
441	15	Deg .	sellet		
448	44	कर्मान	प्रभारते		
33	12	भूको	सूचा		
*	٦	33	9.9		
411	15	विरिप्र <del>दिश</del>	विरिवर्गचे		
र३५	14	सम्बद्धा	समिष		
52	14	(पिनवीव्) धार वे	सो. (वितरीह) खेर नरनो		

		RAJ	
पानुं	भौदी	बाह्यद	सद
735	15	(ध्रप्) चेद करवा	(शप्) आप देवो
	14	(-विद्या)	(-विर्ष)
440		醛	Fer
	11	सम्बादिसो	सम्मानिक्तो.
448	**	(e)	(পম)
**	4.8	भरत	( कंद )
44	2.6	(भा + शास)	( <b>व्या</b> + व्यम )
360	98	( चतुर्विद्यति )	(बहुविंशित )
	3	<b>क्र</b> शिस	<del>क्र</del> ामिस
	50	( बच्चदेर्दिकी	( बहुदेवर्ष्ट्रियी
385	4	( সিহুব্ )	(भिषद्)
	33	(त्रिचला−	( शिचरश—
44	1	(पन्डि)	(बन्धि)
4.45	10	पत्रमिष	पत्रभिन्न
	15	प्रकृतिश्व	प्रापिक
348	4	(सदम्)	(अध्य )
302	3%	( व्यवस्थास )	(श्वराचाच )
	4.5	(\$dx)	(श्रपद)
	44	( निध-नच)	( विचयम
-	40	( स्वार्धिक )	( स्वाधिय )
400	*	( –रिम )	(—शिटम)
,,	1	( मध्नपत् )	(अप्रवस्त )
	3.0	पूरकोशु	प्रक शास्त्रोजु
5.04	44	भापनी	भएवा
₹4	4		एवर्गार्थ
3.3	14	पण	<del>पेच</del>

NA.				
परु	कीरी	मध्य	सर्	
344	e	नूपि )	<b>(₹</b> चिते)	
	15	(क्षिमधिर)	(क्कृमिची)	
\$AA	¥	धन	UW	
180	10	(ছবিখান)	(पृथिशीमा)	
	15	(मासूच्य)	(शहरदमः)	
\$44	18	(記念里)	(ছিন্তৰ:)	
	38	शैंतनबर शैंत	रायतं वर्तेषका वर्तेषायां	
144	1	(महीच्छेन)	(मरीभ्येकः)	
	11	(अस्य भागास)	(गराक्ष्य गामसे)	
84	1	(साउट्यास्)	(कर <del>म्ब</del> स्स्)	
	13	भारर	alect y	
272	14	पूर्व	भेरार । पूर्वे	
\$40	٧	(काश)	(विद्यारा)	
-	34	(चित्रका)	(पिन्ब्य्)	
\$4	11	<b>'E</b> 'U'	'क्रपर'	
1 .	5	(4d)	(खुएर)	
•	44	(As:)	( <b>ere</b> )	
-	14	(पार्शक्)	(भारत्)	
	1	मात्रक्षे	मासन्त्रे	
ş	1	<b>रहम</b> ्	वस्पर्भ	
*	4.8	"पार्"	'पीए'	
544	34	<b>संरक</b> त	थं <b>रा</b> म्ड	
31	3	वृत्ते	क्रमे	
	44	<b>वाव</b>	শাশ	
3		(ৰন্ধি)	(वारि:)	
161	रव्	( <b>44</b> )	( <del></del> 1	

223

14

(रिम्प )

कुम

माविमां

सुराय

सरका

Pet

**2**13

दाना

पूर्वे

-4004-

बेटबाग कता

**ए**स्सि**णी**या

**ब**रियुषीया

पश्चिम

- ক্ৰান

(प्राप्त संस्थात् )

पञ्चम्यास्त्रतीया

(यह्मापा

**है** सम्बापन

अंदर

	14	( इस्मः)	(अकृतः)
715	1	(CHC)	( <del>411.</del> )
785	9.9	सुर (करि)	र्क्स (चिन्न)
35		ग्रमा रे	गुज्यं
		गय (	गर्मा

(विश्वा) ٩

¥

आदियाँ

स्थाव

भरका

(महत्रध्यम् ) fqς

पञ्चनकारनृतीका

(बङ्माया

को

क्षण

**है**मम्बरस

42 **a**nt

88

बीरी

ক্ষ 363

ţ¢

11

4

155

ş

¥

٩

4 1 **₹** ₹ \$ w

34 24 1 1 ١ 99

100 ٦

1 6 33

98

745 9 %

111

14 3

31 411

٩ ٩٧ 99

-**6**21(4)-ঘূৰ্ব PORT PROPER क्षान **द**रिसचित्रा पोक्रीवा

वरिसन्त्रिक

पलु	<b>क</b> री	MERC .	W.
241	15	चच	र्व <b>ष</b>
463	1	PRIT	मतो
445	18	कानोज्या	भगेपा
3.5	*	(+=)	( +1)
٠,	4	(सरमार)	( क्याच्या )
	3	( भग + इस् )	(सप+ (व्य्)
366	¥	प <b>रेड</b>	प्रोसं
35	16	ਰਜਨਾਵ	ভজ্জাৰ
252	w	वस्त्रित्स्य	क् <b>रतीन्त्रिय</b>
858	3	(कान) कोव	(क्रोग) क्रोप-
354	44	वरके	कर्ष
	3.5	(चनिष्ट)	( वरिष्ठ )
359	5	निवः (+ सिम्बः)	चिष् (+विष् <b>र्</b> )
		भोग	चार

**बैं** तमा

( वाम )

(त्रवा)

(बीब्र)

चून श्री

मरिष्

(प्रका+ध्)

प्रमाक्यो

पना

प्रजन्म चीरक (धना) (ऋषा)

(कीं)

बूर्भ ब्री जापनु

पूजना

योक्क

(ग्र+काक्) प्रशादकर्यो पृथा

350 88

1 1

j v 40

۲, ٩

714 14

89 355

24

35 \*

٤ 1 1 11

35 , 299 ٩

11

WIN

पानु	नंदी	बाह्य	वद
774	1	(क्षेत्रज्ञाय)	(सम्बर्ग)
310	1	•माशु.	•माबु
	•	म्प्रामी	अक्राभी
215	٧	(क्रिया)	(शिया)
23	3	यष्ट्	48
-	¥	(पारक्क्	( न्याक्शमन् )-
111	1	बरस्य,	परसार,
**	4	त्रियां गील	त्रि <del>चं</del> यचीस
	13	करम	and a
and the	99	विक्रम्सु,	विवृष्धु
	33	नेम	<b>वे</b> न्त्रं,
***	¥	कर्	<b>নি</b> পূ
	2.5	(नि+घी <b>न्</b> )	(R+ex)-
545	12	श्चलपा	द्वानचा
	85	তত্ত ক্ষ	श्रामन
	₹	उक्रमनु	वर्शन्तुं
344	- 4	( + यत्र )	( + स्व्
	14	मंदिल	क्रोच
\$86	33	66. (CC-)	ent (CI)
३२७ ३३	* ? * ?	(धीर) • चम्प	(शिष्ठ) •चन्द्र
111	14 2w	(रीजनम)	(विध्यम्)
334	34	विकशिय -	ीक्षण <u>ि</u> ष
11	14	<b>₩</b> 77	T.
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		•	

क्षम ग. प्रम पु. ग. (मिर्ट्याप) (मिर्ट्याप)

741 14 747 1 **289** 

604						
45	र्भःश	मधुद्	सद			
248		चूपर्ी)	(44g)			
м	3.5	(इविगणि)	(इक्सिकी)			
JAA	٧	ग्रज	<b>6</b> 7			
340	10	(ছবিন্দ্ৰীৰ)	(Agapa.)			
	33	(सान्द्र)	(माजरब-)			
\$.4	378	(इंद्रेक्:)	(Tg-f-=:)			
	44	वेडम्बरं केंद्र	वैत्यवतं वेदणावतं वर्देशवतं वर्देशवतं			
144	3	(नरीसःत)	(नशीधीतः)			
-	111	(सरकरमार)	(ब्रामक्यामहे)			
342	3	(माउन्मर्)	(धानकस्()			
	33	भारर	संरर			
3,43	38	ξή.	ž,			
1 0	٧	(खरचा)	(विद्यार्था)			
-	60	(चिन्ध्य)	(पिन्म् )			
14		<b>'&amp;</b> 4'	'हपा'			
ą c	5	(&3)	(*IE)			
- 4	4.8	(3.8:)	(खरू)			
**	14	(नाष्ट्रवः)	( মাহু )			
	1	मारुषो	मार्क्स			
*	3	<b>रहात्र</b>	वदवर्श			
	\$	'पोर'	"पौर"			
* 4	15	लंखन	संख्य			
14	*	44	<b>बर्</b> के			
*	*	শাৰ	वाद A=0-1			
	**	(ৰাই) (লাম)	(परि:)			
341	**	(u1)	(UME:)			

4	( <b>*</b> 4:)	(ala:)
٩	(फार-)	(HF*)
9	सर (कवि)	सह (यह

समृद्

WA.

UE

(EP)

723 77

शंबर

<del>कृ</del>म

**मा**रिमा

मुराय

सर्भा

Rt

MT

श्रामा

पूर्व

-4174-

बेटमाए बना

(सक्तरम्बयु)

वक्कसार**्ग ग्रेका** 

(पङ्गमापा

है अध्याकत्व

(R>**(** )

ग्रम } ज्य

4 ( 34. ٠ (विस्था) 75

12 अरर

\*

धीरी पान

an.

,, 244 775

215

301

ŧ Ŧ

۲

न्पविमां ন্দাৰ गरओ (सङ्क्ष्यम् )

FRE

345 ١٣٧ 24 . 3 6

94 पक्रम्बारमुलीया 300

99 (पष्टभाषा 9. **है** सम्बर्ग राज

346 22

44

٩

34 141 1

311

358 ٠

34

٩ 23

15

इच्यूच द्रिसिन्द्रवा **्रि**चिया

क्रो

क्य

पूर्व

-प्रभाव

पांचरीया

वरिगणीया प्रकिरीका **क**रिय**ली**का

3	MORE	वर्गी
35	पोसहबा	<b>नोत्तक्र</b> ण
*	डलन	हेलन
33	महेनस्ट्रा	महैन्स्रती
*	शर्ड	95K
95	काक्न	पश्चमधं
96	अवस्तुवन	भुषासुवर्ध

महुद्

मध्यक्ष

विद्य

क्रोडी

16 151

पानु

154 16

155 ¥ ٠ \* }

\*\*\*

\*35

¥

14

33 413

WWC

₽ĮĘ

सम्बद्ध

and.

नगी

पुना पुत्रा ٩ 1 ६मा 38 钳 1 17 धम्मो क्रमा \*12 वहित्य बाइत्व \*11 33 ęλ क्षेत्र ¥15 ٩

शुक्रमान गुजानान 11 বিকাৰ विच्यान 16 489 प्रवर्षत 14 990 498

वहस्य प्रमुखा 11 स्वविवा अरमिका 44 (त्यवस्यः) (स्वरूपा) 11 युक्तन्त क्षान्त 3.0

क्रमम् 99 अन्य पूर्वितर वृत्रिक्त \*\*5 ٦ व्यापन स

**∓Ω**d

कार्टिय-

